

**THE BOOK WAS  
DRENCHED**

UNIVERSAL  
LIBRARY

**OU\_178976**

UNIVERSAL  
LIBRARY







OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83/M22P Accession No. H2436

Author मैगरेस-ऑरिन,

Title पाप की गर्मी, 1957

This book should be returned on or before the date last marked below.

---



## पाप की गली

## हमारा रोचक कहानी तथा उपन्यास साहित्य

|                                     |                                    |     |
|-------------------------------------|------------------------------------|-----|
| कला का पुरस्कार (कहानियाँ)          | पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'          | ३)  |
| रजवाड़ा (सचित्र कहानियाँ)           | देवेश दास                          | ५)  |
| निशिकान्त (उपन्यास)                 | विष्णु प्रभाकर                     | ५)  |
| इन्सान (उपन्यास)                    | यज्ञदत्त शर्मा                     | ४)  |
| समाधान (उपन्यास)                    | रामावतार त्यागी                    | २)  |
| बुझते दीप (उपन्यास)                 | दयाशंकर मिश्र                      | ३)  |
| पाँच बेंत (सचित्र उपन्यास)          | देवदूत विद्यार्थी-भारती विद्यार्थी | ५)  |
| युगपुरुष राम (सचित्र उपन्यास)       | अक्षयकुमार जैन                     | ४)  |
| परेड-ग्राउंड (उपन्यास)              | हंसराज 'रहवर'                      | १॥) |
| अपराजिता (उपन्यास)                  | चतुरसेन शास्त्री                   | २)  |
| विद्रूप (उपन्यास)                   | पृथ्वीनाथ शर्मा                    | ३)  |
| हृदय मन्थन (उपन्यास)                | सीताचरण दीक्षित                    | ५)  |
| जर्जर हथौड़े (उपन्यास)              | बरुआ                               | ६)  |
| जल-समाधि (उपन्यास)                  | गोविन्दवल्लभ पन्त                  | ४)  |
| पर्णा (उपन्यास)                     | गोविन्दवल्लभ पन्त                  | ४)  |
| डूबते मस्तूल (उपन्यास)              | नरेश मेहता                         | ४॥) |
| शराबी (उपन्यास)                     | पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'          | ३॥) |
| जी-जी-जी (उपन्यास)                  | पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'          | २॥) |
| आत्मदान (उपन्यास)                   | विजयकुमार पुजारी                   | ३)  |
| इन्सानियत फिर भी जीवित है (उपन्यास) | करुणोन्द्र                         | ३)  |
| हरिजन (उपन्यास)                     | सन्तोपनारायण नौटियाल               | ४)  |
| डूबते मस्तूल (उपन्यास)              | नरेश मेहता                         | ४॥) |
| पुनरुद्धार (उपन्यास)                | कंचनलता सब्बरवाल                   | ३)  |
| मानव की परख (उपन्यास)               | देवीदयाल सेठ                       | ३)  |

### अनूदित उपन्यास

|                                        |                      |     |
|----------------------------------------|----------------------|-----|
| अधखिली (सचित्र व्यंग्यात्मक बंगाली से) | देवेश दास            | ४)  |
| चोर की प्रेमिका (सचित्र तामिल से)      | आर० कृष्णमूर्ति      | ४)  |
| चुनोती (सचित्र मलयालम से)              | भारती विद्यार्थी     | २॥) |
| पाप की गली (अंग्रेजी से)               | अनु० महावीर अधिकारी  | ३)  |
| सौन्दर्य की रेखाएँ (अंग्रेजी से)       | अनु० रामस्वरूप दुबे  | ५)  |
| दो सेर धान (मलयालम से)                 | तक्षी शिवशंकर पिल्ला | २)  |
| सिद्धार्थ (हरमेन हेस) (स्विस से)       | अनु० महावीर अधिकारी  | ३)  |

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

# पाप की गली

डोरिन मैनेरस कृत 'स्कार्लिट् पैट्रोल' का  
हिन्दी अनुवाद

अनुवादक  
महावीर अधिकारी

१९५७  
आत्माराम एण्ड सन्स  
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता  
काश्मीरी गेट  
दिल्ली-६

प्रकाशक  
रामलाल पुरी  
आत्माराम एण्ड सन्स  
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

[ सर्वाधिकार सुरक्षित ]  
मूल्य ३)

मुद्रक  
श्यामकुमार गर्ग  
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस  
क्वीन्स रोड, दिल्ली-६

## अनुवादक के शब्द

“पाप की गली” अंग्रेजी उपन्यास “स्कॉरलिट् पेट्रोल” का अनुवाद है। इस रचना को उपन्यास न कहकर, आत्माख्यान ही कहा जाय, तो बेहतर होगा। इस आत्माख्यान की नायिका एक युवती है जो नागरिक जीवन की चमक से आकर्षित होकर अपना छोटा-सा कस्बा छोड़कर न्यूयार्क जैसे शहर में आती है और यहाँ आकर परिस्थितियों के वशीभूत ऐसे लोगों के हाथों में पड़ जाती है जो उसे नैतिकता और समाज-विरोधी मार्ग पर चलने के लिये मजबूर कर देते हैं। पूरी रचना में अमरीकी समाज के उस रूप का दिग्दर्शन कराया गया है जो हमारी आंखों से ओभल है लेकिन जो सम्पूर्ण वेग के साथ ऊपर से दीख पड़ने वाले सभ्य और शिष्ट लोक-जीवन के समानान्तर ही चलता रहता है। इस उपन्यास की भाषा में उसे अण्डर वर्ल्ड अर्थात् पाताल लोक कहा गया है। इस पाताल लोक के अपने नियम हैं, अपना सदाचार शास्त्र है, अपनी सत्ता और अपने ही कानून हैं। उसकी सत्ता फौलादी है और उसके कार्यकर्ता किसी मानवेतर जनून से उन्मत्त दीख पड़ते हैं।

जैसा कि स्वाभाविक है, इस रचना में वासना है, कामुकता का नग्न चित्रण है और स्त्री और पुरुष के लैंगिक सम्बन्धों की वैसी ही तस्वीरें हैं जो भारतीय तीर्थस्थल जगन्नाथपुरी और कोणार्क के मंदिरों की भित्तियों पर अंकित हैं। प्रश्न उठता है कि ऐसे उपन्यास को हिन्दी में रूपान्तरित करने के पीछे कौन-सा मंगल उद्देश्य है। इस उपन्यास के अनुवाद की उपादेयता दो प्रकार से सिद्ध होती है। एक तरफ यह उपन्यास हमें ऐसे मानव-समाज के दर्शन कराता है जिसकी जिन्दगी एक खास सामाजिक आर्थिक और नैतिक ढाँचे पर आधारित है। और दूसरी तरफ इस उपन्यास को पढ़कर हमारे समक्ष यह स्पष्ट होता है कि जिस दुनिया में वस्तुओं का मूल्य निर्धारित करने के मानदण्डों का मानवीय और नैतिक आधार न होकर हर चीज़ की कीमत सोने और चाँदी के सिक्कों से आंकी जाती

है, उस दुनिया के लोग कितने स्खलित चरित्र हो सकते हैं। और यह चारित्रिक पतन कुछ इने-गिने सरमाएदारों के जीवन में नहीं होता, वरन् मामूली मजदूर के जीवन से लेकर कलाकार, प्राध्यापक, वकील और राजनीतिज्ञों के जीवन में भी यह उद्दाम वासना सिर से ऊपर उतर गई है। इस उपन्यास के पृष्ठों में आपको निक फैरेलो के दर्शन होंगे जिसने वैश्यावृत्ति को एक संगठित व्यापार का रूप दिया है और विद्रोहियों को “ठीक राह पर” लाता है। एड्डी क्रिस्पी है—जो एक हत्यारा है और इस जीवन को अन्तिम बार अलविदा कहने की इन्तजार में एक के बाद दूसरी हत्या करता चला जाता है। जोसैण्ड्स नाम का युवक है जो इस आत्मा-ख्यान की मुख्य नायिका के जीवन में आता है किन्तु जिसका पवित्र कौमार्य उसके लिए पाँच डालर से अधिक मूल्य नहीं रखता। इसी प्रकार सारी पुस्तक में ऐसे पात्र बिखरे पड़े हैं जो अनेक प्रतिष्ठित व्यवसायों के प्रतीक हैं किन्तु वासना के धिनौने प्रतिरूप से कुछ भी अधिक नहीं हैं। समूची रचना से ऐसे मानव-समाज का परिचय मिलता है—जो स्खलित चरित्र है और उसमें मनुष्यता का मूल्य मानवीय मूल्यमानों द्वारा नहीं आंका जाता, वरन् डालरों से आंका जाता है। वहाँ का मनुष्य अपनी नैसर्गिक आशा-अभिलाषाओं के सहारे नहीं जीता, वरन् भूखे भेड़िए के समान अपनी वासना की तृप्ति के लिए दिन की रोशनी में प्रलयकारी और जघन्य अपराध करता है। संक्षेप में पूँजीवादी अर्थतन्त्र द्वारा निर्मित मानव-समाज का एक नग्न और यथार्थवादी चित्रण इस रचना में हुआ है और एक चेतावनी के रूप में हमारे सामने अनेक प्रश्न उपस्थित करता है।

परन्तु इस वासना के इस चित्रण के बावजूद भी “पाप की गली” में कहीं भी फूहड़पन के दर्शन नहीं होते। रचना का प्रत्येक पात्र परिस्थितियों के वशीभूत अपने अन्तर की आवाज को दबाता दिखाया गया है और इस विद्रोह की चीत्कार हमारे अन्तर में स्थित मानवीय संवेदना को झकझोर कर जगा देती है। वैश्यावृत्ति के अड्डों में बैठी हुई मैडमें और मशीन की तरह काम करने वाली वहाँ की लड़कियाँ अपनी बेबसी पर आँसू बहाती हुई भी एक पवित्र, निष्ठावान प्रेम की गरिमा को प्राप्त करने के लिए सचेष्ट दिखाई पड़ती हैं। इन पात्रों की मूक वेदना हमारे अन्दर ऐसी

समाज रचना के प्रति विद्रोह की भावना पैदा करती है—जहाँ मनुष्य को केवल खरीद-फरोख्त की जा सकने वाली वस्तु बनाकर छोड़ दिया जाता है। साथ-ही-साथ पूरी रचना के पढ़ने से हमें अपने जीवन को विवेक के साथ जीने की प्रेरणा मिलती है।

“पाप की गली” में ऐसे लोगों की जीवन-गाथा है जो अपनी इच्छा के प्रतिकूल एक बर्बर मानव समाज के हाथों में पड़कर अपनी एक-एक सांस में एक चीत्कार लेकर जीते हैं।

लेकिन इस शोषण और उत्पीड़न के बावजूद भी इन पात्रों में साहस है, और दूसरों की मुक्ति के लिए अपने स्वयं को उत्सर्ग कर देने की बलवती भावना है—जोकि इन जघन्य अपराधों के बीच में मानवता की आशाभरी किरण के रूप में सर्वत्र विद्यमान है। यह उपन्यास यह सिद्ध करता है कि बुराई का पक्ष चाहे जितना प्रबल हो अन्त में उसका पराभव अपरिहार्य है।

“पाप की गली” पाताल लोक के जीवन को चित्रित करता हुआ भी साहित्यिक मूल्यों के अनुसार पूरा उतरता है। जिस तरह कीचड़ से कमल उत्पन्न होता है, उसी प्रकार हम धिनौने जीवन में से जीवन की पुकार के रूप में इस साहित्य की रचना हुई है।

## क्रम

|                |     |     |
|----------------|-----|-----|
| पूर्वाभास      | ... | १   |
| पहला अध्याय    | ... | ३   |
| दूसरा अध्याय   | ... | ८   |
| तीसरा अध्याय   | ... | १३  |
| चौथा अध्याय    | ... | ३५  |
| पाँचवाँ अध्याय | ... | ६५  |
| छठा अध्याय     | ... | ११२ |
| सातवाँ अध्याय  | ... | १३५ |
| आठवाँ अध्याय   | ... | १५५ |
| नवाँ अध्याय    | ... | १७६ |

## पूर्वाभास

पहला कदम ? मेरी जिन्दगी का यह पहला कदम कब उठा था ? क्या यह पहला कदम उस समय उठा जबकि एक युवक ने—जिसे मैंने जो सैण्ड्स कहकर पुकारा है—मुझे हठात् उस व्याकुल लालसा का अवगाहन करने की प्रेरणा दी थी जो कि उसके हाथ के दबाव से मेरे अन्तर में जाग उठी थी । अथवा यह कहूँ कि यह कदम वर्षों बाद जाकर उठा जब कि मेरी आत्मा उजड़कर वीरान हो चुकी थी और चारों ओर की दुनियाँ की दुःख-भरी गाथाओं से षड्यन्त्र करके मुझे केवल एक ही आवाज सुनने की प्रेरणा करती थी और इस आवाज की फुस-फुसाहट मुझे सड़कों पर खड़े वृक्षों की साँय-साँय में भी प्रतिध्वनित होती प्रतीत होती थी । “एक ही रास्ता है, कुछ कुटिल लोग कहते हैं कि वही सबसे सरल रास्ता है और उससे भी अधिक यह कि केवल एकमात्र रास्ता है !”

अथवा क्या सच यह है कि यह पहला कदम उस रात को उठा जबकि मैं सड़क पर चलती-चलती दो परिचित-सी प्रतीत होने वाली आँखों की भाषा को पढ़ने के लिए पटरी पर एक ओर ठिठक गई थी । उन आँखों में शिकारी बाज की आँखों जैसी पौरुषयुक्त चमक थी । इस चमक को देखकर आगे कोई चारा न पाते हुए मैंने अन्तर का समस्त साहस बटोरकर कहा था—

“हाँ ।”

शायद इस सोच-विचार से कुछ अधिक अन्तर नहीं पड़ता। कदम उठाने की अभिलाषा सदैव ही मेरे अन्तर में वर्तमान थी, केवल उसके उकसाये जाने की देर थी। हमारे जीवन का यही महान्तम रहस्य है, जिसे समझने में बहुधा हम अपने को असमर्थ पाते हैं। हमेशा ही हम किसी चीज को किसी खास ढंग से करने की सोचते हैं लेकिन हमेशा ही वह किसी और ढंग से हो जाती है और उसके कारण भी वैसे ही बन जाते हैं। फिर हम अपनी सामर्थ्य अथवा दुर्बलता के अनुसार अपने किए की रक्षा करने के लिए खड्ग-हस्त हो उठते हैं या उससे पीछा छुड़ाकर भाग खड़े होते हैं।

मैं भी चाहती तो पगडण्डी पर भाग खड़ी होती। सड़क लम्बी थी और बच निकलने के लिए कितने ही मोड़ भी उसमें आते थे। निश्चय ही उस दिन मैं जो सैण्ड्स से बचकर अपने घर वापस आ सकती थी। मेरी टांगें एक तरुणी की टांगें थीं और उनमें काफी शक्ति थी। अप्रैल के उस तीसरे पहर मैं सड़क काफ़ी खाली पड़ी थी और मैं सुविधापूर्वक भाग सकती थी। मेरे चारों ओर कितने ही दूसरे रहस्य थे जिनकी खोज-खबर मैं अपने को डुबा देती। लेकिन किसी भी अवसर पर मैं भागी नहीं और अब भाग तो भी व्यर्थ है !

## पहला अध्याय

ऐसी अफवाह थी कि एक और सप्ताह तक चलकर मिल बन्द हो जाएगी। डान ने मुझे चिट्ठी लिखी थी। हमारे घर पर खाने-पीने की व्यवस्था बिगड़ चुकी थी और वृद्ध डा० रोविन्स ने यह फैसला कर लिया था कि मुझसे दो वर्ष बड़ी मेरी बहिन इवेलिन को अब वह और आगे काम पर नहीं रख सकेंगे। डान ने लिखा था कि मैं—मुमकिन हो सके तो—कुछ रुपए उसके लिए भेज दूँ।

मैंने हमेशा से अपने पिता को डान ही पुकारा है। अपनी याद में अपने घर के केवल तीन सदस्यों को ही मैं जानती हूँ। डान, इवेलिन और मैं। जो कुछ मुझ से बन पड़ा मैंने डान के पास भेज दिया। लेकिन यह नक़्क़म बहुत ही थोड़ी थी। उस समय मुझे यह न सूझा कि जैसे मैं छोड़ चुकी थी वैसे ही इवेलिन को भी काम छोड़ देने का सुभाव दे दूँ क्योंकि मैं समझती थी कि मुझसे अधिक इवेलिन की घर की आवश्यकता है। हम दोनों के मध्य आयु के इन वर्षों के अन्तर से भी बहुत अधिक दूरी थी। मेरे जीवन में जो सैण्ड्स की छाया पड़ चुकी थी और सारा शहर इसे जानता था। मैं डान और इवेलिन को कई बार प्रयत्न करने पर भी यह न समझा सकी कि इतने चहल-पहल से भरे नगर में इतनी थोड़ी-सी घटना पर कोई ध्यान नहीं देना—जबकि शहर में न तो इतनी अधिक आत्म-निर्भरता ही है और न इतनी पुरातनवादिता। डान और इवेलिन

अभी तक भी पुराने युग से चिपके हुए थे। जबकि दूसरे लोग मकानों पर अँगूरों की लता फैलाते थे और सभी घर चख-चख की आवाज़ से गूँजते रहते थे। पिछली तीन पीढ़ियों से बड़े और गन्दे कमरों वाला यह मकान इस परिवार का निवास-गृह बना हुआ था। इस घर में अनेक प्रकार की ध्वनियाँ और पैरों की आहट सुन पड़ती थीं। ये ध्वनियाँ उन प्रेतों की थीं जिन्होंने उस समय से इस घर में डेरा डाल लिया था जब कि एक औरत ने अपनी पवित्रता सिद्ध करने के लिए अपने शरीर को चूने की दहकती हुई भट्टी में फेंकने की स्वीकृति दे दी थी। ऐसा था यह वेगाना और रूढ़िवादी मकान जिसके उत्तराधिकारी थे डान और श्वेलिन। आखिरकार में उनके पास में भाग खड़ी हुई और जो सैण्ड्स को लेकर वह जो कुछ कहते थे, उमे भी उन्ही के पास छोड़ आई। स्कूल और पुस्तकालय में यद्यपि जेरे सामने जीवन के श्रेष्ठतर मार्ग भी खोल दिए थे, लेकिन मैंने खटियो और करघों से काम करने वाली मिन में ही प्रवेश किया और अपना स्वतन्त्र जीवन प्रारम्भ कर दिया।

मिन वन्द होने की अफवाह सच्ची साबित हुई। केवल तीन दिन बाद ही गिराफ़े सिर पर आने वाली थी। इसके बाद यौवन और अल्हसा से लबरेज यह उत्फुल्ल नगर एक काहिल और वीरान नगर हो जायगा। करघे उसकी हड्डी और मामपेशियाँ थे। गलियों में अब मस्त अट्टहानों का मुन पड़ना भी वन्द हो जायगा।

पिछली रात मेरी साथिन नटाली स्वायने बड़ी खामोशी में अपने सोने की नैयानियाँ करती रही थी। “दुनिया में कोई भी चीज इतनी गर्हिन नहीं होती, जितना लोग बनाने है।” मैंने कहा था, “अगर आपकी आय केवल वार्डम बर्ष की है, तो कल की चिन्ता आपको इतना उद्विग्न कैसे कर सकती है?”

नटाली ने अपने जूने उतार लिये थे लेकिन वह अभी खाट की पट्टी पर ही बैठी थी, जूने अभी तक उसके हाथों में ही थमे थे। वह खिड़की पर पड़े एक पर्दे की ओर देख रही थी। उसके नेत्र उत्सुकता से विस्फारित हो चुके थे। लगता था जैसे वह गूढ़स्थित किसी ऐसे पथ की ओर देख रही है जो दुनिया से नीचे की ओर जाता है।

नटाली की आयु भी वार्षिक वर्ष की ही थी, घर पर हम लोग एक साथ ही बड़े हुए थे। नटाली की आँखों में सदैव ही उसके चारों ओर की दुनियाँ के सुख-सपनों की छाया नज़र आती थी और इन्हें वह अपनी जिन्दगी के चारों ओर बुना करती थी। लेकिन, वे स्वप्निल आँखें आज सहसा विषादयुक्त बन चुकी थी—

उसने अपना जूता इतनी सतर्कता और नाप-तौल से गिराया कि वह एड़ी और तली के बल पर इस तरह खड़ा हो गया कि जैसे अपनी आशा-वादिता के गर्व से अकड़ गया हो। उसने दूसरा जूता भी उतनी ही सावधानी के साथ गिराया जो कि अपने साथी के साथ उसी मुद्रा में खड़ा हो गया। फिर वह हमारे शीशे के सामने खड़ी हो गई। अपने एक कंधे पर गर्दन बक्र करते हुए उसने कहा :

“आगे अन्धकार है। डोरीन, तुम्हारे और मेरे दोनों के लिए ? हमारे लिए न घर पर कुछ है और न यहाँ ! लेकिन मैं इतनी जवान हूँ कि दुनियाँ की काली तस्वीर अपने जीवन के चौखटों पर चस्पा न होने दूँगी। मैं अगले सप्ताह के लिए चिन्ता नहीं करती और उसके बाद के अनन्त सप्ताहों के लिए भी नहीं। अगर तुम चिन्ता करती हो, तो तुम बेवकूफ हो।”

अब मेरी समझ में आ गया था कि नटाली पर्दे के पार क्या देख रही थी। वह शायद हमारी ही समझ-झूझ और अंतरंग उस लड़की की कल्पना कर रही थी जो कई माह गुजरे अपना स्थान छोड़ चुकी थी और साथ ही पीछे-पीछे कही जाने वाली वक्रोक्तियों को भी खैरवाद कहती गई थी। जब वह थोड़े समय के लिए पुनः प्रकट हुई थी तो उसने वह रात हमारे साथ ही गुजारी थी।

आज रात नटाली, ब्लांची को देख रही थी जो हमारे बिस्तर पर फैली पड़ी थी। उसके हाथ उसके सिर के नीचे रखे थे और वह छत की ओर देखती हुई अपने अतीत का सिंहावलोकन कर रही थी।

“मुझे लगा कि केवल वही काम था जो मैं कर सकती थी”, उसने हम से बताया था, “मैं नहीं चाहती थी कि मेरा बच्चा यहाँ या घर पर पैदा हो। जो उसकी माँ को जानते हैं इसका स्वागत उन सभी के द्वारा धूर्ततापूर्ण मुसकान के साथ किया जायगा। मैं चाहती हूँ कि उसका जन्म

अस्पताल में हो । मैं डाक्टर और नर्स को विदित कराना चाहती हूँ कि इसकी वल्लिदयत बिलकुल ठीक-ठाक है । मैं स्वयं ही अपने को पत्र लिखा करती थी और अपने नाम के आगे 'श्रीमती' लगाती थी और हस्ताक्षरों के साथ 'तुम्हारा प्यारा पति' भी लिखदेती थी । लगभग दो सौ मील की दूरी से नित्य-प्रति एक पत्र भेजे जाने का मैंने प्रबन्ध कर लिया था और उसमें वही कुछ लिखती थी जो कि मैं सोचती थी कि कोई पति या पिता ऐसे अवसरों पर लिखा करता है—अथवा जैसा कुछ अपने लिए लिखे जाने की मैं अभिलाषा करती थी । मैं नर्स को भी वह पत्र पढ़वा देती थी और मुझे सन्तोष मिलता, जब वह कहती—“तुम्हारी लड़की का बाप बहुत अच्छा है ।” और बच्ची चाहे समझ न सकती हो, पर उसके कानों में ये पवित्र शब्द पड़ तो जाते थे —

तो नटाली ही थी जिसने आहिस्ता से कहा था जैसे कि वह पूरी स्पष्टता से उस रहस्य को समझने के लिए कृतसंकल्प हो, “लेकिन क्या सचमुच तुम्हारा अभिप्राय यही है ? क्या तुम...तुम बाज़ार में निकल गई थीं ?”

ब्लांची एक कोहनी के बल सीधी हो गई और नटाली की आँखों में आँख डालकर देखने लगी । उसकी आँखों में अवहेलना थी और उसकी वाणी में कड़क थी । उसकी मुखाकृति पर समाज के समस्त नैतिक आदर्शों के विरुद्ध विद्रोह की एक चिंगारी चमक रही थी ।

“मैं क्यों न जाती ?” उसने कहा, “मेरे सामने और रास्ता ही क्या था । जब तक हम बारह वर्ष की होती हैं और लड़के यह जान लेते हैं कि हम लड़की हैं—शायद जब तक हमें एक हजार बार चूमा जा चुका होता है । अंधेरा पड़ने पर किसी ने आपकी बाँह सँभाल ली होती है और कंधे किसी भी लड़के की बाँहों में पहुँच जाते हैं । क्या उन स्पर्शों से तुम्हें कभी कोई पीड़ा हुई है । क्या तुम्हारे अस्तित्व में से उसके बाद कुछ घट गया है, उस चुम्बन या कर-स्पर्श के बाद अथवा एक घण्टे तक उत्ते-जित भावनाओं के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने के बाद ? अगर मेरी देह किसी दूसरी देह के साथ क्षणिक सम्बन्ध स्थापित करती है और वह सम्बन्ध स्थापित होता है और उसके कुछ ही क्षण सब कुछ विस्मृत भी हो जाता

है तो उससे मेरी ही क्या क्षति हो सकती है और मेरी देह में से ही क्या घट सकता है ?”

जिस समय वह चली गई तो मैं और नटाली घण्टों तक ब्लांची के विषय में बातें करते रहे थे । नटाली ने यह अनुसन्धान करने की कोशिश की थी कि क्या वस्तुतः ब्लांची में कुछ परिवर्तन हो चुका है । लेकिन वह बिलकुल ही अपरिवर्तित नज़र आती थी, बस केवल उसकी वाणी में बातें करते-करते कुछ कठोरता आ जाती थी और उसकी आँखों में एक संकल्पित चुनौती खेलने लगती थी ।

अब नटाली अपने मौजे उतार रही थी और वह मेरी तरफ़ उसी अवहेलना के साथ देख रही थी जो उस दिन ब्लांची की नज़रों में दिखाई पड़ी थी । उसके बोलने से पहिले उसके मस्तिष्क में क्या था, इसकी कल्पना मैंने भली भाँति कर ली थी ।

“मेरे पास उसका पता है । मैं उसे पत्र लिख रही हूँ । मैं उसे यह बताना चाहती हूँ कि मैं भी आ रही हूँ ।”

उसने यह सब कितने सरल भाव से कहा था । और मैं यह जानती थी कि वह हम दोनों की तरफ़ से ही कह रही है ।

## दूसरा अध्याय

हम दोनों साथ-साथ ही न्यूयार्क गए लेकिन हमने फिर ब्लांची के बारे में कोई चर्चा नहीं की। इन अन्तरिम दिनों में मैंने कई बार उसकी चर्चा चलानी चाही। मैं ब्लांची को बुलाना चाहती थी ताकि उसी के सामने मैं नटाली से कहूँ कि तुम्हें यह सब नहीं करना चाहिए। लेकिन मेरा यह उपदेश कभी कल्पना की स्थिति से आगे नहीं बढ़ा।

नटाली प्रतिरोध में ब्लांची की संक्षिप्त, अवज्ञापूर्ण प्रतिध्वनि ही दोहरा सकती थी, “क्यों नहीं ? तो और फिर क्या ?”

इस “तो फिर क्या ?” का उत्तर मेरे पास ऐसा नहीं था जो मेरे अपने कानों को भी सन्तुष्ट कर सकता ? मैं यह कह सकती थी कि, “निश्चय ही हमारे सामने कोई रास्ता अवश्य खुल जाएगा।” लेकिन नटाली की मनस्थिति ऐसी न थी कि वह विश्वास कर सकती कि अमुक कुहासे के पीछे स्वच्छ और प्रकाशयुक्त वायु का संचार होता होगा। उसकी आकांक्षा कोहरे को उठा देने की थी ताकि वह अपने भविष्य की तस्वीर साफ़-साफ़ देख सकती और मैं भी तो केवल कुहासा ही देख पा रही थी।

और “क्यों नहीं” का भी एक ही उत्तर हो सकता था, “सोचो तो सही लोग क्या कहेंगे ?” किसी प्रकार यही वह सब कुछ था जिसे ब्लांची बिना कहा छोड़ गई थी, क्योंकि उसके तर्क कितने निरुत्तर कर देने वाले थे ! “एक आकस्मिक स्पर्श से क्या अभिप्राय है ?”

नटाली या मेरे लिए इस बात का महत्व क्या था कि लोग क्या कहते हैं। “वह लोग” कौन होंगे ? कहाँ ? हमारे परिजन और कौन हैं, केवल कुछ घरवालों को छोड़कर, जो कि इस रहस्य को कभी जान सकेंगे ताकि वह हमारे द्वारा पैगम्बरों द्वारा निर्धारित उन नियमों की जो केवल औरतों के लिए ही बनाए गए हैं, अवहेलना के लिए हमें धिक्कार सकें ?

हालाँकि मैंने और नटाली ने ब्लांची के बारे में कोई चर्चा नहीं की थी किन्तु मैं जानती थी कि नटाली ने उसे पत्र लिखा है और वह उसका पता लगाकर छोड़ेगी। मैं नटाली का निकट अध्ययन कर रही थी, क्योंकि मैं जानती थी कि वह नटाली जो मेरी मित्र थी, जिसके साथ मैंने अनेक अनुभव किये थे, स्कूल गई थी और बहुत से लड़कों में भी बँटवारा किया था, अब जल्दी ही मर जायगी। लेकिन मरकर शायद फिर जन्म लेगी, एक नए रूप में ! लेकिन नटाली जिसे मैं जानती थी दिनोंदिन मृत्यु को प्राप्त हो रही थी। वह ब्लांची का अनुकरण करने जा रही थी !

मेरे लिए ये प्रसन्नता के दिन नहीं थे। डान का पत्र फिर आया था। रसोई घर के बिलों का भुगतान करना था, और घर के लिए कुछ भी शेष नहीं था। इवेलिन और कोई काम नहीं खोज सकी थी और इवेलिन का भी पत्र आया था।

“मैं सोच नहीं सकती कि तुम इतनी हृदयहीन किस प्रकार हो सकती हो। तुमने कुछ न कुछ अवश्य बचाया हीगा। कभी-कभी नई पोशाक बिना काम चलाना भी तुम्हारे लिए मुमकिन होना चाहिए। लेकिन तुम हमेशा अपने ही तरीके पर चलती हो। अपने पिता या मेरे बारे में तुम कुछ भी खयाल नहीं करतीं। तुम सारा समय उस जो सैण्ड्स के साथ नष्ट करती रही हो—इसकी लेशमात्र भी चिन्ता किए बिना कि तुम्हारे पिता ने इसी समस्या को लेकर एक सारी रात सिसकते हुए बिताई थी। मैं सोचती हूँ कि उस दिन के बाद से तुम दूसरे लोगों के साथ भी यही सब करती रही हो। लेकिन उसकी मैं चिन्ता क्यों करूँ ? मेरा अनुमान है यह सब तुम्हारे अन्दर था—और उसे एक न एक दिन बाहर आना था। लेकिन जो करो इस तरह करना कि हमारे पिता उसके बारे में कुछ न जान पाएँ। लेकिन डोडी, कृपा करके उन दिनों की याद करके—जब

हम छोटे थे और आपस में लड़ते-झगड़ते नहीं थे—कुछ न कुछ घर अवश्य भेज दो। कुछ वासनाओं का बलिदान करना और अवश्य ही कुछ न कुछ घर भेज देना। मुझे कपड़ों की सखा जरूरत है, क्योंकि डा० रोबिन्सन ने पिछले दो महीने से मुझे कुछ नहीं दिया है और अब तो मेरा अनुमान यही है कि डाक्टर के यहाँ से मुझे बीमार पड़ने पर शायद दवाई ही मिल सकती है और कुछ नहीं।”

मुझे इसका विश्वास नहीं होता कि यह सब मेरे अन्दर था, और एक न एक दिन उसे बाहर आना था !

वास्तव में मैं कुछ भी बचा नहीं पाई थी, क्योंकि जो कुछ बन पड़ा था, वह मैं घर भेज चुकी थी और दुर्भाग्य से मेरे पास कपड़े भी अधिक कहाँ थे ?

शहर के प्रवास के आरम्भिक दिनों में मैंने और नटाली ने काम तलाश करने की कोशिश की। वह तो विद्रोह से भरकर नौकरी की तलाश में जुटी थी। लेकिन उसका मस्तिष्क अन्तिम निर्णय कर चुका था। लेकिन नटाली का एक स्वरूप अब भी जीवन से चिपका रहना चाहता था। और वह मेरे उत्साह के साथ सहानुभूति प्रकट करती थी। मेरे उत्साह और आत्मविश्वास में उस मरणासन्न आशा की एक झलक अवश्य थी जिसकी चमक—मेरा विश्वास था—मेरी साधिन को थोड़े समय मेरे साथ रख सकती थी—और जब उसे कोई काम अवश्य मिल जाएगा तो दूसरा वह काम जिसने उसके मस्तिष्क में जड़ जमा ला है—उसके मन से निकल जाएगा। हमारी इस नई दुनिया में आने के कुछ ही दिन बाद उसके मस्तिष्क पर पड़ी हुई विकृति की छाया दूर भागती-सी दिखाई देती थी और—

लेकिन यह सब होना नहीं था। एक शाम को जब वह बाहर जा रही थी, उसने कहा, “मेरा ख्याल है कि मैं रात को लौटकर नहीं आ सकूंगी। अगर आई भी तो बहुत देर से—बहुत देर से !”

मुझे वैसे विश्वास था, क्योंकि वह सहसा तड़पकर उठ बैठी थी और बड़े शान्तचित्त परन्तु ज्वराक्रान्त तेज़ी से अपने कपड़े बदल रही थी। उसके बटुए में जो कुछ था केवल चाँदी के कुछ सिक्कों को छोड़कर

उसने सभी कुछ मेज़ की दराज़ में मेरे लिए निकालकर रख दिया था । उसने यत्नपूर्वक कपड़े पहिने और शीशे के सामने खड़े होकर एक नज़र अपने ऊपर डाली और अलसभाव से अपने कन्धे को भटका देती हुई वह दरवाज़े की ओर बढ़ गई । उसके हैट का वह तिरछा कोण मुझे हमेशा ही याद रहेगा—जो उसके दृढ़ निश्चय की अन्तिम चुनौती था ।

जिस समय वह बाहर निकल रही थी उसकी आँखें ऊपर देख रही थीं और सिर ऊँचा उठा हुआ था । उसके बाद वह एक हफ़्ते तक नहीं लौटी और आई भी तो केवल मुझ से मिलने और अपनी चीज़ों को लेने के लिए जो अब पुरानी हो चुकी थीं, क्योंकि उसने अपने लिए सबकी सब नई चीज़ें खरीद ली थीं ।

मैं अक्सर यह सोचती रही हूँ कि क्या मेरे जीवन का यह “पहला कदम”—भी उसी रात नहीं उठा था जबकि मैं दिनभर की दौड़-धूप से पस्त होकर बिस्तर पर पड़ी-पड़ी नटाली के उस दुस्साहस पर विचार करती रही थी । मैंने कल्पना की थी कि वह मधुर, कोमल नटाली इस समय ब्लांची के साथ होगी और अपने नये पेशे की शिक्षा ग्रहण कर रही होगी । मैंने अपने मन में उसकी ओर से विराग-भावना लाने का प्रयत्न किया, लेकिन वह हो नहीं सका । मैंने अपने को जताया कि मुझे उस पर तरस आता है—एक सुन्दर चीज़ ? उसे खरीदकर चाहे जो कलंकित कर डाले ? लेकिन मैं जानती थी कि मेरा मस्तिष्क मुझे झुठला रहा था । मुझे उस पर बिलकुल तरस नहीं था ।

मैं उसके साहस से चमत्कृत थी ।

उसने बताया था कि भाग्य ने उसका साथ दिया है । ब्लांची ने अच्छी तरह से उसे तौर-तरीके समझाए हैं और शुरू करने में उसकी मदद की है । उसने कहा था, “कुछ लोग तो सचमुच बड़े दिलचस्प निकलते हैं । हाँ, कुछ वैसे नहीं होते, लेकिन तुम सबको ही फ़ारिग कर सकती हो । जल्दी ही आदमी ऐसा हो जाता है कि उसे कुछ बुरा नहीं लगता ।”

जब गौधूलि-वेला में हमारी वह भेंट समाप्त हुई तो सन्ध्या ने जैसे उसे आगाह किया था कि अब उसके ‘काम’ शुरू करने का समय

हुआ ! और एक क्षण के लिए वह उठकर खड़ी हो गई । अपने नये जूतों की ओर देखते हुए उसकी मुखाकृति पर गम्भीरता के कुछ चिह्न उभर आए । ऊपर निगाह उठाए बिना ही उसने कहा, “डोडी, तुम भी चाहो तो प्रयोग करके देख सकती हो । सब कुछ ठीक वैसे ही है—जैसा ब्लांची कहती थी । इससे कोई हानि नहीं होती, या दाग-धब्बा नहीं लगता । कुछ भी तो नहीं ? तुम भी सोच लो ! मैंने तो सोचा है कि किसी दूसरे काम को शुरू करने के लिए यह हमारा अन्तरिम काम होगा ।”

## तीसरा अध्याय

१

नटाली फिर लौटकर नहीं आई। जब मेरा पैसा चुक गया तो मेरा आत्मविश्वास डोलने लगा। मेरे सामने केवल एक ही काम था कि मैं किसी रेस्तराँ<sup>१</sup> में सेविका का काम करूँ, लेकिन मुझे उस यूनीफॉर्म से नफ़रत थी। उसका मूल्य भी वेतन में से काट लिया जाता था। सड़क की ओर खुलने वाली खिड़कियों में से मैं रोज़ ही उन लड़कियों को देखती थी जो अपने शिकार की तलाश में निकलती थीं। मैंने उन्हें पहिचानना सीख लिया था। मैं यह भी जान सकती थी कि कब उनकी रातें अधिक व्यस्त रहती हैं। मैं उन्हें देखती थी जब वह सौदा करती होती थीं और बाद में मकान की दूसरी मंज़िल पर बने सुगम-सुलभ कमरे की ओर—अपने नये खरीदारों को लेकर—चली जाती थीं जहाँ वह प्राप्त मुद्राओं का मूल्य चुकाती थीं।

दरवाज़ा बन्द हो जाता था। एक उड़ान में ऊपर। सौदा समाप्त, कीमत वसूल और दरवाज़ा फिर खुल जाता था। निकलकर आने वाली लड़की, बिल्कुल वैसी-की-वैसी ही होती थी, उस क्षण उसका काम समाप्त हो चुका होता था। मेरे मस्तिष्क में बार-बार नटाली और ब्लांची के शब्दों की पागल कर देने वाली प्रतिध्वनि गूँज उठती थी। वह जैसी की तैसी

---

१. जलपान-गृह। २. जलपान-गृह में की जाने वाली सेवा।

तो नजर आती हैं ? उनमें कोई भी तो परिवर्तन नहीं होता, सचमुच कोई भी तो नहीं ?

रेस्तराँ में पहुँचने के बाद—

“आज फिर एक आदमी रेस्तराँ में आया है। क्या हर रात मुझी को फिर उसके लिए बेट करना है। मेरे हाल पर रहम करो बेसी ? वह भूरे सूट वाला आदमी, जरा उसे देख तो लो ? जिसकी टाई में हीरा लगा हुआ है। मेरी तरफ से तुम उसकी सेवा करदो। क्या कर सकोगी ?”

“ओह, वह आदमी ! असम्भव है प्रिय ! वह जूते मारकर मुझे अपनी मेज से भगा देगा। मैं एक रात उसके साथ बाहर रह चुकी हूँ और अब यह षड्यन्त्र करने का साहस नहीं होता। वह इसी आशा से इधर खाने-पीने आया है कि शायद तुम उसे किसी दिन अंगीकार करलो।”

“बहुत अच्छा, तो मैं चली ?”

“हैलो बेबी, आज रात क्या-क्या तैयारियाँ हैं ?”

“वही जो कल रात थी, मिस्टर ! भुनी हुई मांस की बोटियाँ भी ?”

“कैसा बना है ?”

“दोनों लाजबाब ?”

“ओह ! ऐसा, यह तो नया जवाब है। तुम्हें शाबाशी क्यों न दी जाय ?”

“आपसे नहीं, मिस्टर। क्या लाने के लिए हुक्म देते हैं ?”

“तुम तो जानती हो ?”

“जनाब, वह मैं पूरा नहीं कर सकती। क्या मैं बेसी को आपकी खिदमत में भेज दूँ ?”

“अह, बेसी ? ख्याल अच्छा हो सकता था, अगर उसका ढाँचा भी तुम्हारे जैसा होता। उससे कह देना ?”

“और वह छोकरी, जिसने लाल गुच्छे केशों में सँवारे हैं ?”

“ओह, उसको ? मैं उसका नाम भूलता हूँ। उसे तो साँचे पर चढ़ाकर सीधा करना होगा पहले। अपनी बात करो। एक बार आज-

माइश तो कर देखो । हाँ-हाँ, आज ही रात । अगर तुम्हारी मांग बहुत ऊँची नहीं चढ़ती तो मैं एक रात्रि-क्लब ठीक कर लूँगा, इस मोहल्ले में ऊपर की ओर एक स्थान है, एकदम लकड़क !”

“सुनने में तो बहुत अच्छा लगता है । वहाँ से आगे फिर किस तरह ?”

“यह तुम और हम दोनों देख लेंगे ।”

“जैसा बेसी के साथ हुआ, वही फिर होगा ?”

“अच्छा, अच्छा । ओह पालक का साग नहीं ? मैं कोशिश तो करता रह सकता हूँ, क्यों, नहीं ?”

“क्यों नहीं, लेकिन मैं चाहती हूँ कभी-कभी इन चीजों से विश्राम भी करना चाहिए । कम-से-कम सप्ताह में छः रातों को विश्राम करना चाहिए । रविवार को आप इधर नहीं खाते, नहीं न ?”

आज रात के लिए वह आदमी मेरे मस्तिष्क से दूर हो गया है । लेकिन अगर वह अपने को सुधार ले तो शाम को उसके साथ वक्त अच्छा गुजर सकता है !

एक मिनट ज़रा चैन तो लें । खिड़की के बाहर । एक नई लड़कियों का जोड़ा उधर जा रहा है । इस चबूतरे पर उन्हें पहले काम करते हुए नहीं देखा । पीली जाकेट वाली—वह तो जवान है । और दूसरी—वह घुटी हुई है । हो सकता वह इस लड़की को तोड़ रही हो ।

वह अन्दर आ रही हैं । बेसी की मेज़ पर ।

“ओह, बेसी । तुम चाहती हो कि मैं तुम्हारी नं० ६ टेबल ले लूँ ।”

बेसी शंकालु हो जाती है ।

“तुम्हारे दिमाग में वह है, डोडी ? क्या तुम उन्हें जानती हो ? तुम्हारा ख्याल है कि यह मुर्गियाँ कुछ अच्छी बख्शीश देती हैं ?”

“सच, नहीं । कभी पहले देखा भी नहीं । मैं उस पीली पोशाक को ज़रा नज़दीक से देखना चाहती हूँ । मुझे पीली पोशाक थोड़ी सुन्दर मालूम होती है ।”

“आपके लिए क्या प्रस्तुत किया जाय देवी जी ?”

छोटी तो काफ़ी सुन्दर है। मैं कसम से कहती हूँ कि उसने इन रातों पर चलना बहुत दिन से शुरू नहीं किया है।

“सलाद,—मिला हुआ—काँफी—और मेरा अनुमान है, तुम्हारे यहाँ एण्टीपेस्टो<sup>१</sup> भी होगी।” बड़ी वाली आर्डर दे रही है। छोटी कहती है, “लेकिन जेनी, मेरी इच्छा थी कि मेरे लिए कुछ समोसे मँगादो, मैं बहुत मोटी कहाँ हो रही हूँ?”

लेकिन वह बालिका तो विचारवान भी प्रतीत होती है। मेरे से भी तो वर्षों छोटी होगी ?

“बिटिया के लिए हकलबरी<sup>२</sup> पाई।” बड़ी वाली कहती है। “और देखती हूँ तुम्हारे यहाँ पीने का सामान भी है। यह इलाका मेरे लिए नया है ? मेरे लिए एक हाई बॉल<sup>३</sup> और बहिन के लिए ड्राई<sup>४</sup> माटिनी।”

“मैं काकटेल<sup>५</sup> नहीं चाहती, जेनी।”

“पीयो और चुप रहो। मुम्हें सीखना होगा कि शराब किस तरह पी जाती है।”

अब वह लोग कहाँ जा रही हैं। बाहर, काम करने के लिए। पचास सेण्ट की बरुशीश। अक्सर ये लोग अच्छा इनाम देती हैं, यही अच्छी बात है। ताज्जुब है—वह नाबालिग लड़की—उसकी आँखें नीली थीं ? मुझे ताज्जुब है...

## २

क्या आज भी मैं यह जान सकी हूँ कि जोसैण्ड्स को रेस्तराँ में आते देखकर—जिसने मुझे दूर से ही इस कमरे में देख लिया था—मैं अन्तिम रूप से पहली बार पगडण्डी पर पहुँच गई थी या कि इसलिए कि घर

१. एक अमरीकन खाद्य-पदार्थ।

२. एक प्रकार की काली भड़बेरी से बनी सोमसे जैसी कोई चीज़।

३. सोडा-मिश्रित द्रव्य।

४. एक प्रकार की शराब।

५. मिली-जुली शराब।

मेरी आवाज नहीं थी, मैंने उसे कहा था, “हैलो !” यह आवाज मेरे ही ओठों से निकली थी, लेकिन निश्चय ही वह मेरी आवाज नहीं थी ।

उसने मेरे हाथों को अपने हाथों में ले लिया । उसके हाथ गर्म थे और मेरे हाथ उनमें जैसे खो गए थे—ठीक उसी तरह जब वह मेरी सोलह वर्ष पुरानी मूर्च्छना को भंग करता हुआ यह कहा करता था कि जो कुछ हम लोग कर रहे हैं—वह ठीक है । क्या जिन्दगी के लुप्त उड़ाने में कोई बुराई है । क्यों ?” और तब मुझे उसके कथन में कोई भावना दृष्टि गोचर नहीं होती थी, मेरे हाथों के उसके हाथों में खो जाने में भी नहीं ।

वह कहता था, “तुममें प्रवेश पाना कितना अच्छा लगता है । हमें आपस में बहुत लम्बी बातें करनी हैं, कितनी जल्दी और कहाँ ?”

इसके उपरान्त एक घण्टे में ही मैं अपनी ड्यूटी से निवृत्त हो गई । इतनी देर काम करते-करते मेरे पैर थक चुके थे, बुरी तरह थक चुके थे । लेकिन मुझे आश्चर्य था कि इस धीरे-धीरे गुजरने वाले एक घण्टे में ही उन्होंने एक परिन्दे की गति किस तरह प्राप्त कर ली थी । मैं अपनी इस बेसब्री पर अपने को फटकार रही थी, लेकिन मेरी यह आत्मप्रतारणा न जाने किस तरह मेरे मस्तिष्क में से इस तरह निकल रही थी जैसे फ्राइज क्रीक के वृक्षों के संगीत पर चस्पां किए गए किसी गीत के बोल हों ।

हम रेस्तरां के बाहर मिले और एक बार तो उसने मेरी बांह में अपनी बाहें डाल लीं । फ्राइज क्रीक के बिखरे हुए पत्थरों में से वह मुझे हमेशा इसी अंदाज से निकालकर ले जाया करता था । इस प्रकार वही जो सैण्ड्स पुनः मेरी गिरफ्त में आता जा रहा था जिसके परे कभी मेरी दुनिया में कुछ था ही नहीं ।

वह कॉकटेल-बॉर की एक किनारे पर पड़ी मेज पर जाकर बैठ गया । मैं भी उसके पास बैठ गई, क्योंकि केवल वैसा करने पर ही मेरे पुराने जूते और मोजे छिप सकते थे । मुझे याद था कि अगर मेरी फ्राक पर सलवर्टें होतीं और मेरे सफेद जूतों पर गर्द चढ़ी होती तो किस तरह वह मुझे झिड़का करता था ।

हम घर के बारे में और स्कूल में बीती हलचलों के बारे में बातचीत

करते रहे। उसने यह भी पूछा कि मैं क्या कुछ कर रही हूँ। लेकिन तभी मैंने अनुभव किया कि जब बातचीत का दौर जो को लेकर चला तो उसने अधिक सन्तोष अनुभव किया। उसकी बातें सुनना कितना भला लगता था। मैं सुनते-सुनते कितनी तल्लीन हो गई थी और जिस भविष्य का वह निर्माण करना चाहता था, उसकी पूर्व-कल्पना में मैं इतनी खो गई थी कि जब उसने सहसा कहा कि “रात कितनी बीत गई है। क्या हम सारी रात यूँ ही नष्ट कर देंगे। तुम्हें मालूम है हम लोग आज कितने दिन बाद मिल रहे हैं” तो मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया।

“क्या हम यहीं नहीं ठहर सकते,” मैंने पूछा, “तुम यह जानते ही हो कि मैं एक काम करने वाली लड़की हूँ और दिन भर काम करने के बाद आदमी थक जाता है।”

“तब तो और भी अधिक उचित है कि हम रात्रि के इस भाग को साथ-साथ गुजारें।”

उसकी चमकती हुई आंखों से एक खामोस सवाल मैंने पूछना चाहा और उसका उत्तर भी पढ़ लिया उनमें। उसे आशा थी कि आज भी मैं उसी प्रकार अपने स्व का समर्पण कर दूंगी जैसे उन दिनों कर दिया करती थी—जब मैं सोलह वर्ष की थी।

पैरों की तरफ से शीत की एक लहर ऊपर चढ़ती आ रही थी, और हाथों में शिथिलता बढ़ती जा रही थी। मेरा अन्तर चीख उठा था, “कृपा करके जो ऐसा न करो। इस सबको यूँ बर्बाद न कर डालो?” लेकिन मैं बहुत देर तक प्रतीक्षा करती रही।

“मेरे पास एक छोटा सा कमरा है, वहाँ सब तरह से ठीक रहेगा,” उसने कहा, “कमरा लेते समय मैंने यह भलीभाँति निश्चय लिया था कि वह लोग शंकालु स्वभाव के नहीं हैं?”

जब उसने बिल चुकाया तो भी मैं चुपचाप उसकी ओर देखती रही। जब वह उठा और अपना हेट उठाने गया, तो भी मैं उसे देख रही थी। मैं देख रही थी कि अपने साथ चलने के लिए मुझे आतुर न देख, वह व्यग्र हो उठा है। लगता था जैसे वह अनुमान लगा रहा है कि कौन-सी शारीरिक असमर्थता के कारण मैं वैसा नहीं कर पा रही हूँ!

“डोडी, तुम्हारा मतलब शायद यह तो नहीं कि तुम मेरे साथ चलना नहीं चाहती ?”

मुझे बरबस हँसी आ गई। अगर मैं कह देती कि मैं उसकी तरह चलने के लिए उत्सुक नहीं हूँ तो यह कितना भारी प्रहार उसके लिए होता और शायद, उतनी ही मात्रा में मेरे अपने लिए एक भयानक आत्म-प्रवंचना ?

आतुरता मेरे अन्तर में जाग उठी थी। यह नहीं कि उसने अपने प्रति मेरी पुरानी चाहों को जगा नहीं दिया था, वरन् उसके आकर्षण ने जो नया स्वप्न मेरे मस्तिष्क में पैदा कर दिया, मैं उसे सहेजे रखना चाहती थी। मैं यह जानना चाहती थी कि क्या उसे डोरीन की याद आज भी बाकी है। उस डोरीन की जब यह छोटी थी और स्कूल और जंगल में घूमती थी और ऊटपटांग स्वप्न लिया करती थी। मैं यह अनुसंधान करना चाहती थी कि वह वही डोरीन थी जो उसकी स्मृति में घूमा करती थी और जिसे आज रात वह पाना चाहता है उस सम्बन्ध को वह फिर से प्रारम्भ करना चाहता है।

मेने कहा, “नहीं, नहीं। मैं तो कितना अधिक चाहती हूँ कि चलूँ ?”

३

एलीवेटर में बैठकर हम लोग ऊपर चले गए। मुझे खुशी है कि रोशनी धीमी है। एलीवेटर पर काम करनेवाला वह नीग्रो लड़का जिज्ञासु भाव से जो की ओर देखता है। वह शायद इसका अभ्यस्त है। मुझे यह भी प्रसन्नता है कि उसे मेरे फटे जूते दीख नहीं पड़ रहे हैं। जब मैं उन्हें निकालूँगी तो किसी तरह छिपा सकूँगी ?”

छोकरियों को क्या करना होता है ?

नटाली को तो मालूम होगा। और अपने देश से आई हुई दूसरी लड़कियों को भी। यह पहिला मौका है—कितना अजीब लगता है—कि मैं इस रास्ते पर आई हूँ—एक कमरे में रात गुजारने के लिए।

यह छठी मंजिल है। मुझे कभी भी भूलना नहीं होगा। जो के साथ छटी मंजिल पर। एक बार क्रीक के निकट जंगल में कभी हम एक वृक्ष पर चढ़कर बैठे थे और जो मेरा आलिंगन करता रहा था और हम लोग नीचे की हरी भरी दुनिया को देख रहे थे। कह नहीं सकती कि आज भी

क्या जो के छठी मंजिल पर बने कमरे की खिड़कियों में से सड़कों और बिजली की बत्तियों को देखने में वही भावना पैदा होगी !

“देखो प्रिय, बहुत कष्ट तो नहीं हुआ तुम्हें। वह एलीवेटर-बवाय है उसका नाम भी जो है—जितना कुछ अपने एलीवेटर पर चढ़ाकर लाता उसे लेकर एक पुस्तक लिख सकता है लेकिन वह एक शब्द भी मुँह से नहीं निकलने देता।”

मैं सोचती हूँ कि जो का—मेरे जो का—‘जो कुछ’ से तात्पर्य श्रीरतों से ही नहीं है। क्या वे केवल ‘जो कुछ’ होती हैं ? निश्चय ही नहीं। उसका मतलब है कि वह दूसरा जो प्रेम के बारे में पुस्तक लिख सकता है। वह प्रेम को अपने एलीवेटर पर चढ़ाकर लाता है। मेरे जो का बिल्कुल ही वही अर्थ होगा।

जो को यह पता नहीं चलना चाहिए कि मेरे मौजे पुराने हैं।

जंगल में अकसर वह मेरे मौजे उतार लिया करता था। वह हमेशा यह बहाना करता था कि मौजे उतार लेने जरूरी है क्योंकि हमें भाड़-भंखाड़ों में होकर जाना होता है। लेकिन अकसर मैं वैसा करने के लिए तैयार नहीं होती थी लेकिन वह अपने हाथों से मेरे मौजे उतार देता था। ऐसा ही मजाक होता था।

आज रात वह मेरे स्टार्किंग्स नहीं उतार सकता ? बाएं पैर के मौजे में खोंफ आ गई है। आज दोपहर वह शुरू हुई थी और अब तक तो घुटनों से नीचे उतर आई होगी।

“लो अब हम पहुँच गए प्रिय ?”

पिछले दिनों में वह मुझे प्रिय कहकर नहीं पुकारता था। जहां तक मुझे स्मरण है—उसने कभी कोई उपनाम मेरा नहीं रखा था।

यह सुन्दर-सा छोटा कमरा है। बहुत अच्छी प्रकार सजा हुआ नहीं है। मैं सोचती हूँ शायद जो को किराये में बचत करनी पड़ती होगी। मेरी इच्छा थी कि वह छत वाली बत्ती बुझा दे और लैम्प को जलाकर इधर रख दे।

“जरा ठहरो जो। रोशनी बहुत अधिक है। मैं दूसरा लैम्प जला दूँ। तब तुम फिर मेरा चुम्बन कर सकते हो।”

“मैं तो ढेर-सी रोशनी चाहता हूँ । मैं तुम्हें देखना चाहता हूँ । अगर रोशनी प्रचुर मात्रा में होगी तो मैं तुम्हें और भी अच्छी तरह देख सकूँगा और जब तुम मेरे बाहुपाश में आबद्ध होगी तो मेरे लिए उन क्षणों को याद रखना और भी सरल होगा ।”

आज उसे मुझे याद रख सकने के लिए चेष्टा करनी पड़ती है किन्तु मैं कभी भी उसे नहीं भूल सकी !

मुझे प्रसन्नता है कि उसने मेरा हैट बिना गौर से देखे ही उतार लिया है । मैं उसे दीवार पर से उतार लूंगी और चुपके से कहीं कौने में छिपा दूंगी ताकि उसकी निगाह से ओझल हो जाय । वह उधर शायद शयनागार का द्वार है । मैं चाहती हूँ कि हम लोग यहाँ कुछ देर बैठें ।

“मुझे मुझे तुम्हारे बालों की याद फिर आने लगी है, डोरीन । इनकी छटा बिल्कुल वैसी ही है जैसी कि पतझड़ में ‘फ्राइज-क्रीक’ की पत्तियों का रंग हो जाता है ।”

उसने मुझे अपने बाहु-पाश में कैसे जकड़ लिया है । अब सब कुछ ठीक हो जायगा । बस अब सब कुछ ठीक हो जायगा वह मुझे यहाँ लाया है, क्योंकि आज भी पुराने प्रेम की एक हल्की-सी झलक उसके हृदय में बाकी है । उसे आज भी मेरी याद है । जिस तरह हम सभी को प्रेम की याद रहती है । हो सकता है कि मैं अतीत को पुनः पकड़ कर साकार कर सकूँ । इस बार और भी चिरस्थायी बनाकर ।

“जो तुम सचमुच कितने बदल गये हो । तुमने आज तक कभी भी मेरे रूप, मेरे केश या मेरी किसी भी चीज के बारे में प्रशंसा का एक शब्द भी नहीं कहा है ।”

वह हँस रहा है जैसी कि उसकी हमेशा की आदत है ।

“मैं जानता हूँ कि मैंने तुमसे यह कहा था कि हमारे शहर में तुम्हारे समान सुन्दर टाँगें किसी भी लड़की की नहीं हैं । और तुम्हें यह मानना होगा कि इस तरह की चीजों के बारे में मेरी जानकारी बहुत अधिक है ।”

“हाँ तुमने कहा तो था ।”

मेरी इच्छा थी कि वह ऐसा न कहता । कम से कम इतनी जल्दी नहीं ।

“मैं अभी-अभी एक पेय का प्रबन्ध करता हूँ, दरवाजे के बाहर वाली खूंट पर तुम अपना कोट टाँग दो और अब रसोई-घर की ओर चली आओ। यह रसोई-घर सा तो नहीं मालूम पड़ेगा क्योंकि मैं कभी उसका प्रयोग नहीं करता, लेकिन सबेरे का नाश्ता तुम्हें इसमें अवश्य प्राप्त हो जायगा। मैं नीचे से अभी-अभी कुछ पका हुआ गोشت मंगवाता हूँ और तब हम उसके साथ थोड़ा-सा कुछ पियेंगे।”

“तुम अपना काम जारी रखो, मेरे लिये कृपा करके बहुत हल्का तैयार करना मैं यहीं ठहर्लूँगी।”

नाश्ता अवश्य मिल जायगा। नाश्ता तो मैं सबेरे करूँगी। हाँ सबेरे ही तो, अगर जो मुझे फिर से यह स्पष्ट कर दे कि वह मुझे प्यार करता है तो मुझे किसी तरह से भाग दौड़कर बेहतर काम ढूँढ़ लेना ही पड़ेगा। क्योंकि जो के साथ बाहर आने-जाने के लिये मुझे बेहतर पोशाक की आवश्यकता पड़ेगी, और फिर मुझे डान को भी तो कुछ रुपया भोजना ही होगा।

कुछ भी हो कल सबेरे तक वह मेरा यह पुराना कोट गौर से नहीं देख सकेगा। यह भी हो सकता है कि मैं अपने को उद्विग्न-सा प्रगट करने का अभिनय करूँ क्योंकि मैंने अपना पुराना कोट पहिन लिया है, वह सोचेगा कि मेरे पास दूसरा भी है।

“जो, अच्छा हो कि अब हम लैम्प जला लें, अब तो तुम मुझे अच्छी तरह देख चुके हो।”

“मैं सोचती हूँ कि ड्रिंक कुछ स्ट्रांग नहीं है। मेरा ख्याल है कि मुझे कुछ और अधिक पीना सीख लेना चाहिये।”

जो की जंघाओं पर बैठने का यह मेरा पहिला अवसर है। अगर पीछे नजर दौड़ाकर देखा जाय तो यह सब कितना दिलचस्प मालूम देता है। वह कभी मेरे घर नहीं आया। और न मैं ही कभी उसके घर गई थी। मैं सोचती हूँ कि यही कारण था कि हम हमेशा ही क्रीक पर मिला करते थे।

“क्या तुम्हें याद है जो कि अब से पहिले कभी मैं तुम्हारी गोद में नहीं बैठी?”

“क्या वास्तव में ! वैसा होना तो सम्भव प्रतीत नहीं होता । क्या ऐसा है ?”

उसे यह भी याद नहीं ! मैं अब उसे और किसी भी दूसरी चीज की याद नहीं दिलाऊंगी । जब उसे किसी भी चीज की याद नहीं आती, तो कष्ट होता है, लेकिन उसका यह तरीका तो हमेशा का ही है ।”

“हम किसके लिए पिएंगे, हूँनी । आज रात के लिए, हह ! और आनेवाली अनेक रातों के लिए । तुम्हें यह कैसा लगता है ?”

“आने वाली रातों के बारे में तुम अभी से कैसे कह सकते हो । उसके बारे में तो अभी बहुत कुछ तुमसे कहना है ।”

‘तुमने सदैव ही मेरा ही कहा दोहराया है ।’

अच्छा, उसे यह तो याद है !

मैं चाहती हूँ कि वह अब अधिक पीने की शीघ्रता न करे । मैं उस कमरे से बहुत भयभीत हूँ । मैं किसी भी तरह से जल्दी नहीं करना चाहती । मेरे पास पाजामा तो है नहीं, फिर मैं कैसे करूँगी ।

“इतने धीरे-धीरे मत पियो प्रिय ! रात कितनी बीतती जा रही है । कल तुम्हें किस समय अपनी ड्यूटी पर जाना है ?”

“मुझे दस बजे से पहिले दफ्तर नहीं पहुँचना होता ।”

कोई आश्चर्य नहीं कि उसने अब मेरे स्टार्किंग की वह खौंफ देख ली हो । यह मेरे घुटने से इतनी ऊपर चली गई है, कि मुझे कल्पना भी नहीं थी ।

“नहीं जो अभी नहीं । अभी थोड़ा और बैठकर बातें करते रहें । अभी तो तुमने अपने बारे में मुझे कुछ भी तो नहीं बताया ।”

“अब तो हम एक क्षण भी ठहर नहीं सकते । तुम क्या सोचती हो कि मैं किस चीज का बना हुआ हूँ—सीमेण्ट का । कितनी देर तो हो गई है ।”

“लेकिन तुमने तो अपने जीवन का कुछ भी उत्सर्ग नहीं किया है । तुमने नहीं । इस दुनिया में कितनी औरतें हैं । उन सबके रहते तुम्हारे खोने की बात ही क्या है ?”

और वस्तुतः उसका क्या बिगड़ा है । उसके होंठ उतने ही कोमल और ऊष्मिन्त हैं जितने वह पहिले थे । अब वह कितनी भावना से चुम्बन

करता है। मेरा ख्याल ठीक ही तो है। कितनी कामोत्तेजना उसके चुम्बन में है। मेरी इच्छा है कि केवल एक बार वह पुराने तरीके से मेरा चुम्बन करे। मैं कुछ देर बाद उसे इसकी याद दिलाऊंगी। मुझे उम्मीद नहीं पड़ती—उसे याद होगा कि एक बार जब मैंने काट लिया था तो उसने मुझे एक चांटा जमा दिया था। मैं शर्त लगा सकती हूँ कि उसे वह सब याद नहीं होगा।

अब मुझे वह अपनी बाँहों में भर लेने वाला है।

और वह दूसरा कमरा।

ओह, जो ! कृपा कर थोड़ा कोमल और यथार्थ बनो। मुझे केवल यही न समझने दो कि तुम मुझे पुनः प्राप्त करना चाहते हो—क्योंकि—न समझने दो कि तुम मुझे उसी तरह प्राप्त करते रहे हो। कल प्रातः-काल मुझे जाने न देना ताकि मैं यह न सोच सकूँ कि तुम्हें मुझसे केवल इसी चीज की आकांक्षा है।

नहीं वह मुझे यह स्पष्ट करना चाहता है कि वास्तव में मुझे प्यार करता है। अगर वह मुझे प्रेम करता है, तो फिर उसके लिए इतना उतावला होना अनुचित क्या है। सच तो यह है कि वह मुझसे भी उतना ही उतावला होने की अपेक्षा करता होगा जितना मैं हमेशा हुआ करती थी। इसी सबके लिए तो मैं उसे प्यार करती हूँ।

“जो तुमने यह नहीं कहा कि तुम मुझे प्यार करते हो। तुम यह क्यों नहीं कहते कि तुम मुझे प्यार करते हो ?”

“क्या अभी तक तुम उसका अनुमान नहीं लगा सकी हो ?”

“कैसे लगा सकती हूँ जब तक कि तू अपने मुँह से न कहो।”

“तब तो फिर तू कभी भी उसका अनुमान नहीं लगा सकोगी। किसी लड़की को यह विश्वास दिला देना कितना असान होता है कि तुम उसे प्यार करते हो। शायद दुनिया में सबसे आसान चीज है।”

“मेरा भी यही विचार है। उनके लिए सुन लेना भी काफ़ी होता है। लेकिन उसी तरह यह भी उचित प्रतीत होता है कि अगर अब तक जो कुछ तुमने कहा उसमें तुम्हारी हार्दिक अभिव्यक्ति थी तो इतना भर कह देने में कोई हर्ज नहीं है—वास्तव में यदि तुम प्यार करते हो तो।”

“तुम क्या सोचती हो ?”

“बात मेरे सोचने की नहीं है। बात यह है कि मैं सोचना क्या चाहती हूँ। मैं यह सोचना चाहती हूँ कि इस बार यह हमारे प्रेम का ही साक्षी होगा।”

“तुमने अभी तक मुझे क्या यह कहा है कि तुम मुझे प्यार करती हो ?”

“क्या मैंने यह तुम्हें प्रकट नहीं कर दिया है, जो ?”

“और क्या यही बात मैंने एक मिनट पहिले तुमसे नहीं पूछी थी ?”

“लेकिन दूसरी लड़कियाँ ? क्या सभी के साथ तुम वैसा ही नहीं करते ?”

“अब हनी उस चर्चा को मत उठाओ। वह सभी यही माँगती हैं। मैं सोचता हूँ कि तुम उनसे कुछ अलग व्यवहार करोगी।”

मैं भयभीत हो उठी हूँ। बुरी तरह भयभीत ?

वह कम-से-कम यह नहीं कह सका कि वह मुझे प्यार करता है।

“मैं नहीं सोचती कि अब एक मिनट भी उसकी गोद में चिपके रहने की मेरी रंचमात्र भी अभिलाषा रह गई है। मैं सोचना चाहती हूँ।”

“क्या बात है प्रिय। क्या तुम समझती हो कि मैं तुम्हें इस प्रकार जाने दूँगा। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। मैंने हमेशा ही तुम्हें प्रेम किया है। और आज तो सदैव से भा अधिक।”

यहाँ लेटना कितना अच्छा लगता है। जो की बाहों में लेटना। वह कसकर मेरे फेफड़ों से सांस को बाहर निकाल देने पर तुल गया है। वह सचमुच यह सोचता है कि वह पहिले मुझे प्यार करता था। हो सकता है कि प्यार करता हो, किन्तु कालिज जाने से पूर्व तक उसे इसका पता नहीं चला था। लेकिन आज वह यह सब जान चुका है। अगर वह प्रेम करता न होता, तो उसके अन्तर में यह सब किस तरह से हो सकता था।

“मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ जो। मैंने सदैव ही तुम्हें प्यार किया है। मैंने सदैव ही, अब, यह सोचने की कितनी चेष्टा की है कि मैं तुम्हें प्रेम नहीं करती वरन् तुमसे घृणा करती हूँ—यह समझने के लिए अपने को बहकाने का प्रयत्न भी किया है। मैं आज रात जिस समय तुम्हारे साथ चली

थी तो मैंने कहा था—काकटेल रूम में दोबारा लौटते हुए—कि मैं कितना अधिक चलना चाहती हूँ तो मैं यह जानती थी कि तुम्हें प्रेम न करने की बात—मात्र एक आत्म छलना थी । तुम में अन्तर में समा चुके हो जो । मेरी आत्मा में ! मैं सोचती हूँ अब मैं कभी तुम्हें वहाँ से न निकाल सकूंगी । देखो प्रिय, मैं तुम्हें सब कुछ बता रही हूँ । वैसे ही जैसा तुमने मुझे कहा है ।”

“क्या तुम थक गई हो । याद है, तुमने कहा था ।”

“मैं ? और थकी हुई । मैं तो यहाँ से लेकर पृथ्वी के उस छोर तक नृत्य कर सकती हूँ ।”

४

मैं जो से पहिले ही जाग उठी थी ।

यह प्रभात मेरे लिए कितना महत्त्वपूर्ण था । सूर्य की प्रथम किरण वातायन से जब आई तो उसने नींद में ही मुझे कहा कि अब जागो और बीती रात का लेखा-जोखा कर लो—इस चुम्बन को और उस शब्द को एक साथ जोड़कर देख लो और उन उन्माद युक्त क्षणों को उन मूर्च्छना के क्षणों से जोड़ लो !

मुझे स्मरण है कि सूरज ने जिस समय मुझे जगाया था तो मैं सहसा घबरा उठी थी । मैं अभी तक भी उनींदी थी और लगता था जैसे आज से पहिले—उस समय तक जब बहुत छोटी थी—मैंने कभी कोई रात गुजारी ही नहीं थी जब कि मैं दिन चढ़े तक इतनी आत्मविस्मृत होकर सोती रही हूँ । उस अचेतनावस्था से इस तरह जगा देने पर मुझे सूरज पर चिढ़-सी आई थी । कुछ हो चुका था—जो अवाञ्छित था और जिसका शीघ्र ही मुझे सामना करना था ।

मैं किसी भी चीज का सामना नहीं करना चाहती थी, सिवा इसके कि जो मुझे प्यार करता है और मैं उसे प्यार करती हूँ और नटाली और ब्लान्ची और उस संकेत से अपनी ओर खींचने वाली वेश्यावृत्ति की बीहड़ता भी जैसे एक अशुभ स्वप्नमात्र है ।

लेकिन जिस समय मैंने जो की ओर देखा—वह अभी गहरी

नींद में सोया पड़ा था। उसकी मुखमुद्रा कितनी चमत्कारपूर्वक एक बालक की मुखमुद्रा से मिलती थी लेकिन कुछ ही घंटे पूर्व उसमें उस बाल-भाव का नामनिशान भी नहीं था। मेरे मस्तिष्क में शंका का सूल-सा चुभने लगा। मैंने पुनः सोने का प्रयत्न किया था। जो थोड़ा-सा हिला और मैं सम्पूर्ण रूप से जाग पड़ी थी। उसके जाग उठने से पहिले मुझे उसके लिए सुन्दर और स्वस्थ हो जाना चाहिए। लेकिन वह फिर करवट बदलकर सो रहा। उसकी इस करवट से मेरे पैर का स्पर्श उसके पैर से हो गया था। मैं इसी भय से अब तक हिली-डुली भी नहीं थी कि कहीं वह सम्पर्क मुझसे छूट न जाय।

अब वह सम्पर्क छूट चुका था और मैं जाग उठी थी और अब सोच सकती थी।

उसने कहा था कि वह मुझे प्रेम करता है। लेकिन उसने तब तक वैसा नहीं कहा था जब तक मैं उससे दूर न हट गई थी और मुझे पुनः प्राप्त करने की उसकी आतुरता बलवती न हो उठी। तब मैंने उसे बतलाया था कि हमेशा ही वह मेरे लिए सुख का पुंज रह चुका है। उसकी उस पर क्या प्रतिक्रिया हुई थी ! बस वह थोड़ा-सा हँस दिया था। तब उसने मुझे अपनी ओर खींच लिया था।

फिर वही पागल प्यार। सुकुमार, विध्वन्सकारी काम-वासना ! समय के अतिरिक्त सभी कुछ को विस्मृति में डुबो देने वाली। बहुत-ही सूक्ष्म ?

उसने फिर नहीं दोहराया था कि वह मुझे प्यार करता है। लेकिन वैसी उसकी आदत नहीं है।

उसने कहा था किन जाने कितनी और रातें उसी प्रकार आएंगी। तब अगर मेरा महत्त्व उसके लिए दूसरी लड़कियों से अधिक नहीं है तो मेरे साथ ही अनेक रातें व्यतीत करने की उसकी इच्छा क्यों है ?

वह फिर हिला और अबकी बार जाग उठा था।

“हैलो, आओ एक दूसरे का मुँह देखें। अह, तुमतो प्रातःकाल भी कितनी सुन्दर लग रही हो। मैं शर्त लगाता हूँ कि बिस्तर से उठकर तुम मेकअप कर आई हो ?”

“नहीं जो, मैं वैसी ही हूँ जैसी सोने से पहिले थी।”

“तुम जानती हो, प्रिय कि तुम पहली लड़की हो जिसे मैंने सुबह के तकिए पर इतना उज्ज्वलमुख देखा है।”

“हो सकता है कि वह सोने के समय इतनी प्रसन्न न होती हों।”

“इसमें कुछ विलक्षणता है, मैं सदैव याद रखूंगा।”

“तुम्हें यह सब याद रखने की क्या जरूरत है। तुमने मुझे रात कहा था, सम्भवतः तीन बजे कि यह सदैव ही मेरा तकिया रहेगा ?”

“ऐसा तो होगा ही। अभी सौदा कर लो। तुम्हारे सिर के सिवा कोई भी और सिर इस तकिए पर कभी न आ सकेगा।”

अब मुझे सूर्य का भय नहीं रहा था। उसने करवट बदली और मैं उठकर हाथ-मुँह धोने चली गई थी। उसने एक लड़के को आवाज दी कि वह नीचे से कुछ खाने के लिए ले आए। उसके ही कपड़े पहिनकर मैंने नाश्ता बनाया। उसे दस बजे दफ्तर पहुँचना था और अकस्मात् मैंने देखा कि साढ़े नौ बज चुके हैं।

“जो तुम्हें जल्दी करनी होगी। मेरी चिन्ता मत करो। तुम्हारे चले जाने के बाद मैं कपड़े पहिन लूँगी, तुम्हें विलम्ब नहीं होना चाहिए।”

उसने कहा कि मैं ठीक कह रही हूँ। मैं रसोई में बर्तनों से उलझ रही थी और वह जल्दी से कपड़े पहिनने में लग गया था। उसने मुझे एक या दो बार पुकारा और मैं इसी बीच में दो बार उसका चुम्बन करने गई। लेकिन मैंने उसे अपनी कोई चिन्ता न करने दी। जब वह जाने के लिए तैयार हो चुका था तो मैं शयन कक्ष में चली गई। श्रृंगार मेज़ के ऊपर वह मेरे बटुए को लिए खड़ा था। अब करीब-करीब दस बज चुके थे। उसने शीघ्रता से मुझे चूमा और रेस्ट्रॉ पर ही मुझसे मिलने की बात कहकर चला गया।

मैंने दरवाजे के बन्द होने की आवाज सुनी।

दरवाजे के बंद होने के पूर्व तक मैं आनन्दित थी। फाटक के बंद होने की आवाज से ही मेरे शरीर में सिहरन दौड़ गई थी। मैंने आश्चर्य

किया कि वैसा क्यों हुआ और मैं अपनी पर्स उठाने लगी ।

पांच डालर ?

जो ने मेरे पर्स में पांच डालर डाल दिए थे ।

उसने मुझे आज रात का पैसा चुकाया है ! मुझे पैसा दिया है ! मुझे !

मुझे पांच डालर चुकाए हैं । उसने सोचा था कि वह क्रीत रात्रि थी । हमने कच्चे भोजन के भण्डार से अण्डे मंगवाए थे । उनमें से दो मैंने नाश्ते में नहीं बनाए थे । मैं रसोई में गई । उनमें से एक ले आई उसे तोड़ा और पांच डालर के बिल को सफेदी से पोत दिया । मैंने उस बिल को शृंगार मेज के शीशे पर चिपका दिया ।

किसी तरह मैंने कपड़े पहिन लिए ।

नटाली कहा करती थी एक आदमी से अकसर दस डालर तक पा जाती थी । केवल एक घण्टे का । जिनके पास पांच डालर होते वह एक घण्टे से कुछ अधिक समय मांगते; वह यह भी कहती थी । सस्ता !

कुछ लोग तीन डालर ही भेंट करते हैं । अगर रात अच्छी नहीं होती तो वह भी मंजूर कर लिया जा सकता है । कम-से-कम एक डालर की तो कमाई होती है । दो डालर कमरे के देने होते हैं, लेकिन बहुत समय तो नहीं लगता । जिस आदमी से केवल तीन डालर मिलते हैं, उसे जल्दी से फारिग किया जा सकता है ।

लेकिन पांच डालर वाले को भी जल्दी से फारिग किया जा सकता है । दो डालर देने पड़ते हैं, बच रहे तीन । तीन डालर तो निखर्चे बचे, उससे अधिक का एक आदमी मुश्तहक भी तो नहीं ।

जो ? पांच डालर मुझे उससे मिले । केवल वह जिसे खरीद लिया जा सकता है । एक वेश्या !

मैंने विस्तर संवार दिया । मैंने अपने वस्त्र भी पहिन लिए । जो कुछ भी आज तक घटित हुआ है, ऐसा प्रतीत होता था, वह एक तरफ रख दिया जा चुका है । तिरोहित हो चुका है, समाप्त ?

मेरे जूते और स्टार्किंग अभी भी कुर्सी के नीचे पड़े थे । मैं उन्हें निकाल कर बाहर ले आई और उन्हें देखा । मैं सस्ती थी, अपने जूतों

और मौजों की तरह सस्ती !

क्या मैं सदैव सस्ती ही रहूँगी। क्या सारी जिन्दगी मैं सस्ती बनकर ही गुज़ार दूँगी ! क्या मैं तीन डालर के मौजे कभी न पहिन सकूँगी।

क्या मैं कभी की बारह डालर के जूते न खरीद सकूँगी, या कम-से-कम पांच ही डालर के ?

पांच डालर ?

सबमुच मैं यह सब कुछ कर सकती हूँ। पांच डालर तो शीशे पर ही चिपके हुए हैं। सुनो, डोरीन। जो ने तुम्हारा अनुचित फायदा उठाया। तुम एक मित्र थीं। तुम सरल-सुलभ थीं, उसने तुम्हें केवल पांच डालर दिए। क्योंकि तुम मित्र थी और सुलभ थीं। उससे उसका अभिप्राय प्रेम करना कतई न था। नटाली होती तो उसे वह दस देता। सारी रात के लिए वह पच्चीस डालर से कम न मांगती। नटाली कहती है कि व्यापार करते समय एक दाम तै कर लेना पड़ता है और फिर एक छदाम भी कम या बेशी नहीं लेना होता। वरना तो फिर सीदे की आदत पड़ जाती है। नटाली की बात यदि दोहराई जाय तो पिछली रात पच्चीस डालर की रात थी।

इतने में तो मैं एक पोशाक खरीद सकनी थी और एक हैट भी। और मुझे एक प्रेम भी खोना न पड़ता ?

दो रात्रि ऐसी गुजर जायं तो मैं पच्चीस डालर डान के लिए भी भेज सकती हूँ। गरीब डान ? वह हमेशा ही भिनभिनाता रहा। लेकिन मेरे ऊपर उसने कितना खर्च किया है। इस दुनियाँ में मुझे लाने में, दूध, औषधि, वस्त्र, भाग-दौड़, लालन-पालन और मेरी शिक्षा दीक्षा में !

जो, प्रेम और स्मृति। फाइज क्रीक पर वह प्रथम मिलन, केवल फाइज क्रीक पर ही पहिला अवसर नहीं। और वह परिमाण। यह भी कितना विचित्र शब्द है, मे उस तीसरे पहर भी यह जानती जब मैं वहाँ गई थी। मेने जो को उस समय यह स्पष्ट कर दिया था कि मुझ पर विजय प्राप्त करना उतना आसान नहीं है। उस दिन मैं अपने आप पर कितनी हँसी थी।

वही केवल एक समय था जब मे जो पर हंस चुकी हूँ। लेकिन अब

उसने मुझे मेरी ही मुद्रा में चुका दिया है ।

मैंने वह मौजा नहीं पहिना । जिसमें खोफ नहां थी, उसे जो सैण्ड्स साथ ले गया था । दूसरी मेरे बाँए पैर में चढ़ी हुई थी । मैंने खोफ खाया हुआ मौजा अपने बाँए पैर में पहिन लिया था और सीधे पैर वाले अपने पर्स में रख लिया था । पैर नंगा ही था । पाँच डालर वाला आदमी उसे ले गया था और मैं अब भी उसे प्यार करती हूँ । मैं उसे कुछ समय तक और भी न पहनूंगी ।

न जाने आज ब्लांची रेस्तराँ में आएगी या नहीं । अगर वह आई और उसने मुझसे कुछ कहा तो मैं यह दिखा दूंगी कि मेरा मूल्य पाँच डालर से अधिक है ।

तुमने मेरे साथ यह क्यों किया, जो !

जो सैण्ड्स के स्थान से मेरा कमरा बहुत दूर नहीं था । मैं चलती जाती थी, तो एक अजीब भावना मुझपर सवार होती जा रही थी । मैं अनुभव कर रही थी कि मैंने पर-पुरुष-गमन किया है । फ्राइज क्रीक के जो सैण्ड्स के प्रति मैं सदैव ही वफादार रही हूँ और उसकी स्मृति के प्रति भी । लेकिन पिछली रात मैं जान-पूछकर एक पर-पुरुष के साथ सोई हूँ ।

मैंने कभी यह जानने का प्रयत्न नहीं किया था कि दूसरी मंजिल पर जहाँ मेरा कमरा बना है वहाँ तक, जीने में कितनी सीढ़ियाँ हैं । दूसरी मंजिल पुनः आ गई । एक सप्ताह का किराया पैदा करने के लिए, जो के साथ एक और आधी रात तक रहना पड़े तो ? मैं ऊपर चढ़ने लगी तो सीढ़ियों को गिनती जाती थी ! ठीक नव्वे डालर बैठते हैं, प्रति सीढ़ी पाँच डालर के हिसाब से ।

## ५

ब्लांची उस रात को ८ बजे रेस्तराँ में आई । वह अकेली थी और हमेशा की तरह मेरी ही मेजों में से एक पर बैठी । उसने कहा कि आज मंगलवार की रात्रि होने से वह जल्दी ही काम प्रारम्भ कर रही है । कोई कारण है कि लोग और दिनों की अपेक्षा मंगलवार की रात को अपनी जेबों में अधिक पैसा लेकर बाहर निकलते हैं । शायद इसका कोई

सम्बन्ध शनिवार, रविवार और सोमवार की घर पर व्यतीत होने वाली रातों से हो। मंगल की रात्रि को पत्नियाँ शायद अपने पतियों को छुट्टी देने की मनस्थिति में होती हैं।

मैं जो के आने की बात से चिन्तित थी। उसने कहा था, कि पिछली रात के समय ही वह फिर आएगा। ६ बजे या उसी के लगभग। मैंने कहा था, “बहुत अच्छा ! जो मैं इन्तजार करूँगी।” यह बात मेरे पाँच डालर की खोज करने के पूर्व कही जा चुकी थी।

मैं इस समय भी प्रतीक्षा कर रही थी। सोचती थी जब वह आएगा तो मैनेजर से बीमारी का बहाना करके मैं घर खिसक जाऊँगी।

मैंने ब्लांची से कहा, “मैं उम्मीद करती हूँ कि आज की रात अच्छी रहेगी। मुझे आशा है कि पाँच डालर से तो तुम अधिक ही कमा लेती होगी।”

उसने चमककर ऊपर देखा। वह समूर और हैट पहिने हुए थी।

“पाँच डालर ?” उसने कहा।

“मैं तो केवल मज़ाक कर रही थी।”

मैं उसका आर्डर ले आई। मैं मेज़ छोड़कर जा रही थी, कि उसने अपना हाथ बढ़ाया और मेरी कलाई पकड़ ली।

“सुनो !” उसने कहा, “तुम यहाँ से कहां जा रही हो। मेरा मतलब यह नहीं कि आज रात को। केवल आज रात नहीं। सभी रातों को। सभी रातों और दिनों को। तुम्हारे मस्तिष्क में कौनसा लक्ष्य है। कहीं भी नहीं ? तुम कितनी सलोनी लगती हो। जितनी सुन्दर, उतनी ही कमसिन, कोई कारण नहीं कि तुम कहो कि मैं थकी हूँ। छोड़ो सब और मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें पसन्द करती हूँ और चाहती हूँ कि आज रात से ही तुम काम शुरू कर दो। कम से कम कहीं-न-कहीं तो तुम पहुँचोगी ही।”

“जब तुम खा-पी चुकोगी, तो मैं तुमसे बाहर मिलूंगी। कल रात एक दोस्त से बाहर मिली थी। आज रात तुम से मिलूंगी।”

उस रात मैंने पैंतीस डालर कमाए।

सात गुने जितना कि जो सैण्ड्स को मुझसे उम्मीद थी।

## चौथा अध्याय

१

उस रात चार आदमी थे ।

मेरा ख्याल है, हालांकि, मुझे इस तरह लिखना चाहिए कि केवल एक आदमी था, और तीन बिजनेस-ट्रान्जैक्शन्स (व्यापारिक आदान-प्रदान) थे । आदमी, पहला ही आदमी था । वह उन चारों में सबसे सस्ता था—पांच डालर वाला—लेकिन एक वेश्या के रूप में वह मेरा प्रथम पुरुष था । मैंने अपनी स्मृतियों में उसे एक और सुरक्षित रख दिया है । उसकी आकृति मेरे समक्ष आज भी साक्षात् खड़ी है । मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा । मैं उसका नाम भी नहीं जानती । लेकिन उसकी छायामूर्ति जो सैन्ड्स की अपेक्षा आज भी मेरे मन में अधिक स्पष्ट है !

वह भूरी पतलून और नीला कोट पहिने हुए था । मैं यह कह सकती हूँ कि उसकी नेकटाई किसी और रंग की थी । लेकिन उसकी रंगत मुझे अभी तक याद है । उसकी टाई वाले बटन के दबाव से उसके टेडुएं के ठीक नीचे एक नीला निशान बन चुका था । उसका अर्थ हुआ कि वह सस्ता कालर बटन रहा होगा । उसकी कमीज का दाहिना कफ थोड़ा फट गया था । किसी समय उसके बाल घुंघराले रहे होंगे । उसकी आयु लगभग मेरी आयु से दुगुनी होगी । उसके बालों की मस्तक वाली रेखा उड़ती जा रही थी, और बाल किसी प्रकार भी घुंघराले नहीं कहे जा सकते थे । लेकिन

मैं कल्पना कर सकती हूँ कि कभी वह वैसे रहे होंगे ।

उसके सीने पर एक नीली धारी इधर से उधर तक खिंची हुई थी । उसने कहा था कि वह चोट आटोमोबाइल-दुर्घटना में लगी थी । मैंने उससे पूछा था कि उस दुर्घटना में लगी चोट ने उसे क्या बहुत पीड़ा पहुँचाई थी ? तो उसने कहा था, “कहो तो, बेबी । हम यहां आटोमोबाइल दुर्घटना की मीमांसा करने तो नहीं आए हैं ।” वह केवल पांच डालर वाला आदमी था । वह जानता था कि वह उससे अधिक समय लेने की अपेक्षा ही नहीं कर सकता था ।

उसके दाहिने मौजे की एड़ी में एक सूराख था । मेरी कुछ ऐसी इच्छा हुई कि उसका मौजा ठीक कर दूँ । वह कहता था कि वह विवाहित है और मैं आश्चर्य कर रही थी कि उसकी पत्नी ने उसका मौजा ठीक क्यों न कर दिया ।

हाँ, उन चार में से केवल एक आदमी मेरे पास बचा है । पहला, जिससे मैंने पैसा लिया । दूसरे तीन सैनिक थे जिनका जीवन परेड का अभ्यस्त हो गया होता है । वे तीनों अपनी चेष्टाओं में लगभग समान ही थे ।

जब हम कमरे से निकले और पगडंडी पर आए तो उसने कहा था, “अन्यवाद बेबी ।”

इन चारों में केवल वही ऐसा था जिसने मुझे टिप नहीं दिया । जब मैंने ब्लांची से सब कुछ बताया कि मुझे टिप नहीं मिला है तो वह मुझ पर बरस पड़ी ।

“तुम्हें यह सब भटक ही लेना चाहिए, डोरीन ? यह सब बातें सीख लेने की हैं । जब वे तुम्हें टिप न दें, तो जिस समय वे कपड़े बदलते हों, उन पर मँडराती रहो और उनकी जेबों में हाथ डाल दो । तुम्हें सदैव ही कोई बिल वहाँ मिल जायगा । अधिक न सही, लेकिन कुछ फुटकर तो कहीं गया ही नहीं । उनसे कहो कि तुम उनके फिर भी पधारने की आशा रखती हो । पैसे निकाल लो । उनसे कहो कि वह इतने सस्ते न बनें । वे तुम्हें वह सब रख लेने देंगे । अपनी इस अतिरिक्त आय को तुम्हें अंगुली डालकर उभारना ही होता है—तभी टिप मिलता है ।”

“उसे तो पिछले ही सप्ताह एक आटोमोबाइल दुर्घटना में चोट लगी थी,” मैंने कहा, “उसकी छाती पर बुरी तरह खरोंच लग गई थी। उसने अभी तक डाक्टर को नहीं दिखाया। मुझे भय है कि कहीं उसे कोई ऐसी चोट लगी न हो, जिसे कि वह अभी जानता नहीं है।”

ब्लांची ने बड़ी सख्त निगाह से मेरी ओर देखा, “तुम्हें तुम्हारे पाँच डालर मिल गए न ? वस तुम्हारा काम खत्म हुआ ?”

पैतीस डालर मैंने कमाए थे, वह असल में सब मुनाफ़ा ही न था। जब आदमी व्यापार करता है तो ऊपर का खर्च हमेशा लगा ही रहता है। ब्लांची उसके लिए ‘व्यापार’ शब्द प्रयोग करती है—उसके वास्तविक अर्थों में !

रेस्तराँ से निकलकर जब हम बाहर आए तो हम एक जोड़ी नया जूता लेने के लिए पड़ोस में जूते की दुकान पर गए। इतने समय ब्लांची मुझे इस व्यापार का रहस्य अच्छी तरह समझाती रही।

“इस व्यापार में तुम्हें केवल अपनी सामर्थ्य पर ही निर्भर नहीं रहना होता। उसके साथ अनेक खर्च भी तो लगे होते हैं। इस व्यापार की अनेक शाखाएँ हैं। उनमें से कोई भी तुम अपने लिए चुन सकती हो। केवल उतना ही व्यापार सिर पर लो जितनी तुम्हारी सामर्थ्य हो। कोई भी लड़की कम-से-कम उस पेशे में अपनी बिसाब से ज्यादा श्रम नहीं कर सकती। लेकिन किसी भी शाखा में तुम काम करोगी जितना बिज़नेस तुम लोगी उसे पूरा करने में व्यय की मात्रा भी उतनी ही अधिक होगी। तुम्हें पसन्द हो तो तुम एक “कालगर्ल”<sup>१</sup> का काम भी कर सकती हो। लेकिन उसके लिए तुम्हें सन्ध्याकालीन पोशाक पर बहुत खर्च करना होगा। तुम एक हाउस गर्ल<sup>२</sup> के रूप में भी काम कर सकती हो। उस समय तुम्हें नेगलीजीज<sup>३</sup> को छोड़कर और कुछ भी व्यय नहीं करना होगा, लेकिन हाउस गर्ल को अपनी सुरक्षा के लिए बहुत खर्च करना पड़ता

१—वह वेश्या, जो टेलीफोन इत्यादि की सहायता से घर बैठे बिज़नेस करती है

२—वह वेश्या जो कि किराये पर कमरा लेकर घर में काम करती है।

३—एक ढीली-ढाली अनौपचारिक पोशाक।

है। तुम एक अपार्टमेण्ट गर्ल<sup>१</sup> के रूप में भी काम कर सकती हो, लेकिन उसके लिए तुम्हारे पास हैड वेटरों की एक लम्बी सूची रहनी चाहिए। सड़क पर घूमकर स्वयं ही अपने लिए व्यापार खोजने में तो ऊपर का खर्च बहुत थोड़ा पड़ता है। ऐसी स्थिति में जितना परिश्रम करना होता है, उतना वसूल नहीं होता। लेकिन उस समय तुम स्वयं अपनी मालिक रहोगी, मर्जी के मुताबिक काम करने में स्वतन्त्र तो रहोगी।”

काश !

व्यापार, ऊपर का खर्च, घण्टे के अनुसार प्रेम का विक्रय। मैं वस्तुतः उस समय तक यह समझ नहीं सकती थी कि एक काल-गर्ल या एक अपार्टमेण्ट-गर्ल किस तरह की होती होगी। मैं यह भी न जानती थी कि एक हाउस-गर्ल का क्या मतलब होता है। मैं यह सोचती थी कि अगर एक काल-गर्ल को सुन्दर सन्ध्याकालीन पोशाक पहिनना आवश्यक है, तो कम-से-कम सड़कों पर घूमकर काम करने की अपेक्षा यह काम बहुत ही आनन्दप्रद होना चाहिए। इन सब चीजों के बारे में आगे चलकर मुझे सब कुछ विदित होना था।

उस पहिले आदमी के अतिरिक्त एक पाँच डालर वाला और दो दस-दस डालर वाले आदमी थे। इसके अतिरिक्त पाँच डालर टिप का कुल योग था। ब्लांची उस रात मुझे खड़ी रहकर शिक्षा देती रही, बराबर वर्जना करती रही—मुझे जो कि बिलकुल ही कुपात्रा शिष्या थी। वह बड़ी विशाल हृदयता से मुझे एक गलत राह पर सही कदम रखते हुए देखना चाहती थी। वह अपने व्यापार को बड़ी हार्दिकता और गम्भीरता से ग्रहण करती थी। वह सुन्दर थी, कोमल पोशाक और ऊँचा टोप पहिनकर एक किशोरी और अबोध बनने का प्रयत्न करती थी। लोग इस चीज को पसन्द करते थे। इसपर भी वह बड़ी सख्त बन सकती थी। वह कभी-कभी अपना मिज़ाज़ खराब कर लेती और राह चलते अगर वह किसी को टोकती और वह जरा चालाकी से उसके इशारे की प्रतिस्वीकृति करता; तो वह इतने अनर्गल शब्दों की बौछार कर सकती थी कि सुनने वाला हक्का-बक्का रह जाय।

१—जो एक सुन्दर फ्लैट लेकर अपने ग्राहकों को अपने यहाँ ही बुलाती है।

इस नये पेशे को स्वीकार करने से पहिले सबसे पहला सवाल मैंने उससे पूछा था, “लेकिन काम समाप्त कर लेने पर तुम उन्हें विदा किस प्रकार करती हो—आखिर कैसे ? सब कुछ समाप्त करने के बाद । क्या केवल गुड-नाइट कहना होता है ? या कुछ भी नहीं । फिर कब मुलाकात होगी—यह भी नहीं कहतीं । क्या वह लोग कभी शाम के खाने वगैरह के लिए नहीं पूछते और अगर पूछें तो स्वीकार भी करना चाहिए कि नहीं । आज जब हम जूते पहिनने गई थीं तो उस जूता पहिनाने वाले ने तुमसे कुछ कहा था या यूँ ही सौदा समाप्त हो गया । क्या उसने तुमसे शाम के खाने के लिए पूछा था या उसने केवल गुड-नाइट ही कहा था बस केवल ?”

काम करने से पहिले उसने भेंट के लिए एक कमरे का प्रबन्ध कर लिया था । उसने मुझे इस बात से भी अगाह कर दिया था कि इस प्रकार के काम-काज के लिए मुझे कभी भी अपना घर प्रयोग नहीं करना चाहिये । उसने कहा था, “इस प्रकार की गति विधि किसी भी समय तुम्हें कठिनाई में फंसा सकती है । अपने ही कमरे में अगर तुम एक मेजबान की तरह पश आना शुरू कर दोगी और अपने घर में अनेक मित्रों का स्वागत करना शुरू कर दोगी तो अनेक मनचले युवक इसका दुरुपयोग कर सकते हैं, वह तुम्हारे यहां टपकना प्रारम्भ कर देंगे और सस्ते तोहफे लाकर तुम्हें पेश करेंगे ? इसके बाद वह यह भी भूलना शुरू कर देंगे कि तुम कोई व्यापार भी करती हो । तुम्हें अपना माल बेचना है । याद रखो कि यह व्यापार करते हुए न तो तुम्हें उधार-खाता चालू करना है और न खर्चात करना है । और घर पर ‘काम करने’ का अर्थ है पुलिस का खतरा सिर पर ओढ़ना । जब तुम घर पर काम करोगी तो तुम्हें किन्हीं अर्थों में हाउस-गर्ल कहा जाएगा । और अगर हाउस-गर्ल नीचे की दुनिया के लोगो को अपनी कमाई का आधे से अधिक भाग नहीं चढ़ाती, तो पुलिस का संकट सिर पर सदैव उपस्थित रहता है ।”

मुझे यह भली-भाँति स्मरण है कि मैंने ब्लांची से कहा था, “मैं पुलिस के बारे में जितना कुछ सुनती हूँ उस पर मुझे विश्वास नहीं है ।”

उसमें से अनेक हमारे व्यापार से—जोकि दुराचार के अड्डे कहलाते हैं, से—संबन्धित होते हैं। अपनी आय का कुछ अंश उन्हें भी देना होता है। अनेक हाउस-गर्ल इसी प्रकार काम चलाती हैं। लेकिन वे लड़कियाँ भी जोकि इस प्रकार पैसा नहीं देती—अगर उनकी शिकायत हो जाती है—तो उन्हें भी प्रदर्शन करने पर मजबूर होना पड़ता है। और अगर तुम हाउस-गर्ल के रूप में काम करती हो और बॉसिस (अड्डों के संचालकों) से समझौता करके नहीं रहती, तो शिकायतें रात दिन होती हैं।”

जिस इलाके से ब्लांची ने मुझे परिचित कराया था, वह नगर भर में सर्वश्रेष्ठ इलाका था। यह कोई अच्छे दाम देने वाला क्षेत्र तो न था, लेकिन यह एक उपनगर का मध्यवर्ती स्थल था। यही आस-पास में अनेक फिल्म हाउस, जलपान गृह और शराबखाने थे और उनके कारण सड़कें भीड़ से खचाखच भरी रहती थी। केवल एक ही ब्लाक में से गुजरना पड़े और लड़की अगर धीरे-धीरे चले तो सौ आदमी उसके निकट से गुजर सकते हैं, ये घूमने वाले आदमी केवल एक ही उद्देश्य सामने रखते हैं और वह उद्देश्य यह है कि वह अपनी पसंद की कोई लड़की पा जाय। ऐसे लोग अच्छे तगड़े गाहकों के रूप में प्राप्त होते हैं।”

इन गालियों के नुक्कड़ों पर पुराने फैशन की हवेलियाँ बनी हुई हैं। इन हवेलियों के मुख्य द्वार उन्नीसवीं शताब्दी की शैली पर बने हुए हैं और इनकी एक के बाद दूसरी कतार चली गई है। यही हवेलियाँ इस पतित व्यापार का केन्द्र बन गई हैं। इन्हीं में से एक हवेली में ब्लांची का अपना ‘व्यापार-कक्ष’ था। उसने तात्कालिक रूप से इस कमरे को किराये पर नहीं लिया था वरन् प्रत्येक आदमी के हिमाव से हाथ के हाथ हिसाब चुकता कर देती थी। “तुम्हारे पास सदैव दो डालर फुटकर होने आवश्यक हैं,” उसने मुझे सतर्क कर दिया था। “तुम उसे तकिये के नीचे छोड़ दो, जब तुम बाहर निकलो, तो मकान मालिक की घंटी बजा दो, किसी भी समय चाहे दिन हो अथवा रात और मकान मालिक या उसकी पत्नी बिस्तर ठीक कर देंगे और उस कमरे को पुनः साफ-सुथरा कर देंगे। ताकि अगली बार के प्रयोग के लिए वह बिल्कुल तैयार रहे। वह पच्चीस डालर प्रति सप्ताह के हिसाब से भी किराये पर कमरा दे देते हैं। उसे

तुम चाहे जितनी बार प्रयोग करो, वे फिर भी उतनी ही सेवा करने के लिए प्रस्तुत रहेंगे। लेकिन यह साप्ताहिक व्यवस्था ठीक काम नहीं करती। अगर उन्हें साप्ताहिक रूप से पैसा दिया जाय तो वह सेवा के प्रति थोड़े उदासीन हो जाते हैं। इसलिए हर बार के लिए दो डालर अदा करना ही उचित होता है। अगर तुम्हारा कारोबार बढ़ता है तो उन्हें भी अधिक धन की प्राप्ति होती है। ऐसा होने पर किसी सप्ताह में तुम पर संकट आता है या तुम काम नहीं करती तो वे तुम्हारा काम चला देते हैं। यह तो व्यापार में सभी जगह होता है। परन्तु इसके लिए साख होनी बहुत जरूरी है।

ब्लाची के कक्ष को तो दहलीज कहा जानकता था। उसके पास अपनी निजी चाबी रहती थी और वह अपनी निजी चीजें भी वहां रखती थी—मुंह-हाथ धोने और श्रृंगार करने की सामग्री। “तुम्हें इससे अधिक की क्या आवश्यकता है। अब चिन्ता काहे की है?” मैंने कभी यह कल्पना भी न की थी कि मैं इस कक्ष के बारे में इतनी निर्लक्ष्य होकर बात-चीत कर सकूंगी जोकि प्रेम की इस कौतुक-क्रीड़ा में मेरे सिर का साया होने वाला था।

एक कन्धा और एक ब्रश !

फ्राइज क्रीक के पास वाले खुले मैदान में जहां जो सैण्ड्स मुझे मिला था मैंने जैरेनियम के पौधे बोए थे। उसकी पौध मैं घर से लाई थी। जैरेनियम मुझे पसंद है। फ्राई के बग में वायडी के आम-पारा जगली फूल उगते हैं। लेकिन खुले मैदान में एक भी फूल नहीं था। मैं सोचती थी कि मेरे और जो के स्वप्नों की सुन्दरता के लिए कुछ फूलों का होना अनिवार्य है। जैरेनियम के फूलों के पौधे लगाने में मुझे उतना ही सुख हुआ था मानो कि मैं अपने विवाह के लिए छोट खरीद रही हूँ या अपने विवाह मंडप को सजा रही हूँ। मैं सोचती, कि पौधों से हरी घास की बंजरता समाप्त हो जाएगी। ये पौधे कमरों का काम देने लगेंगे अन्यथा वह घास केवल हरे गलीचे का ही काम देकर रह जाती थी। अब आवश्यकता केवल एक कन्धा और ब्रश की थी, और दो डालर शिकन पड़े हुए बिस्तर पर तकिये के नीचे रखने की !

ब्लांची ने जो सुभाव मुझे दिए थे उनकी व्यवस्था करने के लिए जिस मकान पर हम गए वहा का मालिक पुरुष न होकर एक स्त्री थी। वह पतली थी। लगता था कि जैसे किसी ने उसे पानी में डुबो दिया है। उसके भूरे बालों के गुच्छे उसकी कनौतियों पर लटक रहे थे। उसके स्लीपर बहुत ही फटे हुए थे और उसकी टांगें इतनी पतली थीं कि उसके मौजे खाली से दिखाई पड़ते थे। वह अपने हाथ सामने बांधकर खड़ी हो गई और मेरी ओर ताकने लगी। लगता था कि उसके मन में मेरे प्रति मैत्री अथवा स्वीकृति जैसी कोई भावना नहीं है।

“मैं तुम्हें यह भली-भाँति विदित करा देना चाहती हूँ, जैसा कि तुम्हारी मित्र भी भली-भाँति जानती है क्योंकि इस हवेली में बहुत दिन से वह भी काम करती है—कि मेरा मकान एक प्रतिष्ठा सम्पन्न मकान है। मैं किसी प्रकार की कोई चीख-पुकार या गुंडागर्दी सहन नहीं कर सकती। मैं पियक्कड़ोको भी पसंद नहीं करती क्योंकि वह शोर मचाते हैं और उस से मेरे दूसरे किरायेदारों के काम में विघ्न होता है। जिस समय तुम घंटी बजाओगी तो मैं तत्काल तुम्हारा कमरा ठीक कर दूँगी, किसी भी समय, लेकिन मैं उम्मीद करूँगी कि हर रात्रि को तुम चार डालर निश्चय ही छोड़ती चलोगी। अगर साप्ताहिक रूप में कमरा लेना चाहो तो बात दूसरी है।”

ब्लांची ने बीच में ही बात काट दी। “हा” उसने कहा, “तुम बहुत शानदार मकान चलाती हो माना लेकिन जब तक यह लड़की अच्छा काम-काज चलाने योग्य होती है, तब तक उसके साथ उदारता से पेश आना। अगर तुम उसकी आमदनी से असंतुष्ट होकर बक-भक लगाओगी तो मैं इस मकान में आना छोड़ दूँगी और पुलिस तुम्हारे पीछे लगा दूँगी।”

उस-औरत ने मुझे घबराहट में डाल दिया था लेकिन ब्लांची को नहीं। मेरा कमरा सीधा ब्लांची के कमरे के पीछे था। कमरा रद्दी किस्म के फर्नीचर से सजाया गया था और सीलनदार था। जिस समय बिजली की बत्ती जलाई गई थी तो मैंने एक क्षण के लिए आँखें बंद कर लीं थीं।

पिछली रात जो सैण्डस वर और वधू की बातें कर रहा था। वर ही

वधू को निर्वसन करता है। वर ही वधू को बिस्तर में लेटाता है। लेकिन मेरा ख्याल था कि मैं कभी भी जो की वधू बन सकती हूँ। उन सन्ध्याओं के बाद भी जो स्कूल से घर आने के बाद उसके साथ व्यतीत होती थीं, आज रात के बाद भी और अनेक इसी प्रकार की रात्रियों के बाद भी। जब वह समय आएगा, मेरा विचार है—कि मैं पुनः प्रेम की पुष्पांजली लेकर उसके सम्मुख उपस्थित हो सकती हूँ, मैं उसके मस्तक पर आज भी अपनी सचाई का किरीट प्रस्तुत कर सकती हूँ, मैं उसके लिए माधुर्य की सृष्टि कर सकती हूँ, नैतिक उच्चता, गौरव और प्रेमालिंगनों की प्रेरणा भी पैदा कर सकती हूँ। एक वधू के रूप में मैं आज तक प्रकट की गई भावना को एक नवीन और चिरस्थायी प्रेम में परिवर्तित करने की आकांक्षा रखती हूँ। अपने चारों ओर की दुनिया में जिस छत के नीचे हम रहेंगे, जिन किवाड़ों के अन्दर हम आवृत्त होंगे उन पर मैं अपने तारक स्वप्नों के सुन्दर चित्रकारी कर दूँगी।”

यह सब कुछ मैं अपने आप से कह चुकी थी। ऐसा करते समय मेरे मन में उस जाग्रत विचार का उदय उस अज्ञात वर की कल्पना करते-करते हुआ था जिसके साथ वह जादूई घटना घटित होगी और उस समय और परिस्थिति को सोचकर जिसे कि वैवाहिक रात्रि की सज्ञा दी जाती है।

अब मैं उस स्थिति का सामना कर रही थी जोकि मेरे सम्मुख उपस्थित होने वाली थी—एक मात्र सौदे के रूप में। कोने में एक कोच पड़ी थी भद्दी, गन्दी और धूल-धूसरित। एक कुर्सी—नहीं दो कुर्सियाँ ! फटा-पुराना गलीचा, बिना कैम्प के पर्दे...

अलमारी का द्वार खुला हुआ था। मैं उसके रिक्त हुकों और उसकी वीरानी को देख सकती थी। मैंने कभी यह भी कल्पना की थी कि बलोजेट के खुले द्वारों को देखकर मैं रात को अपने किसी प्रेमी की गोद में सो जाऊँगी। पोशाक वहाँ लटकती होंगी—मेरी पोशाक और जवाहरात, इसमें शक नहीं कि मेरी पोशाक सस्ती होंगी, क्योंकि मेरा प्रेमी कोई समृद्ध आदमी तो होगा नहीं। मुझे अपनी पोशाक संवारने के लिए भी अधिक पैसा कहाँ उपलब्ध हो सकेगा। जूते और स्लीपर अलमारी की

दीवार से सटे होंगे । हैट एक खूँटी पर टंगे होंगे । सभी वस्तुएँ नई होंगी और वस्तुतः वह उस नए सुचिन्तित जीवन के लिए प्राप्त की गई होंगी ।

पिछली रात मैंने एक क्लोजेट देखी थी जिसमें जो सैण्ड्स के कपड़े लटक रहे थे ।

पिछली रात जब व्लाची ने मुझे यह बतला दिया कि एक ग्राहक को किस तरह तैयार किया जाता है तो मुझे क्लोजेट इतना ही रिक्त प्रतीत होता है जितना वचन भंग की हुई घड़ी का सूनापन ।

मकान मालकिन ने मुझे मेरे कमरे की चाबी दे दी थी, बजाने के लिए घंटी का भी संकेत कर दिया था और सचेत कर दिया था कि प्रत्येक बार मैं बाहर जाऊँ तो बिजली बुझाना हर्गिज न भूलूँ और इतने आदेश पाकर मैं व्लाची के पीछे-पीछे सड़क पर उतर गई थी ।

“लेकिन मैं करूँगी क्या,” मैंने कहा था, “मैं तो जानती नहीं, काम कैसे शुरू करना है ।”

मैंने सोचा यह था कि काम अधिक मुश्किल नहीं होगा । अनेक बार मैंने रेस्तराँ की खिड़कियों से झाँक कर देखा था, सड़क पर चलती हुई औरतों को पुरुषों से बात करने के लिए रुकते हुए भी देखा था । वह सब कितना सरल दिखाई देता था । नटाली ने कहा था, “ओह ज्यो ही तुम उनके निकट से गुजरो वे तुम्हें पहिचान लेते हैं, केवल यही सीखना होता है कि तुम किस चीज की तलाश में हो । हाँ ।”

अब मेरे सामने अपना प्रथम ग्राहक खोज निकालने की समस्या थी । यह काम उतना आसान नहीं निकला । कुछ अपने आपे का भान और कुछ भय मेरे ऊपर सवार हो गया । अपने शरीर को बेचने का काम एक सीधा-सच्चा काम कहने-सुनने में लगना था लेकिन अब तक मेरा सामना उससे मुँह दर मुँह नहीं हुआ था ।

व्लाची ने कहा था, “आज रात मैं तुम्हारी मदद करूँगी, तुम जल्दी ही इस हुनर को सीख जाओगी । तुम्हें यह अन्दाज लग जाएगा कि किस आदमी पर प्रयत्न करना सार्थक होता है ।”

लेकिन पैसा-यानी कीमत—उन्हें मैं किस प्रकार स्पष्ट करूँगी कि मैं कितना पैसा लेती हूँ ? और कितना पैसा बिना दिये नहीं चलेगा ।”

अकस्मात् मेरे लिए यह जानना कितना आवश्यक हो गया कि मेरी कितनी कीमत है। अलग-अलग इलाकों में लड़कियों का मूल्य बदलता रहता है। मैं यह जानती थी। मुझे यह विदित था कि नटाली दस डालर की बातें किया करती थी, लेकिन वह इस इलाके में काम नहीं करती थी।

“वह तो तुमसे स्वयं ही पूछ लेंगे कि तुम कितना चाहती हो” ब्लाची ने कहा, “तुम्हारा उत्तर यह है, क्या मैं एक दस डालर के बिल के अनुरूप नहीं दिखाई पड़ती ? और अगर देखने-भालने में वह खर्चीली तबियत के आदमी प्रतीत हो तो यह चर्चा नहीं भी की जा सकती है। तब पैसे की बात उन्हीं पर छोड़ देनी चाहिये।”

सहसा, ब्लाची मेरी बाजू पर हाथ रखकर रुककर खड़ी हो गई। हम जैसे-जैसे चल रहे थे, वह अपनी नजर का प्रयोग करती जाती थी। मैंने देखा नहीं था। एक आदमी हमारे पास से गुजर चुका था, रुककर खड़ा हो गया था और शो केस में कुछ देखने का बहाना कर रहा था, लेकिन हकीकत यह थी कि वह हमारे लिए रुककर खड़ा हुआ था।

“जाओ उसे हासिल करो।” ब्लाची न आज्ञा दी, “वह प्रतीक्षा कर रहा है। अगर तुम उसे ठीक करलो, तो सीधी कमरे में चली जाना। मैं वहां मोड़ पर खड़ी होकर देखती हूँ कि तुम किस तरह काम करती हो।”

“मैं मुड़ी और पीछे चली गई। वह आदमी नीला कोट और भूरी पतलून पहिने हुआ था। उसने कहा—“हैलो, क्या हाल-चाल है।”

“आप क्या कहते हैं।”

“मेरी तरफ से सब ठीक है, सिस्टर (बहिन) तुम कितनी सुन्दर लगती हो, लेकिन मैं केवल पांच डालर ही खर्च कर सकता हूँ।”

“क्या मैं दस डालर के बिल के अनुरूप दिखाई नहीं देती।”

“हो सकता है कि तुम इससे भी अधिक सुन्दर दिखाई पड़ती हो। लेकिन मेरे पास केवल पांच डालर ही हैं। चाहे लो, चाहे छोड़ दो।”

मेरे मन में हुआ कि मैं लौट जाऊँ। मैं यह साबित करने पर तुली हुई थी कि अपरिचितों के लिये भी मेरा मूल्य पाँच डालर से अधिक है जितना कि जो सैण्ड्स ने मुझे दिया था और यह मूल्य उसने उस वस्तु का लगाया था जिसे एक औरत अपने प्रथम चुम्बन के साथ पुरुष के कदमों पर समर्पित

करती ह । लेकिन मेरे कदम लीटते नहीं थे ।

मैं इस प्रथम अनुभूति से डर रही थी । वस्तुतः असली काम से नहीं — क्योंकि उस सुबह जब मैं जीना चढ़कर अपने कमरे पर गई थी तो मेरा सम्पूर्ण विचार-सामर्थ्य यही दोहरा रहा था, “कोई भी हो । किसी को भी मंजूर कर लो । अन्तर ही क्या है । सभी एक से तो हैं । पुरुष सभी एक से तो होते हैं । मुझे जिस चीज का डर था—वह कार्य प्रणाली का था । एक नया आदमी होगा । बिल्कुल ही अजनबी । उसे कभी देखा भी न होगा, उसके साथ एक कमरे में बन्द रहना होगा । चार दीवारें, छत दरवाजे !”

बिस्तर !

और फिर उस बिस्तर पर के कार्य से फरागत हासिल करना ।

ब्लाची कह चुकी थी, “उससे फरागत हासिल करो । तुम्हें अभी दूसरे की भी तलाश करनी है ।”

बस इस सब का इतना ही मूल्य है । फरागत हासिल करना !

और जो के साथ फ्राइज क्रीक पर व्यतीत होने वाले वह क्षण ! उन्हें सट्टेज कर रख लो, डोरीन ! इन क्षणों को सदैव ही चलते रहने दो । उन क्षणों को कभी गुजरने न दो । जो को सुरक्षित रखो । जो ! अगर हम दस मिनट और इन्तजार करें तो दस और बढ़ जायेंगे । मुझे फिर चूमो, जो ? ठहर जाओ ? अभी नहीं । अभी केवल चुम्बन ही करते जाओ । सुनो उस भाड़ी में कहीं साँप तो नहीं है ? मुझे डर लगता है, जो ! मुझे कस कर पकड़ लो । क्या आकाश नीला नहीं है । तुम मुझे इस तरह आलिंगन क्यों नहीं करते कि हम दोनों नीले आकाश को देखते रहसकें ! वह बादल ! वहाँ पर ? देखो ? वहाँ उधर ! कैसा भैस के आकार-सा बना है । मैं तो भैसों के बारे में बहुत कुछ जानती हूँ । मैं तस्वीरें देख चुकी हूँ—वह बादल !

“मेहरबानी करके जो, आज इस शाम को कुछ और लम्बा चलने दें । बहुत लम्बा !”

ब्लाची ने कहा था, “जल्दी से उससे फरागत हासिल करो ।”

मैं जानती थी कि मुझे वही करना है क्योंकि मैं एक नए व्यापार में

प्रवेश करने जा रही थी, और मुझे अपना व्यापार शुरू कर देना ही था ।

इसलिए मैंने अपने ग्राहक से कहा, “बहुत थोड़ी दूर । वहीं जरा मोड़ के उस ओर ।”

दरवाजे पर पहुँच कर मैंने चाबियाँ टटोली । वह आदमी संतोष और खामोशी के साथ खड़ा रहा । हम अन्दर चले गये । अपने कमरे के पास पहुँच कर मुझे फिर चाबी टटोलनी पड़ी । वह आदमी मेरे पीछे खड़ा रहा । वैसे ही संतोष और खामोशी के साथ ।

मैंने बत्ती जला दी । दरवाजा खुला छोड़ दिया । उसने बंद कर दिया । जब चाबी रखी तो मेरा पर्स खुला रह गया । मैं खड़ी होकर बिस्तर की ओर देखने लगी ।

उस आदमी ने एक कुर्सी पर अपना टोप फेंक दिया था । उसने कोट उतारना शुरू कर दिया था ।

एक निमिष के लिए मेरे शरीर में से प्राण उड़ गए थे । मुझे केवल इतना ही ज्ञान था कि मेरी हथेलियाँ ठंडी पड़ गई थीं । इतनी ठंडी, कि उनमें पीड़ा होने लगी थी । मैंने उस आदमी की ओर देखा । उसका कोट उतर चुका था । वह अपनी पतलून के बकसुए खोल रहा था ।

एक अपराजेय शत्रु मुझे बाहर धकेल रहा था, मेरी अनुभूतियों और ज्ञान की दुनिया से बहुत दूर । मैं घर से दूर जा रही थी । अपने डान और बहिन को छोड़ती जा रही थी ।

## २

मैंने तकिये के नीचे दो डालर रख दिये थे । जब मैं ब्लांची के पास पहुँची, तो मैं फिर प्रसन्न हो गई था । पहले कुछ मिनटों के बाद हरेक चीज बड़ी आसान हो गई थी ।

तुम्हें केवल इच्छुकता दिखानी पड़ती है और यह प्रकट करना होता है कि तुम्हें लुत्फ आ रहा है । जैसा कहा जाय वैसा करती चलो । दूसरे स्थानों पर दूसरी स्त्रियाँ नृत्य कर रही थीं, खा-पी रही थीं, अभिसार कर रहीं थीं और चमक-दमक की पोशाक पहिने आमोद-प्रमोद में व्यस्त थीं, दूसरी औरतें अपने शिशुओं को ले रहीं थीं, प्रातः काल अपने पतियों

को ट्रेन पर पहुँचाने आ रही थीं, ब्रिज खेल रहीं थीं और सिनेमा देख रहीं थीं, दूसरे स्थानों पर स्त्रियाँ अपने-घर और पति से भरी-पूरी थी और उन्हें अचरज होता था कि अनेक दूसरी स्त्रियाँ असतुष्ट क्यों हैं।

यह सब कितना सरल है। अगर तुम इन सभी चीजों को ध्यान में रखो और जैसा कहा जाये वैसा ही इच्छापूर्वक करने का नाटक करती जाओ तो सब कितना सरल हो जाता है।

मैंने अपने वस्त्र पहिन लिए थे और फिर बाहर निकलकर हाल में आगई थी। सीड़ियों पर उतरते हुए उस आदमी ने कहा था, “बैल, इननी देर तक, धन्यवाद?”

मुझ में कोई भी अन्तर नहीं आया था। मैं बिल्कुल मैं ही थी। मैं अब भी जैरेनियम के फूल पसंद कर सकती थी। मैं निर्वसन हो चुकी थी, लेकिन अब पुनः वस्त्र-धारण कर चुकी थी और पास से गुजरने वाला कोई भी यह नहीं कह सकता था कि मैं अभी-अभी निर्वसन हो चुकी हूँ। वस्त्रों के नीचे की देह भी वैसी ही थी। मैं आकाश की ओर देख सकती थी, और तारों को देख सकती थी और वह तारे भी बिल्कुल वैसे ही थे। अगर अपने पैरों की ओर देखती हूँ तो वहाँ अब नए जूते आ गए हैं। और जेब में भी तीन डालर हैं। रेस्तराँ में सारी मजदूरी और टिप्स जोड़ कर भी सारी रात काम करने के बाद मुश्किल से दो डालर बना सकती थीं। और इस समय तो रात्रि अभी प्रारम्भ ही हो रही थी। मैं अभी भी काफी पैसा कमा सकती थी।

शायद कल सुबह जब मैं सोकर जागूँगी तो कुछ परिवर्तन नजर आये, थोड़ा-सा या बहुत अधिक। लेकिन आज रात तो कुछ भी फर्क नजर नहीं आता। क्योंकि वह चीज—थोड़ी देर पहिले की बात है—कुछ भी मुश्किल नहीं थी। बस केवल अपने चिरपोषित स्वप्नों में अपने को थोड़ा उलझाना होता है—और बस इतने में मामला समाप्त ! लेकिन सुबह ! लेकिन सुबह तो बहुत दूर है—अभी तो पैसा कमाना है !

ब्लांची ने मुझे जब अच्छी फटकार लगाई कि मैं टिप क्यों न प्राप्त कर सकी तो मैंने कहा था, “मुझे दूसरे पर कोशिश करने दो। तुम उसे देख लो, लेकिन कोशिश मैं करूँगी, मझे सीखना है न।”

“वह आदमी”, ब्लांची ने कहा था “वह भूरे हैट वाला । मुझ से कुछ दूर हट जाओ । उसके निकट होकर चलती चलो । उसकी आँखों में आँखें डाल कर देखना । फिर से इशारा न करना क्योंकि शायद बिगड़े दिमाग का निकल आए । बस उसकी तरफ केवल देखना भर । तब शो केस पर खड़ी हो जाना । मैं वहाँ आकर तुम से मिल जाऊँगी ।”

उसने मेरी नज़र से नज़र मिलाई और कुछ भिभका । ब्लांची ने मुझे कह दिया था कि आदमी की भिभक को सुयोग नहीं स्वीकार करना चाहिए । पहिले संकेतों के आधार पर मुझे रुकना भी नहीं चाहिए । अगर वह घूमकर पीछे लौटता है, तो ठीक है । मैं खड़ी होकर खिड़की में देखती रह सकती हूँ । अगर वह भी साथ देखने खड़ा हो जाय तो मैं उसके पास से इस अन्दाज़ से गुज़र सकती हूँ कि वह अपनी ज़बान खोलने पर मजबूर हो जाय ।

इसी तरह मैं गई और एक दूकान की खिड़की में खड़ी होकर देखने लगी । वह लौटकर वापस आ गया ।

“या आपको कोई चीज पसंद है ?

“ओह, कैसे हाल चाल हैं आपके । क्यों, हां । मुझे वह बुना हुआ सूट बहुत पसंद है ।”

“मुझे दिखाई ऐसा पड़ता है कि बुना हुआ सूट आपको बहुत भला मालूम होगा । वह आपको कस लेगा और यह स्पष्ट कर देगा कि आपका अंग-विन्यास कैसा है । मैं सोचता हूँ उसमें आप बहुत सुन्दर दिखाई पड़ेगी ।”

“आपको कैसे मालूम ?”

“चलिए ऐसे ही रहने दीजिये । मुझे यह मंजूर कर लेना ही होगा कि मैं नहीं जानता । लेकिन मैं जान सकूँ, इसके बारे में आपका क्या ख्याल है ।”

मुझे लगा कि जैसे मैं एक जुआरी हूँ । इस बार मैं कुछ अधिक सफल होने की सम्भावना रखती थी । पैसे की बात । लेकिन उसकी मुवाक़्त कितनी कमनीय थी । पहिले आदमी से आयु में कुछ थोड़ा था । ब्लांची ने मुझे पहिले ही आगाह कर दिया था कि अगर किसी को चाहने

भी लगे तो उस भावना को पैसे पर कसो और देखो कि वह कितना ऊपर जा सकता है ।

“यह तो आप पर निर्भर करता है,” मैंने कहा, “मैं तो आपके साथ थोड़ा घूम आने के लिए तैयार हूँ ।”

“कितनी उजरत होगी ।”

“आप तो मुझे अपने वर्ग से बाहर की मालूम होती हैं ।”

“उस बुने हुए सूट के लिए मुझे कम से कम दस डालर तो देने ही होंगे । इससे कम मैं उसे क्या खरीद सकती हूँ ।”

“यहां से बहुत दूर चलना होगा ।”

“उधर मोड़ के पास ।”

“दस और शायद दो-एक और हाथ लग जायें ।”

हम चलते-चलते बातें भी करते जाते थे, उस आदमी ने—पहिले आदमी ने बातें नहीं की थी । इस आदमी ने मुझसे पूछा कि मैं कितने दिन से इस पेशे में हूँ ।

“मैंने तुम्हें सेविन्टी-सैकिण्ड-स्ट्रीट पर आज से पहिले नहीं देखा ।”

“क्या तुम हम सभी को जानते हो । मैं अभी-अभी इस इलाके में आई हूँ ।”

“मैंने तुम्हें इस सड़क से इधर आते देखा था । मैं उस लड़की को जानता हूँ । जो तुम्हारे साथ थी । उसका नाम ब्लांची है ।”

“लेकिन उसे तुम्हारी याद नहीं है ।”

“वह मेरी याद रखे भी क्यों । मैं केवल एक बार ही तो उसके पास गया हूँ । तुम लोग भी तो हमें याद नहीं रखतीं, क्यों है न ?”

“हाँ, एक बार के बाद तो नहीं ।”

मैं जानती थी कि मैं इस आदमी को याद नहीं रखूँगी । मैं उस दूसरे को कभी नहीं भूल सकूँगी । लेकिन यह आदमी तो कितना अच्छा है । कमरा तैयार ही था ।

काम शीघ्र ही समाप्त हो गया ।

उसने मुझे दस डालर दे दिए ।

उसने मुझसे पूछा मेरी आयु कितनी है ।

“बाइस वर्ष और कुछ मास ऊपर ।”

“बस केवल इतना ही । काश मेरे पास कुछ पैसा और होता । लेकिन मेरे पास है नहीं । दूसरी बार मैं तुमसे मिलूँगा तो तुम्हें जरूर मिलेगा ?”

यदि किसी की आयु केवल बाइस वर्ष है तो उसमें अन्तर तो पड़ ही जाता है । हम चलने लगे तो उसने मुझे दो डालर अतिरिक्त दिये जिस का उसने वायदा कर लिया था । हम चलकर उसी स्थान पर आगये जहाँ ब्लांची खड़ी इन्तजार कर रही थी । जैसे ही हम चलते रहे हम निकट वाले सिनेमा में चलने वाली फिल्म की बातें करते रहे । उसने वह अभी तक देखी नहीं थी । मैंने उससे कहा कि मैं देख चुकी हूँ और उसे भी वह अवश्य देखनी चाहिए । यह वस्तुतः बहुत अच्छी फिल्म है । उस म संगीत बहुत अच्छा है ।

उसने कहा, “मैं तब देखूँगा जब यह मेरे पड़ोस में आएगी । अपने परिवार के साथ । मेरे दो बच्चे भी हैं, तुम्हें जानना चाहिये ।”

अब तक तेरह डालर नकद-निखचें मेरे पास बच चुके थे ।

ब्लांची ने कहा, “बहुत बुरा काम तो नहीं है न ?”

“मैं सोचती हूँ अब मैं आगे अपना काम चला सकती हूँ ।” मैंने कहा, “तुम अपनी रात बर्बाद न करो ।”

“नहीं मैं आज तुम्हें अच्छी प्रकार पारंगत करके ही हटूँगी । मेरी एक मित्र ने मेरे ऊपर दो रातें लगाई थीं, मैं तो केवल एक ही रात खर्च कर रही हूँ ।”

उससे अगला दस डालर वाला था और उससे भी अगला पांच वाला । लेकिन पांच डालर वाले आदमी से मुझे दो डालर टिप में मिले । जब उसने मुझे पांच डालर का बिल निकाल कर दिया तो उसी के साथ, कुछ और भी बिल थे । मैंने कहा, “उनमें से भी कुछ तुम मुझे दोगे ताकि तुम्हारी याद बनी रहे, प्रिय ।”

“वेले, हम देखेंगे ।” उसने कहा ।

मैंने उसे फिर याद दिलाया । उसने मुझे दो डालर दे दिए ।

दूसरे आदमी ने मुझे केवल एक डालर दिया ।

मैं दो महीने बाद जाकर बेनी कास्टेलो से मिली । बेनी कास्टेलो बहुत महत्वपूर्ण आदमी था । मुझे यह भली-भांति विदित था कि देर-सवेर मुझे उसके दर्शन करने ही हैं और उस संस्था में सम्मिलित हो जाना ही है ।

अधिकारी वर्ग इस संस्था को “दुराचार का अखाड़ा” कहकर पुकारते हैं । मुझे अकसर इस बात का आश्चर्य हुआ है कि अधिकारी वर्ग, प्रेस और दूसरी नागरिक संस्थाएँ वेश्यावृत्ति को “दुराचार का अखाड़ा” क्यों पुकारते हैं । हर व्यापार में यूँ दुराचार आही जाता है । यह इस कारबार का ऐसा विभाग है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता । लेकिन क्या मैं इस दुराचार में सहायता कर रही हूँ । क्या जो सैण्ड्स के साथ वह सब करना दुराचार था । क्या फ्राइज क्रीक के उस घासरूपी गलीचे पर यह काम करना दुराचार था । क्या केवल पैसे के आदान-प्रदान से कोई कार्य दुराचार बन जाता है ?

मैं किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकती । मैं इस यथार्थ के बहुत निकट हूँ । मेरा विचार अनुरजित हो सकता है । मैं ऐसे आदमियों से मिल चुकी हूँ जिन्हें मैंने अपने हृदय की सम्पूर्ण गहराई के साथ प्यार किया होता ! कुछ लोग मुझे वह चीज प्रदान करना चाहते थे—जिसे प्रेम कहते हैं । वह प्रेम चिरस्थायी बन सकता था । मैंने एक ऐसे आदमी से कुछ डालर लिए हैं जो केवल कुछ ही क्षण पहिले मुझे मिला था, जिसने मुझसे प्रार्थना की थी कि वह अपनी पत्नी को तलाक देकर मुझसे शादी कर सकता है । वे दोनों वस्तुतः काफ़ी दिन से अलग रह रहे थे । वह होटल में खाना खाता था । उसने मुझे फिर खरादा और पलग की पट्टी पर बँठकर मुझे अपने परिवार के चित्र दिखाता रहा । उसका घर पास के ही एक उपनगर में था । उसने मुझे दोबारा खरीदा अवश्य था, लेकिन इस बार उसका मकसद केवल अपने मकान के चित्र-भर दिखाना था जो कि विवाह के बाद मेरा ही मकान हो सकता था ।

वह पलग की पट्टी पर बैठा था लेकिन उसमें अन्दर नहीं आता

था। मैं उसकी बात सुनना नहीं चाहती थी। इसमें संदेह नहीं कि इस आधार पर एक चिरस्थायी प्रेम की नींव नहीं रखी जा सकती थी। और शायद उसने मेरी तरह की कोई और पसंद कर ली होगी, तभी तो वह और उसकी पत्नी अलग-अलग रह रहे थे।

लेकिन क्या वह दुराचार था ?

मैंने अभी बेनी कास्टेलो से भेंट होने की चर्चा की है। जिस इलाके को मैंने अपने लिए चुना था उसमें बेनी कास्टेलो ही वेश्यावृत्ति का निदेशन करता था। और आज वह न्यायाधीश के समक्ष प्रायश्चित्त के लिए आया है और यहाँ वर्षों रहेगा। गवाह के स्थान पर खड़े होकर मैंने जो साक्ष्य दिया था—इमी के परिणाम-स्वरूप वह वहाँ खड़ा था, अगर सम्भव होता तो मैं उसे बचाना भी चाहती थी हालांकि जिन दिनों वह मेरा नियंत्रण करता था, अगर मैं उसके आदेश का उल्लंघन करती तो वह मेरा पेट जलवा देता लेकिन मैं उसे पसंद करती थी। अब मैं बेनी की पत्नी और उसकी छोटी लड़की का संरक्षण करती हूँ। मैं उससे अपनी भेंट की चर्चा अभी-अभी आपसे करती हूँ।

पहली कुछेक रातों को इधर काम करने के बाद ही दूसरे स्थान पर हट जाने के लिए ब्लांची ने मुझे सतर्क कर दिया था। “तुम स्वच्छन्दता से काम कर रही हो,” उसने कहा था, “और संस्था का कोई कमीशन नहीं दे रही हो। वह तत्काल यह समझ लेंगे कि तुम जवान और खूब-सूरत हो इसलिए अपने घर पर काम करके उनके कारोबार को धक्का पहुँचा रही हो। इस प्रदेश में संस्था का मुख्य आदमी-बेनी कास्टेलो तुम्हारा पीछा करना शुरू कर देगा। इसलिए इस घटना के घटित होने के पूर्व ही आगे खिसक लो।”

मेरी दीक्षा के बाद ब्लांची शीघ्र ही आगे चली गई थी। वह शहर के दूसरे भाग में चली गई थी जिसे होटल प्रदेश कहा जाता था। इन अस्थायी लोकप्रिय होटलों में ‘काम करना’ जहाँ बहुधा बाहर से आने वाले धनिक लोग ही ठहरते थे, वेश्यावृत्ति करने वाली लड़कियों के लिए अत्यन्त लाभप्रद क्षेत्र था, लेकिन वहाँ काम करने के लिए अत्यन्त व्यापक अनुभव की आवश्यकता होती है। ब्लांची ने मेरे अपने साथ

ले चलने के विचार को अस्वीकार कर दिया। उसने मुझसे कहा कि होटल-क्षेत्र में काम करने से पूर्व मुझे अभी बहुत कुछ सीखना है।

उसकी चेतावनी शीघ्र ही रंग लाई। हमारे अलग होने के तत्काल बाद ही, सड़कों पर घूम-फिरकर काम करने में मैं काफी खुशहाल हो गई थी। ब्लांची ने मुझे तीन-चार ऐसे स्थानों से परिचित करा दिया था—जिन्हें 'सम्पर्क-स्थल' कहा जाता था। अधिकांश मदिरालय ही ऐसे स्थान होते हैं। अपने पड़ोस में स्थित इस प्रकार के सभी स्थानों से अपने काम की सफलता के लिए अच्छे सम्बन्ध रखने लाजमी होते हैं। बाँर मे आने वाले लोग बैरा लोगों से अक्सर पूछते हैं, "इधर अच्छी लड़की कहाँ मिल सकती है?"

बार्टेण्डर जो मेरे लिए काम करते थे, मुझे अपने लिए बहुत ही लाभकारी समझते थे। मैं उनके विश्वास की सदैव ही प्रतिष्ठा करती थी और जिस किसी से वह मेरा परिचय कराते थे उससे होने वाली अपनी आय का लगभग आधा उन्हें दे दिया करती थी, और यह सर्वसम्मत बात थी कि इन्हीं ग्राहकों से मुझे सबसे अधिक आय होती थी।

मेरी यह आदत पड़ गई थी कि इन बाँरो के मैं चक्कर लगा लिया करती थी। ये देखने में सभी अत्यन्त सभ्य स्थान प्रतीत होते थे। यहाँ अक्सर शानदार वेश-भूषा से लकदक और खर्चीले लोग प्राप्त होते थे। प्रत्येक सन्ध्या को इनके साथ बैठकर मैं रात्रि का काम प्रारम्भ करती थी। मैंने शीघ्र ही यह अनुभव कर लिया था कि इन ग्राहकों से अधिक अपेक्षा नहीं करनी चाहिए और न ही खुलकर उनके साथ पीना चाहिए। मैं बहुत शालीनता के साथ व्यवहार करती थी। मेरा बार्टेण्डर मुझे कॉकटेल देता था, लेकिन उसमें शराब नहीं मिलाता था। मैंने पीना सीखने की कभी चेष्टा ही नहीं की। अक्सर मुझे यह पता चलता था कि पहिले ही किसी मित्र ने मेरे लिए काम पक्का कर लिया है। आदमी या तो पहले वहाँ पहुँचा होता था, यह किसी उस आदमी से जो आने वाला होता था या जो पिछली रात आया था और कोई अच्छी लड़की चाहता था—मुझे मिलने के लिए समय दे दिया जाता था, और पूछ लिया जाता था कि मैं किस समय तक लौटकर आने वाली हूँ।

जब मैं नियत समय पर आती तो बाँर में से गुजरती हुई सबसे अन्दर के कमरे में चली जाती और मेरी काकटेल मुझे वहीं पर भेज दी जाती। वहीं से मैं देखती कि बाटेंण्डर किसी आदमी की ओर झुककर कुछ कानाफूसी कर रहा है। यह वही आदमी होता जिसने मुझे त किया होता था। मैं शीशे में से उसका अध्ययन करती।

मैं सदैव ही अपने ग्राहकों का अध्ययन करती रही हूँ। वे और उनकी आदतें, उनकी विशेषता, और उनके व्यवहार सभी में कितनी भिन्नता होती। भेंट होने पर सौदा हो जाता है तो लड़की को चलकर अपने कमरे में पहुँचना होता है जहाँ कि वह इस नितान्त अपरिचित व्यक्ति के साथ कुछ ही मिनट बाद एक चार दीवारी के अन्दर बन्द हो जाती है। चाहे उसका अनुभव कितना ही विशद हो, और वह कितनी ही चतुर हो किन्तु यदि आदमी उसपर शासन करना चाहे तो वह उसकी कृपा पर ही अवलम्बित होती है। क्या वह भद्रता से व्यवहार करेगा ? क्या उसकी माँगें उचित होंगी। उसका सम्पर्क सुखकर होगा अथवा घृणोत्पादक !

और उनके परिवार !

जिस तरह पुरुषों के स्वभाव विभिन्न प्रकार के होते हैं, उसी प्रकार लड़कियाँ भी होती हैं—जिन्हें वह खरीदते हैं। ब्लांची से जब व्यक्तिगत मामलों का जिक्र कोई करता तो वह ऊब उठती थी। जो लोग मुझे एक पल के सुख के लिए खरीदते हैं उनके विषय में मेरी जिज्ञासा अभी मरी नहीं है। मैं यह आश्चर्य किए बिना नहीं रहती कि यह सब 'क्यों है ?'

सड़कों पर काम करने वाली लड़कियों से बहुधा वही लोग टकराते हैं जो विवाहित होते हैं और घरों पर जिनके परिवार होते हैं। यही लोग सड़कों पर चारे की तलाश में घूमते हैं। जवान लोग जो उनके निकट से गुजरते हैं या जिनसे वह शहर की रात की दुनिया में सम्पर्क में आते हैं अपनी लड़कियाँ अलग ही रखते हैं। या वह सड़क पर घूमने वाली अभिसारिकाओं में से चुन लेते हैं या उन औरतों में से अपने साथी चुनते हैं जिनके टेलीफोन नम्बर वह किसी तरह से इकट्ठे कर लेते हैं। ये लोग पैसा देने के विचार से ही नफ़रत करते हैं।

लेकिन अपवाद भी सब जगह होते ही हैं। शायद मेरे यौवन, मेरी ताजगी ही एकमात्र कारण थी कि इस तरुण वर्ग में से अनेक मेरे पास आते थे। उनके कंधों पर कोई उत्तरदायित्व नहीं होता और उनके पास व्यय करने के लिए काफी पैसा होता था। लेकिन उनकी फर्मायिशें बहुत लम्बी-चौड़ी होतीं। जितनी फीस वह देते उससे बहुत अधिक सविस मांगते। वह दिलबस्तगी की फर्मायिश भी करते हैं। एक घण्टा नाचघर में या खाने पर। प्रेम-प्रलाप में बहुत अधिक समय खर्च करते हैं। वह मुझसे भी वही सब कुछ मांगते हैं—जो उन्हें अपने मित्रों से मिलता है।

यह बहुत कमाने की बात नहीं है।

और ब्लांची ने मुझ में यह अच्छी तरह बैठा दिया था कि हमेशा पैसा ही अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए। “किसी सौम्य और दिलचस्प साथी के साथ तुम्हें कोई सन्ध्या व्यतीत करने का लोभ पैदा हो सकता है। उस दिन तुम कारवार को भूल जाओगी और वह रात्रि नृत्य करते और पीते हुए ही गुजार दोगी। तुम यह कल्पना करना चाहोगी कि तुम भी जीवन का आनन्द ले रही हो। यह स्वाभाविक बात है। कभी-कभी हर कोई छुट्टी चाहता है। लेकिन वैसी आदत नहीं डाल लेनी चाहिए।”

सदैव ही उसकी राय शिरोधार्य होती।

इसलिए मेरे घर का रास्ता बहुधा वही लोग तै करते थे जो वहाँ से फारिस होकर अपने बीबी-बच्चों के पास जाते थे। वह आदमी भी—जिसकी ओर बाटेंडर इशारा कर रहा है—शायद विवाहित होगा। और उसके भी बच्चे होंगे। उसने शायद उस परिवर्तन की पहिले से ही योजना बनाई होगी क्योंकि उसने कल रात ही आज रात के लिए निश्चय कर लिया था। आज प्रातःकाल अपने घर से विदा होते समय जब उसकी पत्नी ने उत्साह के साथ उसके मस्तक पर प्यार का चुम्बन अंकित किया होगा, उस समय भी उसे यह भली-भाँति विदित होगा कि आज वह मुझसे या और किसी के साथ जिसे बाटेंडर तै कर देता—यह प्रेम प्रलाप करेगा। शायद उसने दिन भर मुझ अज्ञात की कल्पना करने

की चेष्टा की हो । शायद उसने अपनी पत्नी की समानता में रखकर मेरी कल्पना की हो ।

उसकी पत्नी किस प्रकार की औरत होगी । मुझ से तो आयु में बहुत अधिक ही होगी । क्योंकि वह स्वयं भी आयु में बहुत अधिक था ।

इस प्रकार मेरे विचार सदैव दौड़ते रहते और बाँर के शीशे में से अपने ग्राहक की ओर देखती रहती ।

शीघ्र ही वह आकर मेरे निकट खड़ा हो जाता । कभी-कभी वार्टेण्डर भी साथ चला आता, स्वयं एकाध शब्द कहकर वार्तालाप प्रारम्भ कराने की दृष्टि से, लेकिन बहुधा ऐसा नहीं होता था । मेरा काम तभी शुरू हो जाता जबकि मुझे एक पेग पीने के लिए निमंत्रण दिया जाता । मैं उस निमंत्रण को स्वीकार कर लेती, क्योंकि वह दूसरा निश्चित रूप से कॉकटेल ही होता । तब वह परिचित होने का उपक्रम करता । वह इस मनस्थिति में मुझ से अपने कमरे में चलने के लिए कहता जैसे किसी मित्र के साथ कुछ समय गुजारने के लिए जाने वाला हो ।

“यह किस तरह होगा ।”

वह मुझसे संतुष्ट है । शायद वार्टेण्डर ने उससे यह पहिले ही बता दिया है कि मैं साधारण लोगों से कुछ अधिक व्यय साध्य हूँ क्योंकि मैं जवान हूँ । वह देखने में बड़ा शान्त प्रतीत होता है लेकिन अभी कहा नहीं जा सकता । जब वह मुझे बद कर लेगा तो वह बर्बर भी हो सकता है । बहुत से उसी प्रकार करते हैं ।

“मैं तैयार हूँ, जिस समय आपकी मर्जी हो ।”

“यही कहीं आसपास में ।”

“दो मोड़, एक गली ।”

“टाम, वह वार्टेण्डर, तुम जानती हो, वह बोलता था कि तुम्हारी कीमत कुछ अधिक है । मैं अनुमान करता हूँ कि तुम उसके योग्य हो भी ।”

“मैं वैसा होने की कोशिश करती हूँ । क्या आप यह जान लेने के लिए इच्छुक हैं ।”

“मेरा मतलब है, कितना । चलने से पहिले यह जान लेना जरूरी है !”

“क्या मैं पंद्रह डालर योग्य मालूम देती हूँ ।”

“ओ के सिस्टर, सीधे चले चलो ।”

छैं डालर टाम के लिए, सात डालर मेरे लिए और दो डालर मकान-मालकिन के लिए ।

शायद वह अधिक देर मुझे नहीं रोकेगा । रात्रि समाप्त होने से पहिले शायद कोई और काम हाथ लग जाय ।

दो महीने गुजर गए ।

मैं तीन सौ से अधिक डालर डान को भेज चुकी थी । घर पर अब कामकाज ठीक प्रकार चलने लगा था । डान ने कृतज्ञता प्रकट की थी और कई सुन्दर पत्र उसने मुझे लिखे थे जिनमें उसने अपने पूर्व व्यवहार के लिए खेद प्रकट किया था । मैं अब उसकी आशा से अधिक बेहतर लड़की बन चुकी थी । वह चाहता था कि मैं घर आऊँ ओर उससे भेंट करूँ ।

क्योंकि मैं काफी पैसा भेज चुकी थी, इसलिए मेरी बहिन भी न्यू-यार्क आना चाहती थी । उसका विचार था कि मैं एक ऊँची कीमत लेकर मॉडल का काम करने लगी हूँ । उसने मुझे स्मरण कराया था कि यदि बेहतर नहीं तो कम से कम उसकी-सी देह यष्टि तो उसकी है ही । फिर क्या बात है कि उसके जैसा काम उसे नहीं मिल सकता ।

इन दो महीनों के अन्दर मैंने सात सौ डालर कमा लिए थे । लेकिन अपने ऊपर व्यय करने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं बचा था । कितने लोगों को पैसा अदा करना पड़ता था और वास्तव में मैं स्वयं भी प्रति सप्ताह एक बार डाक्टर को और कभी-कभी दो बार दिखाती थी । वह अपने साधारण मरीजों की अपेक्षा मुझ से तीन गुनी फीस लेता था । अपने आप पेशा करते हुए, और अधिकारी वर्ग की दृष्टि से दूर रह कर यह आवश्यक नहीं था कि मैं डाक्टर को दिखाती ही, ब्लांची कभी नहीं दिखाती थी, किन्तु मैं अवश्य दिखाती थी ।

मैंने कुछ नए कपड़े अपने लिए अवश्य बनवा लिए थे । मैं उस समय भी अपनी नई पोशाक पहिने हुए थी जबकि दोबारा और अन्तिम बार मैं जो सैण्ड्स से मिली थी । वह एक मोड़ पर दूसरी ओर जाने के लिए ट्रैफिक-लाइट की प्रतीक्षा कर रहा था, क्योंकि उसे वह गाड़ी पकड़नी थी ।

उसने मुझे पहिले ही देख लिया था, बरना मैं उससे आँख बचा जाती ।

“तुमने इस तरह मुझे ठुकरा दिया” यह उसका स्वागत सम्बोधन था । “उस रात मने एक घण्टे तक तुम्हारी प्रतीक्षा की ।”

“मुझे भय था कि तुम पांच डालर और खर्च नहीं कर सकते । तुम्हें बहुत फिजूल खर्ची नहीं करनी चाहिए ।”

मेरे स्वर ने उसे चकित कर दिया, “कहो, कि वह काफ़ी नहीं था । शायद यहीं कारण था कि तुमने उसे शीशे पर चिपका दिया था ? मैं गूँदा हुआ आटा नहीं हूँ, तुम जानती हो ?”

“डॉलिंग, वह बहुत अधिक था । इसीलिए मैंने उसे छोड़ दिया था । मैं तुम्हें धोखा नहीं देना चाहती थी ।”

“देखो डोरीन, मामला क्या है । तुमने अपनी नौकरी भी छोड़ दी और तुम कहती हो कि तुम मुझे प्यार करती हो, उतना ही जितना कि सदैव करती रही हो ।”

“यही कारण था कि मैं तो केवल थोड़ी-सी तफरीह के लिए ही वह चाहती थी ।”

“ओह, तो तुम वैसी हो । उम्मीद है तब तो तुम खूब तफराह कर लेती होगी ।”

“बहुत अधिक जो । क्या इसी के लिए इन्सान अपनी जिन्दगी नहीं जीता । लेकिन मैं अक्सर प्रेम की बातें करना पसंद नहीं करती । तुम लोग अपने से विमुख हो जाते हो ।”

“तब हमारे मध्य यह सदैव के लिए समाप्त हुआ डोरीन, फिर कभी नहीं !”

“फिर कभी भी नहीं, कभी-भी !”

जो अपनी गाड़ी पकड़ने चला गया और मेरी जिन्दगी में से सदैव के लिए । मुझे यह प्रसन्नता थी कि मेरी पोशाक शानदार थी और मेरा हैट तथा मेरे दस्ताने भी बिलकुल नए थे । न जाने क्या कारण था जिससे प्रेरित होकर मैंने एक जवान आदमी को इशारा दिया, जो कि मेरे निकट ही आकर शो केस में चीजें देखने लगा और बोला, “मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ कुछ समय व्यतीत करूँ किन्तु मेरे पास उतना पैसा नहीं है ।

लेकिन मैं सोचता हूँ कि तुम कुछ अधिक व्यय साध्य हो। हो सकता है हम कभी फिर मिल सकें। मुझे बताओ मेरे पास पैसा आ जाय, तो मैं तुम्हारी कहाँ तलाश करूँ।”

और मैंने कहा, “आओ, चलो आज की यह सेवा मैं ही बर्दाश्त कर लूँगी,” मैंने ऐसा कह तो दिया, लेकिन क्यों मुझे स्वयं पता नहीं। मैं जान नहीं सकी, कि क्यों जब मैंने जो को सड़क पार करके अपनी आशाओं को साथ ले जाते देखा था—इस तरह कि मैं कभी जीवन में उसे देख न सकूँगी तो मुझ में सहसा उस भावना का उद्रेक हो गया कि उस युवक के साथ दो घण्टे का निरर्थक कार-व्यापार करने पर सन्तुष्ट हो गई। इतना निरर्थक काम कि मकान मालकिन के लिए दिए जाने वाले दो डालर भी मेरी अपनी ही जेब से निकल गए। मैं इतना जानती हूँ कि जिस समय उसने अपना नाम मुझे बताना शुरू किया तो मैंने उसे रोक दिया था। मैंने कहा था कि मैं उसे ‘जो’ पुकारूँगी।

वार्टेण्डर ने—जिसे मैं टाम कहती थी—मुझे बताया था कि बेनी कास्टेलो मेरी तलाश में घूम रहा है।

“तुम जानती हो कि वह कौन है, जानती हो न ?”

“मुझे कहा गया है कि इस इलाके के हाउसेस से उसका कुछ सरोकार है।”

“कोई सरोकार”, मेरे मित्र का स्वर कुछ व्यंगपूर्ण था,

“सुन रखो, सिस्टर ! बेनी कास्टेलो को इन हाउसेस (दुराचार के अड्डे) से सबकुछ सरोकार है। तुम उसके वालों में उलझ रही हो। तुम स्वतन्त्र रहकर इतना अधिक कारोबार जमा रही हो। उसकी कमाई डूब रही है। अच्छा हो कि तुम उससे मिल लो और यह पता लगा लो कि तुम्हारी स्थिति क्या होने वाली है।”

“मेरी समझ में नहीं आता, टाम, कि मैं उससे क्यों मिलूँ। मैं अपने काम से काम रखती हूँ। मैं उससे कुछ मांगने नहीं जाती। मैं उसे नजर-अन्दाज कर देती हूँ तो।”

“अगर तुम्हारे स्थान पर मैं होता तो ऐसा न करता...।”

“आखिर हो क्या जाएगा ?”

“कम से कम जो होगा वह यही कि एक बांह टूट जाएगी। बेनी के पट्टे उस लड़की के साथ इसी प्रकार प्रारम्भ करते हैं जो उनकी संस्था को इस प्रकार चूना लगाती है। किसी शाम को तुम किसी सुन्दर से मित्र को अपने साथ ले जाओगी और तुम अकस्मात् देखोगी कि उसने तुम्हारा हाथ मरोड़ना शुरू कर दिया है जब तक कि वह चटख नहीं जाता। अगर इससे तुम्हारा दिमाग ठिकाने नहीं आता तो अगली बार एक जलता हुआ सिगार या सिगरेट तुम्हारे नंगे पेट पर भोक दिया जाएगा। वे बहुत से तरीके जानते हैं।”

मैंने टाम को कह दिया कि मैं बेनी से मिलने नहीं जाऊँगी। मैं एक स्थायी हाउस में फेंक दिया जाना पसंद नहीं करती थी। मैं जिस तरह से काम कर रही थी, वहाँ कम से कम मैं अपने लोगों का स्वयं चुनाव तो कर सकती थी। मैं सप्ताह में एक रात्रि अपने लिए भी बचा सकती थी। और हाउसों में, मेरा ख्याल था, बहुत कुछ दुराचार के अर्थ जो कुछ मैं समझती हूँ उसी के अनुसार होता है।

टाम ने कहा, “बेनी तुम्हें ताड़ चुका है। वह अब तुम्हें हस्तगत करना चाहता है। अब आगे निकल जाने से तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा। वह तुम्हारा अज्ञान-पता उसी इलाके में भेज देगा और जैसी तुम हो किसी को तुम्हें खोज निकालने में थोड़ी भी कठिनाई नहीं हो सकती। वह खार खा जाएंगे, क्योंकि तुमने बेनी को अवज्ञा की है। वह नियम के विरुद्ध है। जो लड़की इतनी आकर्षक न हो, उसकी बात उनके लिए इतनी महत्वपूर्ण नहीं है। लेकिन बेनी का अनुमान है कि अगर तुम्हें किसी तरह हाउसों में लाया जा सके तो अड़्डे को बहुत सा पैसा प्राप्त हो सकेगा। तुम्हारे जाने से मुझे कितना दुःख होगा, तुम जान सकती हो लेकिन क्या करूँ वैसे करना ही होगा। किसी दिन आना और मुझसे मिलना। एक रात के लिये मैं ही तुम्हें रखना चाहता हूँ।”

मैंने कहा, “बहुत अच्छा, टाम। किसी भी समय जब तुम्हारी इच्छा हो, तुमने मेरी बहुत सहायता की है।” इतना कहकर मैं बेनी कास्टेलो से मिलने चली गई।

उसने मुझसे मिलने के लिए संवाद छोड़ दिया था—अपने प्रिय

रेस्तरां में जो कि संस्था के लिए बैठक का स्थान सभभा जाता था । उपनगर की अधिकतम बसीकत में यह स्थान था । मैंने उसे कभी देखा नहीं था और मेरा विचार यह था कि मैं उसके बालों में उलझ नहीं सकती थी, क्योंकि वह बिल्कुल ही खल्वाट था । उसके सिर पर बिल्कुल ही बाल नहीं थे । उसका चेहरा गोलाकार और प्रथुल था । उसके हाथ मेजपर बिछाई जाने वाली लिनेन के समान सफ़ेद थे । उसने मुद्दत से उनसे काम नहीं लिया था । लड़किया पेंसा पैदा करती थीं और उसे वह जेब में रख लेता था । उसकी छोटी आंखें चमकते हुए मनकों के समान थीं लेकिन मैत्री भावना से सर्वथा हीन नहीं थी ।

उसने बहुत तपाक से मेरा स्वागत किया, “बहुत अच्छा हुआ, तुम आ गई, गर्ली ।”

“मैं उपस्थित हूँ । अब आप को हक है कि मुझे चाहे जो भी हुक्म दें ।”

“बैठ जाओ ।”

मैं बैठ गई । उसके अन्दाज से ही मैंने यह कल्पना कर ली थी कि उसकी आज्ञा का पालन एक लड़की को करना ही पड़ता है । जिस ममय वह शान्त-मुद्रा से मेरी ओर देख रहा था तो बिना जला सिगार अपने मोटे होठों में घुमा रहा था । अपने मुआयने से सतुष्ट होकर उसने सहसा कहा, “तुम कितने दिन से इस पेशे में हो ।”

मैंने उससे कहा “दो महीने से ।”

“घर पर ही रहती हो ?”

“नहीं, मैं अकेली हूँ । लेकिन यह जिरह किस लिए ?”

उसने सिगार अपने मुँह से निकाल लिया और जिस हाथ में सिगार था वह मोटा तगड़ा हाथ मेज पर लम्बा खिसका दिया । उसकी छोटी आंखें और भी तंग हो उठीं ।

“मेरी बात सुनो, बेबी । मैं कुछ सार्थक बातें कहता हूँ और तुम निरर्थक बातें करती हो । यह गाँठ बांध लो । जब मैं अपनी बात समाप्त कर लूँगा तो फिर कुछ भी कहना बाकी न रहेगा, यह समझ रखो ।”

„मेरा ख्याल है, मैं समझती हूँ ।”

“शाबाश । अब देखो मैं दो हफ्ते से तुम्हारे प्रति काफी उदारता करता रहा हूँ । मैंने तुम्हें काम करते देख लिया है । तुम अक्सर बहत्तरवीं और तिहत्तरवीं स्ट्रीट पर काम करती हो । इन दो सड़कों पर ही मेरे सात हाउस हैं । तुम मेरे हाउसों की सीड़ियों पर से मेरे ग्राहकों को तोड़ती रही हो । मैं यह सब सहन नहीं कर सकता । समझ लो ।”

मैं बिलकुल स्पष्ट समझ चुकी थी ।

“मैं यहाँ से आगे चली जाऊँगी ।” मैंने कहा, “मैं दूर आगे शहर के निचले हिस्से में चली जाऊँगी । मेरा ख्याल है, मैं होटलों में प्रयत्न करूँगी ।”

“नहीं” उसने तत्काल मेरे कथन का संशोधन किया, “तुम्हें आगे जाना नहीं होगा । अगर तुम्हें काम करते रहना है तो मेरे लिए काम करो । खास तौर से तुम होटलों में प्रयत्न मत करना ।”

मैं जानती थी कि होटल-क्षेत्र, हाउस-क्षेत्र से किसी प्रकार भी नहीं टकराता । शहर के बाहर से आने वाले लोग अक्सर टैक्सी-ड्राइवरों से किसी हाउस का पता पूछते हैं । न्यूयार्क के टैक्सी ड्राइवरों का दुनिया में यह विज्ञापन करने का अपना अलग तरीका है । वह अपनी सवारियों को सभी स्थानों पर पहुँचा सकते हैं—वह चाहे कोई हाउस हो या किसी दूसरे प्रकार का स्थान । अपने रेडियेटर की टोपी पर ऐसा ड्राइवर एक लौमड़ी की पूँछ बाँधकर रखता है ।

ये यात्री जो कि हाउसों के ग्राहक हैं—सड़क पर काम करने वाली लड़की के ग्राहक नहीं बन पाते । जब यात्री बाहर से लौटकर रात्रि में आराम करने के लिए पहुँचता है, तो लड़कियों को दरवाजे पर पहुँच कर अपना काम करना पड़ता है । उसे प्रत्येक होटल से भली-भाँति परिचित होना चाहिए, उसके कर्मचारियों से, हर मंजिल की निगहबानी करने वालों से, और उसके पास एक ब्वाय होना चाहिए जो उनके पास नवगन्तुकों की लिस्ट पहुँचाता रहे—उन लोगों की जिसके साथ उनकी पत्नियाँ या परिवार नहीं हैं । उसे यह भी विदित होना चाहिए कि उसे प्रत्येक मंजिल पर किस प्रकार पहुँचना है, मंजिल के क्लर्कों के बीच से होकर उन कमरों तक जिनकी लिस्ट उसके पास पहुँची हुई है । उसकी

मुखमुद्रा उस समय प्रसन्न होनी चाहिए जबकि वह किसी दरवाजे पर दस्तक दे चुकी है, और अन्दर के आश्चर्य चकित निवासी ने द्वार खोल भी दिये हैं। उसे केवल यही पूछना होता है कि उसे रात के लिए साथी की आवश्यकता है और अगर वह कहदे कि नहीं तो फिर उसे कुछ भी नहीं कहना होता।

“क्यों, खास तौर से होटल ही क्यों नहीं ?”

“क्योंकि उस अय्यारी को तुम अभी समझती नहीं हो। तुम वहाँ संकट में पड़ जाओगी, और मैं नहीं चाहता कि तुम एक अचार के डिब्बे में बन्द कर दी जाओ। मेरे पास तुम्हारे लिए काम है, समझीं। तुम फिजूल विचारों को अपने दिमाग से निकाल बाहर करो। मेरा मतलब यह नहीं कि तुममें से कुछ को मैं अपने लिए रखना चाहता हूँ। मैं लड़कियों के साथ वह सब कुछ नहीं करता। लेकिन तुम अभी काफी जवान हो। अगर तुम पेशे को ही छोड़ना चाहो तो, मेरे लिए वह ठीक है। मुझसे जो कुछ बनेगा करूँगा। तुम्हारे लिए कोई कामकाज ढूँढ़ने के बारे में। लेकिन अगर पेशे में ठहरना है तो तुम्हें मेरे रास्ते पर काम करना पड़ेगा। मेरे ही किसा हाऊस में।”

मैं कह चुकी हूँ कि मैं बेनी को पसन्द करती हूँ। मैं उसे इसलिए पसन्द करती हूँ कि वह सभ्य जीवन में मुझे वापस पहुँचने में मदद देने को इच्छुक था। मैं उसे पसन्द करती हूँ और उससे डरती हूँ। टाम ने कहा था, “एक जलता मिगार पेट में।”

मैं बेनी के ही एक हाऊस में चली गई।

## पाँचवाँ अध्याय

१

सम्भवतः बेनी कास्टेलो का प्रकटतः वह निःस्वार्थ सुभाव कि वह मेरे लिए कोई ऐसा काम खोज निकालने में सहायता करेगा-जिसके सहारे मैं पुनः प्रतिष्ठापूर्ण जीवन में प्रवेश पा जाऊँ—मुझे हृदय से लगा लेना चाहिए था। लेकिन मेरा विचार वैसा नहीं है। ऐसा करती तो मैं कृतज्ञता के भार से दबी होती और उसके मित्र इस अवसर का उपयोग करने में लेशमात्र भी विलम्ब न करते। मैं अनुभव करती हूँ कि अगर मुझे भावनाओं का आदान-प्रदान नहीं करना है, तो मुझे अपने को केवल बिक्री की वस्तु मानकर तटस्थता कायम रखनी पड़ेगी।

यह बात कुछ अजीब भले ही लगे, लेकिन ऐसा होते हुए भी मैंने मजबूती के साथ मर्यादा का पालन किया है। क्योंकि जिस समय मैंने अपने को दिया है, उस समय मैंने पूरी सतर्कता के साथ आदान-प्रदान और व्यापार की स्वस्थ भावना रखी है। प्रत्येक सौदा, दिन के रोज़नामचे में दर्ज होने वाला एक अदद लिखा गया, पूरा हुआ और काम समाप्त हुआ। मैंने कभी अपने काम के प्रति अतिरंजना नहीं की। वह लोग जो आए और गए कभी यथार्थ नहीं हो सके, चलते-फिरते अजनबियों से अधिक वह कुछ भी नहीं हो सके। वे अविचारणीय थे, क्योंकि मैंने तकिए के प्रति कभी कोई

जालसाजी नहीं की। न तो अपने अन्तर में और न आगन्तुक के साथ सम्पन्न होने वाले अपने सम्बन्धों में।

उस अन्तर्वर्ती, विशिष्ट निजता का जिसमें मेरा व्यक्तित्व सुरक्षित रहा है, जो बाल्यावस्था से ही मेरे साथ है और चिरकाल तक रहेगा भी, मैंने कुछ भी नहीं दिया और न कभी कुछ देने का सौदा किया। मैंने नारीत्व के आध्यात्मिक पक्ष का लेशमात्र भी कभी नहीं दिया। दिया तो केवल बाहरी सतह का चर्म? बेनी के मित्र, जिन्हें प्रसन्न करने के लिए बेनी मुझसे विनीत कृतज्ञता का ज्ञापन करने की आशा रखता, मुझसे कुछ और अधिक की माँग कर सकते थे। मुझे उनमें से किसी एक की स्थायी रखेल बनकर भी रहना पड़ सकता था।

मेरे मन में ऐसी स्त्रियों के प्रति सदैव ही घृणा रही है जो कहती हैं, “मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ।” लेकिन इस वाक्य को वह अपनी बैक-बुक की रकम बढ़ाने के लिए, स्टाक या अपने सेप्टी-डिपाजिट-बाक्स के लिए वॉण्ड्स या अपने बाजू के लिए जवाहिरात खरीदने के लिए प्रयोग करती हैं। वह ईमानदारी का सौदा नहीं करतीं। अपने आपे का कुछ सार्थक अंग उस तगड़ी रकम के लिए देना चाहिए। उसका शारीरिक मूल्य—बाजार के दाम के अनुपात से प्राप्त किए जाने वाली रकम की दर से चुकता किया जाना अनिवार्य है। “मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ” कहकर वह बहुत कुछ देने की दिलासा देती हैं, जब कि देती बहुत थोड़ा हैं। उनकी भावोत्तेजना में केवल काम-वासना होती है, जबकि वे उसे प्रेम के आध्यात्मिक आनन्द से मण्डित करने की छलना करती हैं। इसमें संदेह नहीं कि इस प्रकार वे अपने लिये सभी साजो-समान, समूर और शोफर, जेवरात, यूरोप की यात्रा का भी पूर्ण प्रबन्ध कर लेती हैं, परन्तु वे अपने नारीत्व का सभी कुछ वेश्या-वृत्ति की भेंट चढ़ा देती हैं।

मैंने आज तक कभी किसी से “मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ” नहीं कहा और बेनी के मित्रों के समक्ष मुझे यह सब कुछ कहने पर बाध्य होना पड़ता। मैंने अपने किसी ग्राहक को यह कहने का प्रोत्साहन नहीं दिया, “मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।” बहुतों ने कहा है। बहुतों ने यह भी प्रार्थना की है कि मैं उनके पास हमेशा के लिये चली जाऊँ, जैसा कि

मैंने कहा है कि एक सज्जन ने मेरे सामने विवाहित जीवन के स्वर्ग और सुरक्षा प्रस्तुत करने का प्रस्ताव भी रखा था। मैंने सदैव ही हँस कर अपनी अँगुलियों से उसके होठों पर गुदगुदी करते हुये यही कहा है “अगली बार हम इस पर विचार करेंगे। आप फिर भी आयेगे, आयेगे न, जल्दी ही ?”

तथापि मेरा अन्तर सदैव प्रेम की प्रतीक्षा करता रहा है। मैंने सदैव यही आशा लगाए रखी है कि एक न एक दिन वह मुझे प्राप्त होगा अवश्य, शानदार, मधुर और प्राणवान प्रेम ! और मैं उस प्रेम के लिए अपने अन्तर की समस्त आस्था और अभ्यर्थना समर्पित करने के लिए तत्पर रही हूँ। यह प्रेम, मैं जानती हूँ, उनके पास नहीं होता, जो आते हैं चले जाते हैं और अपना पैसा छोड़ जाते हैं।

बेनी कास्टेलो ने मुझे अपने एक बेहतर हाउस में भोजना तै किया। उसने मुझे एक शान्त पारिवारिक लोगों के मोहल्ले का नम्बर बताया। “जेनी को पूछ लेना, आज से सप्ताह के अन्दर-अन्दर उसके पाम पहुँच जाना और सोमवार से काम के लिए रिपोर्ट करना।”

“एक चीज” मैंने जिद किया, “मुझे साफ हो जानी चाहिए। मुझे तुम्हें क्या-कुछ देना होगा ?”

“तुम्हें बुक करने के लिए केवल दस डालर प्रति सप्ताह। बीस डालर प्रति सप्ताह तुम्हारे इन्स्योरेंस के लिए, और जमानत के लिए उस समय जबकि हाउस पर छापा मारा जाय और तुम गिरफ्तार हो जाओ। यों ही हमें इसकी सूचना मिलेगी हम तुम्हें तत्काल हवालात में से निकालने की व्यवस्था करेंगे और तुम्हारी ओर से वकील की फीस और जुर्माने की रकम भी भरेगे। अगर तुम किसी अधिक गम्भीर केस में फँस जाती हो या कोई बहुत सख्त मैजिस्ट्रेट न्याय के लिए नियुक्त होता है और यह अवश्य-म्भावी प्रतीत होता कि तुम्हें जुर्माने से छुट्टी नहीं मिलेगी वरन कारावास ही मिलेगा तो हम तुम्हें वचन देते हैं और तुम उसे पक्का मान लो कि हम तुम्हारी जब्त हुई जमानत की रकम भी भरेगे। लेकिन मेरे साथ कोई चालाकी न करना बेबी। मुझे इन बीस या दस में से कुछ भी नहीं मिलता। यह तो संस्था के उच्चाधिकारियों के पास पहुँचता है। मुझे केवल प्रबन्ध के

लिए वेतन भर मिलता है। जितने समय तक तुम अपने चचा बेनी को ठीक-ठीक पैसा चुकाती रहोगी, तब तक मैं तुम्हें बढ़िया से बढ़िया हाउस के लिए नियुक्त करता रहूँगा। तुम्हें अनेक स्थान देखने पड़ेंगे।”

मैंने उससे दूसरी कटौतियों के बारे में भी पूछना चाहा लेकिन उसने इस पूछताछ को नजरअन्दाज कर दिया।

“जेनी तुम्हें शेष विवरण से परिचित करा देगी।”

जेनी ही “मैडम” थी। वह प्राचीन काल की लाल रोशनी वाली मैडम न थी जिनके विषय में आज भी कहानियाँ प्रचलित हैं। उसने अभी तीस वर्ष की आयु भी पूरी न की होगी। उसके काले बालों की खुशनुमा गुलभट्टें उसकी गर्दन पर नीचे तक लटक रही थी। उसकी आँखों में कोमलता थी और हास्य की एक इतनी गहरी पुट उनमें थी और वह उस समय भी लुप्त नहीं हुई थी जबकि कुछ समय उपरान्त उसने दल की अवज्ञा करने वाली एक लड़की को खौफनाक सजा देने के लिए भेजा था।

उसका कमरा दूसरी मन्जिल पर था और पुराने फैशन की इमारत के अनुरूप पुराने ढंग पर सजा हुआ था। एक लम्बा और चौड़ा फ्लैट जिसमें चार शायनागार थे। यह सभी एक तंग बराण्डे में खुलते थे। यह बराण्डा ड्राइंग-रूम से लेकर रसोई घर और भोजन कक्ष तक चला गया था। समस्त फ्लैट में एक मौन विलासिता थी जो कि अत्यन्त आकर्षक और वासनोद्दीपक थी।

मैंने इसी हाउस में प्रवेश किया। यह मेरा किसी भी हाउस में प्रथम प्रवेश था। मुझे लगा कि जैसे मैं किसी पारिवारिक निवास-गृह में पहुँच गई हूँ, पति घर से बाहर दफ्तर में गया हुआ है, और पत्नी ने अपने किसी मित्र को चाय पर या ब्रिज खेलने के लिए बुला भेजा है। एक सुन्दर से शानदार प्योनों पर स्वर्गीय प्रेजीडेन्ट का एक चित्र रखा हुआ था—एक चाँदी के फ्रेम में जड़ा हुआ। बाद में चलकर मुझे विदित हुआ है कि जेनी का जन्म सिसिनैटी में प्रेजीडेन्ट टैपट के पड़ोस में हुआ था।

उसने बात-चीत के सिलसिले में यह भी बतलाया कि जब वह छोटी थी तो प्रेजीडेन्ट टैपट ने उसकी पीठ थपथपायी थी।

एक नक्काशी की हुई मेज़ पर एक फोटो-एल्बम रखी थी जिसमें उन सभी लड़कियों के चित्र थे जो हाउस में काम कर चुकी थीं या जिन्हें 'मैडम' खास अवसरों के लिये बुलवा सकती थी। ये चित्र केवल वस्त्र के भी थे और पूरे जिस्म के भी थे, मेरा चित्र भी इस संग्रह में आ मिला।

मेरा ख्याल भी न था कि जो औरत मुझे भर्ती कर रही है, वह जेनी हो सकती है, जिससे भेंट करने मैं आई थी, मैं सोचती थी कि कोई बेशहूँर ढीलम-ढाले वस्त्र पहने हुये गलफुल्ली और बड़े-बड़े स्तनों वाली औरत होगी। कुछ राक्षसी की तरह की औरत। यह जवान औरत जिसने फाटक खोले लम्बी-ढीली आस्तीनो वाला क्रेप का फ्राख पहिने हुये थी और बहुत शोख मालूम पड़ती थी।

मैंने जेनी के विषय में पूछ-ताछ करते हुये कहा, “मुझे बेनी कास्टेलो ने भेजा है।”

“ओह, ठीक, तुम सम्भवतः डोरी न हो। तुम्हारे विषय में बेनी ने मुझसे बातचीत की थी। आओ अन्दर आ जाओ।”

यह दोपहर का समय था ! इससे पूर्व दैनिक कारबार आम तौर से प्रारम्भ नहीं होता। दो लड़कियाँ ड्राइंग-रूम में बैठी हुई थी। वे भी बहुत सुन्दर पोशाक पहिने हुये थीं। वह मेरे समान जवान नहीं थी, परन्तु फिर भी काफी आकर्षक थीं। मेरा परीक्षण करते समय उनकी निगाह मे कुछ सस्ती थी। मुझे मालूम था, मेरे सामने दो अनुभवी हाउस गर्ल वर्तमान हैं, मुझे आज भी स्मरण है कि उस मिलों से भरे नगर में भी जहाँ से भाग कर मैं आई थी, एक ऐसा ही हाउस था। वहाँ से अगर लड़कियाँ बाज़ार में निकल कर आती तो हम उन्हें तत्काल पहिचान लेती थीं। उस छोटे नगर में जहाँ हजारों यौवन से परिपूर्ण तरुणियाँ अपनी आखों में प्रेम के निमंत्रण लिये घूमती थीं वहाँ ये लड़कियाँ बड़ी मुश्किल से अपने अस्तित्व को चला पाती थीं, हम उन लड़कियों को जानती थीं जिनके बारे में हम एक-दूसरे से केवल काना-फूसी ही कर सकती थीं। उनके शौकीनी से पहिने गये कपड़े और बिगड़े हुये चेहरे और उन पुरुषों की ओर की गई चेष्टायें जो सामयिक रूप से हमारी

और आकर्षित प्रतीत होते—कितनी विचित्र दिखाई दिया करती थीं। जेनी की लड़कियाँ इस प्रकार की नहीं थीं। वह उन जवान स्त्रियों की तरह थी जो दूकानों में मिलती हैं, जो बसों में बैठती हैं और जो मूवी-थियेटरों के चक्कर लगाती हैं।

किन्तु दरवाजे की घटी के बजते ही वह अपनी चेष्टाओं को कितनी आकर्षक रूप में कामुकता के साँचे में ढाल लेती थी। उनके नितम्बों पर चिपकी हुई गाउन की सरवटें निकालने वाली उनकी अँगुलियाँ इतनी सुभाव पूर्ण होती कि आखिर आदमी तंग होकर उनकी बाहों में आ गिरता। अब—जबकि वह एकाकी थी, और कोई भी सौदा तराजू पर चढ़ा नहीं जा, इसलिये वह कुछ ऐंठी-सी थी। उनकी सख्त आंखों में कुटिलता कूट-कूट कर भरी थी। वे जानती थीं कि मैं उनकी ही जाति में से एक थी। लेकिन मैं एक अजनबी थी, और सहसा ही उनके मध्य प्रकट हो गई थी। वे शायद इस विचार में खोई थी कि यह नवागन्तुका यह अज्ञात कुलशीला, जब कि उनका मूल्यांकन कर रही है, उसे यह भी भली भाँति विदित होगा कि वह भी एक वेश्या है। जेनी ने सिर के एक आन्दोलन से उन्हें अलग हट जाने का इशारा कर दिया। वे बड़ी शिथिलता से सिगरेट का धुआँ उड़ाती हुई चली गई। उनमें से एक ने, जो बाद में मेरी मित्र बन गई, मुझसे स्पष्ट कहा कि वह बाज़ार में जाने की पोशाक की अपेक्षा एक अधिक कोमल पोशाक पहिनने की इच्छुक है। उसने अपनी गाउन सिर से ओढ़ली और सिल्क की एक चमक दिखाकर और अपनी टांगों के शुभ्र प्रदेश को निर्वसन करती हुई हाल में गायब हो गई। जेनी ने कहा, “बेनी ने मुझसे कहा है कि यह तुम्हारा पहला हाउस है। मेरा ख्याल है कि मुझे तुमसे पूछना चाहिए कि क्या तुम वास्तव में यहाँ प्रवेश करने की इवाहिंस रखती हो और नियमानु-कूल आचरण करने का विश्वास दिलाती हो। पूछने की कोई आवश्यकता तो नहीं है। उसको तो बेनी स्वयं सँभाल लेगा। मुझे आशा है तुम अपने को अच्छी लड़की सिद्ध करोगी, वरना तो बेनी के पट्ठे तुम्हारे साथ अच्छा सलूक नहीं करेंगे।”

“मेरा ऐसा विश्वास है कि वह और उसका दल इतना शक्ति-

शाली नहीं है जितना वह प्रदर्शित करते हैं।” मैंने उत्तर दिया, “लेकिन मैं कम से कम विरोध करने का रख अख्तियार करना चाहती हूँ। बहुत अधिक प्रतिरोध करना मेरे लिये बिल्कुल ही अनावश्यक हो चुका है। मेरा निश्चय है कि बेनी मेरे ऊपर बहुत अधिक प्रतिबन्ध नहीं लगा सकेगा।”

उसने एक क्षण के लिये शान्त और स्वेच्छा से मेरा अध्ययन किया “अपना हैट उतार डालो।” उसने पुनः मेरा मुआयना किया। उसकी जो प्रतिक्रिया भी उसके व्यापारी मन पर हुई हो, वह तो मेरे लिए रहस्य ही रही। उसने मुझे अपने विचारों का कोई संकेत नहीं दिया। अकस्मात् वह अपनी कुर्सी में आगे की ओर झुक गई। अब की बार उसकी आवाज में तो कठोरता आ गई थी लेकिन उसकी आँखों में अभी भी वही विलक्षण हास्य झलक रहा था।

“जब तक तुम उस कारबार में रहोगी, जो कुछ दल कहता है, माई डीयर, वह सब तुम्हें मंजूर और पसंद करना होगा। मुझे विश्वास है कि किसी भी परिस्थिति के अन्दर दल तुम्हें अब यह पेशा नहीं छोड़ने देगा। अगर तुम आलसी न रही तो तुम से काफी पैसा पैदा किया जा सकेगा। हाउस को तुम्हारे समान अच्छी लड़कियों की जरूरत है। हमें अनेक प्रकार की लड़कियों की आवश्यकता है। मेरे यहाँ काफी अच्छा व्यवसाय है। मैं चार लड़कियों को हर समय चालू रख सकती हूँ। बेनी ने कहा था, कि नियमानुसार वह तुम्हें हर सप्ताह बदलता रहेगा, क्या तुमसे उसने कुछ नहीं कहा।”

“तो मेरे लिये क्या यह लाजमी होगा कि प्रति रविवार को उससे पूछूँ कि सोमवार से कौन सी जगह काम करना है?”

“हाँ, लेकिन अगर तुम अच्छा काम करोगी और तुम्हारे चले जाने के बाद ग्राहक लोग तुम्हारी यहाँ फिर माँग करेंगे, तो मैं बेनी से कहूँगी कि वह तुम्हें फिर यहाँ भेज दे या तुम एक सप्ताह से अधिक भी यहीं रोकी जा सकती हो। तुम्हें अच्छी तरह सफलता मिलनी ही चाहिये। मेरे यहाँ एक लड़की थी जो सप्ताह में लगभग चार सौ डालर पैदा करती थी।”

मैं यह पूछने से अपने को न रोक सकी, कि उसमें से उसे कितना मिलता था ।

जेनी ने अपनी सिगरेट राखदानी में कुचल दी और तत्काल दूसरी सिलगा ली । “तुम्हारा मतलब निखर्चे । उसने सम्भवतः एक सौ पच्चीस डालर बचा लिये होंगे, दूसरी कटौतियों को नफ़ी करने के बाद ।”

## २

यह सोमवार का तीसरा पहर है । बाहर हवा में कुछ बसन्ती झलक है । मैंने इसे यहाँ जेनी के पास आकर अनुभव किया । जेनी के सम्मुख पिछले सप्ताह उपस्थित होने के समय से अब तक मैंने काम नहीं किया है । यह अन्तरिम काल मैंने अवकाश में ही बिताया है । इससे मुझे सोचने का और पत्र लिखने का समय मिल गया । मैंने डान को एक लम्बा पत्र लिखा कि मैं उस से और अपनी बहिन से मिलने के लिये घर आने वाली हूँ । मेरा जाना बेनी की इजाजत पर निर्भर था । डान को लिखते समय मैंने उस बसन्त का भी जिक्र किया, जिसकी कुछ याद मेरी स्मृति पटल पर अभी भी बाकी थी । जब मेरा जन्म हुआ था तो डान और मेरी माँ ने सामने के अहाते में सेव की एक टहनी लगाई थी । वह वृक्ष, उन्होंने सोच रखा था कि मेरे साथ-साथ बड़ा होगा । डान मुझसे अक्सर वह बातें सुनाया करता था जो मेरी माँ ने उस समय कही थी । उसकी अभिलाषा थी कि मैं उसी वृक्ष के समान उच्चता को प्राप्त करूँ । वह बसन्त जिमकी स्मृति मेरे मानस में इतनी गहराई के साथ नक्ष्य थी वही बसन्त था जबकि उस सेव के वृक्ष पर पहली बार फूल खिले थे और इसके बाद आने वाले फलों की सूचना दे रहे थे ।

मैं जानती थी कि मैं ही वह वृक्ष हूँ । मुझे थोड़ा आश्चर्य होता था यह सोच कर कि वह वृक्ष इतने शीघ्र अपनी परिपक्वावस्था को कैसे पहुँच चुका था, कम से कम अपने यौवन के प्रभात में पदार्पण कर चुका था, मेरे बड़े होने से इतने समय पूर्व, लेकिन मुझे इससे कुछ परेशानी नहीं हुई थी । मैं कुछ स्वप्नों में विचरने वाली बालिका थी, अजीब-अजीब मानसिक दुस्साहसों की इच्छा मन में छिपाए रहती और मेरी कल्पना यौवन के उन प्रथम

प्रसूनों को लेकर उड़ती रहती । धीरे-धीरे मेरा यह ख्याल बन गया कि मेरा यह दूसरा अंग, यह वृक्ष, वयस्क होने में शायद इसलिये शीघ्रता कर रहा है कि मुझे यह स्पष्ट करदे कि भविष्य में क्या कुछ होना है और मे जीवन की डगर पर कोई गलत कदम न रख दूँ !

यही वह पहिला बसन्त था जिसकी याद मुझे अब तक थी । यह अब दूसरा है । मैं यह नई उपाधि ग्रहण कर रही हूँ । बाजार से उठकर अब अड्डे की सुव्यवस्थित जिन्दगी को पा चुकी हूँ । वसन्त अनेक लोगों के जीवन में अनेक प्रकार से महत्त्व रखता है !

जेनी टेलीफोन पर बातचीत कर रही है । वह फ्रेडी नाम के किसी व्यक्ति से बातचीत कर रही है ।

“मेरे पास इसका कोई चारा नहीं ?” जेनी कह रही है, “अगर तुम्हारे पास केवल बीस डालर हैं तो तुम दूसरी किसी लड़की को ही पा सकोगे । दो सप्ताह पहले जिस ब्लोंडी को तुमने लिया था, वह फिर इधर आगई है । वह तुम्हें मिल जायगी । लुइसी भी यहीं है । उसे तो तुमने पसन्द किया था । लेकिन यह तो तुम्हें बीस डालर में प्राप्त नहीं हो सकेगी ।”

जेनी मेरे बारे में बातें कर रही है । न मालूम यह फ्रेडी कौन है । उसके पास बीस डालर हैं और वह एक लड़की चाहता है और जेनी उसे मुझे प्राप्त नहीं करने दे रही है । न जाने मेरे लिये वह क्या माँगने का इरादा रखती है । अगर यह रकम बीस डालर से भी अधिक है, तो इस हाउस में मेरा काम बहुत अच्छा रहेगा ।”

जेनी फिर बातचीत कर रही है । “नहीं, फ्रेडी । पच्चीस डालर से कम में तुम उसे हर्गिज प्राप्त नहीं कर सकोगे । मैं इसमें भी तुम्हारे साथ रियायत कर रही हूँ । मैंने जिस किसी को भी उसके बारे में टेलीफोन किया है, तीस से कम नहीं बताया है । वह तो अभी कच्ची कली है, हसीन है और बिल्कुल तरोताजा है ।”

ओह, मेरा मूल्य तीस डालर है । वह लुइसी, जो इधर प्यानों को भ्रूणकार रही है, केवल बीस डालर में ही प्राप्त हो सकती है । मार्गे, उस ब्लोंडी का नाम मार्गे है, बीस डालर उसके लिये भी बिल्कुल मुना-

सिब है। लेकिन मेरा मूल्य तीस डालर है, पच्चीस से तो किसी तरह भी कम नहीं।

लुइसी यह टेलीफोन वार्ता सुन रही है और मार्गे भी। उन्हें इससे कोई गिला नहीं है। मार्गे जिस पत्रिका को पढ़ रही है वहाँ से वह स्थल आगे या पीछे नहीं हुआ है। उन्हें इसमें कोई आपत्ति नहीं है मेरे साथ इन कमरों में से किसी एक में व्यतीत होने वाला समय किसी आदमी को उनकी अपेक्षा कुछ अधिक प्रिय लगता है। मैं लुइसी से पूछूँगी कि उसने कहाँ से अपने बालों की लहरियाँ बनवाई हैं। मेरी लहरियाँ अबकी बार कुछ जँची नहीं।

“बहुत अच्छा,” जेनी ने कहा, “चार बजे, पाँच बजते ही आपको विदा होगी। लेकिन एक बात समझ लो फ्रेडी कि अगर तुम्हारे पास केवल २५ डालर ही हैं तो बेहतर है कोई दूसरी लड़की ले लो। मैं नहीं चाहती कि मेरी लड़कियों में से कोई काम करके बाहर निकले और उसकी जेब में टिप (बक्शीश) न हो जो कि वह अपनी जेब में रख सके।

जेनी बहुत अच्छी है। क्या मालूम दूसरी मंडम उसकी ही तरह होंगी। बक्शीश का पूरा पैसा मैं अपनी जेब में रख सकूँगी। इसे फीस की तरह विभाजित नहीं किया जायगा ! मेरा अनुमान है फ्रेडी चार बजे मेरे लिए आ रहा है। जेनी ने कहा था, ‘बहुत अच्छा’ और फिर टेलीफोन रख दिया था।

मार्गे अपनी पत्रिका में से सिर उठाकर देख रही है। “वह बड़ा अकड़ू है। उसने मुझे स्वीकार क्यों नहीं किया। मैंने पिछली बार उसे सम्पूर्ण आनन्द देने की कोशिश की थी।”

लुइसी, प्यानो बजाते-बजाते कहती है, “फ्रेडी तो एक चेंचड़ी की तरह है। वह एक पौण्ड की कीमत में एक टन माल हासिल करने की फिफ्ट में हमेशा रहता है।” वह अभी भी प्यानो बजा रही है !

इस समय लगभग तीन बज चुके हैं। जेनी पीछे के कमरे से निकल कर आ रही है। वह मुझसे कहती है, “कुछ ही मिनट बाद एक आदमी इधर आ रहा है। जब तुम घंटी सुनो तो भोजन कक्ष में चली जाना। मैं नहीं चाहती कि वह तुम्हें देखे और तुम्हीं को लेने की जिद करे। मैंने चार बजे तुम्हारे लिए एक नियुक्ति कर दी है। अगर दूसरा काम हाथ

मे ले लिया तो तुम ठीक समय पर फारिश नहीं हो सकतीं ।”

“कौन आ रहा है ?” मार्गे पूछती है “कोई ऐसा आदमी है जिसे मे जानती हूँ ।”

“अरे वह बूढ़ा क्वीपर है । तुम शायद जानती हो । वह हर तीसरे पहर एक दूसरे हाउस मे जाता है । ”

लुइसी हंसती है, “वह पुराना बेवकूफ बराबर अपना आशावाद छाती से चिपकाए रखता है । जो कुछ आज नहीं किया जा सकता उसे आशा है कल तो वह अवश्य हो ही जाएगा । मे उसे जानती हूँ ।”

मार्गे कहती है “मे उसे ले लूँगी अगर उसका दिमाग ठीक है । वह वरूशिश तो नहीं देता । लेकिन कभी-कभी एक पोशाक के लिए उसे राजी कर लेने मे कोई मुजायका नहीं होता पिछली बातों को भूलने मे वह बड़ा अनोखा है ।”

मालूम होता है मि० क्वीपर कोई कपड़ों की दूकान करते है । घंटी बज रही है और मे खाने के कमरे मे जा रही हूँ । यह वास्तव मे बैठने का ही कमरा है । क्योंकि अगर ड्राइंग-रूम मे कोई पहले से बैठा होता है तो जेनी नवागन्तुक को इधर बुलवा लेती है । पुरुष लोग एक दूसरे से कतराते है । अगर वह आपस मे अपरिचित हों और जब कि वह कामदेव के मण्डप मे पहुँचे हुए हों ।

मे अब भी वही नई पोशाक पहिने हुए हूँ जिसे मे पिछली बार जो से भेंट होने के समय पहिने हुये थी । उस दिन से आज तक मेने यह कभी नहीं पहनी, मुझे एक अतिरिक्त पोशाक कल खरीद लेनी चाहिए मुझे अपनी निजी प्रसाधन सामग्री भी ले आनी चाहिये । मे आज लाना भूल गई हूँ । मे कोने वाले कमरे मे नहीं सोऊँगी । लड़कियाँ वहाँ नहीं सोती जब तक कि पूरी रात का काम उन्हें न मिल गया हो । यह हाउसों का नियम है । मे ठीक यह नहीं जानती लेकिन ऐसा है अवश्य । हम लोग एक हाउस से दूसरे हाउस मे इतनी जल्दी-जल्दी चली जाती है कि किसी भी कमरे मे निजता और आत्मीयता का वातावरण बन ही नहीं पाता ।

मि० क्वीपर ने, आखिर, लुइसी को चूम लिया । वह उसे बराण्डे मे साथ ला रही है । वह उससे पिछली भेंट से अब तक की कुशल-क्षेम

और उसके कारबार की स्थिति के बारे में पूछ रही है। वह शिकायत कर रहा है कि उसका व्यापार तो प्रायः चौपट हो गया है। लेकिन जेनी कहती थी कि अभी तक उसके पास काफ़ी पैसा है और वह एक लड़की रोज़ लेता है। माना कि दूसरे सभी हाउस जेनी के हाउस की तरह व्ययसाध्य नहीं है, लेकिन सप्ताह में छँ लड़कियाँ लेना आखिर कोई अर्थ रखता है।

घंटी फिर बज रही है। चार बजने में दस मिनट हैं। वह फ़ेडी किस तरह का आदमी होगा और उसका उपनाम क्या होगा। मैं शीशे के सामने खड़ी होठों पर सुर्खी लगा रही हूँ। जेनी उसे ले आई है। मैं पीछे घूमती हूँ कि एक तगड़ा काला आदमी, खल्वाट सिर, हुक की तरह की बड़ी नाक और मुँह उसका नीला घुटा हुआ है। लगभग पचास वर्ष का होगा। मैं सोचती हूँ वह बहुत ही कामुक है। उसके होठ कितने मोटे हैं। वह बहुत सी फर्मायशें करने वाला ग्राहक है। उसकी तरह के सभी ऐसे होते हैं—असभ्य !

जेनी कहती है, “फ़ेडी यह डोडी है। जैसा मैंने कहा था ठीक वैसा ही माल है कि नहीं।”

फ़ेडी ने मेरे मुँह की ओर देखा, मेरे बालों की ओर। अब वह नीचे से ऊपर तक देख रहा है, पैरों से लेकर उरोजों तक। मैं उसके होठों में नमी आती देख रही हूँ और जेनी की आँखें मुझ पर मुस्करा रही हैं।

“कैसे हाल चाल है फ़ेडी। मुझे उम्मीद है मैं तुम्हें पसंद आ गई हूँ।”

वह जेनी की ओर देखकर सिर हिलाता है, “जेनी जैसा तुमने कहा था ठीक वैसा ही है। यह बहत्तर नम्बर का धागा है।”

कुछ देर बाद फ़ेडी ने मुझे समझाया कि मैं बहत्तर नम्बर का धागा किस तरह हूँ। वह मौजे बनाने वाली मिल का एजेण्ट था। सिल्क के मौजों के सर्वोत्तम धागे का नम्बर बहत्तर ही होता है। उसने मेरे कपड़ों को देखा और कहा कि मेरे कपड़े केवल चव्वन नम्बर के धागे के बने हैं। उसने मुझसे पूछा कि मैंने वह कितने में खरीदे हैं। जब मैंने उसे दाम बताया तो उसने अपनी जवान काट ली, “इतनी लूट। मैं तुम्हें अपना कार्ड देता हूँ। इसी इलाके में, मैं तुम्हें बताता हूँ किसी एक दुकान पर तुम चली जाना। वह तुम्हें बहत्तर नम्बर पर पंद्रह प्रतिशत घटाकर माल देंगे।”

उसने जेनी को मेरे पीछे चलने से पूर्व ही पच्चीस डालर भुगतान कर दिए। “वह जेनी कितनी कठोर औरत है।” उसने बड़बड़ाया “पिछले चार वर्ष से मैं उसका अच्छा-खामा ग्राहक रहा हूँ। जब कभी थोड़ा शौक आता है मैं उसे हमेशा टेलीफोन कर देता हूँ, लेकिन वह हमेशा मुझसे कसकर वसूल करती है।”

मैं उसका सामना करने के लिए घूमी। मेरी पोशाक मेरी बाजुओं पर लटक रही थी। मैं उसकी ओर मुस्करा रही थी, लेकिन मैं बहुत अधिक खिन्न होने का बहाना कर रही थी। “मैं वह पसंद करती हूँ फ्रेडी। यह कहना कि उसने मेरे लिए तुमसे कसकर वसूल किया।”

उसने मुझे एक बार फिर नीचे से ऊपर तक देखा। उसकी बटन की तरह चमकने वाली आँखों के लिए मैं पहिले से अधिक दावत का सामान बन चुकी थी। वह बढ़ रहा है, उसी तरह जिस प्रकार एक दानव एक जंगल की परी की ओर दाँत कटकटाता हुआ बढ़ता है।

अपनी कटकटाहट से वह स्पष्ट कर रहा था, “हो सकता है शायद इस बार मुझे अपने पैसे का मूल्य वसूल हो जाए।” जब उसने पहिली-बार मेरा चुम्बन किया, तो मेरे सारे शरीर में एक कँपकपी दौड़ गई। जब मैं सड़क पर घूम कर काम करती थी, इस प्रकार के लोगों को सदैव दूर ही रखती थी। शकल सूरत से ही आदमी कुछ न कुछ जाहिर होते ही हैं, मैं वासना की अभ्यस्त थी जो उन आँखों में जलती होती और फिर मेरी आँखों निकट जलती होती ! क्या ऐसा नहीं था ! वासना ही थी जो मेरी जीविका का साधन थी, लेकिन ऐसे आदमी की उपस्थिति में मैं सदैव पीछे भागने में अपने को नहीं रोक सकी हूँ जिनकी वासना पीठ पीछे द्वार बंद होते ही फूट पड़ती है, मुझे घेरती हुई, शिथिल करती हुई और डुबाती हुई। यह फ्रेडी उसी किस्म का आदमी था।

लेकिन इसके बावजूद भी वह शरीफ था, एक बच्चे की तरह। ज्यों ही काम समाप्त हो गया, हम साथ-साथ बराण्डे से गुजरते हुए उस ओर चले जहाँ जेनी और मार्गें बैठी थीं। लुइसी फिर व्यस्त हो गई थी। फ्रेडी ने मुझे पाँच डालर बख्शीश में दिए थे। उसने मेरी ओर आँख मारी। अब वह समझा रहा था कि उसके पास सदैव ही उससे अधिक

पैसा होता है जितना वह जेनी से बतलाता है । “इसमें हानि ही क्या है कि तुम अच्छे से अच्छा माल लेने के लिए थोड़ा सौदा कर लो ।” उसने अपना उसूल बताया ।

“क्या इस बार तुम्हारे दाम वसूल हो गए, फ्रेडी ।”

“जब मैंने पाँच डालर दिये हैं तो इसका यह मतलब नहीं कि लतिया रहा हूँ ।”

मुझे अच्छी तरह से याद है कि लुइसी और मार्गो में से किसी ने भी फ्रेडी की उदारता के बारे में अधिक विचार नहीं किया । “क्या तुम सदैव अपनी लड़कियों को पाँच डालर बख्शीश देते हो ?”

“यह सब माल पर मुनहसिर करता है, बेबी ।”

वह जेनी से एकाध बात करने के लिये हाल में खड़ा रहा । मार्गो मूक प्रश्न आँखों में लिये मेरी ओर देख रही थी । मैं उसकी नज़र को बचाना चाहती थी । ज़िम दिन मैंने अपने कमरे की ओर चढ़कर जाते हुए जीने की सीढ़ियाँ गिनी थीं जबकि मैं सैण्ड्स के यहाँ से लौटकर आई थी और मेरे पैर थके थे, उस दिन से आज पहिली बार मुझे अपने आप पर शर्म आई थी । एक हाउस गर्ल के रूप में फ्रेडी मेरा प्रथम ग्राहक था और वह कितना वीभत्स जीव था । मार्गो भी उससे नफ़रत करती थी । फ्रेडी के साथ बन्द द्वारों के अन्दर जो कुछ हुआ था, उसे वह अपने मस्तिष्क में भली भाँति रिहर्स कर सकती थी । वह उसकी खसलत की हर बारीकी को समझती थी । वह उसके पिंडोल के समान भदे ओठों और मांस के समान कुरूप हाथों के स्पर्श को अनुभव कर सकती थी । पिछले एक घंटे या उससे कुछ अधिक समय में मेरे साथ क्या गुजर चुका है उसकी वह तमाम बारीकियों से अवगत थी ।

जिस समय उसने मेरी ओर देखा तो मुझे लगा कि मेरे किसी गुप्त शर्मनाक स्थल पर सहसा खिड़की खोल दी गई है । उसने अकस्मात् मुझसे पूछा “फ्रेडी के साथ कैसी गुजरी । कभी-कभी वैसे आदमी को भी स्वीकार करना ही पड़ता है ।”

मैंने शीघ्रता से कहा, “जिस समय वह मेरे लिये अधिक दाम देने के लिये तैयार हो गया था, तुम्हें बुरा नहीं मानूँ मैं हुआ था ?”

उसने एक उसाँस लेते हुए कहा “हे भगवन् ! यह न कभी सोचना क्यों मैं इसका बुरा मनाऊँगी । क्या तुम ऐसा सोचती हो ? इस तरह की बातें ! तब तो तुम बड़ी भावुक हो ? सुनो ! जब तुम मेरे बराबर इस पेशे में रह लोगी तो तुम्हें पता चल जाएगा कि आज तुम मात्र एक बढ़िया हो । खरीदारों की अपनी पसन्द होती है, और हम अपने ऊपर केवल उतना ही गर्व कर सकती हैं जितना कि वह गाय जो वापस चरागाह में भेजी जा रही है, इसलिए कि खरीददार ने उसकी ठाठ के घेर को पसन्द नहीं किया है ।

उसी शाम को मुझे दूसरी लड़कियों के साथ एक मुआयने में पेश किए जाने का नया अनुभव हुआ । आज एक चौथी लड़की भी थी । यह हमारी भाग्य शालिता की परीक्षा का समय था । जेनी उन सभी ग्राहकों को भली भाँति जानती थी । अजनबियों का यहाँ स्वागत नहीं होता था, जब तक कि कोई उनकी साक्षी प्राप्त नहीं कर ली जाती थी । कभी-कभी ही आने वाले उसके दो अतिथि दस बजे आ पहुँचे थे । उसने उत्साह के साथ उनका स्वागत किया था । उन्हें देखने से ही जाहिर होता था कि वे लोग बड़े खर्चीले हैं । दोनों ही अघेड़ आयु से कुछ कम थे । खूब लकदक और मिलनसार थे । उनमें से लुइसी एक को पहिले भी स्वीकार कर चुकी थी । इस आदमी ने ‘हलो’ कहकर उसका स्वागत किया लेकिन वह चल कर उसके पास नहीं गई । जेनी का नियम यह था कि जब एक या दो लड़कियाँ कमरे में खड़ी होती थीं तो कोई भी किसी आगन्तुक पर जब तक कि वह आदमी विशेष नियुक्ति के आधार पर न आया हो, अपने को लाद नहीं सकती थी, चाहे उनकी पुरानी मुलाकात कितनी ही अच्छी क्यों न हो ।

जेनी यह कहती थी, “अगर कोई आदमी पिछले समय को स्मरण रखना चाहता है तो ठीक है, लेकिन दूसरी लड़कियों को भी प्रदर्शन का पूरा अवसर मिलना चाहिए । यह भी तो हो सकता है कि आगन्तुक ऐसी स्थिति में पहिली लड़की को पसन्द न करे ।

इस आगन्तुक, जिसे जेनी “क्लेफर्ड” पुकारती थी-जब लुइसी को अपनी ओर आते न देखा तो, स्वयं ही उठकर उसके पास आ गया । उसने उस

का चुम्बन किया और थोड़ा सा गुदगुदाया और फिर लौट आया, अब यह स्पष्ट था कि उसकी निगाह मुझ पर ठहर गई थी और फिर उस ने मेरी तरफ मुखातिब होकर कहा । “मैंने इससे पहिले आपको इधर नहीं देखा ।”

“मैं भी आपके दर्शनों से आज तक वंचित ही रही हूँ ।” दूसरा आदमी जिसका नाम मुझे खुशगवार नहीं लगा उसने जेनी को अपने घूटनों पर खींचकर बैठा लिया जो कि एक आराम कुर्सी में फँस चुका था । ऐसा बहुत ही कम होता था कि जेनी इस प्रकार की भावना किसी के प्रति प्रकट करती थी । उसका प्रेमी, एक दंढानसाज था जिसके काम को वह जमाना चाहती थी । वह अपनी समस्त आस्था उसी में निहित रखती थी और अपनी हाउस की लड़कियों को संरक्षण प्रदान करने वाले अपने सभी मित्रों से वह दूर ही रहती थी । वह आराम से उसके घूटनों पर बैठ गई थी । लेकिन इस परिचय मे कोई खास बात नहीं थी । “मेरे पास, टाम, इस सप्ताह कुछ अच्छी लड़कियाँ हैं” उसने कहा, “उन्हें देख लो और अपनी पसन्द के मुताबिक चुन लो ।” उसकी निगाह अलस और बेधड़क तौर पर चलती जा रही थी । लुइसी प्यानी स्टूल पर बैठी थी, मार्गे अति-शदान के निकट खड़ी थी, और डाट जो भरी पूरी श्यामा थी, दीवान पर झुकी हुई थी और मैं एक कुर्सी के हत्थे पर सिमटी हुई थी । इस बीच मैं उसका मित्र, क्रेफर्ड, हम सभी को ताड़ता रहा था । अब मैं इस प्रकार के अवसरों की अभ्यस्त हो चुकी हूँ । किसी समय नीलाम के लिए खड़े किए जाने की बात मुझे आश्चर्यजनक लगती थी । मुझे बर्बर युग के गुलामों के व्यापार की कहानियों की याद आ गई थी । मुझे एक तस्वीर की याद आ गई-जिसमें ३ गुलाम लड़कियाँ थीं जिनके हाथों में बेड़ियाँ पड़ीं थीं, शरीर नंगे थे और चौथी लड़की के दाँत एक खरीदार देख रहा था । हम चार लड़कियों वहाँ थीं लेकिन उनमें से मैं ही ऐसी थी जो अपने को एक गुलाम की स्थिति में मानती थी । इस समय के बाद से मुझे कभी वैसा अनुभव नहीं हुआ ।

बातचीत भी चलती थी, अत्यन्त स्वल्प, वेगवती, उद्देश्यहीन और अश्लील । लुइसी, मैं स्पष्ट देख रही थी, यह विश्वास कर रही थी, कि

क्रेफर्ड उसके साथ दोबारा नियुक्त करेगा। वह सुन्दर था, पैने नक्श वाला और संतुलित, लेकिन तभी मैंने लक्ष्य किया कि वह मानसिक रूप में मुझे ही निर्वसन कर रहा है। वह लुइसी और मार्गो से मज़ाक कर रहा था लेकिन लगातार देखता मेरी ओर ही था। मैं कुर्सी के पीछे इस तरह झुक गई कि जिससे मेरे उरोज सीधे ऊपर उभर आए। वह उनका अध्ययन कर रहा था और गाउन के नीचे जंघाओं के ढलान को झाँक रहा था।

फ़ोडी की शर्म अब मुझ पर से उतरती जा रही थी। यह आदमी अपने टाइम टेबिल के अनुसार मुझ से प्रेम कर रहा था, उसे उपनगर के लिए गाड़ी पकड़नी थी, इसलिए जल्दी में था। अब मैं उस समय की अपेक्षा अधिक लम्पट हो गई थी जब मैं सड़कों पर घूमकर अपना काम किया करती थी। यहाँ अपनी पसन्द करने का अवसर नहीं था। यहाँ तो मुझे अपने प्रतिद्वन्द्वियों का मुकाबला करना होता था। और यह क्रेफर्ड कितना वाञ्छनीय था। मैं उसे अंगीकार करने की इच्छुक थी, क्योंकि हो सकता था अगला जो आदमी मिलेगा वह शायद इतना आकर्षक न हो।

अपना मानसिक निर्वसन करने में मैं उसकी ओर भी सहायता करने लगी।

लेकिन लुइसी ने आखिर में उसे गिरफ्तार कर लिया। टाम, जो कि जेनी को पकड़े हुए था, सहसा बोला, “वह कैसी रहेगी।” उसने मेरी ओर गर्दन हिलाई। यह प्रतीत होता था कि वह अपने साथी से अधिक महत्वपूर्ण था और पहले छनने का अधिकार भी उसे ही था।

जेनी ने कहा, “वह तुम्हें निराश नहीं करेगी।” वह हिला और जेनी उठकर खड़ी हो गई। उसने अपनी जेब से पर्स निकाला और बिना खोले ही जेनी के हाथ में पकड़ा दिया। वह हँसती रही और पर्स में रखे बिलों को उलटती-पुलटती रही।

“मैं चाहती हूँ कि हर कोई जो इधर आए, अपना पर्स निकालकर इसी प्रकार दे दिया करे,” उसने मज़ाक में कहा, “तब तो मैं जल्दी ही पेन्शन पा जाऊँगी।”

“लेकिन तुमने मुझ पर कभी विश्वास नहीं किया।” ग्राहक ने उत्तर दिया। जेनी ने कुछ बिल निकाल लिए। उसने पचास डालर लिए थे। यह साधारण फ्रीस थी जो वह उससे लिया करती थी और वह उतना अदा करने के लिए तैयार भी रहता था। मेरी समझ में यह आना शुरू हो गया था कि उसने अपना नियम भंग किस लिए किया था और क्यों इस आदमी को अपने को गोद में बैठा लेने की सुविधा प्रदान कर दी थी।

मैं उस पैसे के आगमन को देख रही थी। वह मेरे लिए पचास डालर अदा कर रहा है। मुझे प्रयत्न करके उससे पैसा वसूल करना है। मुझे कुछ ऐसा करना है कि वह मेरी फिर भी चाह करे और दोबारा आए तो भी मेरी ही माँग करे। पचास डालर में से मेरे हिस्से में जो आएगा, उससे मैं अपने लिए एक हैट खरीद सकूँगी। मुझे यह जान लेना चाहिए कि वह किस तरह का व्यवहार चाहता है और उसी तरह से मुझे उसके साथ पेश आकर, उसे प्रसन्न करना चाहिए। अब वह हाल में प्रवेश करने के लिए तैयार है ?

मेरी इच्छा थी कि इस व्यक्ति के स्थान पर उसका दोस्त ही होता, लेकिन वह शायद इतना उदार न हो पाता।

उसने एक बिल, दस डालर का, श्रृंगार मेज पर छोड़ दिया। उसने उसके विषय में कुछ भी नहीं कहा था, लेकिन मैं जानती थी कि वह मेरे लिए था। मैंने उस समय उसे धन्यवाद नहीं दिया। क्रीड़ा का अन्त होने के पहिले तक नहीं। जब मैं तैयार हो गई, तो उसने मुझे अपने पास बैठने के लिए कहा। “मैं आँख मीचकर इस चीज में कूद पड़ना नहीं चाहता,” उसने बतलाया, “आओ कुछ देर बैठकर बातचीत करें। थोड़ा एक दूसरे से परिचय तो कर लें।”

हमने क्या-क्या बातें कीं, उनमें से अब मुझे कुछ भी याद नहीं है। मैंने यह अनुमान लगाया था कि वह वकील है और जेनी के कानूनी-मामलों को सँभालता है। मुझे यह याद है कि मेरी जवानी और अनुभवहीनता पर वह बहुत प्रसन्न हुआ था।

“इस पैसे के लोभ में अपने को बिलकुल बर्बाद ही न कर लेना,” उसने कहा, “बहुत अधिक कठोरता अपने ऊपर नहीं करना चाहिये।”

“पर मेरा ख्याल है कि आदमी स्वतः ही एक वक्त आता है—कि कठोर हो जाता है,” मैंने कहा, “अकस्मात् अनजाने ही एक दिन लोग बदल जाते हैं, सख्त, रूखे और लम्पट हो जाते हैं।”

उसने अपना सिर हिलाया, “तुम्हारा यह विचार गलत है। कुछ समय के उपरान्त जब तुम अपने वस्त्र धारण करना आरम्भ करोगी, तो तुम भले ही उस पर कोई विचार न करो, लेकिन उससे तुम्हारे अन्दर एक परिवर्तन आ जाएगा अवश्य। तुम जैसी दिखाई दोगी, वह तुम्हारा परिवर्तित रूप होगा। लेकिन तुम्हारे वस्त्र तब तक तुम्हारे शरीर पर नहीं आ सकते जब तक कि तुम जान-पूछकर, स्वेच्छा से उन्हें धारण न करो। परिवर्तन तब तक नहीं होते, जब तक कि उसके लिए चेष्टा न की जाय।”

उसी कमरे में दूसरे व्यक्ति के साथ व्यतीत होने वाले क्षण पुनः मेरे समक्ष मूर्तिमान हो उठे। कुछ ही घण्टे पूर्व फ्रेडी यहाँ था, और फ्रेडी की शिकायत थी, “क्या मामला है, बेबी। तुम ऐसा बनने की चेष्टा करती दीखती हो जैसे अभी तब भी कच्ची कली हो। ऐसा दिखाने से क्या लाभ है कि जैसे तुम यहाँ की अनेक चीजों को समझती ही नहीं हो। तुम्हें तो इस हुनर में मँजी हुई होना चाहिए।”

कुछ समय बाद मेरे ग्राहक ने कहा था, “अब हम एक दूसरे से परिचित हो लिए हैं न ?”

बुइसी अपने आदमी के साथ पहले ही कमरे में प्रवेश कर चुकी थी। दोनों आदमी एक साथ ही विदा हो गए। जाते समय उन्होंने जेनी से दो-चार बातें की थीं। ज्यों ही वह चले गए, जेनी मुझसे बोली, “आओ ड्राइंग-रूम में आ जाओ। कोई मेरे पास तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। वह आध घण्टे से प्रतीक्षा कर रहा है, क्योंकि, मैंने तुम्हारे लिये ही उससे तै किया था। तुम मार्ग का ही कमरा प्रयोग कर लो। मुझ में इतना साहस नहीं है कि तुम्हारे कमरे की तैयारी की प्रतीक्षा करने के लिये उसे रोक सकूँ। यह आदमी बेसब्र हुआ जा रहा है।”

जेनी के हाउस में मैं छै दिन तक काम करती रही और एक के बाद दूसरा आदमी इसी प्रकार आता और जाता रहा। बेनी राजी हो गया था कि मैं रविवार को छुट्टी कर लिया करूँ। कारबार की दृष्टि से यह

दिन कुछ हल्का होता है । दल का नियम यह था कि लड़कियों के सामने छुट्टी मनाने के लिए कोई सा एक दिन रख दिया जाता था, और इस अनु-पस्थिति को वे उम्मीदवारी पर काम करने वाली अध्यापिकाओं या नर्सों को बुलाकर पूरी कर लिया करते थे । उन छै दिनों में जबकि मैंने जेनी के लिए काम किया, मेरे कमरे में जो कि सदैव ही सुव्यवस्थित रहता था—बाईस आदमी आए थे ।

जेनी के सभी संरक्षक या तो खुशहाल व्यापारी थे या दूसरे पेशों के लोग थे । ये लोग किसी न किसी रूप में इस निम्न लोक से सम्बन्धित अवश्य थे । ये लोग साथ में कोई शालीन व्यापार या दूसरा पेशा करते होते या घर पर रहकर ही दल से अपना सम्बन्ध रखते थे । इनमें से कुछ पेशेवर जुआरी भी होते या फिर मुफ्त का माल उड़ाकर मौज करने वाले । वे फिल्म व्यवसाय के धन कुबेरों, करोड़पति घुड़दौड़ वालों या प्रसिद्ध वाल-स्ट्रीट के संचालकों के साथ साँठ-गाँठ रखकर चलते थे । उनमें वकील भी होते, लेकिन बहुधा अपराध या तलाक के मामलों की पैरवी करने वाले, खुशहाल लेकिन किसी भी परोपकार वृत्ति से सर्वथा हीन । यहाँ आने वाले लोगों में कीपर की तरह के दूकानदार भी होते लेकिन उनका व्यवसाय केवल उन मानव प्राणियों के लिए होता जो कि रात्री के समय सड़कों पर घूमते हैं । यहाँ पधारने वाले महापुरुषों में एक बड़ी संख्या उन राजनीतिज्ञों की भी होती जो कि शहर की भूमिगत राजनीतिक गतिविधि से ही सम्बन्ध रखते थे ।

जेनी इन सभी का मित्र थी, आड़े वक्त में काम आने वाली और अपने आड़े वक्त में अनेक बार उनकी कृपा-पात्र बनने का गौरव भी उसे प्राप्त होता था । लेकिन यह मैत्री और आड़े वक्त की दोस्ती हाउस से बाहर कभी प्रकट न होती, केवल उन अवसरों को छोड़कर जबकि जेनी संकट में फँस जाती और उसे मुक्ति के लिए प्रभाव डलवाने की आवश्यकता पड़ती । जो कुछ सहायता वह चाहती वह तुरन्त उपलब्ध हो जाती थी किन्तु उसकी चर्चा उसी की चार-दीवारी तक सीमित रहती । इस जिले का सबसे अधिक शक्तिशाली राजनीतिज्ञ जेनी से उसके आफिस में तो न मिलता परन्तु सड़क पर या और कहीं उससे भेंट कर अवश्य लेता था ।

आप यह कभी अन्दाज नहीं लगा सकते कि कौन आपको कहाँ से ताड़ रहा है ! और यह आदमी जो मेरे मस्तिष्क में है केवल कुछ घंटे रेस्तरां में बैठकर बात करने के लिए ही पचास डालर फेंक सकता है ।

लेकिन इनमें से कुछ फ्रेडी की तरह बर्बर भी होते, कुछ तो उससे भी कुछ अधिक । जेनी के साथ मेरी झड़प तब हुई और दल की ओर से धमकी दिए जाने का अवसर सर्व प्रथम मेरे समक्ष उस समय उपस्थित हुआ जबकि मैंने एक आदमी की माँग पूरी करने से इन्कार किया । यह आदमी मोटर-कारों का व्यापार करता था । मैंने यह अनुमान लगा लिया था कि वह साप्ताहिक अतिथि है और उसे प्रसन्न करना अनिवार्य है । जिस समय वह आया और हम सब लड़कियाँ हाल में एकत्रित हुईं, तो मैं तत्काल उसके प्रभाव में आ गई । वह बहुत लम्बे कद का आदमी न था, इसके बाल काले और कनपटियों पर कुछ-कुछ भूरे हो चले थे । उसके नक्श खुशगवार, मोहक और स्पष्ट थे । जीवन में सफल होने की भावना ने उसके नेत्रों में चमक पैदा कर दी थी और वह चमक सारे कमरे में फैली हुई सी प्रतीत होती थी ।

जेनी उसके व्यापार के बारे में बहुत कुछ जानती थी । वह बड़े कौशल के साथ हल्की कारों की बढ़ती हुई माँग, जिनका कि वह व्यापार करता था, का जिक्र कर रही थी । वह शीघ्र ही आयोजित होने वाले मोटर-कारों के प्रदर्शन की भी चर्चा कर रही थी । इस अवधि में वह लड़कियों की ओर किनखियों से देखना जाता था । मेरी यह तीव्र लालसा थी कि वह मुझे किसी तरह पसंद कर ले । तीसरे पहर का समय था और नित्य ही साढ़े चार और छै बजे के बीच ग्राहकों की बाढ़ आ जाती थी । ये आदमी वे होते जिन्हें घर जाकर भोजन करना होता लेकिन जो अपनी दूकान या आफिस से कुछ देर पहिले चल खड़े होते थे, ताकि रास्ते में कुछ देर इधर भी मनोविनोद कर सकें । मैं यह अनुमान नहीं लगा सकती थी कि मेरा अगला ग्राहक किस प्रकार का होगा । यह आदमी कम से कम सहनीय तो होगा ।

मुझे आखिर यह विदित हो गया कि उसने जेनी से मेरे बारे में ही

तै किया है । इनमें धीरे-धीरे कुछ फुसफुसाहट हुई । मैं यह समझी कि वह बीस डालर देने का अभ्यस्त है और जेनी उससे कुछ अधिक माँग रही है । लेकिन उनका फैसला हो गया । उसने तीस डालर का भुगतान कर दिया । जब वह उठने लगा तो उसने मेरी ओर निगाह डाली ।

दस मिनट बाद जब मैं अपने कमरे में थी तो नफरत और क्रोध से काँप रही थी, और मैं त्रस्त भी थी । कल्पना करो कि मैं उस की असाधारण माँगों की अवहेलना कर दूँ । तो मेरा क्या होगा, जेनी और बेनी मेरा क्या बनाएँगे ?

जेनी ने कहा था, “अगर तुम सद्व्यवहार नहीं करोगी, तो बेनी के पढ़े तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार करेंगे ?”

मैं यह अच्छी तरह जानती थी कि इस “सद्व्यवहार” का क्या अर्थ है । इस का अर्थ एक स्कूल की लड़की के आचरण से नहीं था और इसका सम्बन्ध किसी सामान्य लड़की के सदाचरण से भी नहीं था । इसका सम्बन्ध रहने और सोने के कमरे की माँगों की सहज पूर्ति करने के सद्व्यवहार से भी नहीं था । इसका अर्थ था विरोधी संक्स की वासना का खिलौना बनना और किसी प्रकार की शिकायत की गुंजायश न रहने देना, और मैं जो अपने को बहुत कुछ समझती थी, विद्रोह कर रही थी । लेकिन अच्छा होने का अर्थ था सदैव दूसरों की इच्छाओं की पूर्ति के लिए अधिक से अधिक विनम्र होना ।

जेनी इस आदमी की प्रवृत्तियों से भली-भाँति परिचित रही होगी । वह बहुत दिन से उसके हाउस और उसकी लड़कियों की परवरिश करता आ रहा है । यह सब जानकर भी उसने मुझे उसके साथ भेज दिया था । अगर मैंने अपनी अस्वीकृति और भिन्नक पेश की तो वह शिकायत करेगा क्योंकि उसके तीस डालरों का परा-पूरा दाम उसे वसूल नहीं होगा ।

फिर अब क्या हो !

बेनी से आज तक मैं कभी नहीं डरी थी, लेकिन आज उसके भय से अभिभूत हो चुकी थी । मैंने अपने ग्राहक से प्रार्थना की वह थोड़ा सब्र से काम ले । मैंने उसे फुसलाने और गुदगुदाने का भी प्रयत्न किया । लेकिन

मामला बहुत ही बेढब हो चुका था। वह बहुत ही बर्बर हो उठा और में कमरे से भाग खड़ी हुई, भागते हुए एक वस्त्र मैंने खींच लिया और आहार कक्ष में चली गई।

जेनी मेरे पीछे थी। उसकी आँखें मुस्करा रही थी लेकिन उसके होठ पत्थर की तरह सख्त हो गए थे।

“वैल ?”

वह ऐसे अवसरों पर केवल एक ही शब्द कहती थी। जितना साफ़-साफ़ मैं वर्णन कर सकती थी, मैंने उससे सब कुछ स्पष्ट कह दिया। मैं सिसकने लगी थी।

जेनी ने कहा, “लौटकर सीधे अपने कमरे में जाओ, इसके पूर्व कि वह आदमी कमरे से बाहर निकल कर आए। तुमने आखिर इसे समझ क्या रखा है। यह कोई रविवार को लगने वाला मंदरसा है ?” मेरी सिसकियाँ उलझ गईं जैसे कि किसी वेगवती धारा ने अन्दर से उमड़कर उन्हें कस लिया हो। मैं उतना देख सकती हूँ, जितना एक गुलाम देख सकता है, उममे अधिक नहीं, अगर मुझ पर कोई संकट आता है, तो मुझे साहस करके उस संकट का सामना करना चाहिए। मैंने यह निश्चय कर लिया था, मैं लौटकर उसके पास हर्गिज नहीं जाऊँगी। मैंने अवज्ञापूर्वक, जेनी की छलनापूर्ण आँखों में सीधे देखते हुए कहा, “और तुम यह भी जान लो कि इस प्रकार के आदमी के साथ मैं कभी भी एक कमरे में न ठहर सकूँगी।”

“इस बारे में फैसला शीघ्र ही हो जाएगा।”

वह मेरे पास से हट गई और वहाँ गई जहाँ मेरा परित्यक्त ग्राहक शिथिलतापूर्वक अपने वस्त्र धारण करने में व्यस्त था। मैंने उन्हें बातचीत करते सुना। जेनी ने उसे फटकारा नहीं, वरन् वह उससे क्षमा याचना करती रही। “नई लड़की है, अभी अनुभव हीन है, ... वह सीख जाएगी, उचित समय पर...” उसने उसे दूसरी लड़की स्वीकार करने पर राजी कर लिया। “मैं डॉट को अन्दर भेज रही हूँ। तुम उसे पसंद करोगे।”

उसने डॉट को पुकारा, जो कि गोलमटोल श्यामा थी। मैं हाउस के पिछले भाग में खड़ी होकर प्रतीक्षा करती रही, जब तक मेरा कमरा खाली

न हो गया, क्योंकि मेरे कपड़े वहीं पड़े रह गये थे । जिस समय में कपड़े पहिन रही थी, जेनी अन्दर आ गई । उसने किवाड़ बन्द कर लिए । वह पलंग की पट्टी पर धम से गिर पड़ी । “मैं यह देखना चाहती हूँ कि कोई अक्ल की बात तुम्हारे दिमाग में बैठती है अथवा नहीं । अगर नहीं तो...”

उसने अपनी धमकी को उसी प्रकार अपूर्ण छोड़ दिया । मैंने तत्काल उसके शब्दों को पकड़ लिया । “अगर नहीं तो, क्या होगा । मैं एक वेश्या हूँ । हाँ, मैंने यह सीख लिया है कि ग्राहकों को स्वीकार करूँ और उन्हें फारिग करदूँ । एक ही दिन के कूच में अनेक मंजिलें पूरी करदूँ । मैं इसका अधिक ख्याल नहीं करती क्योंकि यह पेशा मेरी अपनी पसंद है । लेकिन दुराचार के निम्नतम स्तर तक मैं नहीं उतर सकती । मैं उन लोगों में से नहीं हूँ ।”

“कल्पना करो कि मैं तुम्हें यहाँ से बाहर निकाल फेंकूँ । दल तुम्हें पकड़ लेगा । तुम जानती हो कि फिर क्या होगा ?”

“मैं नहीं जानती । लेकिन अगर मैं उस अघटित को घटित होने से रोकने में असमर्थ रही तो उसे सहर्ष स्वीकार करूँगी ।”

“यह क्या है, अगर रोकने में असमर्थ रही, तुम धमकी दे रही हो ?”

मुझे लगा कि जैसे एक विशाल बिह्ली मेरे सामने खड़ी है, और एक निमिषमात्र में कूदकर मेरे ऊपर सवार हो जायगी । वह थोड़ी सी झुक चुकी थी, और लगता था कि आक्रमण होने वाला है । कोमल भद्र और मैत्रीपूर्ण जेनी का यह दूसरा रूप था ।

“मैं धमकी नहीं दे रही हूँ ।” मैंने शीघ्रता-पूर्वक कहा, “लेकिन आसानी से मैं अमानवीय कृत्य के लिए तैयार नहीं हूँ ।”

वह पीछे हट गई और अपने दोनों हाथों से घुटनों को दबाकर बैठ गई । “जो कुछ मैं कहती हूँ डोडी, उसे सुनो । किसी दूसरे को कभी भूलकर भी यह अनुमान न लगाने देना कि तुम दल से प्रतिकार भी । । मुझसे कहा तो ठीक है । तुम्हें बहुत कुछ सीखना है । किसी भी दूसरी मंडम को यह न कहना कि तुम संघर्ष कर सकती हो ।

तुम अपने को ऐसे घोर संकट में डाल लोगी जिस की तुम ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी । अगर उन्हें तुम से बहुत अधिक खतरे की आशंका हुई तो सिपाहियों को या तो तुम्हारी लाश कहीं पार्क में पड़ी मिलेगी अथवा हडसन की मछलियाँ उसका भोग लगाती होंगी । मैं अभी ही बेनी को खबर भेज सकती हूँ और यह कह सकती हूँ कि तुम आपत्ति खड़ी कर रही हो और रात होने से पहले वह लॉग तुम्हारे पास पहुँच जायेगे, यहीं तुम्हारे कमरे में, या जहाँ कहीं वह तुम्हें प्राप्त कर सकेंगे । मेरा ख्याल है कि मेरे अच्छे ग्राहक की अवहेलना करने पर वह तुम्हारी ज़बान का अगला हिस्सा जलाकर छोड़ेंगे । लेकिन मैं उसे नहीं बुलवा रही हूँ, और सब कुछ भूलने की कोशिश कर रही हूँ ।”

मैं तत्काल प्रायश्चित्त करने पर सन्नद्ध हो चुकी थी । वह जेनी ही थी । मेरा विचार है कि वही जेनी का वास्तविक स्वरूप था । अपनी पोशाक ठीक से पहिनने के पूर्व ही मैं उस की तरफ बढ़ी और उसके अत्यन्त समीप खड़ी हो गई ।

“धन्यवाद, जेनी । मैं सब खेल खेलने का प्रयत्न करूँगी और यहाँ मुझे काफ़ी सुविधाएँ मिली हैं । मैं यह जानती हूँ कि मैं कल की पेशीनगोई नहीं कर सकती, लेकिन सम्भव है कि मुझ में फिर भी कहीं कठोरता आ जाय लेकिन मुझे यह सब पसंद नहीं है ।”

“मैं तुम्हें यह बता देती हूँ कि मैं दूसरों की अपेक्षा अपने हाउस को बहुत ही अलग ढंग पर चलाती हूँ । तुम देखोगी कि कुछ हाउस अत्यन्त नारकीय हैं । मैं चाहती हूँ कि तुम अभी से उनके लिए अपने को तैयार कर लो । बहुत थोड़े आदमी ऐसे होते हैं जैसा तुम्हारे सामने अभी आया था । मेरा नियम है कि मैं ऐसे लोगों को स्वीकार नहीं करती । लेकिन वह तगड़ा ग्राहक है । वह किराये का अच्छा-खासा भाग अदा करता है । कुछ दूसरे हाउसों में वह अक्सर पहुँचता है । अच्छा अब वह सब भूल जाओ ।

वह बाहर चली गई और मेरे मन में कुछ ऐसी भावना पैदा हुई कि काश मैं अन्तिम बार इस हाउस में अपने कपड़े पहिनती होती ।

लेकिन वह होना नहीं था । जैसा जेनी ने घोषित किया था, मुझे

अभी भी बहुत कुछ सीखना था। मैं अपने अभिमान से, अपने विद्रोही आत्मसम्मान से डरती थी।

उस सप्ताह मैंने अपनी बख्शीश को छोड़कर पाँच सौ पैंतालीस डालर कमाए। आज तक किसी भी लड़की द्वारा जेनी को कमाकर दिए गए पैसे से यह रकम काफी अधिक थी। इस आमदनी में अधिक सहायता जेनी ने ही की थी, क्योंकि वह अपने सम्मानित ग्राहकों को टेलीफोन करके यह सूचित करती थी कि उसके हाउस में आजकल एक नई लड़की आई हुई है जिसे आज तक उन्होंने नहीं देखा है। बहुधा वह इस सूचना को पाकर अत्यन्त प्रसन्न होते। जेनी अपने पक्के आसामियों की रुचि से भली भाँति परिचित रहती थी और उसे यह भी पता था कि किस की कैसी पसन्द है। अमुक को सुनहरे वालों वाली, अमुक को श्यामा, छरहरी या प्रथुल छोकरी पसंद आती है। उस वकील के अतिरिक्त जिस ने पचास डालर दिए थे, दो और आदमी थे, जिन्होंने पचास डालर दिए थे। एक ने तो पूरी रात ही तै करली थी। उन बाईस में से जिस का मैंने मनोरंजन किया पाँच ने तीस-तीस डालर दिये। केवल एक आदमी ऐसा था जिस के लिए जेनी ने दस डालर तक घटा दिए। उस ने मुझे बताया कि वह एक कलाकार है जिसने एक बार उसका चित्र बनाया था जब कि वह अपने, सुनहरे दिनों में थी और यह कलाकार उसका प्रेमी था। उसने उससे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था क्योंकि वह आर्थिक संकटों के चक्र में फँस चुका था। लेकिन फिर भी वह सदैव उसकी सहायता करने के लिए तैयार रहती थी।

मार्गे ने कहा, “जेनी ने तुमसे कहा कि उसने केवल दस डालर वसूल किए। यह तो गनीमत रही। जब कभी वह आता है तो जेनी उसे यूँ ही एक लड़की साँप देती है और डालर स्वयं ही रख लेती है।”

उसने मुझे दो डालर बख्शीश में दिए थे, कई सप्ताह बाद जब मैं पुनः जेनी के हाउस में भेजी गई, तो वह फिर आया और मुझे पहिचानते हुए बोला कि क्या वह मुझे प्राप्त कर सकता है। जेनी ने फिर कहा कि नक़द दाम अदा करने की असमर्थता को देख कर ही उस ने फिर एक सौदा कर लिया है। अब की बार मैंने उससे काम के बारे में

बातचीत प्रारम्भ की। मैंने सोचा कि अगर कन्वास पर मेरा एक रंगीन चित्र वह तैयार कर दे तो कितना सुन्दर रहे। मैं इसे घर भेज दूँगी और डान और इवैलिन के लिए यह एक ज्वलन्त प्रमाण हो जाएगा कि मैं एक कलाकार के मॉडल के रूप में ही काम करती हूँ।

“किसी समय मेरे पास कुछ रुपया बचेगा,” मैंने कहा, “तो क्या तुम मेरा चित्र तैयार कर सकोगे?”

वह एक क्षण के लिए यह भी भूल गया कि मैं उसकी बाहों में लिपटी हूँ और किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने मुझे प्राप्त किया है।

“क्या तुम तैयार हो। पिछले लगभग एक वर्ष से मुझे कोई शानदार काम नहीं मिला है। लेकिन मैं फिर भी उसी तरह काम करता रहा हूँ। इसलिए, मेरा हाथ निकम्मा नहीं हुआ है। मैं तुम्हारा नग्नचित्र बना दूँगा, तुम कुछ भी देना, या कुछ भी न देना, बस कभी-कभी इसी प्रकार कृपा कर दिया करना।”

“नग्न नहीं, केवल मेरा चेहरा। मैं बचाने की कोशिश करूँगी और पचास डालर खर्च करूँगी। लेकिन आप की दूसरी माँग, मेरा नियम है कि हाउस के बाहर मैं कोई मित्र नहीं बनाती।”

उसने मुझे बता दिया कि जब कभी मैं वैसा करने की स्थिति में होऊँ तो मैं किस तरह उसको खोज निकाल सकती हूँ। पचास डालर तो उसने कहा, भगवान की बहुत बड़ी कृपा की सूचक है। वह एक बहुत ही सुन्दर काम बनायेगा। उसने विदा होते हुये दो डालर बख्शीश में दूसरे ड्रेसर पर रख दिये लेकिन जब विदाई का चुम्बन उसने किया तो वह दो डालर भी मैंने उसकी जेब में चुपके से खिसका दिये। मैंने वह पोर्ट्रेट बनवा तो ली, लेकिन काम बिलकुल ही सुन्दर नहीं था। मैंने उसे डान के पास नहीं भेजा। बाद में उसका क्या बना, मुझे याद भी नहीं है।

उस प्रथम सप्ताह में जब मैंने पाँच सौ पैतालीस डालर कमाये थे, उसमें से आधा वास्तव में जेनी ने अपने लिये रख लिया था। यह कोई अन्यायपूर्ण विभाजन नहीं था। उसका हाउस बहुत अधिक व्ययसाध्य था। जिस काम के लिए उसने कमरे लिये थे, उसे देखकर उसका किराया भी बहुत अधिक लिया जाता था, इमारत के सुप्रिटेण्डेण्ट को लम्बी

बख्शीश देनी होती थी। जो रंगीन लड़कियाँ कमरों को सुव्यवस्थित रखतीं और भोजन तैयार करतीं। वह भी बाजार से दुगुना वेतन लेती थीं। उस आय का एक हिस्सा दल को भी दिया जाता था। इन खर्चों में से बीस डालर “बेल-बोन्ड ब्रांच” में दिये जाते थे। हर सप्ताह कुछ न कुछ बेनी को भी दिया जाता था ताकि उसे अपनी नई-नई छोकरियाँ भेजने की प्रेरणा मिलती रहे और वह जिले की राजनीतिक संस्था के लिये भी कुछ दान-दक्षिणा भेज सके। और जेनी को स्वयं भी सदैव उस स्थान उठने के लिए तैयार रहना होता था। पुलिस उसे या किसी दूसरी मैडम को तंग नहीं करती थी जब तक कि कोई गुमनाम, किसी पड़ोसी द्वारा या किसी शत्रु द्वारा शिकायत न हो। अगर शिकायत होती, तो उसके बाद पुलिस का छापा मारना अनिवार्य होता। उस समय छोकरियों के लिये जमानत करनी होती, अपने स्वयं के लिये और भी बड़ी जमानत, एक बहुत बड़ा जुरमाना और फिर अपने को दोबारा व्यवस्थित करना पड़ता और कारबार को भी जमाना होता।

मेरे अपने हिस्से में से मैंने सब से पहिले जेनी के लिए कटौती की। फिर उस डाक्टर की फीस के लिए बचा रखा जो कि प्रत्येक सप्ताह हाउस में लड़कियों को देखने आता था और हर लड़की से ऊँची फीस वसूल करता था। इस का कुछ भाग दल के अधिष्ठाता को भी दिया जाता था। बेल-बोन्ड फीस भी वसूल की जाती और उसके अतिरिक्त भोजन का व्यय भी होता क्योंकि दिन का और रात का खाना बहुधा लड़कियाँ हाउस में ही खाती थीं और उसके लिये मैडम चाहे जो कुछ वसूल करले। कभी-कभी लंच भी वहीं होता था। जेनी खाने के पच्चीस डालर हम से वसूल करती थी। बख्शीश में मेरे पास पचास डालर आ गये थे। सब निकाल कर मेरे पास दो सौ डालर बच रहे थे। जेनी दूसरे सप्ताह भी मुझे अपने पास रखना चाहती थी और मैं वहाँ रहना भी चाहती थी। मैं अच्छी तरह जानती कि केवल उस के पास रह कर ही मैं उतना अच्छा काम चला सकती हूँ। बेनी की सूची में ऐसे हाउस भी थे जहाँ मुझे केवल पाँच डालर फीस ही मिल सकती थी लेकिन बेनी मुझे वहाँ नहीं भेजता था।

“मैं भेजना चाहूँगा तो, क्योंकि दूसरे हाउसों को भी नई लड़कियाँ दरकार हैं। मुझे उनका भी ख्याल रखना है, लेकिन मैं तुम से कहता हूँ। क्या ? कि मैं अगले सप्ताह उसे फिर तुम्हारे पास भेज दूँगा। तुम अभी से अपनी तारीखें निश्चित कर सकती हो।”

लेकिन हुआ कुछ ऐसा कि मैं सप्ताह के गुजरने से पहिले ही फिर जेनी के पास आगई। जिस हाउस में मुझे भेजा गया था, वहाँ दल की पहुँच हो चुकी थी और जब वह अपना काम करके लौटा तो केवल विध्वंस और व्यथा की प्रतिध्वनि ही चारों ओर मुखर होती हुई अवशेष रह गई थी।

४

“हेनरिता” मेरी नई मैडम का नाम था। जो कुछ जेनी नहीं थी, हेनरिता वह सभी कुछ थी। वह मोटी थी, उसके नक्शे भौंड़े और उस की छातियाँ बाहर को लटकी हुई थी, उसी प्रकार जैसे मैंने प्राचीनकाल की मैडमों का हुलिया बयान करते हुए पहिले कहा था। वह झुकी हुई थी और उसका फ्लैट बहुत ही बुरी दशा में रहता था। उसके यहाँ केवल एक ही रंगीन लड़की थी और वह भी बहुत काहिल थी। मेरे कमरे में रखे फूलदान में वह कभी भी पानी नहीं बदलती थी।

यह बहुत ही खुशहाल हाउस था। हेनरिता तीन लड़कियाँ रखकर काम करती थी। उसका व्यापार बहुधा टैंक्सी ड्राइवरों पर ही निर्भर था और अपने भद्देपन और शिथिलता के बावजूद भी वह अपने ग्राहकों के विषय में सामान्यतः अपने मापदण्ड को ऊँचा रखती थी। टैंक्सी-ड्राइवर यह भली भाँति जानते कि उसके हाउस में केवल उन्हें शौकीन ग्राहकों को ले जाना है, जो कि अच्छे खर्चिले समझे जा सकते थे।

उसके अधिकांश ग्राहक शहर के बाहर के लोग होते थे। इसलिए उसका स्थायी कारबार बहुत कम था। लेकिन फिर भी हर समय उसके दरवाजे की घण्टी भन-भनाती रहती थी और उसे बार-बार उठ कर जाना पड़ता था। उसने अपनी लड़कियों पर कोई खास फीस तै नहीं कर रखी थी। उसका नियम था कि वह टैंक्सी ड्राइवर को जब उसका

लाया हुआ ग्राहक वापस करती थी तो दो डालर बख्शीश देती थी । अगर वह दस डालर से अधिक दाम देता था, तो उसे नोट कर लेती थी और जब वह अगली बार कोई ग्राहक लाता था तो वह उसे एक अतिरिक्त डालर देती थी ।

हेनरिता के बारे में मैं यह अवश्य कह सकती हूँ कि वह ड्राइवरों के साथ ईमानदारी से व्यवहार करती थी । उन्हें भी उन पर उतना ही विश्वास था । जिन दिनों कार-बार कुछ सरसब्ज होता तो हेनरिता हुलसकर ग्राहक लाने वाले हर ड्राइवर को एक अतिरिक्त डालर दे दिया करती थी । अगर शिकायत हो जाती और पुलिस बहुत तंग करना शुरू कर देती तो नए स्थान पर अड्डा जमाना मुश्किल नहीं पड़ता । जितने ड्राइवर उसकी सेवा में थे, वह उन सबके घर के पत्तों से भनीभाँति परिचित थी और अपने नए स्थान की सूचना देते हुए वह उन्हें कार्ड डाल देती थी और नए स्थान पर पहिली रात में ही उसका कार-बार धड़ाके से चल पड़ता था ।

चूँकि उसकी फीस निश्चित नहीं थी, इसीलिए जब कभी कोई दास डालर से कम देता था तो वह लड़कियों से पूछ अवश्य लेती थी । बहुत थोड़ी मैडम इस नियम को मानती थी । जो कुछ किसी लड़की को मिलता वह सदैव ही उन्हीं द्वारा निश्चित किया जाता । बहुधा ऐसा देखा जाता था कि टैक्सी ड्राइवर हेनरिता को एकान्त में ले जाकर यह कहता था कि उस ग्राहक से बहुत अच्छे पैसे मिलने की उम्मीद है क्यों कि उसने अपने नगर में मुन रक्खा है कि शहर में वेश्याओं का मूल्य भी नगर की शान-शौकत के समान ही ऊँचा होता है । ऐसे अवसरों पर हेनरिता ड्राइवर से कल आने की बात कहती थी । अगर ग्राहक से १५ डालर से भी अधिक वसूल हो जाते तो वह ड्राइवर का कमीशन दोगुना कर देती थी और बहुधा होता यही था ।

जेनी के यहाँ थोड़ा अवकाश, और शिथिलता रहती थी । और यहाँ कारबार का बहुत जोर था । पश्चिम की ओर से दोपहर से पहिले आने वाली गाड़ियाँ विक्री एजेण्टों, खरीदारों, सौदागरों और यात्रियों को ढोकर लाती थीं , जिनके मस्तिष्क में शहर में आते ही यानी घर की

चारदीवारी की कैद से दूर होते ही एक नजारा करने की बात जम चुकी होती थी। दोपहर तक वह हेनरिता के यहाँ पहुँचना शुरू कर देते थे। वह अपने टैक्सी ड्राइवर से कहते कि वह “उन्हें कहीं ले चले।” जेनी के यहाँ मध्याह्न में हम लोग काम आरम्भ करने की सूचना देते थे, लेकिन हेनरिता हमसे ग्यारह बजे ही तैयार होने को कहती थी। चाहे हमने रात भर काम किया हो या न किया हो। हेनरिता के यहाँ बहुधा रात भर काम करना होता था।

हेनरिता के यहाँ एक बार मैंने जल्दी से एक आदमी को फारिग किया क्योंकि दूसरा आदमी प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे उस आदमी का नाम स्मरण नहीं, केवल इतना याद है कि वह ओकन ओहियो का निवासी था और अपनी जवानी के दिनों में एक अच्छा-खासा शैतान रह चुका था और उसने मुझे यह भी बताया कि अपने विवाह के उपरान्त उसने किसी स्त्री से सहवास नहीं किया था। केवल मैं ही प्रथम औरत थी। मुझे पाकर वह प्रफुल्लित था और मैं भी उसके सहवास को थोड़ा और बढ़ाना चाहती थी। मैं चाहती थी कि उसकी जवानी के बीते क्षणों को पुनः उसके लिए मूर्तिमान करदूँ ताकि उसके सामने वह क्षण पुनः नाच उठे जबकि उसके शौर्य के सम्मुख समर्पण करने वाली लड़कियाँ निस्तेज हो जाती थीं। लेकिन हेनरिता शीघ्रता करने का आदेश दे चुकी थी। “यह दूसरा आदमी जो तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। मेरे पति का मित्र है। अगर मैं उसके साथ ठीक व्यवहार नहीं करती तो घर पहुँच कर मुझे उसकी लाल आँखें देखनी पड़ेगी।”

हेनरिता विवाहित थी। उसका पति बीमा-व्यवसाय में काम करता था। उसका छोटा लड़का सैनिक-स्कूल में पढ़ने जाता था। उसका पति हम लोगों के साथ शाम का खाना खाने के लिये हाउस में आता था। इसलिये मुझे मजबूरी तौर पर अपने साथी का प्रेमाभिनय बीच में ही समाप्त करना पड़ा। मैंने उससे कहा कि मैं ओकन ओहियो के विषय में और अधिक सुनना चाहती हूँ। किन्तु इसके लिये उसे दोबारा आना पड़ेगा। यह बहुत भीड़-भाड़ का समय है। उसने समय बढ़ाकर और दोगुना पैसा

देने के लिये तैयार होकर एक उलभन सामने प्रस्तुत कर दी। बहुधा लोग ऐसा करते हैं और लड़कियों को वह मंजूर करना होता है। मुझे हेनरिता के पति के मित्र की चिन्ता थी मैंने एक चादर ऊपर ओढ़ ली और हेनरिता को बराण्डे में बुलाकर सारा मामला स्पष्ट कर दिया।

“तुम्हें मंजूर करना ही पड़ेगा” उसने कहा “लेकिन मेरे भगवान, तुमने मुझे तो सकट में डाल दिया। ग्राहकों के साथ इतना अच्छा सलूक नहीं करना चाहिए। मेरे ग्राहक, बहुधा सभी ग्राहक दोबारा लौटकर इधर नहीं आते। वह शहर के बाहर के लोग होते हैं। अगर वह पैसा दे चुके, तो बेहतर है कि जल्दी से जल्दी उनसे छुटी पाई जाय।”

“लेकिन, मैडम तुम्हें यह भी तो याद रखना चाहिए कि मुझे अपनी बख्शीश का भी तो ख्याल करना पड़ता है।”

“ठीक है ? ठीक है ? तुम लड़कियाँ सदैव ही अपनी बख्शीश का ख्याल रखती हो। अगर पति लोग अपनी पत्नियों को बख्शीश देने लगे तो उन्हें बेहतर सेवा प्राप्त हो, मुझे विश्वास है। तुम अपना काम चालू रखो। मैं उसको दूसरी लड़की के लिए तैयार कर लेती हूँ।”

मैंने ओक्रन के विषय में और भी सुना। मैं अपने इस अतिरिक्त समय की सहायता से उसके उस बीते डान-ज्वाँ<sup>१</sup> समय को पुनः उसकी पकड़ में ला सकी। ऐसा प्रतीत होता था कि मैंने अपने अस्तित्व से उसे जूलिया नाम की युवती की याद दिला दी थी। वह ओक्रन की फूलों की थे। लेकिन मुझ पर तो वह आसक्त हो गई। जी हाँ जनाब ? दूसरी रात समाप्त होते-होते वह मुझ पर आसक्त हो गई थी। मैं उसका सर्वप्रथम आदमी था। मैंने उससे कहा था कि वह ट्यूलिप के फूल की तरह दिखाई पड़ती है। सुनकर वह प्रसन्नता से चीख उठी थी और अब तो वह मुरझाए ट्यूलिप के फूल सी दीख पड़ती है।”

१. डान ज्वाँ—एक दुश्चरित्र स्पेनिश सामन्त, जिसने एक स्त्री की अस-मत लूटी, उसके बाप को द्वन्द्व युद्ध में मार डाला, उसकी कब्र पर जाकर उसकी मूर्ति को दावत का निमंत्रण दिया। अन्त में वह मूर्ति उसे नक में ले गई। प्रचलित अर्थ में एक बहुस्त्री गामी पुरुष।

“क्या मैं भी ट्यूलिप के मुरझाए फूल-सी लगती हूँ, मि० अक्रोन ओहियो ?”

“ओह नहीं, नहीं। सच बात है। मैं तो तुम से बार-बार मिलना चाहता हूँ। वह जूलिया ही वैसी दिखाई देती है। वह भी अपने बारे में ऐसा ही ख्याल करती है। तुम्हें कुछ अनुभव है, जब किसी लड़की के हृदय में प्रेम का अंकुर उग आता है तो वह कैसा अनुभव करती है ?”

“हाँ” मैंने स्वीकार कर लिया, “मैं जानती हूँ।”

“तुमने सर्व प्रथम यह किस समय अनुभव किया कि तुम उजड़ चुकी हो ?”

“अब, अब, श्रीमान् अक्रोन। यह बाते जाने दीजिये। आप मेरे बारे में अधिक जानने की कोशिश न कीजिये। मैं चाहती हूँ कि आप बातचीत करते चले और मैं सुनती चलूँ। मुझे जूलिया के बारे में कुछ और बताओ। क्या वह मुन्दरी थी। क्या वह मेरी ही तरह थी। मेरा मतलब है ट्यूलिप की समानरूपता को छोड़कर। क्या तुमने उसे चुम्बन करना सिखाया था।”

“क्या मैंने। कहो तो मित्र। ठीक-ठीक कहो ? क्या मैं चुम्बन लेना भूल चुका हूँ।”

“तुम्हारी शादी हो चुकी है न ?”

“ओह, वह तो ठीक है। लेकिन उससे तो आदमी लीक में फँस जाता है। सामने से कुछ भी निकल जाय, लेकिन आप खड़े होकर कभी उधर ताकेगे भी नहीं। क्योंकि आदमी में उतनी चुस्ती नहीं रहती।”

“मेरा चुम्बन करो और परीक्षा करलो.....नहीं-नहीं तुम भूले बिलकुल नहीं हो। तुम तो अभी उठान पर हो। तुम मुझे मूर्ख बना रहे हो। तुम काफ़ी इधर-उधर जाते हो। मुझे तुम्हारी पत्नी को इसकी सूचना देनी चाहिये।”

आह, वह कितनी मस्ती से हँस रहा है। वह पूरी तरह आनन्द ले रहा है अक्रोन ओहियो। न जाने वह स्थान कहाँ है। न जाने जूलिया भी कहाँ होगी। क्या जाने वह भी अपनी प्रेम-क्रीड़ाओं को इतनी ही स्पष्टता के साथ याद कर सकती होगी, जैसे इसे याद है।

दूसरा घण्टा भी समाप्त हो गया । वह दो घण्टे आनन्द ले चुका है । मेरा ख्याल है कि अगला घण्टा भी मैं उतने ही आनन्द से गुजार सकती हूँ । लेकिन हेनरिता के हाउस में तीसरे घण्टे का समय नहीं आया । जब मैंने अपने अक्रोन मित्र को विदा किया और बाहर आई तो देखा कि सभी लड़कियाँ वहाँ से गायब है और हेनरिता फर्श पर पड़ी हुई है । एक आदमी उसका मुँह पकड़े हुए है और एक लातें लगा रहा है और दूसरा उसके कपड़े उतार रहा है ।

## ५

वे काले आदमी थे, पतले-दुबले तार की तरह । एक आदमी ने अपना हाथ हेनरिता के होठों पर रखा हुआ था और वह पूरी शक्ति के साथ उसपर झुका हुआ था । दूसरों ने उसे लगभग नंगा कर दिया था । और वे अपने काम में इतने तल्लीन थे कि मेरी उस भयभीत उपस्थिति से प्रायः बिल्कुल ही अपरिचित थे ।

मैं दरवाजे में हक्की-बक्की खड़ी थी । इस दृश्य में एक विचित्र यथार्थ था । हेनरिता मुश्किल से ही विरोध कर पा रही थी । जब उसको लात मारी जाती तभी वह कई मुरकियाँ खाती थी । वह जानती थी कि अपने आपको बचाने का प्रयत्न करना कितना निरर्थक काम है । वह दल के तगड़े पट्टों के हाथों में थी और जानती थी कि वह अपना काम पूरा किए बिना वापस जा नहीं सकते ।

जब मैं ऐसी घटनाओं का सिंहावलोकन करती हूँ तो उस दृश्य को बिना याद किए नहीं रह सकती, जो मार्गे ने एक बार देखा था और जिसे वह बार-बार सुनाया करती थी ।

एक कमरे में मार्गे के साथ पाँच आदमी और थे । पाँच में से चार खामोशी और गम्भीरता से पाँचवे को खत्म करने आए थे । उन कातिलों के लिए मार्गे की उपस्थिति नगण्य थी । उनके शिकार ने अपने को झुड़ाने का कोई भी प्रयत्न नहीं किया । उसने एक सिगरेट माँगी थी—आखिरी सिगरेट और एक आदमी ने संकेत द्वारा मार्गे को कहा था कि वह उसकी आरजू पूरी कर दे । उसकी अंगुलियाँ काँप रही थीं

जबकि उसने माचिस की तीली जलाकर उसकी सिगरेट सिलगाई थी। उसकी अँगुलियाँ आज भी जत्र कभी वह अपने लिए सिगरेट सुलगाती है तो काँप उठती हैं।

उस शिकार को चतुराई के साथ बाँध लिया गया था। उसके मुड़े हुए घुटनों के नीचे से रस्सी निकाल कर उसकी पीठ पीछे बँधे हुए 'हाथों' से बाँध दी गई थी। और उसका एक फन्दा गले में लटका दिया था। उसको बिस्तर पर फेंक दिया गया था, मार्गों के बिस्तर पर और उसका गला घुटना शुरू हो गया था। ज्यों-ज्यों वह अपने को मुक्त करने के लिए चेष्टा करता गले की रस्सी तंग होती जाती। उन खामोश और दुर्भेद्य मुखाकृतियों से सिगरेट का धुआँ निकलता रहा। चारों कातिल कमरे के चारों ओर बैठे ही रहे जब तक कि बँधा हुआ आदमी धीरे-धीरे, अपरि-हार्यतः दम घुट-घुट कर समाप्त न हो गया। दल में प्रतिशोध लेने की यही प्रणाली थी। मार्गों को हुक्म दिया गया था कि वह जब तक रात न पड़ जाय उस प्राण विहीन शरीर पर पहरा देती रहे। जिस समय अन्धकार गहरा हो गया, वह लाश वहाँ से हटा ली गई।

हेनरिता को उसी प्रकार शिथिल पड़े देख कर मेरी आँखों के सामने यही दृश्य घूम गया। आखिर मेरी चीख निकल गई। सुनकर वह उछल पड़े और मेरी ओर घूरने लगे। उनमें से एक ने कहा, “हमने सोचा था हम सभी लड़कियों को बाहर निकाल चुके हैं।”

मैं इतनी भयभीत थी कि उत्तर देने में भी असमर्थ थी। हेनरिता ने मेरी ओर से उत्तर दिया।

“अरे वह डोडी है, उसे कुछ न कहना।”

उनका नेता धीरे से उठकर मेरे पास आया। मैं हिल न सकी। उसने पूछा, “तुम बेनी कैस्टलो की लड़की हो।

“हाँ, तुम हेनरिता के साथ यह क्या कर रहे हो।” मैंने कहा।

उसने उत्तर में करारा हाथ मेरी कनपटी पर जड़ दिया और दूसरा हाथ मेरे दूसरे गाल पर मारा। मैं फर्श पर लुड़क गई। वह मेरे पास आया और मेरी टांगे पकड़ कर घसीटने लगा और मुझे एक तरफ फेंक आया।

“सिर्फ थोड़ा ही, यह जताने के लिए कि स्थिति कैसा है,” उसने कहा, “चूँकि तुम हाउस में हो, इस लिए जब तक हम बाहर न चले जायें तुम यहाँ से बाहर कदम न रखना । यहीं बैठो और अपना मुँह न खोलना । अगर खोला तो याद रखना कि बहुत बुरा होगा, तुम्हारे लिए ।”

हेनरिता कराही, “जैसे ये कहें वैसा ही करती चलो डोडी । खामोश रहो । अब कोई चारा नहीं है ।”

मैंने आज्ञा का पालन किया, मैंने यह भी पूछने का साहस नहीं किया कि आखिर वह क्या चीज है जिसका अब कोई चारा नहीं है । लेकिन शीघ्र ही मुझे सब कुछ विदित हो गया ।

हेनरिता पर दल के साथ विश्वासघात करने का आरोप था । वह बहुत सा पैसा पैदा करती थी और उसके समान खुशहाल मैडमो से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे मुख्य अधिष्ठाता को और भी अतिरिक्त भेंट करें, और दल के जासूसों ने यह भी पता लगा लिया था कि वह कभी-कभी ऐसी लड़कियों को भी प्रयोग करती थी जो कि दल के रजिस्टर में दर्ज नहीं होती थीं । यह एक ऐसा अपराध था जिसे नजर-अन्दाज नहीं किया जा सकता था ।

एक समय था जबकि मैं इस ‘व्यापार’ में फँसी नहीं थी और सोचती थी कि प्रत्येक मैडम और गली में काम करने वाली लड़की स्वतंत्र है और चाहे जब और जहाँ काम कर सकती है । दुनिया में ‘गोरे गुलाम’—सुना है—होते ही नहीं । ऐसी बहुत सी लड़कियाँ होंगी जो पैसा कमाने के इस ‘सरलतम’ साधन का अवलम्ब लेने की बात सोचती होंगी । जमाना गुजर गया जबकि कच्ची उम्र की लड़कियों को वेश्यावृत्ति के लिए बाधित नहीं किया जा सकता था । यह उक्ति आज भी प्रयोग की जाती है, लेकिन संयुक्त राज्य में उसे अमल में नहीं लाया जाता । लेकिन लड़कियों की संख्या ज्यों ही बढ़ने लगी, मैडम लोगों ने अपने चुनाव को भी अधिक सख्त कर दिया । वह अब सिर्फ लड़कियों के प्राप्त होने मात्र से प्रसन्न नहीं होतीं, वरन् वह अच्छी लड़कियाँ चाहती हैं, बहुत चोखी-चुस्त ?

तब बुक करने वालों का वर्ग पैदा हो गया । यह आदमी अच्छा खासा

गुण्डा होता था, जो कि प्राचीन काल के उन दलों की तरह होता था, जो स्त्रियों की कमाई पर गुजर करते थे, इस नए इन्सान ने वह तरीके निकाल लिए जिनके द्वारा वह एक या दो लड़कियों की कमाई में से ही नहीं बरन् बीसियों और सैकड़ों लड़कियों की कमाई में से अथवा जितनी लड़कियों को अपने पंजे में रखने की उसकी सामर्थ्य होती उतनी ही लड़कियों की कमाई में से अपना हिस्सा बँटा सकता था ।

इसी तरह इस संगठित व्यापार का निर्माण हो गया । मैडम नहीं बरन् यही लोग लड़कियों को खरीदते हैं जिस तरह बेनी कोस्टेलों ने मुझे फँसा लिया था । हर बुकर का अपना चुनीदा इलाका होता है और अपने हाउसों की सूची होती है और उसके इलाके पर अनधिकार चेष्टा करने वाले लोगों की संख्या भी काफी होती है । इन्हीं बुक करने वालों में एक शक्तिशाली आदमी इस रहस्यमयी दुनिया का अधिष्ठाता बन गया । यह व्यापार इस निम्न लोक के अधिष्ठाता के लिए इतना महत्वपूर्ण हो गया कि उसका नजर अन्दाज किया जाना असम्भव ही था । यह आदमी अपने को नगर का “पाप का जार” घोषित करता था । वह और उसके सहायक इतने शक्ति-शाली थे उसके मुँह से निकला हुआ शब्द बुक करने वालों और मैडमों के लिए कानून बन गया और लड़कियों के लिए ऐसा कानून जिसके अतिरिक्त किसी दूसरे कानून के पालन करने का वे साहस ही न कर सकती थीं । पूरे नगर में रात भर में लग-भग हजारों हाउसों के द्वार बन्द होते और खुलते हैं, सैकड़ों लड़कियाँ अपने कारोबार को चलाती हैं और प्रत्येक रात्रि में कमाए गए डालरों के ढेर में से एक बहुत बड़ा भाग इस पाप के देवता के हाथों में पहुँच जाता है—जिसने इस दल को इतना शक्तिशाली बना दिया था कि.....।

कि हेनरिता फर्श पर लुढ़क रही थी, शिथिल और विरोध करने में असमर्थ और दल उसके प्रति अपनी कारगुजारी करने में तल्लीन था ।

जिस समय उसकी पोशाक का अन्तिम वस्त्र भी फट चुका था, तो दल के आदमियों ने उसे हाल में रखी हुई एक अलमारी में जबर्दस्ती ठूस दिया और ऊपर से ताला बन्द कर दिया । अपने लिए भय होते हुए

भी नाटक के इस अन्त पर मुझे काफी संतोष हुआ था । मुझे यह भय होने लगा था कि मार्ग के समान मुझे भी कहीं उसी तरह का दृश्य देखने पर बाध्य न होना पड़े । अब यह प्रकट हो चुका था कि हेनरिता को प्राणदान मिल चुका है ।

रहने के कमरे में दीवान पर मुझे छोड़ देने में शायद उन्हें आपत्ति थी । उनमें से एक ठग ने संदेहात्मक दृष्टि से मेरी ओर देखा—“बेहतर है कि इसे भी नगा करके दूसरी के साथ ही बन्द कर दो” उसने परामर्श दिया । लेकिन गनीमत हुई कि नेता ने उसकी बात को अस्वीकार कर दिया ।

“हम जब जायेंगे तो उसे साथ ही लेते जायेंगे । वह यह जानती है कि आपत्ति खड़ा करने से अधिक बुद्धिमानी का काम कौन सा है ।”

ये आगन्तुक फिर कपड़ों की लूट मचाने के लिए हाउस में फँस गए । उन्होंने प्रत्येक अलमारी को खोला, प्रत्येक दराज को खोजा । मेरी अलमारी से वह मेरा अँगरखा ले आए । ये सभी कपड़े बिलकुल नए थे । रहने के कमरे के फर्श पर सभी लड़कियों के वस्त्रों का ढेर लगा दिया गया था । हेनरिता की शृंगार मेज की दराजें भी अच्छी तरह खाली कर ली गई थीं और उसकी अलमारियाँ ही नहीं, उसके सन्दूक भी ।

बड़े विश्वास और विधि से वह शक्तिशाली आदमी, उन वस्त्रों को काटने में संलग्न हो गए । सभी पोशाक जो उन्हें मिलती, वह उनके टुकड़े-टुकड़े करते जाते थे । उन्होंने आदेश किया कि मैं भी उनकी सहायता कलूँ और उन्होंने तेज फलक का एक जेबी चाकू मेरे हाथ में पकड़ा दिया । मेरे हाथ में अपनी ही एक पोशाक आई ।

“यह मेरी है, यह हेनरिता की नहीं है । क्या मैं इसे रख नहीं सकती ।”

“काटती जाओ, सिस्टर । और ज्यादा बोलना बन्द कर दो ।”

थोड़ी ही देर में स्थिति ऐसी हो गई कि एक भी पोशाक हाउस भर में ऐसी न बची जिसे मुक्त होने के बाद हेनरिता पहिन सकती थी ।

उसी दृढ़ता के साथ इन आने वालों ने हेनरिता के फर्नीचर को नष्ट करना आरम्भ कर दिया । कुर्सियों और चटाइयों को काट डाला । मेजों और फाइलों को तोड़ डाला । फूलदानों को कुचल दिया और जो हाथ

आया उसे किसी न किसी तरह तोड़-फोड़ डाला । फर्नीचर की तोड़-फोड़ की आवाज सुनकर, इमारत का सुप्रिटेण्डेण्ट उधर आ गया । उसके लिए दरवाजा खोल दिया गया और कठोरता से उसे अन्दर दाखिल कर लिया गया । नेता ने उसका सामना किया और सख्ती के साथ प्रश्न किया ।

“तो अब ?”

सुप्रिटेण्डेण्ट ने बिस्मार किए गए फर्नीचर पर एक निगाह डाली और फिर उन तोड़-फोड़ करने वालों के गम्भीर चेहरों की ओर देखा । “मेरा अनुमान है कि मैं कुछ भी समझ नहीं पा रहा हूँ” उसने मुँह ही मुँह में कहा, “मेरा अनुमान है कि मैंने तुम्हारी आवाज नहीं सुनी थी और तुम्हें देखा भी नहीं ।”

“आप बहुत ही उचित अनुमान लगा रहे हैं, मिस्टर । बाहर तशरीफ ले जाइए ।”

सुप्रिटेण्डेण्ट अपना काम देखने लगा ।

जबकि वह निवास स्थान बिलकुल विध्वस्त कर दिया गया तो उन्होंने टेलीफोन की डोर काट डाली । उस त्रिमूर्ति के देवता ने चुपके से मुझे अपने पीछे आने का संकेत किया और मैंने सभी के पीछे-पीछे चलना आरम्भ कर दिया ।

‘हेनरिता ?’ मैंने कहा, “क्या आप लोग उसे मुक्त करने के लिए अलमारी का ताला नहीं खोल रहे हैं ।”

मेरा ख्याल था कि वह लोग भूल गए हैं । नेता ने चाबी घुमाई और दरवाजे में से कहा, “जहाँ हो वहीं रहोगी न, दस मिनट तक ।” हेनरिता ने पुकार कर कहा कि उसने सुन लिया है और वह आज्ञा का पालन करेगी ।

वह मुझे नीचे ले गए और कार में बैठा लिया । उन्होंने मुझे दो-तीन ब्लाक तक साथ ले जाकर छोड़ दिया और यह ताकीद कर दी कि लौट-कर मुझे हेनरिता की सहायता नहीं करनी है और जो कुछ मैंने देखा है उसे भी भूल जाना है ।

मैंने शीघ्र ही बेनी का पता लगा लिया और उससे पूछा, कि क्या हेनरिता को दोबारा अपना कारबार जमाने का मौका दिया जाएगा ।

“क्यों नहीं । उसे मालूम था कि उसे बहुत शीघ्र सबक मिलने वाला है और अब वह उसे मिल चुका है । ज्योंही उसे नया स्थान मिल जाएगा, वह अपना कारबार दोबारा शुरू कर देगी और फर्नीचर वगैरह सभी कुछ ले आएगी ।”

बेनी ने मुझे कुछ समय के लिए पुनः जेनी के यहाँ ही भेज दिया । “इस रात के समाप्त होते-होते उसे एक लड़की की जरूरत पड़ेगी” बेनी ने कहा, “उसके पास जो कुछ है, उनमें से एक आज उसके हाथ से निकल जाएगी ।”

जेनी के लिये उस सप्ताह जो लड़कियाँ बुक की गई थीं, उनमें एक एडना थी । यह लड़की देखते ही मेरे मन पर चढ़ गई । उसका कद अत्यन्त छोटा था और वह नितान्त दुर्बल थी । हाउस में आने वाले लोगों को वह बहुत शीघ्र पसंद आ जाती थी, क्योंकि वह अपनी आयु से बहुत छोटी नज़र आती थी । दल के लोग नाबालिग लड़कियों को भर्ती करने में बड़ी सतर्कता बरतते थे और एडना ने कहा था कि दल की स्वीकृत पाने के लिए उसे अपनी आयु का सर्टिफिकेट छिपाना पड़ा था । तब कहीं जाकर बेनी कोस्टलो अथवा दूसरे लोगों ने उसे बुक करना शुरू किया था ।

एडना बोस्टन की रहने वाली थी । उसका परिवार पहिले काफी समृद्ध था । सहसा उसके परिवार पर विपत्ति आई । उस समय वह एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ती थी, लेकिन अब स्कूल से पढ़ना छूट गया था । परिवार पर एक के बाद दूसरी विपत्ति आती रही । आखिरकार वह घर से भाग खड़ी हुई, और फिल्डेल्फिया में काम करने लगी । वह क्वेकरों के इस नगर में सफलता प्राप्त न कर सकी क्योंकि बहुत अधिक लोग उसकी आयु पर अविश्वास करते थे और घबराते थे ।

हमारे परिचय के प्रथम मध्याह्न काल में जेनी के यहाँ बाज़ार कुछ ठण्डा था और हम देर तक बात-चीत करते रहे । उसने मुझे अपनी पुरानी स्कूल की मित्रों के बारे में बताया जो कि शादी करके अपने-अपने घर-बार वाली बन चुकीं हैं । जब कभी वह छुट्टी करके बोस्टन जाती थी, उनमें से कुछ से वह अब भी मिलती थी । उसे यह विश्वास था कि उन

मित्रों से मिलते-मिलते उसे कोई आदमी ऐसा अवश्य मिल जायगा जो कि उसे पुनः प्रतिष्ठा मंडिप्त करेगा ।

“क्या तुम्हें कभी यह भय भी हुआ है कि किसी दिन तुम्हारा अतीत तुम्हारे समक्ष भयानक रूप धारण करके खड़ा हो जाएगा ?”

“क्यों ऐसा होगा । अपने शहर में मैंने अपना चरित्र बिलकुल निष्कलंक रखा है । जब कभी मैं शादी करूँगी, सम्भवतः वही करूँगी । जहाँ तक दोस्तों और पति का सम्बन्ध है, यह स्पष्ट है कि उनकी आँखों में सदैव ही निष्कलंक रहूँगी । जब तक कि कोई..... ।”

यह स्पष्ट था कि एडना के अन्तर में कोई गुप्त वेदना छिपी हुई है । उस सारे दिन और शाम तक मैं देखती रही कि वह जेनी की ओर लगातार बड़ी उद्विग्नता के साथ देखती रही थी । आधी रात के निकट जब कि उसने एक आगन्तुक को फारिग किया था वह मेरे कमरे में खिसक आई । हमने अभी तक वस्त्र नहीं पहिने थे । वह बिस्तर पर बैठ गई । उस वक्त मैं अपने वस्त्र पहिन रही थी क्योंकि मैंने भी तभी एक आगन्तुक को फारिग किया था ।

मेरे इस मैत्रीपूर्ण व्यवहार से उसे अत्यन्त आह्लाद हुआ था । वह भी लगभग मेरी ही अवस्था की थी । वह आशा यह आशा करती कि हम हाउस की सीमा के बाहर भी मित्र हो सकें तो अच्छा हो !”

अकस्मात् वह फूट-फूट कर रो उठी । मुझे सदेह हुआ कि शायद उसने शराब अधिक पीली है, लेकिन उसने पीने का और कोई भी लक्षण प्रकट नहीं किया । जेनी के हाउस में सख्त नियम था कि कोई भी लड़की शराब नहीं पी सकती थी । अक्सर आने वाले अपने साथ शराब की बोतलें लाते थे । मद्य-निषेध के दिनों यह अच्छा खासा चलन बन गया था । लेकिन हम लोगों में इतना साहस न था कि कोई भी एक बूँद अपने होठों तक से लगा सके । अगर कोई चुलबुलाहट में वैसा करती तो बहुत ही बड़े संकट में पड़ जाती । बेनी उसके साथ बहुत कठोर व्यवहार करता क्योंकि उसे यह कतई सहन नहीं था कि कोई भी लड़की हाउस के नियमों का उल्लंघन करे ।

लेकिन यह शराब नहीं थी जिससे एडना की आँखों में आँसू आ गये

थे । उसने मुझे बताया कि उसे अपने जीवन का खतरा था और वही उसकी गुप्त वेदना थी । उसने कहा कि पूरे सप्ताह जनी से वह इस प्रकार भयभीत रही है कि जैसे कि वह कोई अत्यन्त भयंकर पिशाचिनी हो, किन्तु फिर भी जेनी का व्यवहार ऊपर से अत्यन्त मैत्रीपूर्ण रहा था ।

“तुमने आखिर किया क्या है ।” मैंने पूछा, “क्या कुछ आने वालों से हाउस के बाहर मिलती रही हो ।”

मैं जानती थी कि बहुत-सी लड़कियाँ ऐसा करती थीं । उन्हें यह यकीन होता था कि वह पकड़ी नहीं जायेंगी । कोई न कोई सदैव ही लड़कियों से यह पूछता रहता कि क्या वे उस स्थान से बाहर कही उनसे नहीं मिल सकती । जहाँ थोड़ी अधिक आजादी के साथ भेंट की जा सके ।

लड़कियाँ बहुधा लालच में आ जाती थी कि उस प्रकार की संध्याएँ बिताएँ । क्योंकि इसका मतलब होता था एक आनन्द युक्त संध्या, जिसमें शायद पूरा दाम तो वसूल होता ही, साथ ही किसी प्रकार की कटौती का कोई प्रश्न नहीं होता किन्तु ऐसा करते समय दल के सदस्यों द्वारा देख लिये जाने पर भयानक प्रतिशोध का सामना करना होता था ।

“नही” एडना ने कहा, “मैंने बाहर कभी भी इस प्रकार का आनन्द नहीं मनाया । लेकिन डोडी तुम मित्र होने जा रही हो । मैं तुम्हें सभी कुछ बतलाऊँगी.....।”

उसी समय जेनी द्वार पर आ गई । वह कमरे में चली आई और उसने पीछे दरवाजा बन्द कर दिया । एडना कूदकर बिस्तर से खड़ी हो गई क्योंकि जेनी देख रही थी । उसके नेत्र हँस रहे थे और उसके सुनहरे बाल मेरे बिस्तर की बत्ती के प्रकाश में अखरोट के दिल के समान हिलते प्रतीत होते थे । एडना ने जो कि इस समय नंगी थी और काँप रही थी । उसका सामना किया ।

“उन्होंने तुम्हें पकड़ लिया है, छोकरी ।” उसकी आवाज धातु के समान कठोर थी, “कपड़े पहिन लो और सहन करने के लिए तैयार हो जाओ।”

एडना उसके कदमों में गिर पड़ी । “मैं जानती थी । वे मुझे खोज

निकालेगी ही । लेकिन मैं मजबूर थी । जेनी में बिल्कुल मजबूर थी । कृपा करके मुझे उनके चंगुल में न डालो ।”

मैं केवल आँखें फाड़-फाड़ कर देखती भर रह गई थी । जेनी ने कहा, “मैं चूहों के लिए कुछ नहीं कर सकती । पट्टे बाहर हाल में तुम्हारा इन्तजार कर रहे हैं । अगर तुम कपड़े नहीं पहनती, तो मैं उन्हें अन्दर ले आऊँगी । वह स्वयं तुमसे भुगत लेगे ।”

वह बाहर चली गई, मैंने काँपती हुई एडना को पकड़ लिया ।

“उसका क्या मतलब है ? यह सब किस लिए है ?”

वह उठकर खड़ी हो गई और मेरे शीशे की ओर बढ़ गई । उसने मेरी लिपस्टिक उठाई और अपने होठों से लगाई । “मैं जानती थी कि किसी दिन यह सब होने वाला है ।” उसने कहा, “मैं तुम्हें बताने ही वाली थी । मैं एक बार गिरपतार कर ली गई थी । एक महीना हुआ । एक छापे में । डिस्ट्रिक्ट अटोर्नी खास तौर से मेरी तलाश में था, क्योंकि वह जानता था कि फिल्डेल्फिया की किसी मैडम ने मुझे न्यूयार्क भेजा है । वह फिल्डेल्फिया से बहुत सी लड़कियों को यहाँ के दल के पास भेजती थी । डिस्ट्रिक्ट-अटोर्नी उसके विरुद्ध मेरी गवाही चाहता था । उसके आदमियों ने मेरे बारे में सब कुछ पता लगा लिया था । मेरे परिवार का और मेरे वास्तविक नाम का भी । अगर मैं सब कुछ ठीक-ठीक नहीं बता देती तो वह मेरा नाम पत्रों में प्रकाशित कर देते और मैं त्रिकाल में भी अपने घर वापस नहीं पहुँच सकती थी । यह मैं जानती थी ।”

“और तुमने बता दिया ?”

“मुझे बताना पड़ा, डोडी । मुझे अपने परिवार की प्रतिष्ठा के लिए बताना पड़ा । डिस्ट्रिक्ट अटोर्नी ने मुझे वचन दे दिया था कि वह मेरा नाम गुप्त रखेगा और कभी प्रकट न होने देगा । लेकिन जो मैं जानती थी, उसका तो मुझे फिर भी वर्णन करना पड़ता । उन्होंने पिछले सप्ताह मैडम को गिरपतार कर लिया है । इस लिए इस सप्ताह मैं हर समय डरती रही हूँ ।”

“लेकिन उन्हें पता कैसे चला कि तुमने वह सब कुछ बताया है ।”

उसने मेरी लिपस्टिक रख दी और दरवाजे की ओर बढ़ गई । जाते-

जाते उसने कहा, “क्या हम कभी भी यह जान सकती हैं कि वह किस प्रकार यह सब जान लेते हैं। लेकिन पूरे सप्ताह मुझे यह मालूम था कि जेनी सब कुछ जानती है, कि वह एक दिन मेरे लिए आएँगे और अब वे आ ही पहुँचे हैं।”

मैंने उसकी बाँह पकड़ ली और पीछे घुमा लिया। “लेकिन यह सब कितना भयानक है। तुम स्वयं चलकर उनके हाथों में नहीं जा सकती। तुम क्या करना चाहती हो। मैं जेनी से प्रार्थना करूँगी कि वह तुम्हारी रक्षा करे। हो सकता है मेरी खातिर वह ऐसा कर दे।”

एडना ने सिर हिला दिया। उसकी आँखों में भयानक हड़ता थी। “वह कभी कुछ न करेगी। जेनी बड़ी पापाण हृदया है, और उसमें इतना साहस भी कहाँ है।”

“लेकिन तुम पुलिस के पास जा सकती हो।”

“और कुछ दिन पश्चात् में बध करदी जाऊँगी। या मेरे नगर में मेरे परिवार को कुछ हो जायगा। कम से कम दल यह तो अवश्य करेगा कि मेरे वास्तविक नाम का उद्घाटन करदे।”

वह अपने कमरे में चली गई। जिस समय में जल्दी-जल्दी अपने कपड़े पहन रही थी, जेनी मेरे कमरे में आई। “मैं तुमसे केवल यही कहने आई थी, डोडी कि तुम इस सबसे बाहर रहो तो अच्छा। दूसरे लोगों की आपत्ति में भागीदार मत बनो। इससे तुम्हारी अपनी सलामती रहेगी।”

मैं दौड़कर एडना के कमरे में चली गई। उस समय वह अपना हैट ओढ़ रही थी। मैंने उसे अपने घर का पता बता दिया।

“बहुत-बहुत शुक्रिया” उसने कहा, “हो सकता है मुझे बाहर भेजा जाय और शायद तुम्हारे ही शहर में ही मुझे भेज दें।” मैं उसे हाल से बाहर निकल कर जाते हुए देखती रही। दरवाजे के खुलने और बन्द होने का अवधि में मैंने देखा कि दो आदमी आगे बढ़कर उसके निकट आ गये हैं और दोनों ने दोनों तरफ से उसके बाजू पकड़ लिए हैं। उसने कोई भी शोर नहीं मचाया।

उस रात मेरे पास दो ग्राहक और आए। लेकिन मैं अच्छी तरह

उनकी सेवा नहीं कर पाई । मेरा मस्तिष्क इस नई मित्र पर टिका हुआ था । मैं यही सोचती रही थी कि न जाने उसके साथ अब क्या किया जा रहा होगा । न जाने वह उसे किस प्रकार दण्ड देगे ?

जेनी कितनी जालिम और कठोर हो चुकी थी ।

प्रातःकाल तीन बजे । जेनी का एक आदमी सारी रात के लिए एक लड़की चाहता था और जेनी ने मेरा ही मुभाव दिया था । लेकिन मैंने उससे प्रार्थना की थी कि मुझे घर जाने की इजाजत दे । मेरे सिर में दर्द था । कोई सिर दर्द रहते किस प्रकार प्रेम कर सकता है । आदमी को अपने पैसे का पूरा मुआवजा नहीं मिल सकता । जेनी ने भी स्वीकार किया कि वास्तव में दिया तो नहीं जा सकता ।

इस समय जब मैं अपने स्थान पर पहुँची हूँ तो तीन बजकर पंद्रह मिनट हुए हैं । एडना बड़े दरवाजे के अन्दर परछाई में खड़ी हुई है । वह दरवाजे को पकड़े झुकी खड़ी है और दूसरे हाथ से अपना पेट दबाए हुए है । वह मफेद पड़ चुकी है । उसकी पोशाक फाड़ डाली गई है और उसका हैट गायब है । मेरी ओर वह मुँह उठाती है । उसकी मुखाकृति पर अब भी भय खेल रहा है ।

“कितना अच्छा हुआ कि तुम यहाँ आ गई । आज रात के लिए मुझे अपने पास अन्दर ले चलो । उन्होंने मेरा पीछा नहीं किया है लेकिन आज रात मैं अपने कमरे में अकेले रहना नहीं चाहती ।”

मैं उसे सहारा देकर ऊपर ले जा रही हूँ । उस के नीचे के वस्त्र फाड़कर निकाल लिये गये हैं । हमें बात नहीं करनी चाहिये क्योंकि हमें दूसरे कमरों में रहने वालों की नीद में विघ्न नहीं डालना है । एडना लड़खड़ाकर बिस्तर की ओर बढ़ रही है । वह अब भी अपने पेट को दबोचे हुये है । “उन्होंने तुम्हारा क्या कर डाला है । मेरा मन रोने को होता है ।”

“देखो ?”

वह अपने कपड़े उधाड़ती है । उसका पेट बेदर्दी के साथ जला डाला गया है । जले हुये घाव में से अब भी लाल-लाल लोथड़ा चमक रहा है । उन्होंने उसके पेट को जला डाला है । यही दल का चिर परिचित दण्ड-

विधान है। उन्होंने जलती हुई सिगरेट उस के नंगे मांस पर जमाये रखी है।

“उन्होंने अपनी कार में यह सब किया,” एडना कराहती है।

“उन्होंने मेरा मुँह बन्द कर छोड़ा था। उन में से दो मुझे पकड़े रहे और तीसरा अपनी सिगरेट पेट पर उस समय तक जमाए रहा जब तक मैं मूर्च्छित न हो गई। वह मुझे तब तक इधर-उधर घुमाते रहे जब तक कि मैं होश में न आ गई। फिर उन्होंने मुझे एक कोने में पटक दिया। अब मैं जीवन भर के लिये दागी हो गई।”

वह मेरे कमरे में ही गुप्त रूप से ठहरी रही जब तक कि उस का घाव अच्छा न हो गया। उसे सुरक्षा देने और मैत्री दिखाने में मैंने अपने ऊपर एक संकट मोल ले लिया था। अगर बेनी और उसके आदमियों को इसका पता चल जाता तो मेरे लिए बड़ी कठिनाई पैदा हो जाती। लेकिन वह अपने स्थान पर नहीं जाना चाहती थी। वहाँ डिस्ट्रिक्ट-अटोर्नी के आदमी किसी भी समय उस के कमरे में आ सकते थे। और उस पर पुनः सदेह किया जा सकता था। अब से आगे दल के गुप्तचर उस पर अच्छी तरह निगाह रखने लगे थे।

वह काम पर लौट सकती थी। बेनी ने जेनी के यहाँ पहुँच कर मुझ से पूछा कि क्या मुझे मालूम है कि उस लड़की का क्या हुआ। वह सचेत कर दी गई थी, बड़ी बेरहमी से सचेत कर दी गई थी। दल को अब उस का कोई भी भय नहीं था। अगर उस ने दोबारा चुगली खाई तो उसे मालूम रहेगा कि उस का क्या परिणाम हो सकता है और अगर हाउस में रही तो दूसरी लड़कियों को पता तो चलता रहेगा कि दल के साथ विश्वासघात करने का क्या परिणाम होता है। इसका अपना अलग असर होगा। लेकिन यह भय की भावना पर अधिकार भी कर सकती है।

मैंने आखिर उसे बोस्टन में अपने घर पर वापस जाने की सलाह दी। कई महीने बाद मुझे उस का पत्र मिला। उस का विवाह हो चुका था। और वह सुखी थी। उसका पति नगर के किसी सरकारी विभाग में काम करता था। उसने मुझसे प्रार्थना की थी कि मैं एक बार उसके घर आऊँ। मैंने बेनी से अनुनय की कि वह शीघ्र से शीघ्र छुट्टी

दे ताकि मैं उसके यहाँ जा सकूँ । मैंने एक सप्ताह उसके नए घर में बिताया और जब चली तो मुझ से वचन ले लिया गया कि मैं दोबारा आऊँगी और अक्सर आया करूँगी । जेनी के यहाँ व्यतीत हुये दिनों के बारे में एडना अक्सर बातचीत करती रहती ।

लेकिन मैं दोबारा उसके यहाँ नहीं गई । मैं उसके सुख से सुखी थी लेकिन उसके सुखी जीवन को देख कर मेरे अन्तर में दुःख की छाया मँडराने लगा थी ।

## छठा अध्याय

घर से मेरे लिये दो बुलावे आये । मेरा विचार है कि इन दोनों ने ही मेरी जिन्दगी के आने वाले महीनों पर अपना-अपना प्रभाव डाला जिसके आधार पर मेरी जिन्दगी का वास्तविक नक्शा बन गया ।

मेरे पिता डान का देहांत हो गया । वह अकस्मात् ही हमसे विदा हो गया था । मैं ट्रेन में बैठकर घर की ओर दौड़ रही थी । मेरी बहिन ने मुझे बहुत झिड़का था कि टेलीग्राम मिलने के बाद भी मैंने आने में बहुत विलम्ब किया । वास्तव में उसे यह मालूम नहीं था कि उस सप्ताह जिस हाउस में मैं काम कर रही थी वहाँ मुझे दोपहर बाद तार मिला था और उस दिन मुझे सारी रात के लिए बुक कर लिया गया था । एक आदमी ने पूरी रात के लिए मेरे दाम चुका दिए थे । वह अगले दिन दोपहर की किसी गाड़ी से दक्षिण के लिए विदा होने वाला था । मैं उसे इतनी पसन्द आ गई थी कि उसने हाउस से बाहर कलेवा करने के लिए भी मुझे निमन्त्रित किया और जब वह अपने होटल में सामान बँधवा रहा था तब भी उसने मुझे अपने पास ही रखने की व्यवस्था करली । वह कोई खास आदमी प्रतीत होता था, कम से कम उसकी अपनी दृष्टि में, और शहर में रह कर उसने कोई खास व्यापारिक सफलता प्राप्त की थी । उसने मुझे समझाया कि सुबह को टेलीफोन से लाभ और हानि

की सूचना प्राप्त की जायगी । उसके कमरे में मैं अपना सुबह का समय व्यतीत कर सकती हूँ ।

मेरी मैडम से विशेष व्यवस्था की जानी अनिवार्य थी । किसी लड़की को हाउस के बाहर ले जाना काफी व्ययसाध्य था । मैडम ने रात और प्रातःकाल के लिये पचास डालर की माँग की थी । मेरा ग्राहक इसमूल्य को सुनकर बहुत हँसा था और उसने चुटकी से उडाकर वह रकम अदा कर दी थी । उसने कहा कि वह कभी अतिरिक्त औरत प्रयोग नहीं करता था केवल उन दिनों को छोड़कर जबकि वह उत्तर में व्यापार के लिए आता था । पचास डालर उसके लिए कुछ भी नहीं थे । मेरी मैडम बड़ी उदास सी रह गई क्योंकि उसको दुःख था कि उससे सौ ही क्यों न माँग लिए । उस की यही अभिलाषा मेरे अन्तर में भी प्रतिध्वनित हुई । लेकिन अगले दिन मुझे काफी प्रसन्नता हुई कि अच्छा हुआ कि उससे अधिक नहीं माँगा गया । मेरे मित्र ने मुझे पचास डालर की अतिरिक्त भेंट दी । बाद में यही पचास डालर मैंने अपनी यात्रा पर चलने की शीघ्रता करने में व्यय किये ।

वह रात मैंने अपने उस दक्षिणी मित्र के साथ हृदय पर एक भारी बोझ रखकर गुजारी । घर पर मेरा बाप डान मृत्यु शैया पर पड़ा था । सुबह के समय भी माँग ज्यों की त्यों कायम थी । हाउस से हम टैक्सी में बैठकर बाहर निकले थे । मेरा मित्र एक तड़क-भड़कदार जलपान गृह में जाना चाहता था और हम ऐसे ही जलपान गृह में गये जहाँ बहुधा रात्रि में आनन्द करने वाले लोग उतरते थे । इस स्थान पर आने का यह मेरा प्रथम अवसर था और मैं अपनी उपस्थिति से जितना आनन्द प्रदान कर सकती थी, उतना प्रयत्न मैंने किया था । हमारे चारों ओर चलचित्रों के कलाकार नगर के रात्रि-जीवन और राजनीति के प्रमुख स्त्री-पुरुष थे ; दुनियाँ की औरतें और आधी दुनियाँ में विचरने वाली वे औरतें—जो अभी तक हीरे और पीठ हीन वस्त्र धारण किये हुये थीं । दिन कितना चढ़ आया था । एक ऐसी महिला भी थी जो सदैव ही खबरों में रहती थी—या तो नया पति ग्रहण करने के लिये या तलाक देने के लिये । वह अभी तक भी जवान थी और उसके सेफटीडिपोजेट बाक्स में दस लाख

डालर की कीमत के तो केवल हीरे ही हीरे थे । वह हमारे निकट ही बैठी जलपान कर रही थी—एक थियेटर के मालिक के साथ ।

मैं इस असमंजस में थी कि क्या उसके कपड़े, पैसा, और उसके शृंगार प्रसाधन क्या मेरी अपेक्षा अधिक औचित्य से प्राप्त किये गये हैं ।

एक भूत पूर्व ब्रोडवे-अभिनेत्री के विषय में जिसने एक लखपति से विवाह कर लिया था, यह अफवाह थी कि उसने अपने पति को जहर दे दिया था । आशा यह की जाती थी कि वह कहीं एकान्त में बैठ कर अपने दुर्भाग्य पर चार आँसू बहाती होगी, परन्तु वह यहाँ पर नाश्ता कर रही थी और उसकी बाहों पर हीरे-जवाहिरात दमक रहे थे । क्या उसने अपने लखपति को प्यार किया था । क्या उसने इस उच्छाह में उससे विवाह किया था कि वैसा करने से लाखों डालर उसे प्राप्त हो जायेंगे और डालर आखिर आ ही गये । अगर उसने केवल लाख डालरों के बारे में ही सोचा है तो क्या वह मुझसे बेहतर है जोकि अपने साथी का मूल्य पचास डालर में आँकती है ।

स्थिति बड़ी विचित्र थी । उस जलपान गृह के शानदार बैठने वालों और शान-शौकत के वातावरण में बैठकर मेरा रात और सुबह का वह साथी जब कि काफी गर्व अनुभव कर रहा था—ताकि उसका वर्णन घर जाकर अपने लोगों के समक्ष कर सके —मेरे मास्तिष्क पर डान छाया हुआ था । मैं यह अनुमान लगाना चाहती थी कि क्या डान मुझे बहुत डांट-फटकार करेगा और अगर उसे यह विदित हुआ कि मैं किस तरह से पैसा पैदा करती हूँ तो क्या उसे बहुत गहरा आघात पहुँचेगा । क्या वह मुझे उस अन्तर्राष्ट्रीय तलाक़ श्रुदा महिला से भी बदतर नहीं समझेगा जिसकी कमर पर अब भी रात के पाउडर की छाया है और जो कि दिन की रोशनी में बहुत ही भद्दी मालूम पड़ रही है ।

मैंने सोचा कि कभी न कभी मैं डान को यह सब बताऊँगी, उसकी सदभावना पाने के लिये मुझे यह करना चाहिये ।

उस समय वह मृत्यु शैया पर पड़ा था ।

मेरा साथी कलेवा समाप्त करने में व्यस्त था और मुझे अपने साथ होटल में ले चलने की सोच रहा था । रात में उसके लिये टेलीग्राम

आए होंगे । वह उन्हें जल्दी-जल्दी सँभाल लेगा जब कि मैं गुस्लखाने में कपड़े उतार रही होऊँगी । समय को बर्बाद करने की मूर्खता कौन कर सकता है ।

उसकी ट्रेन दोपहर के कुछ देर बाद ही छूटी थी । उसका आग्रह था कि उसे विदा करने ट्रेन तक मुझे जाना होगा ।

ऐसा किए बिना उसे संतोष नहीं था । उसने मेरे समय के लिए पैसा खर्च किया था और वह उसका पूरा उपयोग करना चाहता था । वह चाहता था कि टैक्सी में भी मुझे गुदगुदाए ।

मैं यह वचन दे आई थी कि मैं होटल से सीधी हाउस ही पहुँच जाऊँगी क्योंकि मैडम ने दो बजे मेरे लिए एक और नियुक्ति कर ली थी । उससे मुझे पच्चीस डालर प्राप्त होने वाले थे । अपनी पचास डालर की भेंट को पर्स में रखकर छाती से चिपकाए मैं हाउस की ओर लपक आई थी और मेक अप करने के बाद अपने ग्राहक के सामने मुसकानमयी बनने की तैयारी में लग गई थी ताकि वह मुझे देखते ही यह समझे कि मैं उसकी बाहों में झूलने के लिए बेचैन हूँ ।

घर पर डान मर रहा था । कुछ और घण्टों के बाद केवल मेरी बहन बच रहेगी और उसके और मेरे बीच वही वचन का संघर्ष खड़ा हो जायगा । लेकिन मुझे स्थिति के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था ।

मैंने अपने इस दोपहर बाद के-मित्र को बहुत पसंद किया । वह किसी कालिज से सम्बन्धित था । मेरा ख्याल है उसने बताया था कि वह कोई असिस्टेंट प्रोफेसर है वह शीघ्र प्रोफेसर होने के उम्मीदवारों में था और अगर प्रोफेसरी उसे प्राप्त हो गई तो वह सबसे तरुण प्रोफेसर होगा । जिस समय मैंने उससे कहा कि उक्त स्थान को प्राप्त करने में यद्यपि उसे अनेक विरोधों का सामना करना होगा, खासतौर से पुराने असिस्टेंट प्रोफेसरों की ईर्ष्या का, लेकिन उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता मिलेगी अवश्य, तो ये बातें सुनकर वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ था ।

अपने सामाजिक जीवन और सम्बन्धों के विषय में उसे बहुत कुछ सतर्कता रखनी होती थी । वह विवाह करने में असमर्थ था और किसी स्त्री से अस्थायी सम्बन्ध स्थापित करना भी उसके बूते की बात नहीं थी ।

किसी औरत से किसी प्रकार भी वह गम्भीर सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकता था। उसका विचार था कि कालिज में शीघ्र ही अफवाह फैल जाएगी और उसे हानि उठानी पड़ेगी।

कभी-कभी जब उसके पास पैसा होता था वह थोड़ा मनोरंजन कर लिया करता था और इस समय मेरे साथ मनोरंजन ही कर रहा था। मैंने उसे प्रसन्न किया—कम से कम कोशिश अवश्य की। उसे इसी चीज से काफी परेशानी थी कि वह मुझे अच्छी बख्शीश देने की स्थिति में नहीं था क्योंकि उसकी शिकायत थी कि मैडम ने उससे हमेशा से ५ डालर अधिक फीस वसूल कर ली है। प्रतीत होता था कि वह अपने अतिरिक्त पाँच डालरों के व्यय से काफी सन्तुष्ट है। उसने शब्दों से भी वैसा ही प्रकट किया था किन्तु पाँच डालर अधिक व्यय होने से वह बिल्कुल नंगा हो गया था।

“मेरे लिए आप एक पुस्तक भेज दीजिएगा,” मैंने सुझाव दिया, “कोई ऐसी पुस्तक जिसे आप सोचते हो कि मैं पसंद कर सकूँगी। आप उसमें अपना नाम तो नहीं लिख सकते। वह मुनासिब भी नहीं होगा लेकिन उसके खाली पृष्ठ पर आप आज की तारीख डालकर इतना तो अवश्य लिख सकते हैं—“दो बजे से ले कर पाँच बजे तक।”

पुस्तक मेरे पते पर दो ही दिन बाद आ गई थी लेकिन मुझे उसकी उपलब्धि काफ़ी दिन बाद हुई। उस दिन रात को जब मैं अपने घर गई तो मुझे पी फटने से पहिले ही अपनी बहिन का तार मिला और सुबह मैं सबसे पहिली गाड़ी में बैठकर घर के लिए रवाना हो गई। लेकिन वह दो दिन जो गुजर गए थे, अत्यन्त मूल्यवान थे और अब मुझे बहुत विलम्ब हो चुका था।

मैं अपनी बहिन को अपनी असमर्थता समझा नहीं सकी। मैं डान के अन्तिम दर्शन करके प्रसन्न हुई थी और इस लिए कि मैंने उसे यह नहीं बताया कि वह द्रव्य जो घर के बिल अदा करने में खर्च होता था किस तरह की कमाई से आता था।

बहुत भारी खर्च अभी करने बाकी थे। मैं कुछ भी जमा नहीं कर पाई थी। मुझे बेनी कोस्टेलो से सहायता प्राप्त होने की कोई आशा न

थी । मेरी ही कमाई का पैसा यद्यपि उसके पास था । उसका उत्तर मुझे तत्काल भेज दिया गया था—एक हजार डालर और अगर आवश्यकता हो तो और भी भेजे जा सकते हैं । जिस समय पाताल-लोक की दुनियाँ भलमनसाहत पर उतरती है तो फिर पैसे नहीं गिनती ।

मेरी बहिन बहुत ही रुठ थी क्योंकि मैं उसे उस महानगरी में अपने साथ ले जाने के लिए तैयार नहीं थी, जहाँ जाकर वह मेरे ही समान अपने कार-बार को जमा सकने की उम्मीद करती थी । अपनी एक हार्दिक बात-चीत में उसने यह स्वीकार कर लिया कि एक आदमी था जिसे उसने प्यार किया था और अपना सर्वस्व समर्पित भी कर दिया था किन्तु वह दगा दे गया । अपनी आवेशपूर्ण वक्तृता और उसके समर्पण के बाद उसने पत्नी के रूप में उसे अविश्वसनीय करार दे दिया था । इस बात को सुनकर मुझ पर हँसी का हिस्टीरिया जैसा आक्रमण हुआ था, जिसके कारण मैं उसके कमरे में से निकाल कर अपने कमरे में आ पड़ी थी, उसने मुझे इस आचरण के लिए कभी क्षमा नहीं किया था ।

वह वही थी जो कभी इतनी पवित्र बनती थी ? जिसने मेरी भर्त्सना की थी क्योंकि मैंने जो सैण्ड्स को प्यार किया और वह सब कुछ उसे समर्पित किया जो प्यार का अनुदान था । एक तरह से उसे अत्यन्त उचित ठोकर लगी थी, और आज स्थिति यह थी कि उसी को मुझसे क्षमा याचना करनी चाहिए थी ।

२

जब मैं शहर लौटकर आई तो बहुत कुछ खोया जा चुका था और बहुत कुछ प्राप्त हो चुका था । मेरी नौका का लंगर सदैव के लिए मुझसे खो गया था । एक प्रकार की आजादी मुझे प्राप्त हो गई थी । अब कोई भी संदेह पेचीदगी और पश्चात्ताप मन को व्याकुल नहीं करेंगे । डान जा चुका था, घर जा चुका था ओह ! लगभग सभी उत्तरदायित्व समाप्त हो चुके थे, हालाँकि मेरी बहिन अभी थी । और वह अब भी मुझ से बहुत कुछ अपेक्षा करेगी । जो कुछ मुझसे बन पड़ेगा, बिना किसी अहसान अथवा कर्ज की भावना को मन में लाए, वह करूँगी भी लेकिन दान के रूप में

नहीं और न ही किसी भावना या उदारता के वशीभूत, और इस सहायता को अब अपना कर्तव्य भी मैं मान सकूँगी, शायद नहीं।

उसका शरीर भी मेरी ही तरह ठीक-ठाक गठा था। अब वह उतना मूल्यवान नहीं रहा गया था। फिर मेरा शरीर उसकी सेवा भी क्यों करे। अपने इस शरीर की कीमत मैं जो कुछ मैं उसके लिए बना कर रखूँगा वह सर्वथा एक निष्प्रयोजन उपहार होगा।

इसी प्रकार मैंने इस समस्या पर तर्क किया था।

घर से एक दूसरी प्रतिध्वनि उस लड़के के रूप में आई जिसे मैंने प्यार करने का प्रयत्न किया था क्योंकि मैं जो सैण्ड्स की ओर से निराश हो गई थी। उसका नाम गिल्बर्ट था। उसे अपने बाप से विरासत में एक बड़ा व्यापार मिलने वाला था। इस कारण शहर के उन सौभाग्यशाली युवकों में से था जिन्हें अनेक लड़कियों का प्यार मिलता था। मैंने अपने जल्म पर इस प्रकार मरहम लगाने का प्रयत्न किया था। अगर मैं जो सैण्ड्स को प्राप्त नहीं कर सकी तो उससे भी अधिक मूल्यवान आदमी को प्राप्त करके दिखा दूँगी।

गिल्बर्ट ने वह तमाम सुविधाएँ तत्काल प्राप्त करना चाही जो मैं सैण्ड्स को दे चुकी थी। उसे मालूम था कि जो उनका उपभोग कर चुका है, क्योंकि जो अपनी मित्र गोष्ठियों में बैठकर गर्व के साथ अपनी सफलताओं का वर्णन किया करता था और गिल्बर्ट उसका अन्यतम मित्र था। लेकिन मैंने गिल्बर्ट को वह कुछ भी दिया नहीं। इससे वह मुझसे दूर नहीं भागा। बिना धूस दिए गिल्बर्ट को अपने आकर्षण में बाँध रखने में सफलता पाकर मुझे अपने आप पर बहुत अधिक गर्व हुआ था।

लेकिन गिल्बर्ट को पाने में मेरे अन्तर में आल्हाद नहीं होता था और वह बहुत जल्दी ही दूसरी जगह खिसक गया। जब मैं वहाँ से चली आई तो मुझे पता चला कि उसने शहर की एक महत्त्वपूर्ण लड़की से विवाह कर लिया है। समृद्ध परिवारों के लड़के समृद्ध परिवारों की लड़कियों से ही विवाह करते हैं। यह एक पुराना रिवाज है।

एक दिन जब मैं अपना दिन का काम आरम्भ करने वाली थी, तो गिल्बर्ट मेरे बिल्कुल सामने ही पड़ गया। मुझे अकस्मात् कुछ ऐसी

अनुभूति हुई जैसे अतीत के वह दृश्य मेरे सम्मुख उमड़कर आ खड़े हुए हैं। पुराने नाम और स्मृतियाँ हमारी जबानों पर झनझनाने लगीं। हम एक कोने में खड़े वातचीत कर रहे थे। तभी सहसा वह उदास हो गया। उसकी मुखाकृति पर आयु की प्रौढ़ता स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगी थी।

वह प्रसन्न था कि उसकी भेंट मुझसे हो गई। वह किसी से बातें करना चाहता था। किसी ऐसे आदमी से जो ईलीन—उसकी पत्नी को जानता हो। उसने नटाली का पता मालूम कर लिया था और उसे पत्र भी लिखा था, लेकिन उस के पत्र का उत्तर नहीं मिला था और अब तक वह उसका पता नहीं लगा पाया था। वह ईलीन के बारे में बातें करना चाहता था। वह यह अपेक्षा करता था कि मैं उसे अपने घर ले चलूँ—वह चाहे जहाँ भी हो—या फिर हम कहीं बैठकर लंच कर लें।

ईलीन घर से गायब हो चुकी थी। वह यह नहीं कहना चाहता था कि ईलीन उसे “छोड़ चुकी है।” कोई ऐसा कारण नहीं था जिसकी वजह से वह उसे छोड़ती, किसी दूसरे आदमी के लिए नहीं, किसी दूसरे प्रेम-प्रसंग के कारण नहीं। लेकिन दूसरी अड़चने खड़ी हो गई थीं। उसका व्यापार ठप्प हो चुका था। दोनों में अवश्य कुछ थोड़ा मन-मुटाव रहने लगा था ? वास्तव में ईलीन का परिवार भी आर्थिक संकट में फँस चुका था। वह अपनी मित्रों के समानुरूप जीवन स्तर कायम नहीं रख सकती थी। इससे वह लज्जित थी और सम्भवतः हताश हो चुकी थी और इसीलिए वह चली गई थी।

“और तुम्हारा ख्याल है कि वह न्यूयार्क में ही है।” मैंने पूछा। वह बहुत देर तक चुप रहा। प्रतीत होता था, उसके मन में कहने को कुछ ऐसा है जिसे कहते उसके होठ काँप रहे हैं। वह मुझसे हटकर कहीं दूर देखने लगा था। परन्तु सहसा वह पुनः मेरी आँखों में देखने लगा।

“हम आपस में अच्छे मित्र थे।” उसने कहा, “तुम और मैं। तुम मेरे प्रति कितनी ईमानदार थीं। मैं कभी भूल नहीं सका हूँ। तुमने कितने साहस से काम लिया था। जिस तरह जो सैण्ड्स ने तुम्हें ठग लिया था उसी तरह मुझे भी तुम अपने को मूर्ख नहीं बनाने देना चाहती थीं। मैंने

सदैव ही वह सब याद रखा है। मैं तुम्हें ईलीन के विषय में सब कुछ बताऊँगा। हालाँकि मैं किसी भी ऐसे आदमी को कुछ नहीं बता सकता जो मुझे या ईलीन को जानता हो। उसने मुझे शहर से एक पत्र लिखा है और लिखा है कि मैं उसे खोजने का प्रयत्न न करूँ। उसने लिखा है कि वह पैसे की समस्या से तंग आ गई थी और अब वेश्या बन गई है। वह यहाँ इसी प्रकार पैसा पँदा कर रही है। उसने मुझे भी उसमें से कुछ भेजा है। मैं यहाँ उसको तलाश कर लेने की ही उम्मीद में आया हूँ। लेकिन तुम क्या मदद कर सकोगी? वास्तव में तुम उस जिन्दगी के विषय में जान भी क्या सकती हो। लेकिन मैं किसी से कहना चाहता था आज दिल का गुबार निकल गया।

बेचारा गिल्बर्ट !

उसकी ईलिन भी मेरी ही तरह ? लेकिन मेरे विषय में वह जानता नहीं था। उसने मुझे उसके बारे में और उसके भाग खड़े होने के सम्बन्ध में सभी कुछ बता दिया था। उसने मुझे पत्र भी पढ़ने को दिया। पत्र सबके सब एक ही पोस्ट आफिस से डाले गए थे। मैं शहर को उतनी अच्छी तरह नहीं जानती थी कि उस स्थान का पता लगा सकती। मुझे उससे विदा लेनी थी और कोई बहाना बनाकर जाना था। मैं अगले दिन प्रातःकाल से पहिले उससे भेट नहीं कर सकती थी। जब मैंने उसे अपने स्थान पर निमंत्रित नहीं किया तो उसी ने मुझे अपने होटल रूम में आने का निमन्त्रण दिया। उसने एक बड़ी भीड़-भाड़ वाला होटल चुना था।

“लोग कुछ अन्दाज नहीं लगा सकेंगे।” उसने कहा, “तुम और हम वैसे भी पुराने दोस्त हैं, और तुम ईलीन को जानती भी हो।”

उसके पास कोई योजना नहीं थी। उसने सोचा था कि वह शहर के सभी झुंडों में जायेगा और जहाँ सड़कों पर काम करने वाली लड़कियाँ इकट्ठी होती हैं, वहाँ उसकी तलाश करेगा। उसे अपनी योजना की निरर्थकता उस समय प्रकट हो गई जबकि उसे पता चला कि सारे नगर में दुराचार के झुंडे इस तरह फैले हुए हैं जैसे सागर तट पर रेत के जर्रे और प्रत्येक गली का अँधेरा कोना एक बाजारू लड़की का शरणस्थान

है। मैंने उसे भरसक आश्वासन दिया था कि शायद मैं उसे खोज निकालने की कोई बेहतर योजना बता सकूँ।

मैंने ईलीन के पत्र अपने पास रख लिए। मैं बेनी कोस्टेलो के पास उसके चिर परिचित कैफ़े में पहुँच गई। मैंने उसे ईलिन और गिल्बर्ट की कहानी कह सुनाई। मैंने उसे यह स्पष्ट कर दिया कि गिल्बर्ट मेरा पहिले दिनों का प्रेमी है और इसी रिश्ते से मैं चाहती हूँ कि ईलीन उसे वापस कर दी जाय।

“वह इस तरह की लडकी है,” मैंने कहा “जो बहुत शीघ्र समाप्त हो जाएगी। वह इस दबाव को सहन करने में अत्यन्त असमर्थ होगी। शराब और औषधियाँ उसको अपने पंजे में जकड़ लेंगी।”

“तुम अपने पुराने प्रेमी की खिदमत करने की दृष्टि से उसे पुनः खोज निकालना चाहती हो ?” बेनी ने साफ़-साफ़ पूछा

“वह मेरा वैसा प्रेमी नहीं था जैसा कि तुम्हारा मतलब है। क्या कोई औरत किसी आदमी को स्मरण नहीं रख सकती, चाहे वह उसका प्रेमी हो या न हो।”

बेनी ने उत्तर में केवल अपने कंधे बिचका दिए। उसे इस भावुकता में कोई सार्थकता नज़र नहीं आती थी। कोई औरत किसी आदमी या उसके सम्बन्धों को आखिर क्यों याद रखे, जब तक कि वह उसकी जवानी से सम्बन्ध न रख चुका हो। लेकिन उसने पत्र पढ़े और पोस्ट आफिस की मुहरों की परीक्षा की। उसने ब्राँच पोस्ट-आफिस और उसके पड़ोस को पहचान लिया।

“टोनी अर्डेली उस क्षेत्र में बुक करने का काम करता है,” उसने कहा, “वह मेरा मित्र है। तुम मुझे बताओ कि यह गुड़िया देखने-भालने में कैसी लगती है। हो सकता है कि टोनी उस पर उँगली रख दे।”

दो सुबह मैं बराबर गिल्बर्ट के होटल में पहुँचती रही। दूसरे दिन हमारे पास ईलिन के विषय में बातचीत करने के लिए कुछ भी नहीं रह गया था। बेनी ने मुझे कोई भी सूचना नहीं दी थी। उसे खोज निकालने की निरर्थकता को गिल्बर्ट ने पूरी तरह अनुभव कर लिया था।

इस दूसरे दिन उसने मेरे प्रति प्रेम प्रदर्शन करने का निश्चय कर लिया था ।

केवल अस्थायी समय के लिए भी ईलीन को अपने मस्तिष्क से निकाल देने को उसे उद्यत देखकर मुझे बहुत बड़ा आघात लगा । देखने में वह कितना पीड़ित प्रतीत होता था किन्तु उसने उस दुःख को कितनी सरलता से पचा लिया था ।

मुझे आश्चर्य होने लगा कि यदि ईलीन खोज निकाली गई तो वह उस को क्षमा कर सकेगा भी अथवा नहीं । या शहर में उसकी अनुभूति में आने वाले क्षण सदैव ही उसके और गिल्बर्ट के हृदय में अमिट होकर स्थिर हो जाएँगे ।

“क्या तुम अपने रक्त में ही ऐसा नुत्फा लेकर बड़े हुए हो गिल्बर्ट ।” मैंने उससे पूछा, “क्या एक औरत वह तुम्हारी स्त्री हो या कोई पुरानी मित्र—तुम्हारे लिए केवल एक क्षण के आनन्द प्राप्त करने के साधन से अधिक कुछ भी महत्त्व नहीं रखती ।”

वह मेरी तलखी को बिलकुल नहीं समझ सका । उसने मुझे याद दिलाया कि हम दोनों ही वयस्क हैं । उसे यह विश्वास था, कि शहर में घरवालों के नियंत्रण से दूर हटकर उसने जीवन का कोई आनन्द नहीं उठाया है । उसने बताया कि देखने में मैं बहुत ही भ्रष्ट लगने लगी हूँ, अगर हमारा प्रेम दैहिक सम्पर्क की ऊँचाई को पहुँच जाता है और थोड़े समय के लिए हमारे जीवन को एक दूसरी धारा में बहा देता है तो उसमें हानि क्या है ?”

इसमें मुझे कोई भी आपत्ति नहीं होनी चाहिए, बिलकुल ही नहीं क्योंकि गि . . . . .ी जो कुछ स्मृति मैंने अपने अन्तर में संचित की थी वह बहुत शीघ्र हवा हो गई थी ।

उसका मेरे लिए बिलकुल कोई महत्त्व नहीं, केवल इसे छोड़कर कि मैं अपने कारबार के समय से बाहर वह काम करती । मैंने चाहे जितने बुरे पेशों को स्वेच्छा से क्यों न चुना हो, लेकिन मैं अपने उसूलों पर सदैव काम कायम रही हूँ । जब मैं काम न करती होती थी तो अपने ग्रहम् को मैं सदैव अपनी देह से चिपकाए रखती थी । इस पृथक् डोरीन ने अपनी

नैतिकताओं को भली प्रकार सुरक्षित रखा है और मैं उन्हें गिल्बर्ट के कदमों में नहीं डाल सकती थी जैसा कि दूसरी डोरीन अपने काम के क्षणों में अनायास करने के लिये तैयार हो जाती थी ।

वह अत्यन्त उत्तेजित हो गया था और इस चोट को उसने बुरी तरह अनुभव किया था । काश कि उसने अपने को वैसा ही रखा होता जैसा वह बन चुका था—ऐसा आदमी जो लोगों की कृपा प्राप्त करने के लिए घर से बाहर निकला था ।

अगर बेनी मुझे याद न दिलाता तो मैं शायद शहर में उसकी उपस्थिति को भी भूल गई होती । उसके मित्र टोनी अडेली ने ईलीन को पा लिया था ।

बेनी ने रिपोर्ट दी थी, “टोनी कहता है कि वह अपने पति के लिए अब किसी मतलब की सिद्ध नहीं होगी, उसे संस्था के एक पट्टे ने अपने लिए चुन लिया है और इससे मामला कुछ उलझ गया है । लेकिन टोनी मेरे लिए यह काम कर देगा । वह उसे अवश्य मुक्त करा देगा । लेकिन जैसा कि टोनी कहता है, हो सकता है कि उसका पति उसे स्वीकार न करे । इससे यह बेहतर है कि उसका पति कभी उसके बारे में कुछ जान ही न सके ।”

ईलीन, बेनी ने बतलाया—जैसी कि मैंने पहले ही घोषणा की थी—मद्य-औषधियों के फेर में काफी पड़ चुकी थी । ईलीन जो कभी एक-नितान्त सुघड़ युवती थी, अब बिलकुल टूट चुकी थी और केवल अस्थिपंजर मात्र ही रह गई थी ।

मैंडमों के लिए अब वह अपना मूल्य खो चुकी थी । टोनी का हाउस एक बहुत ही फैशनेबल इलाके की सीमा पर स्थित था । इस हाउस के आहकों को प्रसन्न करना कोई सरल काम न था । जिन छोकरीयों के चेहरों पर इस अनियन्त्रित दुराचार के लक्षण बहुत स्पष्टता से लक्षित होने लगते थे, उन्हें कोई भी पसंद नहीं करता था । टोनी के लिए उसकी अब कोई सार्थकता नहीं थी ।

तथापि उसके प्रथम महीनों का एक मित्र उसके पूरा प्रति अब भी वफादार था । बेनी ने कहा कि वह “एड्डी-क्रेस्पी” है जो बाँस के लिए

महत्त्वपूर्ण काम करता है। जब उसने ईलोन को देखा था तभी से वह उसके मन पर चढ़ गई थी और उसने उसे अपने लिए चुन लिया था। यह भी सम्भव है कि वह भी उसकी ओर आकर्षित हुई हो। किसी भी स्थिति में सामान्यतः कोई भी लड़की उसके प्रेम की अवहेलना नहीं कर सकती थी क्योंकि वह बॉस का अत्यन्त निकटवर्ती आदमी था।

“वह घुड़दौड़ की भविष्यवाणी भी करता है,” बेनी ने कहा, वह “इतना बुरा नहीं कि अपना काम न कर सके। लेकिन मेरा अनुमान है कि बहुत अच्छा जोड़ा नहीं है। वह इतनी गिर चुकी है कि टोनी ने उसे अपने यहां बुक करना बन्द कर दिया है लेकिन यह एड्डी क्रेस्पी अभी उसमें चिपका हुआ है। उसने उसे एक स्वेडिश हाउस में रख दिया है जिस समय वह भली मालूम पड़ने लगती है तो अब भी काम करती है। जब वह उसके निकट नहीं होता तब भी वह खबर रखती है कि वह कहाँ है।

“स्वेडिश हाउस” से बेनी का मतलब उन “मालिश-गृहों” से था जिनकी संख्या हाइड्रो-सैनिटोरियम के नाम से दिनोंदिन बढ़ती जा रही थी। ये हाउस शहर के रंगीन जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण करते जा रहे थे, उनके लिए व्यापार का क्षेत्र अधिक विस्तृत था क्योंकि वह अपने ग्राहकों के लिए अधिक आकर्षण प्रस्तुत कर सकते थे।

जिस व्यापार का विज्ञापन करते थे वही काम वे लोग करते भी थे। मालिश, हाइड्रो-थेरेपी, औषधिक-स्नान और त्वचा की सुरक्षा, ये काम थे, जो उनके यहाँ होते थे। उनकी सूची में बहुत से वास्तविक संरक्षक थे जो कि उनके काम को संदेह की दृष्टि से नहीं देखते थे। अनेक सैनिटोरियमों में ऐसी महिलाएँ भी आती थीं जिनके चरित्र को किसी प्रकार भी संदेह की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता था। इन सब चीजों से उस मोर्चे को वास्तविकता का स्वरूप प्राप्त हो चुका था।

लेकिन वह लड़कियाँ जो कामकाज को चलाती थीं और दूसरों को उसकी शिक्षा भी देती थी, उपचार-कक्ष के एकान्त वातावरण में जहाँ हार्दिकता पूर्ण वातावरण बन जाता था उसी का लाभ उठाकर इन ग्राहकों को कुछ और ग्रहण करने पर भी तैयार कर लेती थीं, और ये संस्थाएँ

वह सभी कुछ उपलब्ध कर लेती थीं। उसकी मालिश करने वाली, लड़की एक अतिरिक्त घण्टे के लिए मरीज की साथी बन जाती थी।

इस वर्ग के विशालतर हाउसों के लिए यह आवश्यक हो गया कि वह कुछ ऐसी लड़कियों का प्रबन्ध रखें जो सदैव सेवा करने के लिए सन्नद्ध हों। जिस समय अनेक संरक्षकों को यह विदित हो गया कि औषधिक स्नान अथवा जल-चिकित्सा आवश्यक नहीं हैं तो उन्होंने इस आरम्भिक शिष्टाचार को पूरा करना भी बद कर दिया। निजी हाउसों की अपेक्षा यहाँ फीस हल्की थी, लेकिन यहाँ ग्रहकों का हर समय ताँता लगा रहता था।

इन्ही में से एक स्थान पर एड्डी क्रेस्पी ने ईलीन को रख दिया था। बेनी से मुझे पता लगा था कि चूँकि ईलिन काम नहीं कर सकती थी इसलिए अधिक से अधिक यही समझा जाता था कि केवल स्थान प्राप्ति की दृष्टि से ही वह प्रबन्ध किया गया था। लेकिन एड्डी क्रेस्पी को वैसे सुविधा दी जानी अनिवार्य थी।

मेरे लिए यह निश्चय करना मुश्किल हो गया कि मैं क्या करूँ। मैं अपने को ईलीन के समक्ष प्रकट नहीं कर सकती थी क्योंकि मुझे भरोसा नहीं था कि यदि वह गिल्बर्ट के साथ लौटने लगी तो घर लौटकर मेरे रहस्य को रख सकेगी। कमसे कम अपने पति से तो वह गुप्त नहीं रखेगी। शीघ्र ही यह समाचार सारे नगर की सम्पत्ति बन जायगा उस नगर की जहाँ मे बड़ी हुई थी और जहाँ मेरी अनेक छात्रावस्था की मित्र मौजूद थी।

मे गिल्बर्ट को असंतुष्ट करने का साहस भी नहीं कर सकती थी। न मुझे यह मुमकिन लगता था कि गिल्बर्ट के पास ईलीन को तलाश करके भेजा जा सकता है।

बेनी ने ही यह सुझाव दिया था कि मैं एड्डी क्रेस्पी से मिल कर साफ़-साफ़ बातें कर लूँ। “एड्डी बहुत भला आदमी है लेकिन अगर उसकी नब्ज ठीक प्रकार पकड़ ली जा सके तो।” उसी ने मुझे यह भी सचना दी थी।

उसके पेशे और अरुचिकर प्रेम से, जैसी आशा की जा सकती थी उसका व्यक्तित्व उतना अप्रियकर नहीं निकला। उसके काम की संजी-

दगी—वह बाँस के वधियों में से एक था—उसकी मुखाकृति पर आर-पार लिखी हुई थी और उसकी आँखों के डोरे गहरे पीने की कहानी कहते प्रतीत होते थे। उसके हाथ पतले और सफेद थे, उसकी आदतें बच्चों के समान आश्चर्यजनक कोमलता से परिपूर्ण थीं।

वह तत्काल तैयार हो गया कि वह ईलिन से मेरे विषय में कुछ भी नहीं बतायेगा मेरा रहस्य उसके ही अन्तर में सुरक्षित रहेगा। और मुझे यह जान कर काफी आश्चर्य हुआ कि वह ईलीन के लिए जो कुछ मंगलकारी था किए जाने के प्रति न केवल इच्छुक था वरन् उत्सुक भी था।

“वह बहुत अच्छी छोकरी है” उसने कहा “ऊँचे दर्जे की। मुझे समझ रखो। जब हम पहले पहल मिले थे तो उसने भरसक मुझे प्रसन्न करने की चेष्टा की। और स्वयं मेरे शाब्दिक को पी जाने की सम्भावना से उसने अपने का काफी बड़ा बनाने का भी प्रयत्न किया। तुम्हें बताता हूँ, मैं क्या करूँगा। तुम उस चिड़िया को फँसाये रखना उसके पति को और शहर में रोक रखना, अगर तुम रोक रख सकती हो। मैं उस सुन्दरी को देहात में लेजाऊँगा मेरे पास वहाँ एक छिपने का स्थान है जहाँ से वह मेरे बिना निकाले कभी भी निकल नहीं सकेगी। मैं उसे एक-दो बार पीदूँगा भी, ताकि उसकी समझ में कुछ चले जाने की बात बैठने लगे। मुझे विश्वास है कि इस प्रकार का व्यवहार पाकर वह शीघ्र ही यह निश्चय कर लेगी कि उसे क्या करना है। मैं उसे यह कह दूँगा कि बाँस को यह खबर लगी है कि उसका मित्र उसे ढूँढ़ता हुआ इधर आ निकला है और उसका पीछा भी किया जा रहा है।

यह बहुत ही सम्पूर्ण योजना थी और प्रतीत होता था कि यही एक-मात्र युक्ति थी जो सफलता पूर्वक कृतकार्य की जा सकती थी। मेरी समझ में यह अभी तक भी नहीं आया था कि अगर वह ईलीन को इतना प्यार करता था तो फिर इस बेरहमी के उपाय का सहारा ही लेना क्यों अनिवार्य था।

“लेकिन उसे मारा क्यों जाय।” मैंने उससे माँग की, “अगर तुम उसे अपने से दूर कर दो, दूसरी लड़कियों तथा हाउस के वातावरण से

निकाल दो तो क्या तुम बिना मार-पीट किए उसे सीधे रास्ते पर नहीं ला सकते ?”

एड्डी क्रेस्पी ने लापरवाही से हाथ के एक झटके से इस सुझाव को रद्द कर दिया। ‘आह, हो सकता है ! लेकिन अब वह इतनी अम्यस्त हो गई है कि केवल यही एक मात्र उपाय है। जिससे मैं उसे ठीक रास्ते पर ला सकता हूँ। अगर मैं उसके पति महोदय से मिल सकता जिसके ऊपर धूल उड़ाती हुई वह भाग खड़ी हुई थी, तो मैं इस गुड़ि या के बारे में दो-तीन गुर उसे बता देता। उसे कभी-कभी सख्त मामले की बेहद जरूरत महसूस होती है जो कि उसे मिलता रहना चाहिये।”

गिल्बर्ट को शहर में रोक रखने में मुझे कोई भी कठिनाई नहीं हो सकती थी। मैंने उसे टेलीफोन किया और अपने अन्दाज और स्वर से यह स्पष्ट कर दिया कि अपने उस व्यवहार के लिये मुझे अफसोस है। क्या अगली सुबह मैं उससे मिल सकती हूँ। वह अपनी कार शहर में नहीं लाया था किन्तु किसी से कुछ समय के लिए माँग सकता था। अगर मैं उस के कमरे में पुनः न जाना भी चाहूँ तो हम देहात में सैर के लिए जा सकते थे।

“कमरे में मिलकर भेंट करने का विचार फिर कभी के लिए स्थगित किया जा सकता है।” मैंने कहा, “मैं देहात में सैर के लिए जाना पसंद करूँगी।”

उसने अब सीधे मुझे कोर्ट करना प्रारम्भ कर दिया था। किसी प्रेमी से जितनी भावुकता की मैं अपेक्षा कर सकती थी उसी तत्परता से उसने मेरे चारों ओर घेरा डाल लिया था। मुझे संदेह था कि अपनी इस तृष्णा को वह केवल खेल समझता है। दूसरे अनेक आदमियों की तरह जो सैण्ड्स की तरह वह मेरे शरीर पर विजय प्राप्त करने का गौरव अनुभव करना चाहता है। बार-बार मेरे कानों में वह व्यर्थ सी उक्ति प्रतिध्वनित होती रहती, “सभी आदमी एक समान हैं।” मेरा यह ख्याल नहीं था कि दुनिया जीवित रहने के लिए अत्यन्त हेय स्थान है। गिल्बर्ट के भद्दे और असम्य प्रयत्न मेरे सम्मुख नगण्य थे। मुझे अधिक कौशल और कोमलता से स्वयं मेरे हाउस में ही अनेक लोगों ने

प्रेम किया था। वहाँ तो जो कुछ मुझ से अपेक्षित था, उसका पैसा भी पहिले चुका दिया गया होता था।

मैं ईलिन को जानती थी, लेकिन कुछ अधिक नहीं। मेरा ख्याल है कि हमेशा ही स्कूल की पार्टियों में वह मुझे झिड़क दिया करती थी। वह उच्च वर्ग के जीवन से सम्बन्धित थी। उसके प्रति किसी प्रकार की आस्था रखना मेरे लिए अनिवार्य न था लेकिन उसकी वह मूर्ति मुझे अपने पूर्व प्रेमी—जो कि आज उसका पति था—के चारों ओर लिपटी हुई दिखाई देती थी। यद्यपि उसने मुझे इतनी भरसक चेष्टा में प्रेम करने का प्रयास किया था कि आशा यह की जा सकती थी कि मैं उसकी बाहों में अपने अस्तित्व को भूल जाऊँगी।

मैं सदैव ही उसमें यह प्रश्न करने के लिए व्यग्र रहती थी कि “क्यों?” उसने ईलिन के भाग जाने के दुःख का भी जिक्र किया था। उसका व्यापार जो कि असफल हो रहा था, और अब प्रायः टूट चुका था, क्योंकि वह मुझे इधर-उधर घूमा नहीं सकता था, बिना अपनी ईलिन की छाया को देखे, वह उन बिस्तरों में सो भी नहीं सकता था—जिनसे उसकी मुहागरात की स्मृतियाँ जुड़ी हुई थी। वह उसे वापस पाना चाहता था। वह कममें खाकर कहता था कि उसकी उस अन्तरिम अनुपस्थिति की कभी भी चर्चा जबान पर नहीं लायगा।

इसीलिए मैंने उससे प्रश्न पूछा था कि “क्यों?” तो वह उस प्रेम-वार्ता को जिसे वर्षों पूर्व इसने हवा में ही भूलता छोड़ दिया था, सम्पन्न करने के लिए इतना व्यग्र हो उठा।

“क्या यह पुराने दिनों की उस अपूर्ण विजय की कुंठा है जिसकी परिपूर्ति करके तुम अपने गर्व को पूरा करना चाहते हो। मेरा ख्याल है औरतों के विषय में आदमी वैसा विचार भी रख सकता है।

वह केवल यही कह सका, वैसी कोई बात नहीं है, लेकिन फिर—भी हम एक दूसरे को अंगीकार कर सकते हैं। मुझे कोई कारण दिखाई नहीं देता कि हम क्यों न एक दूसरे को ग्रहण कर लें।”

मैं उसकी उम्मीदों को पूरे सप्ताह तक और अगले सप्ताह के आरम्भ होने तक हरा-भरा बनाए रही। बहुधा मेरी सुबह उसी के हवाले होती

थीं । कई बार मुझे यह न सूझ पड़ता कि उतना कष्ट मैं क्यों कर रही हूँ । कई बार मैं सोचती कि क्या उस परिस्थिति के दुर्विपाक से मैं अपना मनोरंजन नहीं कर रही हूँ । लेकिन मैं यही सोचकर स्वस्थ भावना का अनुभव करती कि मैं अपने उस दूसरे स्वरूप को आज भी सुरक्षित रखे हुए हूँ और किसी एक को दुराचार के कीचड़ में से निकालने का प्रयत्न कर रही हूँ ।

एड्डी क्रैस्पी शहर लौट आया । अपनी योजना के अनुसार उसने अपने छिपने के स्थान पर उसके साथ वैसे ही व्यवहार किया था । उसने बड़ी बेरहमी से उसे यंत्रणा दी थी । उसने उसे कितना मारा था यह उसने नहीं बताया । मे जानना भी नहीं चाहती थी । उसने किस प्रकार उसकी पीने की सब मांगों को ठुकरा दिया था और इन यंत्रणाओं को उसने कितनी दिलेरी से सहन किया था और एड्डी ने स्वयं यातना देने का कष्ट किस प्रकार सहन किया था, इस सबका वर्णन करते हुए वह काफी गर्व अनुभव करता था ।

“वह अब अधिक सुघड़ मालूम पड़ती है । देहात की खुली हवा ने उसे लाभ पहुँचाया है ।” उसने कहा “जब मैंने यह कहा कि उसका पति उसे दूँढता हुआ उधर आ निकला है तो उसने अपने दाँत किटकिटाए और भावातिरेक में उन्हें पीसती रही । उसे यह भी बता दिया है कि हमने उसके पीछे आदमी लगा दिए हैं । मैंने उसे एक कमरे में बन्द कर दिया है । मैं नहीं समझ सका हूँ कि उस पर अभी भी विश्वास किया जा सकता है अथवा नहीं । उसका पति जाकर उसे ला सकता है ।”

समस्या अब यह रह गयी थी कि गिल्बर्ट को वह सब बताया किस तरह से जाय । एड्डी क्रैस्पी के पास अनेक साधन थे । “बहुत आसान है । मैं मामले को चुटकी से साफ किए देता हूँ । मैं उससे मिलकर बतला दूँगा कि अपनी गुड़िया ले आवे और दफा हो जाय ।”

और एड्डी ने वैसे ही किया । वह सब कितना सरल निकला ।

मैंने गिल्बर्ट को फिर टेलीफोन नहीं किया । उस हफ्ते जिस हाउस में मेरी नियुक्ति हुई थी, एड्डी उधर आ निकला । वह मुझसे बातें करना चाहता था । ईलीन को निकाल देने और उसे सीधी राह पर लाने के लिए

उसे जो कष्ट उठाना पड़ा है, मैंने उस सबके लिए उसको धन्यवाद दिया । “छोड़ो भी उसे । मैंने मरने के लिए भी लोगो की काफी सहायता की है । किण्डा किसी को जीवित रहने के लिए सहायता करने में आनन्द का अनुभव करता है । लेकिन अब मुझे उसका अभाव खटकता है ।”

मैंने उससे पूछा कि अपनी जानकारी और इतने दिन के सम्पर्क के अनुभवों के आधार पर क्या वह यह कह सकता है कि वह गिल्बर्ट के साथ प्रसन्न रह सकेगी ? तो उसने अपने कंधे हिला दिए और कहा, “तुम औरतों के बारे में कोई क्या कह सकता है ?”

जब हम कुछ देर बातें करते रहे तो एड्डी ने पूछा कि क्या उस समय काम की कुछ अधिकता है । काम अधिक नहीं था । बाहर वर्षा हो रही थी । उसने मैडम से कहा कि वह मुझे कुछ देर के लिये मेरे कमरे में ले जाना चाहता है । वह मुझ पर आसक्त हो गया था ।

मैडम उसकी माँग का विरोध नहीं कर सकती थी । सस्था का कोई एजेण्ट इस प्रकार की सुविधा माँगे यह बहुधा होता नहीं था । क्योंकि बाँस की हिदायतें ही उस तरह की थी । लेकिन जब वह सुविधायें माँग ली जाती थी, और वैसा निश्चय कर लिया जाता था, तो इन्कार करना बुद्धिमानी का काम नहीं होता था ।

मैंने एड्डी से कहा, “हो सकता है वहाँ जाकर तुम मुझसे कुछ माँगने लगे ।” उसने आश्चर्य से मेरी ओर देखा । उसे यह ख्याल ही नहीं हुआ था कि मैं भिन्न अनुभव करूँगी । वह एड्डी क्रोधी था, अधिक । बाँस से प्रमुख सहायकों में से एक । वह मुझ पर आसक्त हो गया था । कोई लड़की इसके बारे में कह भी क्या सकती थी ।

लेकिन प्रतीत ऐसा होता था कि मुझसे आनन्द लेने का विचार एड्डी के मन में एक सामान्य विचार से अधिक गम्भीरता लिए हुए है । और वास्तव में ईलीन को छोड़ देने के समय से ही मैं उसके मन में बैठ गई थी । जब तक दूसरी लड़की निगाह में न जम जाये, एक को छोड़ने में मसलहत ही क्या हो सकती थी ।

‘जब मैं खुला हूँ, मुझे अपना क्यों नहीं लेती हो,’ उसने सुझाव दिया । “बेनी ने मुझे बताया है कि तुम्हारा कोई प्रेमी नहीं है । मैं

तुम्हारे साथ बहुत अच्छा सलूक करूँगा। मुझे कोई सहारा चाहिए। अगर मेरे पास मेरी अपनी औरत न रहे तो मैं बैचैन हो जाता हूँ। मैं थोड़ा कामुक अधिक हूँ लेकिन नहीं चाहता कि वैसा करके अपने को बर्ष की चिड़िया ही बना डालूँ। मेरे काम में हौसले की जरूरत होती है। बाँस मेरे सुपुर्द कुछ बहुत कठिन काम कर देता है। मुझे एक ऐसे साथी की आवश्यकता है जिस पर मैं विश्वास कर सकूँ और बातें करके जी हल्का कर सकूँ।”

मैंने कहा, “मैं ईलीन की तरह नहीं रहूँगी। मुझे मार-पीट की जरूरत नहीं पड़ेगी, लेकिन मैं उसे सहन भी न कर सकूँगी।”

“फिर तो अच्छा है। वह सब तो तुम्हीं पर निर्भर करेगा। अलबत्ता मूर्खता मुझसे बर्दाश्त नहीं हो सकती है।”

मैं काफी समय तक उसका अध्ययन करती रही। मैंने इससे पहिले तक संस्था के किसी सहायक से कोई हार्दिकता अनुभव न की थी।

वह मुश्किल से एक छोकरे से कुछ ही अधिक होगा। उसके मुख पर वही लैटिन भावभंगिमा थी जो कि अन्तर की कुटिलता को स्वाभाविक रूप से छिपा रखती है। लेकिन उसकी आँखों में ओछापन नहीं था। उसमें एक चाह मुझे दीखी अवश्य। उसकी तरह के अनेक लोग दुनियाँ में हैं जो कि चर्च में प्रार्थना करने के बाद सीधे कत्ल करने के लिए जा सकते हैं क्योंकि वैसा करने का उन्हें हुक्म मिल चुका होता है। लेकिन यह लड़का अपना प्रायश्चित भी जब कभी करेगा पूरी हार्दिकता से ही करेगा। उसके लिए कत्ल करना कत्ल करने जैसा अपराध कभी भी प्रतीत नहीं होगा—जब तक कि वह स्वयं अपने स्वार्थ के लिए कत्ल नहीं करता। बाँस के हुक्म से किसी का कत्ल करना केवल आज्ञा पालन करना ही है।

मैंने उससे सहसा पूछा, “तुम अब तक कितने आदमी कत्ल कर चुके हो एड्डी।” उसने अपनी बाहें मेरी कमर में से निकाल लीं और मुझे तकिए की ओर धक्का दे दिया ताकि कुछ गौर के साथ मेरा अध्ययन कर सके।

“छोड़ो भी बेबी ? जब तक तुम मेरी न हो जाओ तब तक के लिए ये बातें छोड़ो। बाद में हम इन चीजों की चर्चा किया करेंगे।” उसकी

आवाज़ में जैसे फौलादीपन आ चुका था। वह फौलाद जो कि एक बेरहम कातिल में होता है। लेकिन मैं देख रही हूँ कि उसका स्वर फिर कोमल पड़ रहा है। वह मुझे फिर पकड़ता है और आलिंगन में आबद्ध कर लेता है। उसका शरीर एक स्त्री की देह के समान कोमल है। अभी तो उसकी जवानी है। वह मुझसे कहता है, “और इस समय तो कम से कम मैं कत्ल करने की बात नहीं सोच रहा हूँ।”

अब जबकि वह मेरा चुम्बन कर रहा है और मेरे अंग-प्रत्यंग को गुदगुदा रहा है, उसमें एक विशेषता पैदा हो गई है, हालाँकि वह दुर्बल है—बहुधा कातिल लोग दुर्बल ही होते हैं। उनकी दृढ़ता बहुधा एक आवेश के समान होती है। उसके अपने आरम्भिक जीवन ने जो कि उसने कोलाहल से भरे दुराचार के क्षेत्रों में बिताया है—यह कठोरता उसके व्यक्तित्व में जड़ दी है।

मैं कहती हूँ। “थोड़ा ठहरो, एड्डी। मेरे मन में एक बात आई है। बात तुम्हारे बारे में है। जिस पेशे में तुम हो, उसमें तुम्हारा प्रवेश किस तरह हुआ। बाँस का यह व्यापार और वह सब कुछ क्या है, मुझे बताओ तो। तुम अपने जीवन का रास्ता किसी दूसरी तरह क्यों नहीं बना लेते। एक बिलकुल अलग जीवन?”

“कहो, कि तुम मुझसे हास्यास्पद बातें करती जा रही हो। किसी छोकरी ने कभी अपने को इस परेशानी में आज तक डाला नहीं। आखिर मैं करता भी तो क्या करता। मेरे पास कुछ भी था नहीं जिसे लेकर मैं जिन्दगी की मंजिल शुरू करता। मेरे जैसे छोकरो के लिए काम ही कहाँ है। और मेरा ख्याल है कि जब हम बालक होते हैं, तो काम की परवाह नहीं करते। गुलछर्रे उड़ाना कितना सरल मालूम पड़ता है।”

नहीं इस गुनाहों की दुनिया के अतिरिक्त उसे कहीं काम मिला ही न होगा। और दुर्बल होने के कारण बाहरी दुनियाँ में संघर्ष करके इस दुर्घर्ष दुनिया के नेताओं में अपने लिए स्थान बना लेना उसके लिए कितना दुष्कर कार्य था। उसकी गणना सदैव ही उन लोगों में रही होगी जो दूसरों से हुक्म ग्रहण करते हैं—खतरनाक हुक्म। आज नहीं तो कल वह गिरेगा अवश्य? वह भी कभी न कभी अपना काम सम्पूर्णता से नहीं

कर सकेगा और अपने चारों ओर फैले हुए जाल में फँस जाएगा । वह फिसल जाएगा—सभी गुनाहकार एक दिन इसी अन्त को प्राप्त होते हैं लेकिन एड्डी न होगा तो बाँस के लिए इससे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा । वह भी एक दिन दण्ड भोगेगा—मौत का द्वार देखेगा । वह भी बाँस की सेना का सेनानी है—जिसे वह अपने से पृथक् नहीं देख सकता, खो सकता है । कमजोरों का यही अन्त होता है ।

“क्या तुम इस पेशे को छोड़ना चाहते हो, एड्डी ?”

“बिलकुल, क्या मैंने कहा नहीं । छोड़ना मुझसे अभी बन नहीं पड़ा है, किन्तु एक न एक दिन बन पड़ेगा अवश्य ।”

“क्या तुम कभी इस व्यापार से दूर होना नहीं चाहते । किसी और अधिक सुरक्षित काम में पड़ना नहीं चाहते ।”

“बेशक, जब कभी भी साधन बन सकेंगे, मैं कुछ न कुछ करूँगा । अब नहीं जानता क्या करूँगा । कई बार परिस्थियाँ ऐसी बनी हैं । दस हजार तक मेरे पास आ चुके हैं लेकिन कठिनाई यही थी कि मुझे सूझ नहीं पड़ता था कि क्या काम लेकर बैठूँ, और सोचते-सोचते मैं फिर इसी किनारे पर आ लगा । और फिर कई ऐसे ही काम हाथ में लेने पर मजबूर हो गया ।”

मैंने उसे उस दिन भेज दिया । मेरी समझ में आता न था कि मैं किस प्रकार उसकी छोकरी बन सकती हूँ । मिलन के प्रथम क्षणों में इतना गम्भीर निर्णय मैं कर नहीं सकी । मुझे उसके बारे में अभी सोचना था । हम कभी फिर इस बात पर चर्चा करके किसी निश्चय पर पहुँच जाएँगे । यह सोचकर कि मैं एक पीने वाले कातिल को अपना प्रेमी बना रही हूँ, मेरी आत्मा एक बारगी काँप उठी थी ।

इस प्रकार मैं उस समय उससे किसी तरह मुक्ति पा गई थी । लेकिन कोई बात थी कि एड्डी क्रैस्पी मेरे मस्तिष्क में जाने के बाद भी बना रह गया । जब कभी मैं भोर में उठ बैठती तो उसका पीला मुँह मेरे तकिए पर छबिमान प्रतीत होता । उसमें कोई गुण ऐसा जरूर दीख पड़ता था जिस पर प्रेम और स्नेह के विश्वास के साथ निर्भर किया जा सकता है । आखिर हम दोनों का एक ही प्रकार था । मैंने अपने को उसी के सचि में

ढाल लिया या । वह ऐसा आदमी हो सकता था जिसके पास काम खत्म करने के बाद पौ फटने पर मैं जा सकती हूँ । वह कम से कम प्रेम का दाम तो न चुकाता होगा, और यह सम्बन्ध शारीरिक से कुछ अधिक होगा । हमारे मध्य में कोई साक्ष्य रहेगा । उसे मेरी आवश्यकता है । और मुझे आशा है कि अगर अब फिर कभी उसके हाथ में कुछ आया तो मैं कोई और काम करने में उसकी सहायता कर सकूँगी ।

मुझे अकस्मात् यह अनुभव हुआ कि मैं अपने साहस से हाथ धो चुकी हूँ । हर चीज में कितनी निराशा दिखाई देती थी । गिल्बर्ट को देखकर—मेरे शरीर का उपभोग करने को उसकी आकस्मिक और स्पष्ट इच्छा को देखकर जिसे वह अपने लड़कपन को प्रेयसी के रूप में आज भी याद रखता है । मैंने उसकी पूजा करने का प्रयत्न किया था । और अब मैं अपने एकाकीपन से तंग आ चुकी थी । मैं एड्डी क्रेस्पी के प्रति एक क्षीण-सा प्रेम अनुभव कर सकती थी, उसके प्रति वैसा प्रदर्शन और अपने प्रति छलना और उसकी बाहें भी मेरे लिए विश्रान्ति का स्थल बन सकती थीं—एक स्वर्ग अगर मैं अपने को उसका अभ्यस्त कर सकूँ, लेकिन वास्तव में यह सब एक कपोल कल्पना ही थी ।

कुछ समय उपरान्त मैं एड्डी क्रेस्पी की चहेती बन गई ।

## सातवाँ अध्याय

एड्डी को यह पसन्द न था कि मैं हाउस-गर्ल के रूप में काम करूँ । यह उसकी प्रतिष्ठा के विपरीत था कि जिस आदमी का दल में इतना महत्त्वपूर्ण स्थान हो उसकी प्रेयसी किसी मैडम के अनुशासन में रहकर किसी भी खरीदार के इशारों पर नाचती रहे । मुझे स्वाधीन होना चाहिए अपने स्वामी की प्रतिष्ठा के अनुरूप शान के साथ रहना चाहिए । वह एक कातिल था । वह उन लोगों में से था जिस पर कठिन अवसरों पर काम आने का बाँस को भरोसा था । उसकी प्रेयसी को कोई नहीं खरीद सकता था । वह स्वयं चाहे उसे जो कुछ करने को कह दे । उसके लिए सब उचित है ।

लेकिन उसके आचार शासन का यह नियम अवश्य था कि मुझे काम करना चाहिए । वह नहीं चाहता था कि मैं दिन भर उस आरामगाह में काहिल पड़ी रहूँ जबकि वह दिन भर काम में दौड़ता-धूपता रहे । उन रात्रियों में जबकि वह कोई काम अंजाम देता होता, तो मुझे अपनी इच्छानुकूल काम करने की सुविधा नहीं होती थी । मैं विश्वासघात कर सकती थी और किसी को भी निःशुल्क आत्मदान कर सकती थी । मेरे लिए एक सुनिश्चित आचार शास्त्र निर्धारित हो चुका था । किसी भी आदमी को मैं अपने को बेच सकती थी । उसकी दृष्टि से एक औरत के जीवन की वही सार्थकता थी । लेकिन मैं अपना मूल्य माँगने में स्वतन्त्र

थी और अपने ग्राहक को स्वयं ही चुनने की भी मुझे सुविधा थी। वह मेरे स्वामी की प्रतिष्ठा के अनुरूप था। उसकी प्रेयसी किसी का हुक्म बजा लाने के लिए मजबूर न थी, केवल उसको छोड़कर।

और यह भी उसके आचार शास्त्र का एक नियम था कि मैं भी वासना के वशीभूत किमी को अपना शरीर नहीं सौंप सकती थी। और अगर मैं ऐसा करती तो इसका एक अपरिहार्य परिणाम यह होता कि या तो मेरा गला काट लिया जाता या मेरे शरीर में वजन बाँधकर उसे पूर्ण नशी में डुबा दिया जाता। इसमें कोई सरोकार नहीं कि एड्डी मुझसे इतना प्रेम करता था किन्तु व्यापार आखिर व्यापार होता है और एक औरत का शरीर व्यापार ही तो है।

इसलिए मुझे कहीं बैठकर काम करना चाहिए—जहाँ एड्डी मुझे सदैव प्राप्त कर सकता था।

हम पटो बैठकर स्थिति पर विचार करते थे। हम एक अच्छी तरह से सुसज्जित प्लैट में बस गए थे। मैं उसके पुराने स्थान पर नहीं रह सकती थी, क्योंकि ईन्जीन वहाँ रुक चुकी थी। वैसे एड्डी के लिए वह समय वहाँ से स्थानान्तर करने का भी था। वह किसी एक स्थान पर एक साथ दो माह से अधिक नहीं रह सकता था।

आखिरकार उसके मस्तिष्क में एक विचार घर कर गया। वह मुझसे पूछने लगा कि क्या मैं उस नृत्य-व्यापार के बारे में कुछ जानती हूँ जो कि शहर के केन्द्रीय स्थानों से दूर कुछ गन्दे स्थानों में घड़ाघड़ चालू होता जा रहा था। मुझे उनके विषय में कुछ भी पता नहीं था। किमी परिवार के निवास स्थान पर केवल बरान्डे को किराये पर लेकर एक या दो महिलाएँ बैठ जाती थी। और एक नृत्य सिखाने का पचास या पचहत्तर सैण्ट वमूल करती थीं पूरे कोर्स का पाँच डालर। मुझे इतना अवश्य मालूम था कि इनमें एक फोनोग्राफ लगा होता था। दूसरे कालीन ऊपर ले जाने पड़ते थे और वह आदमी जिसने कभी नृत्य करना नहीं सीखा होता था वह दिन के किसी भी समय वहाँ पहुँच कर अपने शौक की पूर्ति कर सकता था। और कम से कम किसी भी आधुनिकतम प्रणाली के नृत्य की रूप-रेखा से भली भाँति परिचित हो सकता था।

“तो तुम्हारी समझ में मामला इतना सा है।” एड्डी ने कहा, “सुनो यह दुराचार की नयी प्रणाली है—हमारी किस्म का ही दुराचार। ये गुड़िया तुम्हारा ख्याल है कि वे केवल नृत्य के कदम ही बेचती हैं। वे हमारे हाउस और बाज़ारू व्यापार में छेनी का काम करती हैं। ये टैक्सी डान्सर हैं जो अपने स्वयं का रोज़गार करने के लिये दूकानें खोलकर बैठ गई हैं मैं ये सब कुछ देखने के लिये एक नृत्य-गृह में स्वयं गया था।

“मैं तुम्हारे पास आ गई हूँ न एड्डी। तब से तुम स्त्रियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने की दृष्टि से इधर-उधर दौड़ने लगे हो, क्यों?”

“नहीं, हाँ ठीक तो कहा तुमने, लेकिन यह तो व्यापार है, तुम समझती हो। बाँस ने मुझे कहा था कि मालूम करूँ कि ये लड़कियाँ क्या करती हैं। मुझे वह करना ही पड़ा।”

“क्या कोई सुन्दरी मिल गई थी।”

“तो तुम मुझ पर ताना कस रही हो, ऐसी बन रही हो कि जैसे तुम्हें ईर्ष्या हो रही है, लेकिन मेरे पास बाँस के व्यापार से अलग औरतों के लिये कोई समय नहीं है।

मे उमकी आंखें देखती हूँ तो सोचना बन्द कर देती हूँ। मेरा ऐसा ख्याल नहीं है कि तुम वैसा करोगे, एड्डी। तुम्हारा अपना एक आचार-शास्त्र है। और मेरा यह ख्याल है कि जब तक मैं तुम्हारे साथ हूँ तब तक तुम्हारा वह धर्मशास्त्र तुम्हें किसी भी दूसरी औरत को उस प्रकार अर्गोकार करने की स्वीकृति नहीं देगा। मुझे इसे भरसक यथार्थ बनाना है। मुझे यह विश्वास करना पड़ेगा कि मैं वस्तुतः एड्डी के लिये चिन्ता करती हूँ। मुझे उनके चुम्बन के लिये तृप्ति हो उठने का प्रयत्न करना चाहिये।

“बहुत अच्छा मित्र, तुम वैसा नहीं करोगे ! लेकिन फिर भी तुमने क्या मालूम किया।” मैंने कहा।

नहीं, वे निहानी काम कर रहे हैं। ये नृत्य की शिक्षा देना तो सब ढकोसला है। वह आदमी को पकड़ती है, उसे एक या दो नृत्य के सबक देती है और तब पूछती है, ‘कैसे हाल-चाल है, महोदय ? मैं बड़े पदों नीचे गिरा दूँगी, ताकि सड़क पर से आने-जाने वाले कुछ न देख सकें।’ अगर

घंटे में आपने पचास सेन्ट कमाये तो बस चलाली जिन्दगी । उन्हें किसी तरह पैसा तो पैदा करना होता ही है ।”

“एक छोकरी को वैसा करना होता ही है ।” मैंने स्वीकार किया ।

“बॉस कहता है कि रैकेट को काबू में करना है । जिस तरह से उसने हाउस-व्यापार पर कब्जा किया था, उसी प्रकार वह डान्स-स्टूडियोज़ को भी कब्जे में करने का संकल्प कर चुका है । उसने मुझसे कहा है कि मैं एक स्टूडियो पर अधिकार करके देख लूँ कि काम कैसा चलता है । मैं सोच यह रहा हूँ कि एक को लेकर तुम्हारी देख-रेख में छोड़ दूँ । उन्हें अकसर एक से अधिक छोकरी की जरूरत नहीं पड़ती । एक ही सारे दिन व्यस्त रहती है । और तुम बहुत सा नियमित व्यापार कायम कर सकोगी ।

मैंने उससे कहा कि किसी दिन मैं उसके साथ चलींगी और कोई मौके का स्थान खोजने में उसकी मदद करूँगी, लेकिन वह खाली निगाहों से मेरी ओर देखता रह गया ।”

“हमारा विचार है कि हम किसी नये स्थान में कोई नया काम खोलेगे, जिसके बारे में कोई कुछ न जानता हो ।” मुझे अच्छी तरह समझ लेना चाहिये था । एक दोपहर बाद एड्डी बाहर गया । और शीघ्र उसका टेलीफोन आया कि मैं सड़क के अमुक नम्बर पर उससे मिलूँ । “उस घंटी को बजाना जिस पर डान्स—स्टूडियो लिखा हो ?” उसने निर्देश किया ।

मैंने घण्टी बजाई और जाकर देखा कि वह एक विध्वंसित स्टूडियो का मुआयना कर रहा है । वह एक या दो पट्टों के साथ, वहाँ आया था और कब्जा कर लिया था । उस टूटे हुये फर्नीचर को देखकर यह पता चलता था कि उस स्टूडियो की लड़की या लड़कियों ने आत्म समर्पण कर दिया है ।

इस प्रकार मैं एक नृत्य-निर्देशिका बना दी गई और एड्डी सन्तुष्ट हो गया । उसने मुझसे कहा कि मैं कार-बार के बारे में अधिक चिन्ता न करूँ । अपनी पसंद के आदमी स्वीकार करूँ और उन आदमियों को लौटा दूँ जो मुझे रुचें नहीं, “अगर वह ऐसे लगे कि तुम्हारे मन में उन्हें उसके अतिरिक्त देने की बात न जँचे तो केवल नृत्य का सबक

सिखाकर ही उन्हें विदा कर दो ।” उसने आज्ञा दी, “तुम्हें पैसा तो पैदा करना नहीं है । मुझे ढेर-सा मिल जाता ही है । तुम्हें सिर्फ काम करते रहना है । और बाँस यह जानना चाहता है कि यह खेल किस प्रकार खेला जाता है !”

अकसर दो तरह के लोग थे जो “स्टूडियो” में आते थे । कुछ तो वस्तुतः अपने नृत्य ज्ञान में हादिकतापूर्वक सुधार करना चाहते थे । या किसी लड़की के साथ अपना सम्बन्ध चलाते होते थे । या उनकी पत्नियाँ उनके भोंडपन के लिये उन्हें लज्जित करती थीं । उन्हें किसी वास्तविक नृत्य शिक्षालय में नाम दर्ज कराते हुये भिन्नक होती थी, वह प्राइवेट शिक्षा चाहते थे और कम से कम मूल्य पर । कुछ लोग अपनी आशा के विपरीत कुछ अधिक ही खर्च जाते थे और दूसरे वह लोग थे जो दूसरे “डान्स-स्टूडियो” में जाकर बिगड़ चुके थे । मैं शीघ्र ही समझ गई कि वह दुराचार का भयंकरतम रूप चाहते थे । उन्होंने मुझे बताया कि ये सभी “डान्स-स्टूडियो” चलाये ही इसलिये जाते हैं । बहुधा इनमें काम करने वाली लड़कियाँ रेस्ट्रॉ, स्टोरों और आफिसों में काम करती थीं । बहुत-सी लड़कियाँ पहिले सामूहिक-गानों में काम कर चुकी होती थीं, ये लड़कियाँ इस दुराचार और पतन के गर्त में उन लड़कियों की अपेक्षा अधिक आसानी से फँस जाती हैं जो परिस्थितियों से बाध्य होकर सड़कों पर अपना काम शुरू करती हैं और बाद में हाउसों में खिसक जाती हैं । ये नौ सिखिया लड़कियाँ जान-बूझ कर, काहिली से, और समस्त प्रतिबन्धों को दूर फेंककर पैसा पैदा करने की ओर आकर्षित होती हैं ।

मैंने जब समझाया तो एड्डी की समझ में सब कुछ आ गया—“ठीक है, अब बहुत दिन तक तुम्हें इस भ्रम में फँसा रहना नहीं पड़ेगा । मेरे पास एक बहुत बड़ा काम आने वाला है, जिसमें बाँस तुम्हें प्रयोग करना चाहता है । वह तुम्हारे बारे में जानता है । मैंने उसे बताया था । मेरे पास पचास हजार डालर का काम आ गया है और होसकता है कि उसके हाथ में आने पर हम इस पेशे को ठुकरा सकें । कहीं जाकर कुछ काम शुरू कर दें । खैर बाँस अब डान्स-स्टूडियो को बहुत जल्दी ही अपने हाथ में लेने वाला है । वह कुछ तगड़े आदमी इकट्ठे कर रहा है कि अगर

इन 'डान्स-स्टूडियो' की मालिकों ने समझौता न कर लिया तो उन्हें उखाड़ कर फेंक दिया जाएगा।”

मेरा और एड्डी का एक समझौता यह भी था कि वह मुझे अपने “कामों के बारे में कभी कुछ चर्चा नहीं करेगा। मैं नहीं चाहती कि यह किसी भी प्रातःकाल जबकि वह घर से लौटा हो तो केवल यह जानने के लिए आँखें खोलूँ कि मेरे प्रेमी ने अभी-अभी एक मानव प्राणी का अस्तित्व मिटा दिया है। मैं समाचार पत्र भी इसीलिए नहीं देखती थी ताकि मेरी निगाह के सामने यह न आ जाय, “दुराचार के दल द्वारा एक और सनसनी खेज कत्ल।” मुझे सदैव ही यह संदेह बना रहता था कि एड्डी ने ही यह किया होगा। जैसे कि मेरे लिए यह जान लेना काफी नहीं था कि वह एक कातिल है। यह कितनी लाचारी थी कि मैं एक ऐसे आदमी से प्रेम की अपेक्षा करती थी जो पैसे के लिए कत्ल करता है। मैं समझती हूँ कि यह सब विवेक दृष्टि खो देने का ही परिणाम था। मुझे यह पता चल गया था कि एड्डी ने पाँच हजार पहिले ही बचाकर रख छोड़े थे। “यह मेरी अपनी सम्पत्ति है,” उसने बतलाया, “उस समय पर कार्य आने के लिये जब कभी मैं संकट में फँस जाऊँ। वैसे तो संस्था ही का काम है कि वह मुझे सुरक्षित रखे, किन्तु कभी-कभी वह लोग अपने वायदों को पूरा नहीं करते।”

मैंने उस से यह प्रार्थना की कि वह उसी पाँच हजार को अपनी सम्पत्ति समझे और शहर छोड़ कर चल खड़ा हो। मैं उसके साथ ही चलूँगी। मैं तब तक उसके साथ रहूँगी जब तक कि उसका काम जम न जाए। मैंने इश्तहार पढ़े थे और ऊपर के प्रदेश में किसी निकम्मे कोने में नहीं वरन् मुनाफ़ा देने वाले स्थान में एक होटल बिकाऊ था। यह स्थान एड्डी के पाँच हजार डालर से भी कम में ही खरीदा जा सकता था।

यह स्थान एक शरण स्थान बन जायगा। इसमें एड्डी को व्यापार में लगने का अभ्यास हो जायगा। मैं कार-बार को चलाने में उसकी सहायता करूँगी और देख-भाल करने का आनन्द उठा सकूँगी। यह ईमानदारी का काम होगा और नैतिक ! हम दोनों शीघ्र ही सच्चे रास्ते पर

पड़ जाएँगे। एड्डी इस दुराचार की दुनियाँ से अपना पीछा छुड़ा सकेगा और मैं भी वेश्यावृत्ति छोड़ दूँगी। तब दुनियाँ एक नई चीज़ बन जायगी, इतनी पवित्र कि उसमें रहा जा सके। तब मैं एड्डी को भी छोड़ सकूँगी। मुझे यह विश्वास हो जायगा कि वह ठीक हो जायगा। वह अकसर यह घमण्ड करता है कि आज तक उसने कोई काम जो हाथ में लिया बिना पूरा किये नहीं छोड़ा। अगर उसने स्वयं ही वह काम शुरू किया, तो वह उसमें बिना पूर्णता प्राप्त किए नहीं छोड़ सकता।

लेकिन एड्डी अपना यह “खास” पैसा छू भी नहीं सकेगा। वह कसमें खाकर कहता था कि वह काफी नहीं होगा। जिस ढंग से वह मुझे रखना चाहेगा, उसके लिए वह पर्याप्त नहीं होगा। जब वह कोई होटल या कैफे खरीदेगा तो उसे पैसे के संकट का सामना नहीं करना चाहिए। उसके पास बहुत से काम नहीं हैं। बस पाँच हजार डालर का एक काम और तब हम उत्तर-प्रदेश में चले जायेंगे।

इस बार मुझे उस काम के बारे में जानना आवश्यक हो गया। मुझे भी उसका एक अंग बनना था, बेनी और एड्डी दोनों ने मेरे बारे में बाँस से कहा था और मेरा ख्याल है बेनी ने भी। तभी मैं चुनी गई थी।

२

मैनी क्विनटैरो ही केवल एक कांटा रह गया था जो बाँस के माँस में अभी भी कसकता था। मैनी ऐसे बहुत से हाउस चलाता था जिनमें वह मैडमों को सीधा वेतन देता था। इस प्रकार हाउसों में छोरियाँ जो मैडमों को देती थीं वह सीधा उसके पास पहुँच जाता था। मैनी एक सुव्यवस्थित कारबार चलाता था। उसका मुख्य शिविर एक रात्रि जलपान-गृह में था, जिसे वह स्वयं ही चलाता था। यह एक बढ़िया स्थान था हालाँकि छोटा था। उसमें सदैव ही चहल-पहल रहती थी। दुराचार की दुनियाँ के छोटे से छोटे समाचारों की चर्चा वहाँ सदैव ही होती रहती थी।

“बाँस” जिसने शहर की पूरी वेश्यावृत्ति पर अधिकार कर लिया था अभी तक क्विनटैरो को विचलित नहीं कर सका था। उसके पाताल-लोक और राजनीतिक संस्थाओं से इतने सम्बन्ध थे कि उसे रास्ते से हटाने का

बस एक ही उपाय था कि उसको कत्ल कर दिया जाय । उसके हाउस और उसका रात्रि-क्लब चलते थे और इस दल की ओर से जो आदमी उसके विरुद्ध भेजे जाते थे क्विनटैरो के आदमी उनका मुकाबला भली भाँति करते थे । वह हठी, साधन सम्पन्न और राजनीतिक रूप से बड़ा शक्तिशाली था, और उसे कत्ल करना स्पष्ट रूप से एक असम्भव काम मालूम पड़ता था ।

क्विनटैरो अपने रात्रि-क्लब “सिलवर ग्लाइड” तब तक नहीं छोड़ता था, जब तक उसका अंग रक्षक बाकायदे तैयार न हो, और फिर वह अपने घर भी कभी-कभी ही जाता था । उसका घर एक उपनगर में था और जब कभी वह जाता तो कई एक खाली गाड़ियों के मध्य अपनी गाड़ी रख कर ऐसे रास्ते से जाता था जहाँ छिपकर वार करने वाले को कोई उचित अवसर ही प्राप्त न हो ।

बॉस ने अब एड्डी पर ही भरोसा किया था, “क्विनटैरो को हासिल करो ?”

एड्डी को इस बात का गर्व था कि उसे इतना महत्वपूर्ण काम सौंपा गया था । क्विनटैरो अब उसके लिए कोई मानव प्राणी नहीं था कि उसे कत्ल करने जैसा काम करना था । वह बॉस के एड्डी में विश्वास का प्रतीक था । अब तक दल के समक्ष जो कार्य सबसे कठिन बना हुआ था, वही उसे करने के लिये सौंपा गया था । “और अब यह हमारी बचत होगी बेबी, मैं इसे कर डालूँगा तो बॉस फिर मेरे लिये कुछ भी कर सकेगा । अगर मैं उसके शरीर पर चढ़ जाऊँगा तो एक बार उसकी लात नहीं उठेगी । मैं उससे कह दूँगा कि मैं अब बस करना चाहता हूँ और वह मुझे छुट्टी दे देगा । हो सकता है वह हमें और भी कुछ अधिक बरुशीश दे डाले । अगर कोई काम अच्छी तरह से किया जाय तो बॉस बहुत अच्छी तरह पेश आता है ।”

“लेकिन एड्डी, प्रिय, यह एक और कत्ल है । दूसरा यह और मत करो । केवल वही पाँच हजार ले लो जो हमारे पास हैं । मुझे इस काम से भय लगता है ।”

वह केवल मेरा चुम्बन करता है और मुझे छाती से लगाता है । वह

अपनी उन पाँच हजार हड्डियों को सामने उभरता हुआ देखता है। वह यह भी देखता है कि मैं और वह मिल कर सामान्य लोगों की तरह एक होटल चला रहे हैं। और केवल पाँच हजार डालर से यह काम नहीं चलाया जा सकता। यह भी वह समझता है कि दस बहुत ठीक होंगे। वह खर्चीला आदमी है। और यह काम —“तुम क्या जानो, बेबी, बाँस यह काम मुझे सोप रहा है। वह जानता है कि मैं समर्थ हूँ।”

क्विनटैरो अपने रात्रि-क्लब में अनेक छोकरियाँ रखता था जो कि काम करती थीं मेजवानों का किन्तु दूसरे काम के लिये भी प्राप्त हो सकती थीं और पड़ोस के किसी सस्ते होटल में या स्वयं उन्हीं के कमरों में उनका उपभोग किया जा सकता था। अपनी आय का आधा वह क्विनटैरो को देती थीं। लेकिन उसे उन्हीं के जमा-खर्च पर विश्वास भी करना होता था। अगर वह उसे धोखा देती थी तो उसके गुप्तचर उसका पता चला लेते थे। इस रात्रि-क्लब के लिए यह उन्हीं लड़कियों को चुनता था—जो अपने को आकर्षक सिद्ध कर सकती थीं—कोमल, जवान छोकरियाँ नाजनीन जिनमें लज्जा का हल्का सा पुट हो और अत्यन्त खूबसूरत। प्रसिद्ध यह था अपनी सुन्दरतम छोकरी में क्विनटैरो एक मालिक की अपेक्षा कुछ अधिक दिलचस्पी लेता था। वह उनसे वह चीज माँगता था जो दल के लोग छोकरियों से माँगने में नफरत करते थे। अगर वह सामन्ती ढंग में किसी छोकरी से कुछ माँग करे तो उसे अपना अहोभाग्य स्वीकार करना होता था और अस्वीकार नहीं करना होता था। उसके समक्ष अपना समर्पण करना उस अनुदान का एक भाग समझा जाता था जो लड़कियों को उसके इस शानदार रात्रि-क्लब में प्रचुर मात्रा में दूसरों से प्राप्त होता है।

“बाँस ने क्विनटैरो के दल में एक बुकर भेजा हुआ है।” एड्डी ने मुझे समझाया, “इस आदमी पर क्विनटैरो का विश्वास है। वह उसके लिए अनेक सुन्दरियाँ प्राप्त कर चुका है। वह तुम्हारा भी अनुसन्धान मैनी के लिये करने वाला है। तुम्हें भी उसकी रात्रि-क्लब की लड़कियों के साथ स्थान मिल जायगा। वह ईंट की तरह तुम पर दूट कर गिरेगा। मैंने बाँस से कह दिया है, बेनी कोस्टेलो ने भी ऐसा ही कहा है तुम्हें उसके साथ खेल खेलना है। तुम्हें बहुत सुगम भी नहीं होना है। क्योंकि उसकी छोक-

रियाँ जब बहुत आसानी से “बहुत अच्छा” कह उठती हैं तो वह उन्हें लात मार कर निकाल देता है। औरतों के मामले में उसकी पसन्द बहुत ऊँची है।”

“अच्छा, मैं उसे अपने पर आसक्त कर लूँगी। मैं उसकी चहेती बन जाऊँगी। फिर क्या ?”

मैं भयभीत हूँ। एड्डी के लिये मुझे डर लगता है। कोई मुझसे कहता है यह उसका अन्तिम काम है। कोई चीज मुझसे कहती है कि सड़क के किनारे एक छोटा सा होटल कभी भी एड्डी के लिये न बन सकेगा जहाँ मैं अपने को फिर से अच्छा बना सकूँगी और एड्डी की सहायता कर सकूँगी। मैं उसे बचाने की कोशिश करूँगी। किसी न किसी तरह मैं उसे बचाऊँगी। मैं उसे छोड़ कर नहीं जाऊँगी।”

“बाकी सब आसान है” एड्डी कहता है। तुम मुझे उसका नक्शा बना कर दे देना। तुम्हें यह सब कुछ करने में सरलता से सफलता मिल जायेगी। बाँस आज तक किसी को उसके अन्तर्प्रदेश में दाखिल नहीं कर सका है। सब दरवाजों और बड़े कमरों का पता लगा लेना और यह भी कि किस तरह क्विनटैरो के कमरे में प्रवेश किया जा सकता है। वह अपने प्राईवेट कमरे में ही भागकर छिप जाता है। उसके दरवाजे भी लोहे के बने हैं—जहाँ गोली भी नहीं मार सकती। जब तक कि स्थान बिलकुल खाली न हो जाय और उसके अवरक्षक आसपास न हों, वह बाहर नहीं निकलता। लेकिन तुम प्रत्येक चीज का पता लगा लेना, पूरा नक्शा, समझी।

“बावर्ची लोग, आर्कैस्ट्रा और देख-रेख करने वाले कहाँ-कहाँ रहते हैं। और अन्दर प्रवेश करने के बाद में किस प्रकार बाहर निकल सकता हूँ। तुम इन चीजों का पता लगा लेना, उनका अध्ययन कर लेना। फिर हम लोग उस पर बातचीत कर लेंगे और उसका रिहर्सल भी कर लेंगे।

“और फिर एड्डी ?”

‘जब हम तैयार हो जायेंगे तो मैं अपने कुछ जवानों को उधर लगा दूँगा। तब तुम संकेत दोगी। दूसरी मजिल में से तुम एक रूमाल अथवा कुछ सिगरेट फेंक दोगी। दो मजिले पर क्लब है। जैसे तुम संकेत करोगी, मैं उसी विधि से अन्दर आ जाऊँगा। तुम्हारे संकेत का अर्थ होगा कि

क्विनटैरो अपने दफ्तर में है और तुम अन्दर जा रही हो और खुला रख छोड़ोगी। मैं एक गोली में ही उसका खात्मा कर दूँगा। और फिर हम बाज़ी मार लेंगे। मेरे कुछ जवान मेरी पीठ पर होंगे। इसके पूर्व कि लोगों को यह पता चले कि क्या हो गया, मैं साफ हो जाऊँगा। तुम भी मौका देख कर बाहर आ जाओगी। तुम्हारे पास समय होगा। जिस तरीके से यह सब कुछ किया जा रहा है तुम पर कदाचित ही किसी को संदेह होगा।”

“लेकिन आगे चल कर तो किया जा सकेगा ?”

“बेशक, क्योंकि तुम दरवाजे को खुला जो रखोगी, लेकिन तुम तो जा चुकी होगी। हमें पैसा भी तो मिल चुकेगा और तब हम उत्तर की ओर जो चले जायेंगे। हो सकता है कुछ समय के लिये हमें उस स्थान पर छिपकर रहना पड़े जहाँ मैंने ईलीन को छिपाया था। हो सकता है कि हमें यह सब कुछ न भी करना पड़े।”

“लेकिन लाश एड्डी। बाद में लाश तो उन्हें मिलेगी ही और तब पुलिस मेरे पीछे लग जायगी।”

एड्डी ऐसी मुद्रा बनाता है जैसे कि मैं एकदम व्यर्थ बातें कर रही हूँ। मेरी समझ में बात आती ही नहीं है। उसे यह मालूम नहीं है कि पहिले से ही मेरा दिमाग यह सोच रहा है कि किसी तरह भी इस कल को छोड़ा जा सके तो अच्छा है। एड्डी को अपना आपा इसके संकट में नहीं डालना है। उसे यह नहीं करना चाहिये। आखिरकार अब वह मेरा प्रेमी है।

लेकिन मैं बहस करती हूँ तो एड्डी नाराज होता है। अगर बराबर आग्रह करती रहूँगी तो मुझे मार बैठेगा। व्यापार के रास्ते में ऐश-आराम को नहीं आना चाहिए। जैसे कि पूरी हार्दिकता से मुझे वह सब कुछ जानना ही नहीं है।

मैनी क्विनटैरो के क्लब में मेरी नियुक्ति बड़ी सरलता से हो गई। संस्था ने अच्छी तरह और विशेषज्ञता से योजना बनाई थी। मुझे यह

भी पता नहीं चला कि मैनी से मेरी शिफारिश किसने की थी । यह आवश्यक नहीं था । मैं एड्डी के आदेशों का पालन कर रही थी ।

मैनी ने अपने प्राइवेट-आफिस में मेरा स्वागत किया । उसके दो अंग रक्षकों ने मेरे लिए दरवाजा खोला और उसे बन्द करके भी बाहर ही खड़े रहे । मैनी मुझसे बातें करता रहा और वे सुनते रहे ।

“मैंने सुन लिया था कि तुम आने वाली हो । तुम मेरे लिये काम करना चाहती हो ?”

“मैं आपके हाउसों में जाना नहीं चाहती । वह तो मैं कभी भी कर सकूँगी, मैं क्लब में रह कर ही काम करना चाहती हूँ ।”

“कभी हाउस में काम किया है ?”

“नहीं, मैं नहीं कर सकूँगी ।”

“लेकिन तुम उस खेल को जानती तो हो न ?”

“मैं एक कॉल-गर्ल के रूप में काम कर चुकी हूँ ।”

“मैंने भी यही सुन रखा है ।” एड्डी ने मुझे बताया था कि उसको यह कहा जाएगा कि मैं एक-कॉल गर्ल हूँ जो कि शहर की वेश्याओं में सर्व श्रेष्ठ समझी जाती हूँ । एक काल-गर्ल का अपना निजी स्थान होता है जो कि सभी आरायश के समान से भरा होता है । उसका नाम और टेलीफोन नम्बर शहर के सभी रात्रि-केन्द्रों के बड़े वेटरों के यहाँ दर्ज रहते हैं । वह ग्राहक जो हेड-वेटर को या होटल क्लर्क को जानता है अपनी पसन्द बयान कर देता है कि उसे सुनहरे बालों वाली छोकरी चाहिए, श्यामा या लाल, भूरे बालों वाली—लगभग उतने पौंड वजन वाली, ऊँचे कद की अथवा मध्यम कद वाली, और यह भी कि वह रात्रि के मनोरंजन के लिए कितना व्यय कर सकता है ।

उसका टेलीफोन घनघनाता है और उस रात को उसके पास रहने वाले साथी का विवरण उसे दे दिया जाता है । बहुधा पहिले थियेटर अथवा रात्रि क्लब का चक्कर लगता है । एक कॉल-गर्ल पक्की वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाली आभिजात्या होती है ।

मैनी क्विनटैरो को यह विचार पसंद आया कि उसकी “भेजबानों”

में एक कॉल-गर्ल भी होनी चाहिए। वह कम से कम खेल को समझती तो होगी।

उसने अपने अंग-रक्षकों को सिर हिला कर हटने का संकेत किया। वह दरवाजे को हटा कर इस तरह बाहर हुए कि उनमें से मुश्किल से एक ही बाहर निकल सकता था। उनके पीछे चाबी घूम गई।

मैनी का जिस्म भारी था, रंग काला और उसके नाक-नक्श कुछ फूले-फूले से थे। उसके होठ कामुकता के सूचक थे। तौंद विशाल थी। वह कम से कम पूरी एक मिनट मेरी ओर देखता ही रहा।

“अपने कपड़े उतार डालो,” उसने सहसा आदेश किया।

“क्या यह आवश्यक है। मुझ में कोई खास खराबी नहीं है।”

“वह तो मैं विश्वास करता हूँ, गर्ल। इसके पूर्व कि मैं उसे मैदान में उतारूँ, हर लड़की के लिए संतोषजनक होना अनिवार्य होता है।”

जिस समय मैं अपनी पोशाक उतार रही थी तो दिल करता था कि मैं उसी क्षण से अपना काम आरम्भ कर दूँ और मैनी को अपने जाल में फँसा लूँ।

मैंने भरसक कोमल स्वर में पूछा, “किसी छोकरी से सन्तुष्ट होने में तुम्हारे लिये क्या सार्थकता है मि० क्विनटैरो। अतिरिक्त सेवा ? हो सकता है ?”

वह आगे झुक गया। उसकी आँखें मेरी देह पर घूम रही थीं। “मैंने कहा, अपने कपड़े उतार डालो, बाकी भी,” उसने दोहराया।

मैं अभी भी अपने को निर्वसन न मानूँगी अगर मेरे जूते और मोजे जिस्म पर बने रहे। मुझे खुशी है कि वह उन्हें नज़र अन्दाजकर रहा है क्योंकि मेरा ख्याल है कि अगर वह उन्हें भी उतारने के लिए कहता तो शायद मैं विद्रोह कर उठती।

वह सन्तुष्ट था। “मैं सन्तुष्ट हूँ, यंग लेडी। सिगरेट-गर्ल तुम्हें नियम समझा देगी। और वह न बतायेगी, तो मैं बताएँ देता हूँ। लड़की को केवल मेरे ही लिए काम करना होता है। तुम अपना पैसा गिन कर अपनी जेब में डालती जाओ, मेरा हिस्सा मुझे गिनकर देती जाओ, लेकिन

याद रखना कि तुम गलती भले ही कर जाओ, लेकिन मेरे जवान कभी गलती नहीं खाते ।”

“मैं ईमानदारी के काम करूँगी, मि० क्विनटैरो । मैं तुम्हारी ख्याति से भली भाँति परिचित हूँ । बेवकूफी करने से काम नहीं चलेगा ।”

“और जब हम और अच्छी तरह परिचित हो लेंगे, बैबी, तब तुम मुझे मैनी कह कर पुकारना शुरू कर सकती हो ।”

## ४

जिस स्थान पर एड्डी और मैं रहते थे, वहाँ लौटकर जाने का मेरा साहस न होता था । हमें यह भय था कि प्रारम्भ में कुछ दिनों तक मैनी निगाह ज़रूर रखेगा । एड्डी और मैं पहिले से ही अगले दो दिनों के लिये समय निश्चित कर रखते थे—किसी बड़े स्टोर में मिलकर बातचीत करने का । मैं उसको “सिल्वर स्लाइड” का अपना नवीनतम नक्शा खिसका दिया करती थी । उसके फर्श या और कमरों का और कौन दरवाजा किधर खुलता है—इस सब का ।

मैं क्विनटैरो की गतिविधियों की लिखित रिपोर्ट हर रात तैयार करती थी और समय का मीलान करती थी । मैंने उस द्वार का भी सतर्कता-पूर्वक नक्शा तैयार कर लिया था जो कि एक गली की ओर खुलता था और मोटर के रास्ते के लिए प्रयोग किया जाता था । धीरे-धीरे एड्डी को क्लब के प्रत्येक कार्यकर्ता की आदतों का परिचय मिल गया और वह यह जान सकता था कि अगर वह अपने नैमित्तिक ढंग पर काम करें तो कौन किस समय कहाँ हो सकता है ।

जिस समय मुझे क्लब में रहते एक सप्ताह से अधिक हो गया तो क्विनटैरो ने मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया । वह प्रत्येक रात्रि को उस सूराख से भाँक कर ही मुझे देखता रहा था, जहाँ से वह क्लब में काम करने वालों की गतिविधियों को देखा करता है । उसने खूबसूरत पोशाक खरीदने के लिए मुझे पेशगी पैसे दे दिया और उसके दोस्त अहबाब क्लब से बाहर मुझ से मिलने की नियुक्तियाँ करने लगे । वह बड़ी उदारता से पैसे देते थे और मैं बड़ी सतर्कता से हर शाम को उसका हिसाब कर दिया

करती थी। जिस समय भीड़ समाप्त हो जाती थी तो वह अपनी दूसरी छोकरियों के साथ मुझे भी अन्दर बुला भेजता था। मैं इतनी बुद्धि थी कि यह भी विश्वास न करती थी कि वह बख्शीश में से भी आधा हिस्सा माँग लेगा। बख्शीश की रकम भी काफी हो जाती थी। वह इन पैसों को भी नियमानुसार ग्रहण करता था। जिस समय उसने दूसरी लड़कियों की अपेक्षा मुझे अपने कमरे में अधिक देर तक रोकना और मेरी पोशाक की तारीफ़ करने के बहाने अंगुलियों से गुदगुदाना शुरू कर दिया तो मेरे लिए यह निश्चय करना आवश्यक हो गया कि अब मेरा अगला कदम क्या होना है। ज्यों-ज्यों मैं इस चीज पर विचार करती थी, एड्डी की योजनाओं को क्रियान्वित करना मेरे लिए उतना ही आवश्यक प्रतीत होता जाता था।

एड्डी ने मुझे यह साफ़ बता दिया था कि अगर वह इस काम को करने में असफल रहा और किसी प्रकार भी उसमें ढील की तो उसका खात्मा कर दिया जाएगा। बाँस इस बार असफलता को स्वीकार नहीं करेगा और जिस समय मैंने उससे यह प्रार्थना की कि वह इस काम को छोड़ दे और मुझे लेकर भाग चले तो वह बहुत कठोर हो गया।

“बाँस इस तरह की किसी चीज को सहन नहीं कर सकेगा। अगर मैं उसे धोखा देता हूँ तो वह हमारा पीछा करेगा जब तक कि दोनों का पता नहीं लगवा लेता। चाहे पाँच वर्ष भी क्यों न लगे। तब एक दिन हमारे पहरेदार हमें सदैव के लिए सोता ही पायेंगे।”

सिगरेट-गर्ल ने—जो कि क्विनटरो का दाहिना हाथ थी और उसके अनेक रहस्यों से परिचित थी—मुझे मैनी की पत्नी से सतर्क रहने की चेतावनी दे दी थी। “वह बहुत ही डाह करने वाली है और पवित्र शैतान है। इस पृथ्वीतल पर केवल एक ही चीज है जिससे वह खतरा खाता है और जब वह समरक्षेत्र में उतरती है, तो कहर बरपा हो जाता है। वह लगभग आधी दर्जन बार इस स्थान को रौंद चुकी है और किसी दिन उसकी जान लेकर ही छोड़ेगी। अगर वह यह सुन ले कि आजकल वह एक नई छोकरी में यानी कि तुम में दिलचस्पी ले रहा है तो वह बबूले के समान यहाँ टूट पड़ेगी और यह हो सकता है कि तुम भी जली माचिस

की तीली के समान उठाकर फेंक दी जाओ।”

सिगरेट गर्ल की चेतावनी के शीघ्र ही बाद उसके दर्शन करने का अवसर भी मुझे प्राप्त हो गया। वह एक लम्बे कद की भारी भरकम औरत थी, जिसके कदमों में मर्दानगी थी। वह कभी काफी खूबसूरत रही होगी, अपने सम्पूर्ण आकार—प्रकार में। मुझे मालूम हुआ कि वह एक मंडम थी जिसका कई वर्ष हुए क्विनटैरो ने अनुसंधान किया था। उनके विवाह को भी कितने ही वर्ष हो चुके थे और उनके कई बच्चे भी थे।

वह जब आई तो पहिले एक शराब देने वाले से बातचीत करती रही। उसने मेरी ओर संकेत कर दिया—जहाँ मैं मीनिया पुलिस के कपड़ों के खरीदार के साथ बैठकर शराब पी रही थी।

श्रीमती क्विनटैरो कमरे की सीमाओं पर घूमती-घामती आई और ठीक मेरे पीछे आकर खड़ी हो गई। मैं उसकी दृष्टि को अपनी गर्दन का पृष्ठ-भाग, नितम्बों की रेखाएँ और नंगी कमर का अध्ययन करते हुए अनुभव कर सकती थी। मेरी नाड़ियों में भय से बर्फानी शीत की लहरें दौड़ती रही थीं।

उसे मेरे विषय में चेतावनी दे दी गई थी।

वह यह जान चुकी थी कि उसका पति मुझे प्रत्येक मध्याह्नोत्तर काल में अपने कमरे में बुलाकर रखता था। मैं उसकी जानकारी का डंक अपने कन्धों के उठान में चुभता हुआ अनुभव कर सकती थी। मेरे अन्तर में एक उन्माद की सी भावना आती जा रही थी और इच्छा होती थी कि मैं अपनी पोशाक नीचे तक खिसका लूँ और अपने टखने तक उतार छोड़ूँ।

वह कमरे को पार करके मैनी के आफिस में चली गई। उसका दरवाजा आर्कैष्ट्रा के ठीक पीछे खुला। मैं अपनी मेज पर बैठी मूठ का घूमना देखती रही थी, क्योंकि उसे घुमाकर ही उसने दरवाजा खोला था।

वह दरवाजे पर काफी देर तक खड़ी रही। मैंने देखा उसने मूठ को पकड़कर बहुत आहिस्ता से घुमाया है—यह देखने के लिए कि उसमें चाबी लगी हुई है अथवा नहीं ताकि वह दरवाजा खोलकर और सहसा उसके सम्मुख उपस्थित होकर उसको किसी और छोकरी के साथ रंगरलियाँ करते पकड़ ले।

कुछ भी हो मूठ को इतनी चोरी से घुमाते हुए उसके हाथ को देख-कर मैं बहुत ही चकित हुई। मैं जब तक उधर देखती रही जब तक उसे यह विश्वास न हो गया कि दरवाजा खुला हुआ है। तब उसने सहसा दरवाजा अन्दर को खोल दिया।

क्विनटैरो अपने डैस्क पर अकेला बैठा हुआ था। मैं उसकी हल्की सी ही एक भाँकी ले सकी। दरवाजा बन्द हो गया। कुछ देर बाद श्रीमती क्विनटैरो बाहर निकल आई। वह गुस्से से लाल मुख हो रही थीं।

मेरे मस्तिष्क में यही वाक्य बार-बार आता रहा।

“वह द्वार की मूठ—इतनी आहिस्ता और खामोशी से। भगवान एड्डी की रक्षा करे।” बाँस का घँयं खोता जा रहा था। एड्डी के एक स्थान पर भेंट करते हुए मुझे बताया कि काम शीघ्र ही सम्पन्न होना अनिवार्य है। यह आखिर मेरे ऊपर ही आता जा रहा था। मेरी इच्छा नहीं थी कि मैं किसी कत्ल में सहायता करूँ। मैंने हृढ़ निश्चय कर लिया था कि एड्डी इस कत्ल में हाथ नहीं डालेगा।

“अब मैं अन्दर के चप्पे-चप्पे से भली भाँति परिचित हो गया हूँ।” एड्डी ने कहा, “कि कौन कहाँ रहता है और किस समय कहाँ होता है। इन रातों में से किसी एक को, इससे पूर्व कि क्विनटैरो तुम्हें काम पर भेजे, तुम्हें संकेत देना होगा। खिड़की को खुली रखना ताकि तुम पदों में से कोई सफेद चीज बाहर फेंक सको। मैं एक ग्राहक की तरह अन्दर आऊँगा। बस केवल अपना हैट ठीक करने का अवसर मुझे दे देना। जब तुम मुझे देखो तो दरवाजे की ओर चल देना। जिस समय तुम दरवाजे की मूठ घुमाती हुई होगी, मैं वहाँ पहुँच चुकूँगा। बस तीन बार ठाँय-ठाँय और काम तमाम। उस समय तुम चीखती हुई भाग सकती हो। मेरे जवान मुझे रसोई घर से बाहर फेंक देंगे अगर उन्हें वैसा करना पड़ा तो।”

“कल रात हम यह प्रयत्न करेंगे, एड्डी। मैं उससे कह छोड़ूँगी कि मैं उससे बातें करना चाहती हूँ। साढ़े आठ बजे। मैं उससे यह भी कह दूँगी कि नौ बजे का मेरे पास एक अच्छा काम है, इसलिए अगर वह

चाहता है तो उसी समय मुझे प्राप्त कर सकता है। वह अवश्य बुला लेगा। मुझे प्राप्त करने के विचार को वह संवरण नहीं कर सकता। मैं नई पोशाक पहनूँगी। वह मुझे नई पोशाक में देखकर बहुत प्रसन्न होता है।

उस रात जब मैं एक ग्राहक के साथ बाहर गई हुई थी मैंने श्रीमती विवनटैरो के ग्राम-निवास पर एक टेलीग्राम भेज दिया।

“आठ बजकर तीस मिनट पर तुम मैनी को उसकी नवीनतम गुड़िया के साथ पकड़ सकती हो। दरवाजा चुपके से खोलना और तुम उसको रंगे हाथों पकड़ लोगी।”

मैंने इस सूचना पर हस्ताक्षर नहीं किये।

## ५

साढ़े आठ बजे मैं मैनी के दरवाजे के बाहर खड़ी हुई थी।

क्या यह उसी तरह सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जायगा, जैसे मैंने योजना बनाई थी।

मैनी मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। वह इस बात से बहुत प्रसन्न है कि मैंने उसके साथ थोड़ा समय व्यतीत करने की इच्छा प्रकट की है।

“लेकिन मैनी, ठहरो, दरवाजा बंद मत करो। मैंने कहा था कि साढ़े आठ बजे यहाँ आऊँगी और मैं पहुँच गई हूँ। बाहर एक छोकरा पैसे से लदा खड़ा है। वह चाहता है कि लांग द्वीप पर—जहाँ वह ठहरा हुआ है, मुझे तत्काल ले जाय। यह खोने लायक पैसा नहीं है, अन्यथा वह किसी और छोकरी को पकड़ लेगा। मैं तुमसे बतलाने के लिए ही अन्दर आ गई हूँ। कल दोपहर बाद, हाँ। मैं काफी पहले ही आ जाऊँगी।

मैं तब समय पूरा करने के लिए रुक जाती हूँ। उसने दरवाजा बंद नहीं किया है। “कम से कम एक चुम्बन के लिए तो तुम्हारे पास वक्त होगा। आज तो तुम बड़ी शातिर नज़र आ रही हो। तुम्हारे बाजुओं पर वह क्या लगा हुआ है।”

“मेरा शृंगार न बिगाड़ो, मैनी। मेरी गाउन में सलवटें पड़ जायेंगी। मुझे ठीक बने रहना है। यह ? ओह ! यह तो मैंने नई ड्रेसिंग-रोब

खरीदी है। दूसरी जो मैं पहिनकर आती हूँ वह फट चुकी है। तुम इसे अपने पास रख सकते हो।”

वहाँ, मैं उसे डैस्क में फेंक देती हूँ ताकि वह आए और उसे देख ले। यह वह चीज है जिसे एक फायशा लड़की ही अपने शरीर को उभारने के लिए पहिन सकती है। इससे वह आग-बबूला हो उठेगी। वह वही दृश्य समुपस्थित कर देगी जो कि मैं उससे कराना चाहती हूँ। तब वह मुझे देखेगी और मैं भाग खड़ी होऊँगी। मैंनी मुझे बाहर बुलाने का साहस भी नहीं कर सकेगा। एड्डी कुछ समय के लिए बच जायेगा, क्योंकि वहाँ कोई भी नहीं होगा जो उसके लिए एड्डी को जाल में फँसा सके।

मैं मैंनी के बाहुपाश से दूर हट जाती हूँ। दरवाजे की मूठ हिल रही है। मैं किनखियों से उसे दे- सकती हूँ। मुझे ठठाकर हँसना चाहिये ताकि वह मुझे सुन सके, और मुझे पीछे हटकर खड़ा हो जाना चाहिये। अगर उसने उसकी बाहें मेरी बगल में देख लीं तो वह उसे भी और मुझे भी अपने हाथ से मार डालेगी।

“मैंनी,” मैं हँसती हूँ जबकि उसके आलिंगन से बच निकलती हूँ “तुम निश्चय ही इस दुनिया की औरतों के लिए एक कठोर दुनिया बना देते हो। बस दूसरा चुम्बन रहने दो। मुझे जल्दी जाना है।”

मैं अब उससे दूर खड़ी हूँ। दरवाजा अन्दर खिसक रहा है। अब वह एक धक्के के साथ चौपट खुल गया है। मैं मैंनी से इतनी दूर हूँ कि दरवाजे ने मुझे ठक लिया है। मुझे अब बाहर निकल भागना चाहिये। उसे मुझे देख भी लेना चाहिये, एक चीख मारकर मुझे भाग खड़ा होना चाहिये।

वह इस चोली को देखती है। मैं उसका हाथ देखती हूँ। आतंक से मेरा साँस रुक जाता है। उसके हाथ में एक चमकदार चीज है। बहुत बड़ी नहीं, एड्डी की तरह एक छोटी बन्दूक लेकिन, चमकदार और हीरे की मूँठ वाली।

मैंनी कूदकर उसको कब्जे में करना चाहता है और मैं चीखकर भागती हूँ। धड़ाके से कमरा भर उठता है। वह लोग बाहर इसे सुन लेंगे लेकिन कुछ देर तक यह निश्चित नहीं कर सकेंगे कि हुआ क्या है।

पहले धड़ाके के पीछे दूसरा धड़ाका ! मैनी फर्श की ओर लुढ़क रहा है । मुझे अब बच निकलना चाहिए ।

मैनी मर चुका है और मैं दरवाजे के बाहर आ चुकी हूँ । खाने वाले सिर पर पैर रखकर भाग रहे हैं और चारों ओर दौड़-धूप मच गई है । उसके अंगरक्षक अन्दर घँस रहे हैं और श्रीमती क्विनटैरो को पकड़ रहे हैं । मेरी तरफ किसी का भी ध्यान नहीं है ।

सदर दरवाजा । मुझे अपने सन्ध्याकालीन कपड़ों और मुरहरे स्लीपट पहिनकर बाहर भाग निकला चाहिए । एड्डी अगर मुझे देख ले तो उसे मेरे पास नहीं आना चाहिए । वह सड़क के पास मेरी प्रतीक्षा करता होगा — मेरे संकेत की प्रतीक्षा में, वह खिड़की की ओर देखता हुआ होगा ।

सड़क पर । एक टैंक्सी-केब घरघराने लगी है । उसका खुला हुआ द्वार मुझे बुला रहा है, मैं एड्डी को देख रही हूँ । उसने भी मुझे देख लिया है । उसे आश्चर्य हो रहा कि मैं भाग क्यों रही हूँ । वह कार से बाहर निकल रहा है । मुझे चाहिए कि मैं उसे अपने नज़दीक न आने दूँ । शायद कोई देख रहा हो ?

कोई देख रहा है । क्विनटैरो के आदमियों ने उसे क्लब के चक्कर लगाते हुए ताड़ लिया है । वह यह नहीं जानते कि मैनी मर चुका है ।

एक कार तेजी के साथ निकट से गुज़रती है । तेजी से गुज़रने वाली मोटरों का ताँता लग जाता है । एक मेशीनगन का-सा धड़ाका होता है । — बहुत तेज़ — एक कहर के साथ भयानकता छा गई है ।

काली कार जा चुकी है और मेरी टैंक्सी अब खिसक रही है । लेकिन उधर एड्डी पड़ा है ।

नीचे फर्श पर एड्डी पड़ा है ।

वह चुपचाप है । भयानक खामोश । उसका कोट खुल गया है । उसके कालर में एक लाल दाग है ।

मैं अब कभी भी एड्डी को उत्तर-देश के उस छोटे से होटल में न ले जा सकूँगी । मैं अब किसी स्थान पर भी उसे प्राप्त नहीं कर सकूँगी ।

जो दिन इसके बाद आए, उनमें मुझे लगातार भयानक स्वप्नों की दुनियाँ में विहार करना पड़ रहा है। एड्डी को फर्श पर पड़े देख कर मैं एक विषादयुक्त नींद से जाग उठती हूँ। किसी आदमी ने आज तक मुझ पर दाग या निशान नहीं छोड़ा। मेरे पास तीन डालर वाले और पचास डालर वाले आदमी भी आए हैं। उन्होंने जिस समय मुझे खरीदा है कभी कोई कोमल शब्द नहीं कहे, वह आदमी भी, जिन्होंने कहा है कि मुझ से उनके पैसे वसूल नहीं हुए—दूसरे ऐसे भी रहे हैं जिन्होंने कहा है कि जो कुछ उन्होंने दिया है उससे दुगना पा लिया है। कुछ ऐसे भी आए हैं जो मुझे चूमने से नफरत करते थे क्योंकि वे छोकरी के होठों को चूम नहीं सकते थे क्योंकि उन पर सामूहिक अधिकार होता है और कुछ ऐसे आदमी भी आए थे जो चाहते थे कि मैं उनका इतना चुम्बन करूँ जितने की उज्जरत उन्होंने दी भी नहीं थी।

लेकिन एड्डी के सम्पर्क में आने के पूर्व तक मैंने अपने दोनों अस्तित्वों को एक दूसरे के पृथक्, अक्षुण्ण रखा है। मेरे नियंता-आत्म ने मुझे हाँककर दुराचार के लिए प्रस्तुत कर दिया है। जिस समय मैं रात के काम को खत्म करके ऊषाकाल में अपने घर जाती रही हूँ तो मेरा वह नियंता-आत्म बहुत प्रमुदित हुआ है। जिस समय मैं पार्क को पार करती हुई, अपनी बख्शीश को जेब में सँभाले जाती हूँ और मेरे रात्रि के ग्राहक जिस समय अपनी पत्नियों के पास अपनी कुमार शंयाओं पर पहुँच चुके होते हैं, तो मैं ओस से लदे फूलों को रुक कर सूँघ सकती हूँ। मैं डौरीन मेनर्स हूँ जिसकी स्मृति में केवल एक ही अशुभ स्मृति है जो सैण्ड्स। मैं कभी-कभी कोई जैरेनियम का फूल भी तोड़ लेती हूँ और मुझे घर की वह जैरेनियम की क्या रियाँ याद आ जाती हैं। उस फूल को लेकर जब चलती हूँ और उससे बातें करती हूँ। तो मैं सोचने लगती हूँ कि कल तुम्हें लोगों ने स्पर्श किया है, तुम्हें मसल भी दिया गया है। किन्तु तुम में फिर भी सुवास बनी हुई है। तुम आज भी पवित्र हो। तुम आज कुमारी हो, पिछली सारी रात तुम लोगों के लिए खुली रही हो, तुम अरक्षित रही हो, और जो कोई इधर से गुजरता वही रुक कर तुम्हारी सुगन्ध को अपनी साँस में भर सकता था। लेकिन आज तुम

किसी भी दुलहिन की पुष्प-शैया के लिए उतनी ही पवित्र हो जितनी कि उस समय जब कि कली से सर्वप्रथम पुष्प-रूप में तुम्हारा उदय हुआ था ।

और मैं वह फूल अपने साथ ले जानी थी और उसे अपने अतिरिक्त तकिए पर रख देती थी । लड़कियों के लिए किसी न किसी कल्पना में खोये रहना आवश्यक होता है, अन्यथा उनके जीवित रहने की सार्थकता समाप्त हो जाती है—खासतौर से ऐसी लड़की के लिए जिसने प्रेम को भी व्यापार के रूप में ग्रहण किया है ।

कभी—कभी जब मैं जाग उठती तो उस अतिरिक्त तकिये पर देखती रहती और तब गिनना शुरू कर देती ।

देखें तो ? यह अतिरिक्त तकिया पिछली रात कितनी बार प्रयोग किया गया था—मेरा अपना अतिरिक्त तकिया नहीं,—जेनी का, हेनरिता का या मैडम ल्यूसिले का अतिरिक्त तकिया । इस सप्ताह का अन्त होने पर मैं बहुत प्रसन्न होऊँगी । ल्यूसिले का स्थान बहुत सस्ता है । केवल तीन डालर देने वाले लोग वहाँ उतरते हैं और ये तीन डालर वाले समझते हैं कि पचास सैण्ट अगर बख्शीश में दे दिया तो न जाने कितनी बड़ी बख्शीश दे दी ।

लेकिन मेरा अपना अतिरिक्त तकिया मेरे अपने कमरे में सदैव ही ताजा और बेदाग रहा है । और अगर मेरे पास पार्क में खिलने वाले पुष्प के समान कोई निर्दोष वस्तु है तो वह मेरा प्रेम है । मेरा नियन्ता आत्मन् इसी प्रकार का प्रेम मेरे लिए आज तक अक्षुण्ण बनाए हुए है ।

एड्डी का शरीर सड़क पर मृतक रूप में पड़ा है ?

मुझे अपने आप पर विश्वास था, अपने पृथक् अस्तित्व पर । मैंने अपने आत्म-नियन्ता के साथ छल किया है ।

मैंने प्रण किया था कि मैं कभी किसी को अपना प्रेमी नहीं बनाऊँगी, लेकिन मैंने बना लिया था । एक बहुत सस्ता प्रेमी । इस कार-बार में पड़ी हुई हर साधारण लड़की की तरह जिसकी कामना होती है कि इस जीवन से कुछ मुक्ति होने के बाद वह किसी के गले में संतोष के साथ बाहें डालकर झूम उठे और उसके लिए उसे डालर की अदायगी न की जाय ।

जिस रात मैं अपने बिस्तर में सुरक्षित, कम से कम उस क्षण के लिए, सो रही थी तो मैं केवल यही विचार कर रही थी, “दाग लग गया है। डोरीन मर चुकी है। एड्डी ने उसे मार डाला है।”

अधिकारियों के सम्पर्क में आने का यह मेरा प्रथम अवसर था। प्रातःकाल से पूर्व ही एक वकील मेरे यहाँ आ गया था। उसे बाँस ने वहाँ भेजा था। वह बड़ा उत्तेजित हो उठा था क्योंकि मैंने उसे बिना कपड़े पहिनकर ठीक-ठाक हुए अन्दर आने की सुविधा नहीं दी थी। उसने मुझसे कहा कि उसके ऊपर चरित्र की छाप डालने की आवश्यकता नहीं है।

उसने कहा, “इस समय में काम से आया हूँ। तुम मेरे लिए कुछेक पीण्ड वजन रखने वाली एक साधारण श्रौत भर हो।”

उसने मुझे बताया कि अधिकारी लोग किसी भी समय मेरे चारों ओर घेरा डाल सकते हैं। क्योंकि यह जाना जा चुका है कि मैं एड्डी की चहेती थी।”

“लेकिन तुम्हें चिन्ता नहीं करनी है। बाँस अच्छी तरह जानता है कि तुमने वह सब कितनी चतुराई के साथ किया। जिस समय उसकी पत्नी वहीं थी तुमने स्वयं मैनी क्विनटैरो को मार गिराया और फिर बचकर साफ निकल आई ताकि सभी अपराध उसकी पत्नी के सिर पड़ जाय।”

मैं उसके ऊपर चीखी, “मैंने उसे नहीं मारा। उसी ने मारा ! मैं वहाँ उसकी उपस्थिति चाहती थी। मैंने उसे वहाँ बुलाया था ?”

वकील ने अपना सिर हिलाया। “नहीं,” उसने कहा, “यह कोई अच्छी कहानी नहीं है। तुम्हें वह कुछ भी नहीं कहना है। मैं तुम्हें बताऊँगा कि कहना क्या है। तुम वहाँ बिल्कुल नहीं थीं, समझीं। किसी को यह याद न होगा कि तुम वहाँ थी। तुमसे केवल इसलिए जिरह की जायेगी कि तुम एड्डी को चहेती थी जो कि सड़क में मरा पड़ा हुआ पाया गया।”

‘लेकिन तुम्हें समझना चाहिए,’ मैं चिल्लाई “मैंने उस पर गोली नहीं चलाई। गोली उसी ने चलाई।”

उसने फिर अपना सिर हिलाया। “आह, मुझसे यह कहने में कोई

हजं नहीं है। लेकिन तुम्हें कहना यही है, जो मैं बताता हूँ। तुम्हें इस चीज के बारे में कुछ भी नहीं मालूम है। समझीं ? किसी को क्या पता कि एड्डी क्लब के बाहर किस चीज की इंतजार में था और वह क्यों मारा गया था। क्विनटरो का मामला बिलकुल अलग पड़ गया है। बाँस ने कुछ राजनीतिज्ञों से मिलकर उस मामले को रफ़ा-दफ़ा कर दिया है। उसे और कुछ भी करना नहीं पड़ा। टेलीफोन उठाया और वह सब ठीक हो गया। तुमसे मैनी के बारे में कोई भी सवाल नहीं किया जायगा। तुम से केवल यही पूछा जायगा कि कौन आदमी एड्डी को मार सकता है। तुम्हें किस पर शक है। बस केवल इतना ही। तुम जानती नहीं, समझीं। एड्डी का तुम से केवल इतना ही सम्बन्ध था कि वह तुम्हारे साथ सोता था, बस समझ रखो।”

“हाँ, केवल यही चीज है कि वह मेरे साथ सोता था।”

वकील उठ खड़ा हुआ। वह बढ़कर मेरे पास आ गया। वह छोटा सा आदमी था। मैं उसके बारे में सुन चुकी थी। बाँस के मुकदमों को जो संस्था सँभालती है वह उनका मध्यस्थ था। उसने बिना आज्ञा प्राप्त किये ही मेरा अंगरखा खोल लिया। उसने कहा, “वैल, तुम तो बड़ी बढ़िया हो सकती हो।”

मुझे कुछ हो गया। नहीं जानती क्या हो गया। मैं इसे लिख नहीं सकती। आज रात कत्ल हुआ था। एड्डी भी मर चुका था। मैं दौड़कर आ गई थी। पुलिस किसी भी क्षण मेरी तलाश में आ सकती है। बाँस ने एक वकील भेजा है। जब तक पुलिस आती है, वह मेरे साथ प्रतीक्षा करेगा। बाँस का ख्याल है कि मैनी की हत्या मैंने की है। उसने मेरे पास वकील भेजा है कि मुझे एक कहानी पढ़ा दे ताकि अगर बन्द कर दी जाऊँ तो मेरी हैबियस कोर्पस मंजूर करा सके। या मुझे जमानत पर छोड़ा जा सके।

बाँस के लिए यह सब बड़े महत्त्व की चीज है और मेरे लिये भी।

यह वकील जो आदमी है, वह पुलिस के आने की और मुझे प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रहा है।

“मैंने कहा—तुम बहुत बढ़िया हो न।” वकील ने कहा।

“तुमने तो कहा था कि मैं केवल कुछ पौण्ड वजन रखने वाली औरत भर तुम्हारे लिए हूँ ।

“ओह, वह तो तुम हो ही बेबी । लेकिन अभी पुलिस आती नहीं है । क्या इरादे हैं ।”

“मुझे कुछ नहीं करना-धरना है ।”

“बहुत अच्छा, अपनी कहानी याद रखना ।”

वह पुलिस वाले लगभग ६ बजे सुबह मेरे पास आए । वकील चला जा चुका था । मुझसे लगभग तीन घंटे तक प्रश्न किए जाते रहे । लेकिन यह सब अत्यन्त सरल था । जिस समय मुझे पुलिस इन्स्पेक्टर के कमरे में ले जाया जा रहा था एक आदमी आया और उसने मुझसे कहा, मैं नहीं जानती वह कौन था—“उसी कहानी पर जमी रहना जो बाँस ने तुम्हें पहुँचाई है । हम तुम्हारी खबरगीरी करेंगे ।”

मैंने पुलिस से कह दिया कि मैं एड्डी की छोकरि थी, बस इससे अधिक कुछ नहीं जानती । न ही उसने मुझे अपने कारबार के बारे में कुछ बताया । हाँ, वह घर वैसा लगता था । हाँ, मैं एक वेश्या थी । नहीं मैंने एड्डी को उसके किसी दलगत कार्य में कभी कोई मदद नहीं की । नहीं, मैं किसी भी आदमी को नहीं जानती—कि एड्डी का किस-किस से सम्बन्ध था ।”

“ओह तुम केवल इतना ही जानती हो कि तुम उसके साथ केवल सोती थीं ।”

“हाँ, जनाब । बस मैं इससे अधिक कुछ भी नहीं जानती ।”

उन्होंने मुझे पकड़ा नहीं । वकील ने कहा था, “समझीं, बाँस ने सब तै कर लिया है ।”

तब मैं बाँस से मिली ।

बेनी ने मुझे उससे मिलने भेजा “उसको यह ज्ञान भी न होने देना कि तुमने क्विनटैरो को नहीं मारा है । बाँस तुम पर विश्वास करता है । बहुत सी छोकरियाँ, या दूसरे आदमी यह जानते तक नहीं कि वह कौन आदमी है ।”

एक महान होटल—जो दुनियाँ भर में प्रख्यात है । यह कलेवे का

समय है। मैं एलीवेटर-व्याय से कह रही हूँ कि मुझे अठारहवीं मंजिल पर जाना है।

एक भद्दा और कुबड़ा आदमी मुझे अन्दर ले जाता है। कई कमरे उसके अधिकार में हैं।

“आप कौन हैं, सिस्टर ?”

“डोडी, बॉस ने मुझे बुलवाया है।”

“बेहतर, आ जाओ, वह अभी उठ रहे हैं।”

एक पतला और काला, लैटिन आदमी मैंने नाम सुन रखा था। मैं नहीं जानती थी कि फैरेलो, निक फैरेलो, एक पाताल लोक का सामंत है—हमारा बॉस है। यह निक फैरेलो था जो उन सबका सम्राट् था।

वह सिल्क के पायजामे पहिने हुए था। उन पर बड़े-बड़े फूल खुदे हुए थे। मुलायम स्लीपर, लम्बा, पतला और सख्त नाक नक्श और काली आँखें।

“हेलो, तुम एड्डी की छोकरी हो ?”

“मैं थी।”

“ठीक, वेल, देखो, बेबी। बैठ जाओ। तुम से कहता हूँ तुम्हें मैंने क्यों बुलवा भेजा है। मेरे पास तुम्हारे लिए कई योजनाएँ हैं।”

उसके पास अनेक योजनाएँ हैं। मुझे ताज्जुब है कि उसे याद होगा। वह अब कैदखाने में है। इतने वर्ष बाद छूटेगा कि अपने सिल्क के पाजामे पुनः पहिनने से पहिले ही वह वृद्ध हो चुकेगा।

वह कहता है, ‘मैं अब बेड बिजनेस भी अपने हाथ में लेने वाला हूँ। मैं तमाम मैडमों को नौकरी पर अपने यहाँ काम पर लगाऊँगा। तुम छोकरियाँ लोग जो कुछ कमाती हो मैं उसका आधा उन्हें रखने नहीं दूँगा। मैं पुरानी मैडमों को पेशे में से निकाल कर उनके स्थान पर नई भर्ती कर रहा हूँ। एक सप्ताह में कितना कमाती है ये ? मैं छोकरियों से आधा लूँगा। तुमने मेरे लिए बहुत ही बढ़िया काम किया है। मैनी रास्ते में से निकल गया। अब सारे शहर पर मेरा एक-छत्र साम्राज्य है। क्योंकि तुमने दुस्साहस के साथ काम किया इसलिए, इसलिए मैं एक हाउस तुम्हारे सुपुर्द कर दूँगा और एक बहुत अच्छा वेतन। तुम्हें फिर अपने

मित्रों को छोड़कर किसी के साथ कोई भी सम्बन्ध रखने पर बाधित नहीं होना पड़ेगा। तुम्हारा क्या विचार है।”

मुझे इस पर विचार करना है। मेरा नियन्ता आत्म पुनः मेरे अस्तित्व में आ गया है। क्या मैं एक हाउस लेकर बैदूँगी और मैडम बनूँगी। क्या मैं भी बैठकर लड़कियाँ बेचूँगी। पाँच डालर एक वक्त के लिए, दस डालर दुगुने समय के लिए-क्या मैं आदमियों से ऐसा सौदा करूँगी। वह छोकरी वहाँ, मेज़ी, वह बहुत नायाब है, लेकिन बेस्सी, वह जो भूरी पोशाक पहिने हुए है, वह अभी नयी है। बेस्सी के समान आदमी भी यहाँ आएँगे। उसके लिए अधिक देना होगा। उससे उतना दाम वसूल हो जायगा।

हाँ, मिस्टर, आप रात्रि भर ठहर सकते हैं।

नहीं, मिस्टर। यह उस किस्म का हाउस नहीं है, आप दो डालर मेरे हवाले कीजिए, बतला दिया जाएगा कि आपको कहाँ जाना होगा।

नहीं मिस्टर। आप किसी छोकरी को बाहर नहीं ले जा सकते। आपको यहीं ठहरना होगा। बेशक, मिस्टर, बेशक। दो लड़कियाँ अगर आप चाहें तो।

नहीं ? डोरिन मैनर्स मैडम कभी नहीं बनेगी ? मैंने कहा, “मैं वह काम पसन्द नहीं करूँगी। मैं जैसे थी वैसे ही काम करती रहूँगी। और जिस समय मेरे पास काफी पैसा हो जायगा, इस पेशे को छोड़ देना चाहती हूँ।”

बॉस ने कहा, “थोड़ा नाश्ता कर लो। मुझे एक नया विचार सूझा है।” मैं बैठी रही और नौकर ने शानदार नाश्ता मेज़ पर लगा दिया बॉस का अंग-रक्षक द्वार के बहुत निकट खड़ा था शानदार पोशाक पहिने, दुनिया के सर्वश्रेष्ठ होटलों के अनुरूप शान शौकत के साथ। मुझे आश्चर्य था कि क्या उस होटल में भी होटल गर्ल काम करती होंगी। तब तो वह बहुत पैसा पैदा करती होंगी।

मैंने बॉस से कहा—“आपको ख्याल सूझा है। आपका मतलब, मेरे सम्बन्ध में ? उस तरह से ?”

उसके पतले, सफ़ेद हाथ मेरी ओर बढ़ते हैं, और उसकी कातिल आँखों में कठोरता बढ़ जाती है।

“सुनो तुम ! मेरा ख्याल सिर्फ एक व्यापारी ख्याल है। मेरी पत्नी और तीन बच्चे हैं। यह न भूलो।”

## २

निक फ़ैरेलो का ख्याल था कि मैं “काल-गर्ल” बन जाऊँ। वह काल-गर्ल व्यापार भी हाथ में लेना चाहता था, लेकिन उस खेल से परिचित न था। उसकी यह समझ में नहीं आया था कि टेलीफोन पर बैठकर तारीखें निश्चित करने वाली छोकरियों को किस प्रकार से अपने नियंत्रण में रख सकेगा। उसने यह ख्याल किया था कि अगर नगर के श्रेष्ठतम भागों में रहकर मैं काल-गर्ल के रूप में काम करती रहूँ तो मुझे इतना अवश्य अनुभव हो जाएगा कि उसे प्रेरणा दे सकूँ।

उसने पाँच-सौ डालर मुझे कपड़ों के लिए दे दिये और एक विधिपूर्वक फर्निश किया हुआ आवास अपने एक आदमी द्वारा प्राप्त करा दिया। एक काल-गर्ल के पास अपना निजी निवास गृह होना चाहिए। उसे अपने को इस प्रकार बना कर रखना चाहिए कि वह खरीदे हुए प्रेम की भावना को अपने ग्राहक से दूर रख सके। इसको स्पष्ट किया जाय तो इसका अर्थ निकलता है कि काल-गर्ल अपने ग्राहक के समक्ष कुछ ऐसा वातावरण प्रस्तुत करे कि उस लगे—“मैं किसी युवती को फुसला रहा हूँ। वह मेरे साथ इसलिए आ रही है कि मुझ पर आसक्त हो गई है।”

इस प्रकार मैं फ़ेड से मिली।

मेरे अनुभव में आ चुकने वाला फ़ेड्डी नहीं, बल्कि एक पर्वतीय नगर में स्थित एक विशाल डिपार्टमेंट-स्टोर का मैनेजर।

बेनी मेरा “मैनेजर” था। वही मुझे होटलों के हँड-वेटरों और दूसरे बड़े होटलों के मैनेजरों से मिलाने ले गया था। उसी ने मेरी कीमत पचास डालर नियुक्त की थी। मुझे लिस्ट में, एक सुनहरे बालों वाली छोकरी के रूप में दर्ज नहीं किया गया था। ऐसा मालूम पड़ता था

कि पचास डालर वाले आदमी सुनहरे बालों वाली छोकरियों को कम पसंद करते हैं। उनकी पत्नियाँ सुनहरे बालों वाली छोकरियाँ नहीं थीं। वह उन छोकरियों को पसंद करते थे, जो उनकी पत्नियों की उनकी थोड़ी उम्र की याद ताज़ा कराती थी।

इस प्रकार पचास डालर एक रात के लिए बिलकुल ठीक था। “और” बेनी ने कहा, “और तुम्हें कम से कम पच्चीस अतिरिक्त तो हमेशा ही मिल सकने दें ?”

## ३

मेरा टेलीफोन घनघना उठता है। मेरी आँखों में नींद छाई हुई है। भयानक नींद। पिछली रात जिस आदमी ने मुझे प्राप्त किया था, उसने प्रातःकाल तीन बजे तक नचाया था। बस अभी-अभी एक घण्टा हुआ, वह गया है। लेकिन यह जैक्स बोल रहा है। उनका स्थान बड़ी शान-शोकत का है। वह हमेशा ही बढ़िया आदमी पकड़ कर देता है। और मैं भी उसे दूसरों की अपेक्षा कुछ अधिक देती हूँ।

“सुनो, डोडी। यह आदमी—उसका नाम फ्रेड है। वह बहुत ही ठोस आसामी है, पश्चिमी आदमी। वह यहाँ हफ्तेभर ठहर कर अपने स्टोर के लिए सामान खरीदेगा। हर वर्ष सप्ताह भर के लिए वह एक छोकरी लेता है। लेकिन छोकरी नायाब होनी चाहिये—यह शर्त है। बहुत ही ज़ालिम—तुम जानती हो। ऐसी छोकरी जो अच्छी बातचीत भी कर सकती हो। वह सप्ताह के तीन सौ डालर देता है और हो सकता है, सौ डालर ऊपर से भी मिल जायें। और इसके अलावा समस्त खान-पान मुफ्त? कुछ पोशाक भी हाथ पड़ जायें तो कोई आश्चर्य नहीं, ठीक है न ?”

“निश्चय, जैक्स। लेकिन मुझे क्षमा करो, ठीक इसी समय नहीं। इस समय तो मैं नींद से भयानक रूप से अभिभूत हूँ।”

“नींद को उखाड़ फेंको। ऐसा खर्चीला आदमी मिला है। मैंने उसके लिए तुम्हें तै कर लिया है। वह हर वर्ष मेरे यहाँ आता है। सीधी होटल में उसके पास चली जाओ। कमरा नं० अठारह सौ बारह। बस ऊपर

चली जाना । वह वहीं होगा । ग्यारह बजे । अपना नाम उसके पाम पहुँचा देना । बस केवल इतना ही ।”

“क्या तुमने तीन सौ बताया । कब मिल जाएगा ?”

“तुम्हें नहीं मिलेगा । डोडी, मैं वसूल करूँगा । उसका तरीका वैसा ही है । वह एक स्थायी नीति का आदमी है और यह सोचना नहीं चाहता कि तुम्हें पैसा देकर उपलब्ध कर रहा है । तुम्हें यह समझ रखना है । रुपया तो मिल ही जाएगा । वह मुझे पैसा दे देगा । मैं तुम्हें तुम्हारा हिस्सा दे दूँगा । इसके बाद फिर कोई भी बात तुम्हारे अन्दर पैसे वाली नहीं आनी चाहिए । वह तुम्हारे साथ अपनी प्रेयसी—समान व्यवहार करेगा । यह उसका तरीका है । और वह सस्ती छोकरियाँ पसंद नहीं करता । अगर तुमने शानदार काम करके उसका मन जीत लिया तो फिर आकाश भी उसकी उदारता की सीमा नहीं बना सकता । यह ही बहुत शानदार काम है ।”

“बहुत अच्छा, जैविस । ग्यारह बज ?”

“ठहरो डोडी ? अभी टेलीफोन लटकाओ नहीं । मैं तो लगभग भूल ही गया था । तुम्हें सप्ताह भर रुककर उसके साथ होटल में ही ठहरना होगा । साथ में नई पोशाकें लेती जाना । और दूसरी चीजें । बस बँग में रख लेना । क्या किसी नई चीज की जरूरत है । शाम की गाउन ? तुम्हें जगह-जगह उसके साथ जाना होना, जानती हो । मैं तुम्हें कुछ पैसा दे दूँगा ।”

“मेरे पास सभी कुछ है, जैविस ! तुम सभी चीजों का ध्यान रखते हो । हो सकता है कि तुम्हें यह भी मालूम हो कि वह गुलाबी अण्डर-वीयर पसंद करता है या काले ।”

“यह तुम्हें शोभा नहीं देता डोडी । इस तरह मेरा मखौल न उड़ाओ ?”

“क्षमा करना, जैविस । मैं अभी-अभी लौटी हूँ । घण्टा-भर हुआ होगा । पिछली रात वाला आदमी तो सिर दर्द था । अब ग्यारह बजे फिर ? मैं सोच रही हूँ कितनी बिडम्बना है । फिर इतनी जल्दी आखिर काम क्यों शुरू करना है ?”

मैंने १८१२ नम्बर कमरे पर दस्तक दी। मुझे कुछ देर हो गई थी। मैंने स्नान करने और बैग लगाने भर का समय लिया था। यह चीज— मैं सोचती थी—जो सैण्ड्स के साथ व्यतीत होने वाली रात—जिसे बीते मुद्दत गुजर गई—के समान नहीं थी। मैं अपने शृङ्गार सम्बन्धी सभी सामान ले जाऊँगी। केवल पर्स में रखकर ले चलने वाली प्रसाधन सामग्री ही नहीं—जो कि हर काल-गर्ल रखती है। केवल एक जोड़ी अतिरिक्त अण्डर-वीयर ही नहीं जो कि प्रत्येक काल-गर्ल अपने शृंगार-केस के साथ ही अपनी पर्स में रखती हैं, लेकिन सप्ताह भर के लिए पर्याप्त चीजें। जैक्सन ने जितना समय मुझे दिया, सामान तैयार करने में मुझे उससे अधिक समय लग गया था। इसीलिए मुझे थोड़ी देर हो गई थी। मुझे चिन्ता थी। तीन सौ डालर, शायद एक सौ डालर अतिरिक्त और दूसरे तोहफे, कम से कम ऐसे आदमी के पास तो समय पर पहुँचना अनिवार्य होना चाहिए? अन्यथा, हो सकता है वह किसी और को स्वीकार करले।

लेकिन मामला बिल्कुल ठीक था। वह पाइप पी रहा था। खिड़की के निकट खुला हुआ केस था, और कागज फर्श पर बिखरे हुए थे। मेरी प्रतीक्षा करते हुए भी वह अपने काम में काफ़ी व्यस्तता से लग रहा था।

“मैं आपका अभिनन्दन करती हूँ। क्या मैं ठीक कमरे में आ गई हूँ। मैं डोडी हूँ। जैक्सन ने मुझे भेजा है।”

“हैलो, डोडी। आपका पूरा नाम क्या है?”

“डोडी मैन्स।”

“यह बहुत अच्छा है। क्या हाल-चाल है, मिस मैन्स। अन्दर आ जाइए। अपना बैग मुझे पकड़ा दीजिए। यही आपका कमरा है।”

उसने मेरा बैग पलंग पर रख दिया। यह बहुत ही सुन्दर कमरा था। बहुत बड़ा, होटल के श्रेष्ठतम कमरों में से एक। वह कोई बहुत समृद्ध आदमी होगा। वह बहुत लज्जालु स्वभाव का है। मेरे ख्याल में पचास वर्ष की आयु होगी, लेकिन अभी तक भी छोकरा ही है। कनपटियों पर उसके बाल भूरे हो गए हैं, और कुछ हल्के हैं। भूरे रंग का सूट

ब्राउन रंग की टाई, सप्ताह भर के अन्दर या किसी अवसर पर मैं उसे बताऊँगी कि भूरे रंग के सूट के साथ ब्राउन टाई और नीली कमीज फबती नहीं। किसी दिन शाम को मैं अपने काले अण्डर-वीयर पहनूँगी। मैं मजाक नहीं कर रही हूँ जैकविस ?—मैं नीचे पहनूँगी और उसे उचित मौलान करके दिखाऊँगी !

उसने पलंग पर मेरा बैग रख दिया है, और पीछे घूम गया है। उसे समझ नहीं पड़ा है कि अब आगे क्या बातचीत करें, यह उसका कमरा नहीं हो सकता, क्योंकि उसकी कोई चीज इधर-उधर दिखाई नहीं देती केवल कागजात के केस को छोड़कर। वह न अधिक लम्बा है और न ठिगना। पेट पर कुछ भारी है। वह उन आदमियों में है—जो अच्छी तरह जीते हैं—और गोल्फ खेलते हैं। उसका रंग भी गोल्फ-क्लब के अनुरूप ही है। मैं अपने दस्ताने उतारती हूँ। मैं उसे यह स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि मैं ठहरने के इरादे से आई हूँ और मैं उसकी हूँ। मेरा यह स्तर कि मैं उसकी सेवा करने आई हूँ—अब समाप्त हो जाना चाहिए, मैं अपने दस्ताने उतार रही हूँ और मुस्कराहट के साथ उसकी ओर देख रही हूँ।

मुझे उम्मीद हो रही है कि मैं उसे पसन्द आ रहा हूँ।

यह पता लगाना बड़ा कठिन है कि कोई आदमी क्या पसन्द करता है। मुझे यह मालूम हो गया है कि वह सुनहरे बालों वाली लड़की पसन्द नहीं करता। क्या उसे तन्वंगी चाहिए ? मैं नहीं हूँ। क्या वह प्रथुल देह चाहता है, वह भी मैं नहीं हूँ। क्या वह अश्लीलता पसन्द करता है ? मैं वैसी हो सकती हूँ, यदि वैसी आवश्यकता पड़े। तीन सौ डालर के लिए तो अवश्य ही।

वह कहता है, “आराम से बैठो, मिस मैनर्स। मेरा कमरा दूसरा है, अगला कमरा। यह मैंने तुम्हारे लिए रिजर्व करा लिया है।”

हे भगवन् ! सप्ताह भर के लिए मुझे और फिर मेरे लिए अपने कमरे से अलग एक कमरा भी किराये पर उसने ले लिया है।

“मेरा विचार है —मुझे केवल इतना मालूम है कि आपका पहिला नाम फ्रेड है। मैं आपको क्या कह कर पुकारूँ ! आपने क्या नाम सोचा है ?”

वह लज्जालु और उद्विग्न हँसी हँसता है। पचास वर्ष की आयु। मैं सप्ताह भर के लिये उसकी प्रियतमा हूँ, उसकी तरुणी प्रियतमा।

“मेरा ठीक पूरा नाम मिस डोडी? फ्रेड व्हार्टन। मैं हमेशा जैक्सन पर विश्वास करता हूँ। उसने जो लड़कियाँ मुझे दी हैं उन्होंने कभी मुझे ब्लैक-मेल (बदनाम करके पैसा ऐंठना) नहीं किया। तुम भी वैसा नहीं करोगी, ठीक है न?”

“मैं कभी नहीं करना चाहूँगी, लेकिन मैं सोचती हूँ आप इतमीनान कर लें इसके पूर्व कि मैं हैट उतारूँ। मैं नहीं चाहती कि एक सप्ताह तक वह ब्लैक-मेल वाली भावना हमारे मध्य मौजूद रहे।”

“अपना हैट उतार दो, क्या नहीं मिस डोडी। मैं अपने कागज़ और बक्स उस कमरे में ले जाता हूँ, इतने तुम व्यवस्थित हो जाओ। मेरे पास इतना काम है कि यहाँ तुम्हारी प्रतीक्षा करता हुआ भी मैं काम करता रहा हूँ।

मैं अपना हैट उतार देती हूँ।

मैं उसके अत्यन्त निकट पहुँच जाती हूँ। मैं इस आदमी को पसंद करती हूँ। आज तक किसी भी आदमी ने जिसने भी मुझे खरीदा है “मिस डोडी,” कहकर नहीं पुकारा। उन्हें वैसा करने की आवश्यकता ही अनुभव नहीं हुई। अपना हैट उतारकर मैं उसके निकट जाती हूँ। वह मेरा चुम्बन लेगा, लाजमी बात है। मेरा काम है, कि मैं उसका वह काम और उसके वे संक्षिप्त कागजात उसके मस्तिष्क से निकाल दूँ। उसे अभी ही इस चीज की अनुभूति करा दूँ कि उसका वह सप्ताह बहुत आनन्द से कटेगा।

मैं कहती हूँ, “उस कमरे में जाने का कष्ट क्यों करते हैं। जब तक मैं कपड़े उतारूँ यहीं न ठहरें। सामान मैं किसी भी समय खोल लूँगी।”

नहीं, यह इस आदमी से व्यवहार करने का उचित तरीका नहीं है। वह कितना अचम्भित रह गया है। मुझे कपड़े उतारते हुये देखना। कितना भोंड़ा विचार है।

वह मेरा चुम्बन भी नहीं ले रहा है। वह यह भी नहीं कहता, “आओ

अपनी प्रेम यात्रा आरम्भ कर दें।” वह कहता है, “मैं अगले कमरे में ठहरूँगा। अभी हमें नाश्ते के लिये जाना है। जब तुम तैयार हो जाओ, मेरा दरवाजा खटाखटा देना। लेकिन कृपा करके बहुत विलम्ब मत लगाना। मुझे दो बजे कहीं जाना है। कुछ कम्बल वगैरह देखने के लिए। मुझे अपने स्टोर के लिये कुछ नए नमूने खरीदने हैं। शायद तुम भी साथ चलना पसन्द करोगी ?”

वह अपने कागजात और छोटा सा बक्सा लेकर बाहर चला गया है सीधा बाहर चला गया है। एक बार भी पीछे मुड़कर उसने नहीं देखा। उसके मस्तिष्क में व्यापार जमा हुआ है। मैं तो उसके मस्तिष्क में कहीं भी नहीं हूँ। लेकिन मेरे ऊपर उसने तीन सौ खर्च डालर किये हैं। आज तक जितने ग्राहक मुझे मिले, उनसे यह कितना भिन्न है।

दो बजे कम्बल वगैरह खरीदने हैं ? उसने मुझे दो बजे के अवसर के लिये या उसी के समान दूसरे अवसर के लिये एक सप्ताह के लिये खरीदा है। लेकिन ऊनी माल तो उसने देखना ही देखना ही है। ऊन का व्यापार और प्रेम की भावना दोनों चीजें एक साथ बेतुकी लगती हैं।

मैंने अपने वस्त्र बदल लिये, यथा सम्भव शीघ्रता के साथ, बिना अपना बेग खोले हुए।

मैं इस आदमी के सम्मुख अपने सुन्दरतम रूप में उपस्थित होना चाहती हूँ—उसे यह विदित कर देना है कि मैं एक औरत हूँ।

मैं उसके द्वार पर दस्तक दे रही हूँ और ब्राउन पोशाक पहने हुए हूँ। उसे ब्राउन रंग पसंद आता होगा। मैं यह समझ चुकी हूँ कि उसके सम्मुख घुम्बन के लिये लालायित रहने का भाव बनाना उचित नहीं। जब उसकी इच्छा हो, मुझे वह स्वयं ही अपनी बांहों में भरले। मैं अपने को उसकी बांहों में ढकेलूँ किस लिए।

“इतने शीघ्र तैयार हो गईं। बड़ी खुशी की बात है। तब हमें पारस्परिक परिचय के लिए थोड़ा समय और मिल जाएगा।”

उसने अपना भूरा सूट बदल दिया है। अब नीला पहन लिया है। लेकिन वह जालिम ब्राउन टाई फिर से लगाली है। मैं सोचती हूँ—शायद उसकी पत्नी उसकी अधिक देखभाल नहीं करती।

“क्या हमें अभी परिचित भी होना है, मि० व्हाटन?”

“वह बस करो, मैं फ़ीड हूँ ।”

“क्या मैं तुम्हें पसन्द हूँ, मि० फ़ीड । क्या मैं ठीक हूँ ।”

उसे नहीं मालूम कि उसे कहना क्या चाहिए उत्तर में । मुझे उसे और अधिक पशोपेश में नहीं डालना चाहिए ।

“मेरा विचार है कि हम दोनों की खूब गुजरेगी, मिस—”

“डोडी ।”

“निश्चय, धन्यवाद डोडी । हम लोगों की खूब गुजरेगी ।”

५

तीसरे पहर के भोजन के समय हम परस्पर परिचित हो गए । नाचे होटल के आहार कक्ष में बहुत ही प्रसिद्ध वाद्य यन्त्रों वाला बैंड बज रहा था, और मध्याह्न कालीन नृत्य-संगीत के तदनुकूल स्वरों को लेकर बज रहा था ।

“हम अपने यहाँ के रेस्ट्रॉ-रेडियो पर नित्य प्रति यही बैंड सुनते हैं ।” उसने कहा, “मेरा मतलब है हमारे स्टोर के रेस्ट्रॉ पर । वहाँ पर भी हम एक वाद्यवृन्द रखते हैं । केवल महिला खरीदार हमारे यहाँ लंच करती हैं । वह घना सारा लंच नहीं खरीदतीं । जिसकी आयसे हम अपना बैंड नहीं रख सकते । बड़ी मनोरंजक बात है न ? तुम्हारे साथ बैठकर, इस सङ्गीत के वातावरण में घर का चित्र मेरी आँखों के सामने घूम जाता है ।”

“बहुत अधिक प्रिय लगता है, मि० फ़ीड ? क्या मे आशा करूँ कि घर की कुछ चर्चा आप करेंगे । मेरा मतलब है, अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में नहीं, केवल व्यापार के बारे में ही सही ।”

“क्यों—क्यों । हकीकत में ! तुम जानती हो—।”

उसी क्षण हमने नृत्य प्रारम्भ कर दिया । उसने बड़ी भिन्नक के साथ मुझे कहा था कि अगर मुझे आपत्ति न हो तो ? “मैं बहुत नृत्य नहीं करता हूँ । मेरी—पत्नी तुम जानती हो—अधिक नाच-गान पसंद नहीं करती । मेरी पुत्रियाँ नृत्य करती हैं और अपने दायित्व के वशीभूत

मुझे भी नृत्य करने को कहती है। मैं तो उनके लिए अब बूढ़ा आदमी हो गया हूँ न ?”

इसलिए हम नृत्य कर रहे हैं। इस समय उसने मुझे अपने अधिक समीप कर लिया है—अपनी बांहों में भरकर।

“तुम्हारे लड़कियाँ हैं, फ्रेड।”

“दो। मर्था सोलह वर्ष की है और विनी सतरह वर्ष की, विनी विनीफ्रेड के नाम पर। वह हमारी प्रथम पुत्री है। मेरी पत्नी का नाम तुम जानती हो, विनीफ्रेड है।”

उसकी पत्नी। उसकी पुत्रियाँ। विनी सतरह वर्ष की, मर्था सोलह वर्ष की। मेरे लिए तीन सौ डालर। मैंने उसके नीले चिकन की रात्रि-पोशाक खरीदी है। मुझे लगता है, उसे नीला रंग पसंद है। मैं कह नहीं सकती कि आज रात मुझे उसके कमरे में सोना है अथवा वह मेरे कमरे में सोयेगा।

“किसी समय, तुम मुझे विनी और मर्था के विषय में कुछ बताओगे फ्रेड।”

अकस्मात् वह और नृत्य करना नहीं चाहता। वह लौटकर मेज़ पर पहुँच जाना चाहता है। वह मुझे विनी के बारे में बताना चाहता है। अभी तक केवल बात ही बात। प्रेम नहीं !

“उसकी आयु अभी केवल सतरह वर्ष की है। मैंने तुम्हें बताया क्या ? वह पिछले दो-तीन महीनों से ज़िद कर रही है कि हम उसे शादी करने की आज्ञा दे दें। आज प्रातःकाल मुझे श्रीमती विन हार्टन का तार मिला है। जिसमें उसने यह भय प्रकट किया है कि शायद विनी भाग खड़ी हो। इसने मेरा मस्तिष्क चकरा दिया है। तुम जानती हो, इस आयु में लड़कियों की स्थिति क्या होती है, वह कुछ भी कर सकती है। मैं एक सप्ताह भर तक व्यापार की वजह से घर नहीं लौट सकता। मैं अगर चला भी जाऊँ, तो भी उसे रोक नहीं सकता। लेकिन मेरा ख्याल है कि वह भागेगी नहीं। मैं चाहता हूँ कि तुमसे उस छोकरे के बारे में कुछ कहूँ जिससे वह प्रेम करती है। मुझे वह पसंद नहीं है। मेरी दृष्टि में वह उसके लिए उपयुक्त नहीं है। न ही विन

श्रीमती हवार्टन उसे पसंद करती हैं। मैं तुम्हें उसके बारे में कुछ बताना चाहूँगा और जो कुछ तुम निर्णय करो वह भी सुनना चाहूँगा। तुम शायद पुरुषों के बारे में बहुत कुछ जानती होगी ?”

“अपनी बातें जारी रखो, कृपा करके, फ्रेड। मैं पुरुषों के विषय में बहुत अधिक जानती हूँ। लेकिन एक खास वर्ग के लोगों को मुझे कह देना चाहिये था।”

“वेल...।”

मैं किसी आर्थर के विषय में सुन रही हूँ—जिसकी आयु उन्नीस वर्ष की है। और जो फ्रेड के स्टोर में ही काम करता है, ऐसा मालूम पड़ता है कि घर से खुशहाल है, सुन्दर है और उत्तराधिकार में कुछ सम्पत्ति भी मिलने वाली है। बहुत अधिक नहीं, थोड़ी। लेकिन मुश्किल यह कि उन आर्थर महोदय से यह उम्मीद नहीं है कि वह कभी भी व्यापार में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। फ्रेड ने उसे पृथक् करने का भी प्रयत्न किया है क्योंकि वह स्टोर में ही बिक्री करने वाली छोकरियों में अधिक दिलचस्पी रखता है—अपने काम में कम। उसने एक लड़की को मुश्किल में डाल दिया है। उसके परिवार को कुछ रुपया देकर पीछा छुड़ाना पड़ा है। एक बच्चा भी है। फ्रेड उसे पृथक् करने का साहस नहीं कर सकता, क्योंकि विनी समझेगी कि मैं एक ओछा बाप हूँ। लेकिन उसे यह पसंद नहीं है कि विनी एक ऐसे आदमी से शादी करे जिसके बच्चे चारों तरफ फैले हुए हों।

“तुम्हारा क्या ख्याल है डोडी। क्या तुम्हारे ख्याल ले मैं ठीक नहीं कह रहा हूँ।”

“मेरा ख्याल है कि मैं आपसे सहमत होऊँ। लेकिन वंसा कर नहीं सकूँगी। जो कुछ आपने मुझसे बताया है, उससे तो मुझे दीखता है कि लड़का बिलकुल ठीक है। लड़कियों से उसके जो प्रेम प्रसंग रहे हैं—उन्हें क्षमा कर दिया जाना चाहिये। अच्छा यही है कि अपने इस स्वरूप से अपनी तरुणार्ई में ही वह मुक्ति पाले। वह आपकी पुत्री को और भी अधिक प्यार करेगा।”

विचार निमग्न वह अपनी शैरी में चुस्की लेता है, “नहीं” वह कहता

है, “मैं उसे इस तरह नहीं देखता—अगर किसी की वृत्ति अधिक स्त्री रखने की हो तो भी उसकी सी तरुण अवस्था में एक लड़की ही बहुत होगी, लेकिन उसकी चर्चा तो तीन या चार लड़कियों से चलती रही है उसी स्टोर में। इस तरुण अवस्था में इतनी चंचलता दिखाने का अर्थ है कि वह कभी भी एक का होकर नहीं रहेगा।”

मैं कहना चाहती हूँ, “तुम्हारे बारे में क्या है, फ्रेड। तुम अपनी पत्नी से दूर हटे और मुझे प्राप्त कर लिया।” लेकिन मेरा साहस नहीं हुआ।

“मुझे मर्था के बारे में भी बताओ।” मैंने कहा।

उसका चेहरा चमक उठा। “मर्था बिलकुल निरापद है। वह लड़कियों के एक फैशनेबुल के स्कूल में पढ़ रही है। उसका तो अभी तक कोई लड़का मित्र भी नहीं है। लेकिन वैसे वह बड़ी ढीठ है।”

“तुम्हें उससे मिलना चाहिये—मिस डोडी। तुम उसे बहुत पसंद करोगी। वह तुम्हें इतना चिढ़ायेगी कि तुम परेशान हो उठोगी। मुझे उसके लिए कुछ पोशाक खरीदकर ले जानी है। मैं जैसी अपने स्टोर में रखता हूँ उससे बेहतर नहीं खरीद सकता, लेकिन उसकी जिद है कि मैं कुछ ऐसी पोशाकें ले जाऊँ जिन पर न्यूयार्क की मोहर लगी हुई हो। वह उन्हें अपनी साथियों को दिखाना चाहती है। मुझे उम्मीद है कि तुम सप्ताह भर में धूमकर कुछ श्रेष्ठ चीजें उसके लिए पसन्द करोगी। तुम जानती हो कि मैं अपने स्टोर में स्त्रियों की पोशाकें नहीं रखता। सिर्फ फर्श, फर्नीचर पर काम आने वाला और सफ़ेद माल। क्या तुम सहायता करोगी?”

“मैं कुछ भी कर सकूँगी, मि० फ्रेड। जो कुछ भी तुम कहोगे।”

तब कम्बलों का नम्बर आया।

ऊँची इमारतों के इलाके के एक प्रदर्शन-गृह में हम सामान देखने गये। हम टैक्सी लेकर गए थे। उसने मुझे स्पर्श तक नहीं किया। अनुमान है कि शायद वहाँ दस लाख कम्बल होंगे और प्रत्येक अलग किस्म का। फ्रेड उन्हें छूकर ही उनकी बिनाई, उनका वजन, और किस्म बता सकता था। जब बिक्री करने वाला सामने कम्बल फैलाता तो मेरी

और अदब से झुक जाता था। वे वास्तव में यह भली भाँति जानते थे कि मैं सप्ताह भर के लिये उसकी काल गर्ल हूँ। उन्होंने यह दिखला भी दिया था। वे मुझे जानते थे। लेकिन उसे यह संदेह नहीं था कि वे जानते हैं ?

कम्बलों ने हमारे दो घण्टे ले लिए। मैं चाहती थी कि मैं कहीं चली जाऊँ और जी भरकर रो लूँ। मैं आज तक कम्बल पसंद करने के लिए खरीदी नहीं गई थी। मुझे यह कितना अच्छा लग रहा था कि किसी को कम्बल पसंद करने में सहायता करूँ—यह कितना सुन्दर परिवर्तन था।

## ६

मुझे उसी के कमरे में सोना है। लेकिन उसने मुझे चेतावनी दे दी है कि हमें प्रातःकाल आठ बजे ही सोकर उठ जाना है और मुझे कपड़े बदलने और नहाने के लिए अपने ही कमरे में जाना पड़ेगा।

“मेरे पास दिनभर व्यापारी लोग आते रहते हैं। मेरी नियुक्तियाँ बहुत जल्दी आरम्भ हो जाती हैं। मैं तुम्हारे कमरे में ही नाश्ता करूँगा ताकि अगर कोई इधर आ भी निकले तो मैं कमरे में ही न मिलूँ।”

शाम को हम एक थियेटर में गए। एक संगीत रूपक वहाँ दिखाया जा रहा था। मैं सान्ध्य कालीन गाउन पहिने हुए थी। वह अपना डिनर-कोट पहिने हुए नहीं था, किन्तु उसे मुझ पर गर्व था। मैं यह अनुभव कर सकती थी। जब हम लौटकर होटल आ रहे थे तो उसने प्रथम बार मेरा चुम्बन किया। मैंने वह चुम्बन पसंद किया। उसने मेरी पीठ में बाहें डालकर जिस प्रकार चुम्बन किया था वह ढंग भी अनोखा था। मैंने अपना कोट पीछे फेंक दिया था ताकि उसकी बाहें मेरी देह को छूती हुई सटकर मुझे आलिंगन में आबद्ध कर लें। लेकिन उसने अपना हाथ मेरी देह पर नहीं छुआया, केवल उसके कोट की आस्तीनें स्पर्श कर रही थीं। वह अभी तक भी लज्जालु था। उसके चुम्बन में भी क्षमा प्रार्थना थी। उसे ऊहापोह यह थी कि कहीं मैं उसे बहुत अधिक

कामुक न समझ बैठूँ । और यह सब करके वह मुझ से तीन सौ डालर भी वसूल करने की सोचता होगा ।

क्या तुम्हें मेरी रात्रि-गाउन पसंद है, फ्रेड । मैंने यह खरीदी और नीला रंग पसंद किया, तुम्हारे लिए । लेकिन अगर तुम चाहोगे तो मैं पायजामा भी पहिन लूँगी ।

लेकिन उसने केवल सिर हिला दिया और मैं जान भी न सकी कि उसकी पसंद किस चीज की है । गाउन की या पाजामे की.....।

आखिकार मैं उसकी बाहों में हूँ । मैं घण्टों से उसकी बाहों में हूँ । बिस्तर वाला लैम्प बुझ चुका है, क्योंकि वह लज्जालु है ।

“तुम जानती हो, डोडी । मैं वर्ष भर में एक बार यह सब करता हूँ । इस तरह की छुट्टी मनाने के समान । मैं घर पर कुछ भी करने का साहस नहीं कर सकता । अगर अपने स्थान पर लोगों को यह पता चल जाय तो इससे मेरे व्यापार को धक्का पहुँचेगा और उससे मेरा घर बरबाद हो जायगा । मैं उस खतरे को सिर पर नहीं ले सकता ।”

“फ्रेड प्रिय, क्या मैं तुमसे कुछ पूछ सकती हूँ कुछ बहुत गम्भीर बात ?”

“निश्चय ही ।”

“अगर तुम विवाहित न होते । बस केवल कल्पना कर लो—थोड़ी देर के लिए—कि तुम्हारी शादी न हुई होती । और पड़ोस में रहती हुई मैं तुम्हारे मन में बँठ गई होती और हम परस्पर परिचित हो गए होते; और तुम्हें यह न मालूम होता कि मैं इस तरह नहीं हूँ—जैसे अब मैं हूँ—कल्पना करो तुम्हें यह सब मालूम न होता, तुम्हारी विनी और मर्था भी न होतीं और मैं तुम्हें मिलती तो क्या तुम मुझे चाहते ? मेरा मतलब है कि क्या तुम मुझे पसंद करते और गम्भीरता पूर्वक उस पसंद पर गौर करते । क्या मैं तुम्हें उस तरह से भी कुछ आकर्षित कर सकती ।”

वह सीधे-सीधे उत्तर नहीं देता । वह मुझे आलिंगन किए हुए है और केवल मेरी आँखों में देख रहा है । तब वह धीरे से और गम्भीरता-पूर्वक कहता है, “नहीं प्रिय । मैं उसका उत्तर नहीं दूँगा । मैं ऐसा करके बिन के साथ—श्रीमती व्हाटन के साथ न्याय नहीं करूँगा ।”

“बहुत अच्छा, फ्रेड । तुम कितने अच्छे आदमी हो । मैं कोशिश करके तुम्हारे इस सप्ताह को एक बहुत शानदार अवकाश के आनन्द में बदलने में कोई भी चेष्टा उठा न रखूँगी ।”

और मैंने वही किया । बेनी ने कहा था कि मैं उसे इतना प्रसन्न करूँ कि वह कम से कम सौ डालर अतिरिक्त प्रदान करे । लेकिन मेरी इच्छा थी कि मैं उसे इस बात पर राजी कर लूँ कि उसकी विनी उन आर्थर महोदय को प्राप्त कर सके—जो आर्थर महोदय उससे शादी करने की इच्छा रखते हैं । हो सकता है वही आर्थर कुछ दिन बाद जो सैण्ड्स की तरह निकल जाय ।

जैक्विंस ने मुझे टेलीफोन किया था और संवाद मेरे कमरे में पहुँचवा दिया था । फ्रेड के साथ यह तीसरा दिन था । जैक्विंस ने कहा था कि मैं उसे टेलीफोन कर लूँ । वह केवल इतना कहना चाहता था कि फ्रेड अपने मित्रों सहित लंच के लिए उधर आया था और एक तरफ बुला कर उसने तीन सौ डालर का चेक उसे दे दिया है । मैं अपना हिस्सा जब चाहे तब ले सकती हूँ ।

“क्या वह मुझसे प्रसन्न है, जैक्विंस । क्या उसने वैसा कहा ।”

“उसने मुझसे कहा है कि अगर तुम यहीं उपलब्ध हो सको तो अगले वर्ष भी तुम्हीं को उसके लिये अभी से तै कर लूँ । क्या तुमने अभी तक कुछ और हासिल कर लिया है ।”

“मेरे पास एक स्टोर के नाम एक सौ डालर का आर्डर है । उससे मैं उस मूल्य की कोई भी वस्तु ले सकती हूँ । और तीन गाउन मैंने उसे उसके किसी परिजन के लिये पसंद करके बताई थीं और उसने तीन मेरे लिए भी खरीद दीं । क्या यह सौदा ठीक नहीं है ?”

“उसके ऊपर मेहनत करो डोडी । हो सकता है उससे ब्रेसलेट भी तुम्हें हाथ लग जाय । जिस ढंग से बातचीत करता है उससे तो मैं यही अनुमान लगा सकता हूँ ।”

“इस सुभाव के लिए धन्यवाद जैक्विंस । मैं ब्रेसलेट हासिल कर लूँगी ।” लेकिन ब्रेसलेट के स्थान पर हाथ की घड़ी मिली । मैंने फ्रेड से कहा कि यदि उसे भय हो कि उसकी अनुपस्थिति में लड़की भाग खड़ी

होगी, तो वह श्रीमती व्हार्टन को टेलीग्राम करदे कि वह विनी के लिए कोई हीरे वाला उपहार अपने साथ ला रहा है।

“इससे जब तक तुमउ सका तोहफा घर लेकर नहीं पहुँच जाओगे।” मैंने कहा, “तब तक लड़की भागेगी नहीं।”

उसने भी सोचा कि वह युक्ति बहुत ही सफल रहेगी। अपने परिवार में मेरी दिलचस्पी देखकर उसे बहुत सुख हुआ। “ऐसा लगता है कि तुम दूसरों से कुछ भिन्न हो, डोडी। मेरा मतलब है कि केवल इतने भरसे—केवल इतने सम्बन्ध से कुछ अधिक हो। मैं उसके लिए एक हाथ की घड़ी खरीद ले चलूँगा। मुझे उम्मीद नहीं कि उसके पास कोई अच्छी घड़ी है।”

उसने एक मेरे लिए भी खरीद ली। यह भी जवाहरों वाली थी। लेकिन उससे किस्म कुछ अलग थी, जो उसने अपनी लड़की के लिए खरीदी थी। मैं इस घड़ी को प्यार करती हूँ, और रात में भी उसे पहिने रही। मेरा ख्याल था कि इसने मुझे यह अनुभव करने में मदद दी थी कि मैं फ्रेड को प्रेम करने लगी हूँ। मैं उसे प्यार करने लगी थी। शायद उतना कि बिरले ही दुनिया में उतना प्रेम किसी से करते होंगे। बात यह चाहे अविश्वसनीय भले ही लगे, उसने मेरी दुनिया का नक्शा ही बदल दिया था। उसने मेरी धारणा में दुनिया की नैतिकता तथा सामाजिकता के मूल्यों को फिर से स्थापित कर दिया था। बिना उस सम्बन्ध में कुछ भी कहे उसने यह अनुभव कर लिया था कि मेरा कोई आत्म-नियन्ता है उसके साथ रहते हुए भी कभी-कभी मैं संन्यस्त भाव से उसी आत्म में सिमट कर बैठ जाती हूँ।

उसने सदैव ही मेरे साथ भद्रता और कोमलता से व्यवहार किया, और एक क्षण के लिये भी अपनी लज्जालु शालीनता का परित्याग नहीं किया था। वह जब कभी आलिगन—चुम्बन करता तो उसका रुख क्षमाप्रार्थी जैसा होता और वह पहले यह देख लेता कि मैं वैसी मनस्थिति में हूँ भी या नहीं। वह मेरी मनस्थिति उसी प्रकार समझ सकता था जैसे मैं स्वयं समझ सकती थी। वह यह भी समझ गया था कि किस समय मुझे बातें करना पसंद था—केवल बातें करना। किसी रेस्टां-टेबल पर बैठ-

कर, उसके या अपने कमरे में मैं उसकी कुर्सी पास के उसके घुटनों से सिर सटाकर बैठ जाती और केवल बातचीत करते रहना पसंद करती। ऐसे अवसरों पर हम उसके व्यापार के विषय में, विनी के प्रेम के बारे में बातें करते रहते—उसकी पत्नी कभी भी हमारी वार्ता का विषय न बनती। मैं फ्रेड के अनेक गुप्त सम्बन्धों और उसके अन्तर के अनेक रहस्यों को जान चुकी थी।

साहस नहीं होता था कि मैं कोई भी रहस्य उसके सम्मुख प्रकट करूँ। अपने प्रति संदेह और उसकी नज़र में अपने मूल्य के गिरने का भय इतना बड़ा था कि मैं उस पर विजय प्राप्त नहीं कर सकी। उसने अनेक लड़कियों को रखा था क्योंकि न्यूयार्क की इन वार्षिक यात्राओं का सिलसिला काफी पुराना था। कुछ ने बहुत शीघ्र ही उससे प्रेम में फँस जाने का दिखावा किया होगा और उसने उनसे तभी नफरत करनी प्रारम्भ कर दी होगी। उनके मस्तिष्क में एक अतिरिक्त मोती, अतिरिक्त समर-कोट या भावुकतापूर्ण उदारता के प्रतिदान स्वरूप अनेक छोटे-छोटे उपहारों—जिन्हें पुरुष लोग इस प्रकार के बेहूदा प्रेम प्रदर्शन पर तरस खाकर देने में ही बेहतरी समझते हैं—का आकर्षण ही प्रधान होता होगा। फ्रेड इस प्रकार की छलना से नफरत कर सकता है। मैं यह किस प्रकार सिद्ध कर सकती थी कि मैं उसे सत्य ही वह सब कह रही हूँ।

मैं उससे यह कह देना चाहती थी कि वह मेरे साथ पूर्ण स्वतंत्रता का उपभोग करे। मैं उससे बच्चे पैदा करना चाहती थी। मैं उसे यह बताना चाहती थी कि मेरी श्रद्धा उसमें कितनी अधिक और मैं बाजारू डोडी उसके लिए कभी न बनूँगी। लेकिन मैं कोई दूसरी डोरीन रहूँगी—वह डोरीन जो मेरी नियन्ता आत्म है।

एक दिन जब उसने कहा कि उसकी इच्छा थी कि सप्ताह और भी लम्बा होता, तो मैं केवल इतना ही बुदबुदा सकी, “मैंने तुम्हें प्रसन्न रखने की चेष्टा की है। जो मेरे लिए देय था वह सभी कुछ मैं तुम्हारी सेवा में अर्पित कर चुकी हूँ। बहुत अधिक, अपनी देह से भी बहुत अधिक—

कम से कम मैंने चेष्टा अवश्य की है। मैं चाहती हूँ कि मैं सदेव तुम्हारी स्मृति में जीवित रहूँ।”

“मैं पहले ही अगले वर्ष के लिए तुम्हारे बारे में कह चुका हूँ। वरन् मैं नियुक्ति भी कर चुका हूँ।”

मैंने उसे तनिक अधिक कसकर पकड़ लिया था। मैं उसके कन्धे पर से बोली ताकि वह मेरे नेत्रों की भाषा न पढ़ सके और यह भी न निर्णय कर सके कि मैं केवल अभिनय कर रही हूँ :

“मैं अगले वर्ष तुम्हारे पास नहीं आऊँगी। कम से कम फीस लेकर नहीं। अगर तुम अपना सप्ताह मुझे दोगे, तो उसे अंगीकार करूँगी, हादिक कामना के साथ, अगर मैं स्वतंत्र हुई तो, लेकिन इस बार तुम्हें अदायगी नहीं करनी होगी।”

उसने एक क्षण के लिए उस वाक्य का अध्ययन किया। मेरा विचार है कि जिस समय मैं सो गई थी, तब भी वह इस प्रस्ताव के विषय में अपने मस्तिष्क में सोच रहा था और उसकी सत्यता पर आश्चर्यचकित हो रहा था। प्रातःकाल जब मैं उठी तो उसने कपड़े तक पहिन लिये थे। वह बिस्तर पर बैठकर मेरे चेहरे की ओर ताक रहा था। उसने मेरी देह पर चादर ओढ़ा दी थी ताकि वह मेरे चेहरे को ही ताक सके, उसने पिछली रात की बात-चीत का कुछ अंश भी नहीं दोहराया था। यह वस्तुतः लगभग मेरे यही कहने के समान हो गया था—“मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ।” शायद उसने समझ भी लिया था और वैसा विश्वास भी कर लिया था। लेकिन वह मुझ पर यह भाव प्रकट करे—यह उसका तरीका ही नहीं था। वह उन लोगों में से नहीं था जो ऐसे वायदे कर देते हैं जिन्हें पूरा नहीं किया जा सकता—जैसे कि मेरे स्वप्नों को किसी प्रकार की उत्तेजना देना अथवा कोई योजना बनाना जो कि उसके घर पहुँचने के बाद ही विस्मृति के गर्त में जा गिरेगी।

उससे प्रातःकाल भेंट करने आने वालों के लिए कमरा खाली करने के लिए आकर बैठ जाने के बाद मेरे पास कुछ ही मिनट थे। मैंने उससे पूछा, “तुम यह क्यों करते हो फ्रेड, प्रत्येक वर्ष जब कि तुम कहते हो कि अपने शहर में उस प्रकार का संकट उठाने का साहस भी नहीं कर सकते। मैं वह समझती हूँ। लेकिन तुम आखिर ये वक्त्रे इस प्रकार

मनाते ही क्यों हो। तुम कामुक भी नहीं हो। तुम अपने परिवार को प्यार भी करते हो ? क्या मुझे इसका कारण बताओगे।

वह कुछ परेशान हो गया था। उसकी दृष्टि कहीं दूर चली गई थी। “मैं अब पचास वर्ष का हो चुका हूँ” उसने आहिस्ता से कहा, “मैं अपने तरीके का प्रयोग कर रहा हूँ—और केवल यही तरीका मुझे मालूम है—कि किस प्रकार अधिक से अधिक समय तक अपना यौवन कायम रख सकूँ और वह अपने से अधिक अपने परिवार के हित की दृष्टि से।”

मैं समझ गई थी। वह पवित्रतावादियों द्वारा समाज के लिए बनाये गए कानूनों का उल्लंघन करता था किन्तु अपने परिवार की भलाई की दृष्टि से ! मैंने उसकी आत्मा को अगले वर्ष तक के लिए जवान कर दिया था।

### ७

जिस समय सप्ताह समाप्त होने को था तो फ्रेड ने मुझ से एक काम ऐसा करने के लिए कहा जिसकी कि किसी भी काल-गल से अपेक्षा करना असम्भव था। चार सप्ताह हुए वह अपने घर से आया था। रास्ते में कन्सास-सिटी और शिकागो में भी ठहरा था। किसी भी शहर में जहाँ उसने व्यापारिक लेन-देन किया, उसका सामाजिक-परिचय नहीं था। उसने मुझ से यह जिज्ञासा की थी कि क्या मेरे कोई परिचित अथवा मित्र गार्डस्थ रूप में नहीं रहते—जो कि यह न जानते हों कि मैं किस प्रकार पैसा पैदा करती हूँ और मेरे और उसके सम्बन्ध क्या हैं—जिनके परिवार में एक दिन गुज़ारा जा सके।

अपनी समस्त गुप्त जिज्ञासाओं के बावजूद भी, मैं उसे समझ सकती थी कि उसे घर की याद सताने लगी है। मैं उसे उससे नहीं रोक सकती थी। अधिक समय वह एकाकी पति ही रहा था, जो कि आग के पास बैठकर तपने की सदैव ही इच्छा से भरा होता है।

मैं इस समय तक यह पूर्णरूप से समझ चुकी थी कि मैं उसे प्रेम करने लगी हूँ और जब वह चला जाएगा तो उसका अभाव मुझे बहुत

कुछ अखरेगा और अगला आदमी जो मुझे खरीदेगा वह मुझ पर विश्वासघात का आरोप लगा सकेगा और मेरे सस्तेपन और अपराध की कालिख मुझ पर लगा सकेगा । लेकिन मेरे अन्दर किसी तरह की ईर्ष्या पैदा नहीं हुई थी । मुझ में पराजय की भावना पैदा नहीं हुई थी क्योंकि अगर कोई औरत किसी को प्यार करने लगती है और उनके बीच की समस्त दूरी समाप्त हो जाती है और अकस्मात् उसे यह पता चले कि आदमी किसी दूसरी के बारे में सोच रहा है तो ईर्ष्या का पैदा होना अत्यन्त आवश्यक है । अपनी इस चारित्रिक दृढ़ता पर मुझे हादिक प्रसन्नता थी, मैंने भी एक बार यह सोचा अवश्य था कि मैं चाहे कितनी ही फीस और कितनी ही बार अपने को बेचती रहूँ, लेकिन जिस समय मैं सोचूँगी कि फ्रेड अपने घर पहुँचकर किसी दूसरी महिला का प्रेम-प्रसाद पाता होगा और अपनी लड़कियों के प्रेम को अंगीकार करता होगा, तो मेरी हालत बहुत बुरी हो जाएगी । मैं प्रसन्न थी कि यह जानकर भी मैं बड़े संतोष के साथ जीवित रह सकूँगी ।

लेकिन मेरा कोई भी मित्र ऐसा नहीं था, जो उसकी मनस्थिति के अनुकूल बैठ सकता । मैं उसके लिए एक पार्टी का आयोजन कर सकती थी, जहाँ मेरे जैसी लड़कियाँ अपने पुरुष मित्रों को लेकर शरीक हो सकती हैं । अगर वह उतना व्यय करने के लिए उद्यत हो । लेकिन किसी प्रकार का गार्हस्थ वातावरण उपस्थित करना मेरी कल्पना के बिल्कुल बाहर था ।

बेनी कोस्टेलो ? मैंने बेनी के बारे में सोचा । उसका घर लॉग द्वीप में था, जो कि एक उपनगर था और जहाँ का वातावरण बेनी के व्यापार से बिल्कुल भिन्न था । उसने मुझे अपनी पत्नी के बारे में बताया था । वह भी निस्संदेह एक मँडम रह चुकी है किन्तु अब वह अपने पड़ोसियों की ही तरह पूर्ण सदगृहस्थ हो गई थी और अब अपनी क्लब की मित्रों को दावते देती थी और उनके यहाँ सभी अवसरों पर जाती भी थी ।

जिस समय फ्रेड बाहर चला गया मैंने बेनी को टेलीफोन किया । वह होटल की लाँची में आया । वह तत्काल तैयार हो गया, लेकिन उसने कहा कि उसे अपनी पत्नी को टेलीफोन करना होगा । उसे उसके बारे में

बहुत कुछ विश्वास नहीं था । उसे यह सब बताना होगा, क्योंकि उसके परिचय और इस आकस्मिक निमंत्रण से उसकी पत्नी चकित हो जायगी । जब से उन्होंने अपना घर बनाया है और उसमें बस गए हैं, तब से वह किसी भी वेश्या को अपने घर में नहीं ले गया है ।

“यह नहीं कि वह उदारमना नहीं है ।” उसने तत्काल अपनी बात की सफाई की, “लेकिन उसने तमाम सम्बन्धों को तिलांजलि दे दी है । और अब उन्हें पुनः याद करना नहीं चाहती । वह मुझ से मेरे व्यापार के बारे में भी कभी कोई बात नहीं करती ।”

“उसे फोन कर दो” मैंने कहा, “उसे कह दो कि मेरी दो आत्माएँ हैं । यह दूसरी आत्मा है, बेनी, जिससे तुम आज तक भी अपरिचित हो—जिसे मैं साथ ले जाऊँगी ।”

वह सिर हिलाता हुआ वापस आया । मैं उसी शाम को फ़ेड को वहाँ ले जा सकती थी । उसने मुझे निर्देश कर दिया था । “किट तुमसे एक पुरानी मित्र के रूप में मिलेगी । वैसे ही मैं । तुम्हारा आदमी तुम्हारे परिवार का एक मित्र अथवा कुछ भी हो सकता है । किन्तु तुम्हें अपना पुरुष मित्र नहीं कहना होगा, बस यही ध्यान रखना है ।”

बेनी की चौदह वर्षीया पुत्री हमें दरवाजे पर ही मिली । वह बहुत ही उदास दीख पड़ती थी । उसके चेहरे को देखकर ही कहा जा सकता था उसकी माँ जर्मन है और लड़की के रक्त में उसी का प्राधान्य रहा है । बेनी से उसे कोयले के समान रंग वाली और चौकन्नी आँखें मिली थीं । फ़ेड के मन पर वह लड़की फौरन चढ़ गई और उसने फ़ेड को बहुत पसंद किया ।

श्रीमती कोस्टेलो की आकृति पर से वेश्यावृत्ति के दिनों के सभी लक्षण समाप्त हो चुके थे । आज वह अपनी ही स्वामिनी थी और अपने परिवार की संचालिका । उसके पड़ोसी सोचते थे कि बेनी वस्तुतः कोई बहुत अच्छा व्यापार करता है और ऐसा पति पाने के लिए—जो कि बाज़ार की मंदी का भी इतनी सफलतापूर्वक सामना कर रहा था—वह उसके सौभाग्य को सराहते थे । कुछ पड़ोसी भी आ गए । एक किसी स्थानीय डिपार्टमेंट स्टोर से सम्बन्धित था । उसने फ़ेड के स्टोर को

तत्काल पहचान लिया। उसने कहा कि अगली बार जब वह न्यूयार्क आएगा, तो वह और उसकी पत्नी उसको आमन्त्रित करना चाहेंगे और मुझे भी ?

इन पड़ोसियों से और श्रीमती कोस्टेलो से मुझे विदित हुआ था कि बेनी अपने को एक बहुत विशेषज्ञ बागवान समझता है। पीछे के अहाते में लगा हुआ बाग उसने मुझे दिखाया। और सामने का सुहावना लॉन भी। श्रीमती कोस्टेलो हँसती रही, “वह नित्य छै बजे उठ बैठते हैं—चाहे जितनी देर से क्यों न घर लौटे हों—या तो पीछे के बाग में पौदों को पानी देते होंगे अथवा सामने की घास को काटते होंगे। अगर कोई डाण्डेलियन<sup>१</sup> घास में उग आए तो यह कितनी बड़ी दुर्घटना उनके लिए हो जाती है। अगर वह किसी फूल पैदा करने वाले के यहाँ से कोई पौदा लाकर अपने यहाँ लगा लें और वह पनपे नहीं तो हफ्तों तक उनकी मनस्थिति बिगड़ी रहती है।

बेनी सिंग-सिंग के कारावास में घब बाग की देखभाल करता है और ६ वर्ष तक वैसा ही करता रहेगा !

क्योंकि उसने फ्रेड को बहुत पसंद किया था और उसके ही चारों ओर मँडराती रही थी इसलिए बेनी की लड़की मेरी और भी आकर्षित हुई थी। वह मुझसे अपने स्कूल, अपनी सहपाठिनी और किसी दिन एक महान टेनिस-स्टार बनने के अपने स्वप्नों की चर्चा करती रही। ऐसा मालूम पड़ता था कि उसने टेनिस खेलने में कुछ विशेष प्रतिभा दिखाई थी। “लेकिन माँ मुझे हमेशा ही अभ्यास करने नहीं देती,” उसने कहा था, “वह कहती हैं कि टेनिस-स्टारों की कलाईयाँ मोटी पड़ जाती हैं और टखने बड़े हो जाते हैं। वह नहीं चाहती कि मेरे साथ कोई गड़बड़ हो—मेरी बड़ी अवस्था में।”

कुछ ही क्षणों में हम दोनों एकान्त में पहुँच गए थे और मुझे यह पता चला कि वह बेनी के लिए बहुत ही चिन्तित है। ऐसी अफवाह थी कि अधिकारी लोग दुराचार के विरुद्ध जिहाद करने वाले हैं। राजनीतिक लोग बड़ा भारी संगठन करके उसे उखाड़ फेंकने पर कटिबद्ध हो गए हैं परन्तु बेनी को विश्वास है कि उन्हें सफलता नहीं मिल सकेगी।

---

१. एक बड़ा पीले फूलों वाला जंगली पौदा।

“बॉस अब बहुत आगे बढ़ गया है। उसने सभी हाउस हथिया लिए हैं और मैडमों को बेतन पर रखा है। ज्यों ही उस पर आपत्ति आने की सम्भावना हुई, सभी उसके विरुद्ध हो जाएँगी। वे सब कह देंगी। उनके इतना चिढ़ने का कारण भी है। मैंने इतना अल्प बेतन पाने के विचार से ही हाउस चलाना मुनासिब नहीं समझा। उस सूरत में मैं अपनी छोकरियों पर ऊपर से पैसा कमाना चाहती। मैं तो कभी भी दल को अपने ऊपर सवार होने देना पसंद न करती। जैसा कि आजकल बेनी को करना पड़ता है, क्योंकि बॉस का वैसा हुक्म है।”

मैंने उससे बताया कि बॉस अब काल-लिस्ट को भी अपने हाथ में ले लेना चाहता है। बेनी भी उसके बारे में कुछ नहीं जानता। मैंने बिना सोचे-समझे ही यह बात प्रकट कर दी। क्योंकि उस निक-फैरेलो ने मुझ से उस योजना को गुप्त रखने का वचन से लिया है। उसने अपना सिर हिलाया, “इसका मतलब हुआ कि वह तुम्हारी आय में से आधा रख लिया करेगा। बेनी को यह मत कहना कि मुझसे वेश्यावृत्ति के बारे में कोई चर्चा हुई थी। वह सोचता है कि मुझे अब उस सब की याद भी नहीं है। मैं चाहती हूँ कि वह वैसा ही सोचता रहे।”

८

फ्रेड अपने घर चला गया। उस समय उसके कुछ व्यापारी मित्र उसे स्टेशन पर बिदा करने आए थे किन्तु उसने मुझे पहिले ही ट्रेन में घुसकर बैठने को कह दिया था। वह चाहता था कि मैं फिल्डेल्फिया तक उसके साथ चलूँ—जहाँ कि वह रात को ठहरने वाला था।

वह रात्रि को मुझे अपने पास रखना चाहता था और प्रातःकाल बिदा कर देना, किन्तु उसे चिन्ता यह थी कि वह किस प्रकार वैसी व्यवस्था कर सकेगा। उसे यह पसंद नहीं था कि वह किसी छोटे से होटल में जाकर ठहरे और वहाँ बनावटी नाम दर्ज कराए।

“इसमें शक नहीं कि विवाह से पूर्व मैंने ऐसा किया है। लेकिन अब यह काम न केवल अनैतिक ही होगा बल्कि बड़ा अश्लील फूहड़पन भी होगा। और न मैं यहाँ के दौब-पेच ही जानता हूँ जैसा कि न्यूयार्क में हो

जाता है। मेरे पास उसके लिए समय भी तो नहीं है।”

वह अपने बारे में और मेरे बारे में एक से ही विचार रखता था—जैसे कि मैं उस प्रकार के आचरण के लिए बहुत—ही अनुपयुक्त हूँ। तब सहसा ही वह बहुत हतप्रभ हो उठा। हम ट्रेन में बैठे ही बातचीत कर रहे थे।

“तुम्हारा सप्ताह तो समाप्त हो गया है, डोडी, तुम्हें मालूम है। लेकिन मैं तुम्हें अतिरिक्त चुका दूँगा।”

“मुझे दुःख है फ्रेड, तुमने ऐसा कहा।”

“तो मैं उसे वापस ले लूँगा तुम अगर कह दो कि तुम्हें वाकई दुःख हुआ है—तो मैं एक सैण्ट भी तुम्हें अतिरिक्त नहीं दूँगा, और आज के खाने का दाम भी तुम्हीं को चुकाना पड़ेगा।”

तब मेरी चोट भर गई थी और उसका पश्चाताप भी समाप्त हो चुका था। हमने किसी प्रकार प्रबन्ध कर लिया।

जिस समय में टैक्सी में बैठकर न्यूयार्क लौटने के लिए स्टेशन आ रही थी तो उसने मेरी पर्स में हाथ डाला था। मुझे याद है कि जो सैण्ड्स ने भी एक बार मेरी पर्स में हाथ डाला था। लेकिन इस बार यह सब ठीक था। मैं अलविदा के उपहार की प्रतीक्षा में थी। प्रत्येक काल-गर्ल वैसी उम्मीद करती है। और इसके पूर्व कि मैं अपनी पर्स खोलकर देखूँगी वह जा चुका होगा और मैं पुनः अपने काम पर पहुँच जाऊँगी—एक सप्ताह की इस शानदार छुट्टी के बाद !

वह मुझे कभी-कभी लिखता रहेगा, ऐसा उसने कहा था। मैं उसके पत्रों में सामान्य मित्रों को लिखी गई गपशप से कुछ भी अधिक की अपेक्षा नहीं कर सकती। और मैं भी स्टोर के पते पर कभी कोई पत्र लिख दिया करूँगी। मुझे भी शिष्टाचार का पालन करना होगा। उसका निजी सहायक डाक खोलता है।

कम से कम उसे यह तो पता चलता रहेगा कि मैं अभी इधर हूँ तो। उसने मेरी पर्स में दो सौ डालर रख दिए थे और एक ब्रेसलेट जिस पर मेरी घड़ी के समान ही चमकता हुआ हीरा था।

मैंने वह पैसा और वह ब्रेसलेट अपने बैग में रख लिए क्योंकि न्यूयार्क

जाते समय उन्हें देख-देखकर मुझे बार-बार फ़ेड की याद आती। यह यात्रा दो घंटे की थी। इस अवसर पर मैं उन समस्त क्षणों को फिर से स्मरण करने की कोशिश कर रही थी जो क्षण मेरे जीवन के वास्तविक सुख से परिपूर्ण क्षण थे और जब मैं यह बिल्कुल भूल गई थी कि मैं एक कालगर्ल हूँ।

लेकिन जिस समय मैं न्यूयार्क स्टेशन पर पहुँची तो आखिरकार मैं फ़ेड और उससे सप्ताह से अलग हो गई थी। मैंने अपने बैग को खोला और उन बख़्शीशों को निकाल लिया।

यह बहुत ही लाभ का सप्ताह है। क्या जाने जैक्स कोई दूसरा ग्राहक ला रहा होगा या नहीं ?

## नवाँ अध्याय

१

जेनी के यहाँ से मेरे लिए बुलावा आया था। उसके पचास डालर देने वाले स्थायी ग्राहकों में से एक था, जिसने पहिले भी दो-तीन बार मुझे स्मरण किया था। वह पूरी रात के लिए मुझे चाहता था। वह पचास से अधिक देने वाला नहीं था और दस डालर बरूशीश !— “उसे क्या उम्मीद है जेनी ? पहिले वह दो घण्टे के पचास डालर दिया करता था और अब पूरी रात का भी उतना ही और चाहता है कि स्थान भी मैं ही उपलब्ध करूँ। मेरा ख्याल है, फिर भी जेनी ? अच्छा तुम पैसा ले लो। मे तुमसे आधा ले लूँगी...हाँ मुझे पच्चीस दे देना।”

एक रात्रि—रेस्ट्रॉ के कैप्टेन ने भी बुलाया था। “मे इस आदमी के बारे में कुछ नहीं जानता, डोडी। वह इधर बिलकुल नया है। लेकिन अच्छा खर्चीला मालूम पड़ता है। वह कुछ मित्रों के साथ खाने के समय का शो देखने आया था। वह यहाँ ठहरना नहीं चाहता था, किन्तु छोकरियों की टाँगें देखकर रुक गया है। उसने कुछ पी रखी है। उसके मित्रों ने भी। अब मुझे चार छोकरियों का प्रबन्ध करना है और बहुत शीघ्र ही। लेकिन अगर शीघ्र ही उपलब्ध नहीं हुई तो वह शो-गर्ल्स के लिए ज़िद करने लगेगा। तुम जानती हो हमारा वैंसा पेशा नहीं है। अगर हम जान लें तब भी नहीं। लेकिन मुझे ठीक वैंसी ही लड़कियाँ उपलब्ध करनी हैं जैसी कि प्रदर्शन के लिए रखी गई हैं। अगर चार

लड़कियाँ मिल जाती हैं तो यह मुमकिन है कि रात के खाने के समय के शो तक वे यहीं रुके रहें और उस समय जबकि वह अपना बिल अदा कर रहे हों, तुम कुछ सिक्के और प्राप्त कर सकती हो।”

“वह क्या देंगे जो ? कोई अनुमान भी तो होगा । तुम जानते हो शराबियों से टक्कर लेना कितना कठिन कार्य है । वह बहुत शैतानी करने पर भी उतर सकते हैं ।”

“अब वह सब तो तुम्हीं को देखना है, डोडी ।”

“बहुत अच्छा, जो । मैं तुम्हारे लिए यह करूँगी । मैं कपड़े पहनूँगी और टेक्सी लेकर उधर आती हूँ । अगर तुम्हें शेष तीन के उपलब्ध करने में दिक्कत आ रही हो तो मुझे पहुँच लेने दो । तब वह उन नुमायशी लड़कियों को भूल जायेंगे । मैं रास्ते में वह प्रबंध भी सोच लूँगी ।”

बड़ी कठिन रात है । एक आधा उन्मत्त आदमी—जो सोचता है कि बड़ा भारी खिलाड़ी है—अपने पैसे से भी अधिक वसूल कर लेना चाहता है । और बहुत पैसा भी तो उसने दिया नहीं है । कहता है क्या पच्चीस काफ़ी होंगे । मैं उसे छोड़कर चल पड़ना चाहती थी लेकिन मेरी गाउन में खुली पीठ ने उस पर जादू कर दिया । “पचास डालर अगर मैं अपनी बाहरी बनावट के अनुरूप निकली । अगर नहीं निकली तो तुम्हारी किस्मत ।” भले आदमी पचास भी पहले ही देने पड़ेंगे । पचास भी पहले ही—वह बड़बड़ाता है । जब हम कमरे में पहुँचे और दरवाज़ा बन्द हो गया तो वह शैतानी पर उतर आया । एक बिगड़े हुए साँड़ की तरह व्यवहार करने लगा । लेकिन मैंने उसका पैसा लिया था । मैंने ऊँची ताक़त की एक गोली दी और उसे सुला दिया । जब वह जागा तो तीसरा पहर हो चुका था । अब उसे कपड़े पहिन कर किसी दिए गए समय पर पहुंचना था.....।

रैनी का टेलीफ़ोन है । वह बड़े होटल में रात्रि-कक्ष का क्लर्क है “मैं तुम्हें एक कमरे की चाबी दे दूँगा, डोडी । ताकि तुम नीचे की मंजिल के क्लर्क के सामने से बचकर निकल जाओ । अमुक नम्बर के कमरे पर चली जाओ । वह एक पार्टी का आयोजन कर रहे हैं । वह कुछ छोक-रियों के वहाँ उपस्थित रहने का ही मूल्य देंगे । कोई सुनहरे बालों वाली

लड़की या कोई श्यामा ! वहाँ पहुँच कर तुम स्वयं ही उनकी इच्छा को समझ लोगी ।”

“लेकिन मैं उनसे क्या माँगू, रैनी । कभी-कभी ये लोग ये सोचने लगते हैं कि हम लोग अभी नए खिलाड़ी हैं और अगर इन लोगों के साथ कुछ अच्छा समय गुजर गया तो हम संतुष्ट हो जाएंगे ।”

“वे लोग पैसा देंगे, डोडी । उन्होंने मुझ से पूछा था कि तुम्हें क्या दिया जाना चाहिये । मैं ने कह दिया कि तुम्हें पाना जरा व्यय-साध्य कार्य है । मैं तो बस इतना ही कर सकता था । उन्होंने यह तो बतलाया नहीं कि वह तुम से कितना कुछ चाहते हैं ?”

“बहुत अच्छा रैनी । तैयार रहना...” केवल तीस डालर प्राप्त हुए लेकिन, समय उनके साथ बहुत अच्छा गुजरा । बहुत अच्छे लड़के थे । मेरे साथी ने सबके चले जाने के बाद कुछ देर और ठहरने के लिए मुझसे कहा तो उसने ऐसा मुँह बनाया जैसे उसे मुँह पर तमाचा लगने की उम्मीद हो । मेरा ख्याल है कि मैंने ठहरने के लिए राजी होकर उसे आश्चर्य में डाल दिया था ।

डेप्टन के यहाँ से खबर आई है । यह काम अच्छा होना चाहिए । अधिक खर्चीले लोग ही डेप्टन में पहुँच सकते हैं । साप्ताहिक पार्टी है । शुक्रवार के दिन जहाज लेना और घूम-फिरकर सोमवार को वापस होना है ।

“बहुत बेहतर मि० डेप्टन । मैं उस यात्रा को पसंद करूँगी । नहीं, पैसे के बारे में मैं कुछ भी नहीं कहूँगी । मैं उन आदमियों पर ही छोड़ दूँगी तुम जानते हो...”

अच्छा होगा अगर एक जोड़ी सफ़ेद खेल की वर्दी और कुछ नए जहाजी जूते साथ ले लो । अच्छा होगा अगर एक तंग पटका भी ले लो । तुम यह कह नहीं सकते कि वह शानदार नितम्ब चाहते हैं या चलने में नीचे-मटकने वाले कूल्हे । डेप्टन के आदमी बहुधा अपनी शान के अनुरूप ही चीज़ चाहते हैं ।... जहाज यात्रा से वापसी हो गई है ।

दिन और शाम बहुत ही मधुर गुजरती थीं और रात्रियाँ...बड़ी भयानक । मेरे पल्ले एक बुरा नीम्बू पड़ा था । मुझे तो यही भय रहता था

कि वह किसी भी क्षण मुझे पीटना शुरू कर देगा। जब कभी मैं उसके साथ अकेली रहती, तो वह वैसा हो उठता था। लेकिन मैं सदैव ही उसकी उस मनस्थिति को उड़ा दिया करती थी। लेकिन यह उसे पसंद नहीं था लेकिन उसने मुझे एक सौ डालर दिया। उतना ही जितना दूसरी लड़कियों को मिला। दो लड़कियों ने अपने आदमियों को स्थायी ग्राहक बना लिया। मेरा भी मुझसे समय मांगना था किन्तु मैं बच निकली...

जैक्विंस ने फिर पुकारा है। वह इसके बारे में कुछ नहीं जानता। मैं तुम्हें इसे ग्रहण करने की राय नहीं देता। वह बुढ़ा आदमी है। एक पैर कब्र में लटकाए हुये—पिछली लड़की को ग्रहण करने में उसे कोई भी आपत्ति नहीं थी, लेकिन डोडी में यह कह सकता हूँ, उसे कुछ अधिक नहीं मिला। लेकिन उसने नीलम की अंगूठी उसे दी थी। अगर तुम भी वैसी ही हासिल करना चाहो तो, तैयार हो जाओ?"

"क्यों नहीं, जैक्विंस। लेकिन कैसे चलेगा। अगर सिर्फ अंगूठी ही मिली तो तुम्हारा हिस्सा देने के लिए अंगूठी को गिरवी रखना पड़ेगा?"

"खैर इस बार मुझे देने की बात छोड़ दो। मैं उसकी सेवा करना चाहता हूँ। वह बहुत ही अच्छा ग्राहक है।"

ग्रेसन के नृत्य भवन से भी पुकार आई है। पचास डालर, एक डिनर और दो-एक रात्रि-क्लबों की सैर। नहीं मैं उसे नहीं लूंगी। देखने से पहिले हां नहीं कर सकूंगी। मैं जानती हूँ, यह तिरछा निकलेगा। मैं इस तरह के आदमियों से अच्छी तरह परिचित हूँ। पचास डालर की हानि .....।

स्पेशल डिस्ट्रिक्ट एटोर्नी के यहां से भी बुलावा आया है! 'व्यभिचार को रोकने के लिए खोज-बीन जारी है। बेनी और दूसरे दर्जन भर बुक करने वाले गिरफ्तार किए जा चुके हैं। पुलिस बॉस की भी तलाश कर रही है। और उसके बड़े-बड़े नायकों की भी। वह शीघ्र ही उन्हें जेल में बन्द कर देंगे। मुझे डिस्ट्रिक्ट एटोर्नी के पास जाना है, क्योंकि मुझ से बेनी और मेडमों के बारे में जानकारी प्राप्त होने की आशा की जाती थी। वह मेरी शनाख्त मांगेगा। मैं भयानक संकट में फँस गई हूँ।

अगर में एक शब्द भी कहती हूँ, तो बॉस के एजेण्ट मुझे मार डालेंगे ।

लेकिन फिर भी डिस्ट्रिक्ट-एटोर्नी के पास तो जाना ही होगा । उसके आदमी मुझे लेने के लिये आ पहुँचे हैं । मैं कपड़े पहिनकर तैयार हो रही हूँ । वह कहते हैं कि उन्होंने दर्जनों लड़कियाँ और मैडम जानकारी के लिए पकड़ ली हैं ।

विशेष डिस्ट्रिक्ट-एटोर्नी—जिसके बारे में सारे देश में प्रसिद्ध हो चुका है कि उसने दुराचार के इन अड्डों का नामोनिशान मिटाने के लिये जिहाद बोल दिया है—आजकल बड़ा प्रसन्न है । उसे दुःख था कि उसने मुझे कण्ट दिया । उसके जानकारों ने मेरे बारे में बहुत कुछ जान लिया है । मेरे विरुद्ध कोई खास इलजाम नहीं, बस यही कि उसने बेनी और दल के नीचे काम किया है ।

“मैं अब किसी प्रकार भी कोई बहाना खोज नहीं सकती ।”

“हम यह जानते हैं, मिस मैनर्स, यही तो हम चाहते कि गवाही के तौर पर अण्ड यह सब कहें । यही तो है कि तुम स्पष्टतः सब कुछ स्वीकार कर लो और अपने को सुरक्षित कर लो । वरना तो झूठ बोलने के अपराध में तुम्हें और दूसरे सभी को कारावास का दण्ड मिलेगा ।”

“लेकिन”, मैंने कहा, “मैं तो हजारों में एक हूँ । उन सभी को भी वही कुछ कहना होगा । अगर वह वैसा नहीं कहती तो तुम यह सिद्ध कर दोगे कि वह झूठ बोल रही हैं । इसलिए क्या आप औरों को अपने मन्तव्य को पूरा करने के लिए प्रयोग नहीं कर सकते ? और मुझे जाने दे ?”

“तुम तो हमारी बहुत ही महत्वपूर्ण गवाह हो । जब तक तुम सच सच सब कुछ बयान नहीं कर देती और हमारी वांछित साक्षी का काम पूरा नहीं हो जाता जिसका होना अधिकांशतः तुम पर ही निर्भर है, तब तक हम तुम्हें किसी तरह भी मुक्त नहीं कर सकते ।”

मुझे शीघ्र ही डिस्ट्रिक्ट एटोर्नी ने बताया—बहुत ही दयालुता से—क्योंकि कठोर होने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी—कि वह यह जानता है कि मैडम हेनरिता के स्थान का विध्वंस और उसको दिए गए शारीरिक दण्ड को उसने अपनी आखों से देखा है । अधिकारियों के हाथ में कुछ ऐसी लड़कियाँ भी हैं जो यह जानती हैं कि तुम वहाँ थीं । यह

तो मुझे बताना ही होगा। वह यह भी जानता था कि बेनी ने किस-किस हाउस में उसे बुक किया है, किन-किन मँडमों को मैं कमीशन देती रही हूँ और बेनी और दल को किस के हाथ में पैसा भेजती थी।”

और उसने यह भी कहा कि वह यह भी जानता है कि जेनी ने किस प्रकार एडना को दल के जवानों के हवाले कर दिया था और किस तरह जलता हुआ सिगार उसके पेट में भोंक दिया था। और यह भी कि उसने मेरे ही कमरे में शरण ली थी। एडना के वह सब हाल यहाँ दर्ज हैं। इस प्रकार सुनवाई शुरू हुई और अपने भय के बावजूद भी मुझे सब कुछ बता देना पड़ा।

मैंने बेनी के दण्ड को घटवाने का प्रयत्न किया। बहुत तरीकों से वह मेरे साथ दोस्ती निभा चुकी थी वैसे ही दोस्ती जैसी वेश्याओं की दुनियाँ में होनी सम्भव है। मैंने जब कभी उसको याद किया वह मेरी सहायता करने के लिए तैयार रहा। वह वैसे नहीं करता था जैसा दूसरे बुक करने वाले करते थे। वह छोकरियों से अतिरिक्त पैसा माँगते थे, और जब वह अधिक पैसा कमाकर मँडमों को नहीं देती थीं तो मँडमों के कहने पर वह उन्हें मार लगाते थे। जब कभी मँडम लोग छोकरियों पर जुल्म करते थे तो वह उनका पक्ष लेता था। यह सब उसकी अच्छाई का सबूत था।

मुझे उसकी पत्नी और चौदह वर्ष की बालिका की भी अच्छी तरह याद है। उस बालिका को अपना स्कूल, साथिन और टेनिस छोड़नी पड़ेगी। उपनगर में बना वह घर एक दुखान्त घटना से भर उठेगा।

लेकिन जिस समय गवाहों के कटघरे में खड़ी हुई तो वह यह डिस्ट्रिक्ट-एटोर्नी बड़ा बेरहम हो उठा। उसने मेरे द्वारा भी वही कलंक-पूर्ण दास्तान कहलवायी जो कि दूसरों से कहलवायी थी। मेरे सामने ही वह आदमी बैठे थे जिनकी पेशी होने वाली थी। बेनी भी उनमें था। दूसरे बहुत ही डरावनी सूरत वाले कुरूप लोग थे जो कि गाड़ों से भगड़ रहे थे जिन्हें कठिनाई से अन्दर रखा जा रहा था।

बाँस भी वहीं था। उन्होंने पश्चिम के किसी शहर में उसे पकड़ा था। वह सिर पर आने वाली आपत्ति को देखकर भीरुता पूर्वक वह अपने सहा-

यकों को छोड़कर भाग खड़ा हुआ था। उसकी पीली सिल्क की कमीज और दूसरे कपड़े उतने ही कीमती थे, जितने पैसे द्वारा प्राप्त हो सकते थे। उसकी मुद्रा कभी नहीं बदली। जो लोग अधिकारियों के सम्मुख उसे बेनकाब करने में मदद कर रहे थे—उनके लिए उसके मन में घृणा और जहर भरा हुआ था।

उस फैशनेबल होटल में जिसका वर्णन पहिले ही किया जा चुका है। मुझे अपनी भेंट का भी वर्णन करना पड़ा

“मिस मैन्स वह काल गर्ल व्यापार को भी हाथ में लेना चाहता था न ?”

“मैं केवल इतना ही कह सकती हूँ कि उसने मुझ से ऐसा कहा था।”

“उसकी शर्त क्या थीं ?”

“काल गर्ल-व्यापार से बहुत कुछ लाभ उठाना चाहता था, अगर यह उसके हाथ में आ जाता। मुझे कोई संगठित योजना बनाकर पेश करने में उसकी सहायता करनी थी।”

“क्या तुमने उसे कोई सहायता दी। क्या उस व्यापार की शाखा के अपने अनुभवों के आधार पर तुमने उसे कोई योजना बनाने में मदद दी।

“उसने मुझे दूसरी भेंट के लिए बुलाया नहीं था।”

“तुम कहती हो कि तुम उसे सहायता करने वाली थीं। क्या तुम स्वेच्छा से वैसा करने के लिए तत्पर हुई थीं।”

“मुझे यह कभी नहीं सूझा कि मैं स्वेच्छा से ऐसा करती अथवा बाध्य होकर। मुझे केवल यही मालूम था कि या तो मुझे उसकी सहायता करनी है अन्यथा दण्ड भुगतने के लिए तैयार रहना है।

“यही तो ” डिस्ट्रिक्ट एटोर्नी ने कहा, “ इसी से हमें पता चलता है कि दल के यहाँ दण्ड-व्यवस्था थी; कृपा करके हमें एडना के बारे में बताओ कि उसके साथ क्या-क्या किया गया—जो कुछ तुमने देखा।”

“मैंने केवल यही देखा कि दो आदमी उसकी बाहें पकड़ कर ले गये। जब मैंने दोबारा देखा तो उसका पेट सिगरेट से जला दिया गया

था ।” “क्या वह चीख-पुकार नहीं कर सकती थी, जबकि उसे यह मालूम था कि उसके साथ क्या किया जाने वाला है । क्या ऐसा करने से हाउस-सुप्रिण्टेण्डेंट या ऊपर लाने वाला आदमी उसकी सहायता नहीं कर सकता था ।”

“मेरा ख्याल है कि सहायता उसे प्राप्त नहीं हो सकती थी । हाउस सुप्रिण्टेण्डेंट और ऊपर लाने वाले सभी को घूस दिया हुआ होता है । उनका साहस नहीं कि हस्तक्षेप कर सकें । जिस समय जेनी मुझे तो इतना भी साहस नहीं हुआ था कि उसके साथ सहानुभूति भी दिखा सकती जबकि जेनी उसे उनके साथ भेज रही थी ।”

बॉस ने मेरी तरफ घूरा । उसकी निगाह में वर्फानी चेतावनी थी । आखिरकार वह छूट जाएगा । उसने अपना हाथ इतना गुप्त रख छोड़ा था कि उसे दुराचार के उस अड्डे से सम्बन्धित किया नहीं जा सकता था । अगर वह छूट गया तो मेरा क्या होगा । जो कुछ भी होना होगा, जल्दी ही हो जायगा ।

तब मुझे बेनी के बारे में बताना था । किस तरह उसने मुझे बुला भेजा था—जबकि मैं सड़कों पर घूमकर ही काम करती थी । उसने मुझे कहा था कि अगर मुझे उस व्यापार में रहना है, तो उसी के द्वारा बुक किया जाना होगा ।

और बहुत से लोग उसके खिलाफ गवाही देने वाले थे, लेकिन मेरी तरह कोई भी उसे बचाना नहीं चाहता था ।

बेनी को अन्तिम बार मैंने उस समय देखा था जब कि वह कचहरी से बाहर ले जाया जा रहा था । बेच ने उसे बताया था कि दस वर्ष तक उसे सूर्य देवता के दर्शन नहीं हो पाएंगे । उसने घूमकर मेरी ओर रुमाल हिलाया था, जहाँ मैं अनेक गवाहों की पंक्ति में बैठी थी जिन्हें यह कह दिया गया था कि वह अपना काम-धन्धा देख सकते हैं—क्यों दुराचार के दल वालों का मुकद्मा समाप्त हो चुका है । और बॉस ने अपना शेष जीवन कारावास में जहाँ बिताना था—वहाँ कई दिन से रहना शुरू भी

कर दिया था ।

बेनी से उसका घर छूट गया था । दल ने मुकद्दमे का खर्च नहीं उठाया था । मैंने उसकी पत्नी और पुत्री को खोज निकाला था । उस बालिका को मैं एक शानदार स्कूल में भेज रही हूँ जितनी मेरी सामर्थ्य है—और उसे अपनी टेनिस वगैरह भी तो खेलनी होगी, हालाँकि मैं जानत हूँ कि अब उसका दिल उस खेल में नहीं है । मैंने बेनी की पत्नी को पुनः मैडम बनने की मजबूरी से बचा लिया है ।

क्या दुराचार का वह दल पराभव को प्राप्त हुआ । क्या वह संख्या समाप्त हो गई ?

क्या शीघ्र ही कोई नया बाँस या नया दल खड़ा नहीं हो जायगा ?

रहा मेरी बाबत—मेरे पास और रह क्या गया है—इसके अतिरिक्त कि जब मैं फिर से गलियों में घूम कर काम करने लगूँ ।









